श्री

छंद रत्नावलि.

कठण छंदोना अर्थ सहित.

लक्ष्मिनारायण देवनी गादीना आचार्य महाराज
श्री लक्ष्मीप्रसादजी महाराज श्री विहारीलालजी
महाराजनी आज्ञाथी.

छपावी प्रसिध्ध करनार
मगनलाल कीकाभाइ देशी मित्रवाळा

सुरत.
मगनलाल कीकाभाइए पोताना देशी मित्र
एनजीन प्रीन्टींग प्रेसमां छापी.

आवृती पहेली

संवत १९६३. सने १९०६.



अक्षरातीत प्रगट पुरुषोत्तम श्रीसहजानंदस्वामी.

अनुक्रमणिका.

विषय	पानुं



श्री सहजानंद स्वामिने नमोनमः

श्री छंद रत्नावलि.

॥ सत्संगरूपी कमल विषे ॥

॥ सवैया ॥ ॥उद्धव अंतर प्रेम तडागमें ॥ कृष्ण अंकुर विख्यात भयो हे ॥ नाल वध्यो अवतार निरंतर ॥ सुंदर मोक्ष सुगंध छयोहे ॥ वृंद अलि मकरंद पया मुनि दादूर मंदने नाहि लयोहे ॥ ब्रह्ममुनि कहे या जगमें ॥ सतसंग सरोज विकास रयोहे ॥ १ ॥

॥ अर्थ ॥ उद्धवनो अवतार एवा जे रामानंद स्वामि तेमना अंतःकरणना प्रेमरूपी तलावमां अक्षरधामना निवासी श्रीकृष्ण भगवानना स्वरूपनो अंकुर उगीने प्रख्यात थयो छे ॥ अने ते भगवानना अवताररूपी कमलनी अखंड सुंदर दांडी वधी ॥ अने तेमां मोक्षरूपी सुगंध छाइ रह्यो ॥ तेथी ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के आ जगतमां सतसंगरूपी कमल प्रफुल्लित थइने रह्युं छे ॥ अने मुनिना मंडलरूपी भमराए तेना सुगंधनो रस पीधो ॥ पण अज्ञानीरूपी देडकाओये ते रस लीधो नहीं ॥ १ ॥

॥ सतसंगरूपी कल्पवृक्ष विषे ॥

॥ सवैया ॥ कोमल भूमि सो उद्धवके उर ॥ कृष्ण कृपानिधि बीज द्रढ्यो हे ॥ भक्ति रु ग्यान विराग पियो जल ॥ धर्मके रक्षण पेड गढ्यो हे ॥ प्रीत सु-

नीत भुजा मुक्ति फल ॥ आगम वेदसे पत्र मल्यो हे ॥ ब्रह्म मुनि कहे या जगमें ॥ सतसंग सुरतरु जोर वध्यो हे ॥ २ ॥ ॥ अर्थ–रामानंद स्वामिना अंतःकरण रूपी कोमल भूमिमां अखरवासना वाली दयाना सागर श्री कृष्ण भगवानना स्वरूपरूपी बीज मजबूत रोपायुं ॥ तेणे भक्ति ज्ञान ओ वैराग्यरूपी जल पीधुं ॥ तेथी धर्मनी रक्षा करनारुं झाड घडायुं ॥ ओ प्रेम तथा सारी नीतीरूपी डालो थइ ॥ अने मुक्तिरूपी फल थयुं ॥ अने शास्त्र तथा वेदरूपी पांदडांमां ते फल वींटायेलुं छे ॥ ए रीत ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के आ जगतमां सतसंगरूपी कल्पवृक्षनुं जोर वध्युं छे ॥ २ ॥

॥ सतसंग रूपी सूरज विषे ॥

॥ सवैया ॥ ॥ उज्वल उर सो पूरवकी दिश ॥ ज्ञानसुं तम दूर निकासा ॥ दुष्ट रहे सकुचाय कुमुदनि ॥ सज्जन संत सरोज विकासा ॥ दंभकिन लीन भई रजनि डरि ॥ सूकीत प्रात विख्यात उजासा ॥ ब्रह्म मुनि कहे या जगमें ॥ सतसंग सदोदित सूर प्रकासा ॥ ३ ॥ ॥ अर्थ ॥ रामानंद स्वामिना अंतःकरण रूपी पूर्व दिशाना ज्ञानना अजवाळाथी अज्ञान रूपी अंधाराने वेगलुं काढयुं ॥ तेथी दुष्टरूपी कुमुदनीयो संकोचाईने रही ॥ अने सज्जन तथा साधुरूपी कमल प-

फूल्लित थयां ॥ अने पाप रूपी रात्रि डरीने लीन थईगई ॥ अने पुण्य रूपी प्रभातनो प्रकाश प्रख्यात थयो ॥ ए रीते ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के सतसंग-रूपी सूरजनो प्रकाश सदा उदय थयो ॥ ३ ॥

॥ सतसंग रूपी चंद्र विषे ॥

॥ सवैया ॥ सुख पूर पियूख मयूख दया ॥ सुबुधि स-मता सूलता विलसी हे ॥ प्रेमी चकोर सो जोर रहे द्रग ॥ वृंद मुनि नलिनि विकसिहे ॥ गाढ प्रताप प्रका-सउतें ॥ तम नास भयो रूउजास दिसीहि ॥ ब्रह्ममुनि कहे या जगमें ॥ सतसंग मनुं निकलंक शसि हे ॥ ४ ॥

॥ अर्थ—भगवाननी दयारूपी चंद्रना कीरणोथी पूर्ण सुखरूपी अमृत झर्युं ॥ तेथी सारी बुद्धि अने समता रूपी वेल सुशोभित थई छे ॥ अने प्रेमीजन रूपी च-कोर ते श्रीकृश्न चंद्र सामी द्रष्टि जोडीने रह्या ॥ अने मुनिना मंडळ रूपी कुमुदनीओ प्रफुल्लित थई छे ॥ अने ते भगवानना मोटा प्रतापरूपी प्रकाशथी अ-ज्ञान रूपी अंधारूं नाश पाम्युं ॥ अने सर्व दिशाओ मां ज्ञानरूपी अजवालुं थयुं ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहे-छे के आ जगतमां जाणिये के सतसंग कलंक वगर-नो चंद्र छे ॥ ४ ॥

॥ सतसंग रूपी समुद्र विषे ॥

॥ सवैया ॥ ॥ नेम रू प्रेमकी पाल निरंतर ॥ सुंदर

नीर भरे सुबुधी हे ॥ मत्र कलोल करे मिलकें मुनी ॥ त्याग उमंग तरंग व्रधी हे ॥ धीर तहां सुखमें विलसे ॥ निरजीव निकाम दिये कुबुधी हे ॥ ब्रह्ममुनि कहे या जगमें ॥ सतसंग सो अमृतको उदधी हे ॥ ५ ॥ ॥ अर्थ ॥ नियम अने प्रेमनी अखंड पाल छे ॥ अने सुबुधि रूपी सुंदर जल भरेलुं छे ॥ अने संतरूपी मगर मलीने तेमां कल्लोल करेछे ॥ अने त्याग तथा आनंदरूपी मोजां वध्यां छे ॥ धीरजवाळा पुरुषो तेमां सुखेथी हरे फरेछे ॥ अने धर्मरूपी जीव जेनामां नहोय तेने बहार काढी नाखवानी मति ते सागरनीछे ॥ ब्रह्मानंद स्वामी कहेछेके आ जगतमां सतसंग छे ते अमृतना समुद्र जेवो छे ॥ ५ ॥

॥ नाशवंत देह विषे ॥

॥ सवैया ॥ ज्युं जलमांई लकीर परिसो ॥ टलीके टलीके टलीके टलीहे ॥ ज्युं मिसरी पयमांई परिसो भलीके भलीके भलीके भलीहे ॥ देवल सीश चढाई धजा सो ॥ हलीके हलीके हलीके हलीहे ॥ ब्रह्ममुनि त्युंहि देहकी आयु ॥ चलीके चलीके चलीके चलीहे ॥ १ ॥ अर्थ ॥ जेम पाणीमां लीटी पडी-तेटली गई ॥ केटली गई ॥ केटली गई ॥ केटली गई छे ॥ अने जेम दूधमां खांड पडी ते भलीगई ॥ के भलीगई ॥ के भलीगई ॥ के भलीगई छे ॥ अने देवलना शिखर उपर धजा चढावी

॥ ते हाली ॥ के हाली ॥ के हाली ॥ के हाली छे ॥ तेमज ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के शरीरनी आवरदा चालीगई ॥ के चालीगई ॥ के चालीगई ॥ के चाली गई छे ॥ १ ॥ नीचनके संग प्रीत करि सो ॥ मटीके मटीके मटीके मटीहे ॥ जूथकुं देखि त्रियानकि टोरि ॥ हटीके हटीके हटीके हटीहे ॥ सूरज देखकें कुंद कली सो ॥ फटीके फटीके फटीके फटीहे ॥ ब्रह्ममुनि त्युंहि देहकी आयु ॥ घटीके घटीके घटीके घटीहे ॥ २ ॥ ॥ अर्थ—नीच माणसोनी साथे प्रीति करी होय ते ॥ मटीगइ ॥ मटीगई ॥ मटीगई ॥ के मटीगई छे ॥ युद्ध देखीने स्त्री-ओनी टोली हठीगई ॥ हठीगई ॥ हठीगई ॥ के हठीगई छे ॥ अने सूरजने देखीने डोलरनी कली फाटीके फाटीके फाटीके फाटी छे ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के तेमज देहनी आवरदा घटीके घटीके घटी के घटी छे ॥ २ ॥ सवैया ॥ भोमि निसानपें आयकें चोट ॥ लगीके लगीके लगीके लगीहे ॥ मारुतके अति जोरसें आग ॥ जगीके जगीके जगीके जगीहे ॥ चूलकी सीस चढाई तई सो ॥ धगीके धगीके धगीके धगीहे ॥ ब्रह्ममुनि कहे तेसेंहि देह भगीके भगीके भगीके भगीहे ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ जेणे पृथ्वीनुं निशान कर्युं होय ॥ मतलब के पृथ्वीनेज निशान जाणीने घा करे ॥ तो तेनी चोट लागी ॥ के लागी ॥ के लागी ॥ के लागी

छे ॥ मतलब के पृथ्वी उपर ताकीने घा करे ॥ ते खाली जायज नही ॥ गमे ते ठेकाणे पृथ्वी उपर वागे ॥ अने घणा पवनना जोरथी आग लागी ॥ के लागी॥ के लागी ॥ के लागी छे॥ अने चूला उपर तवी चढावी होय ते तपी ॥ के तपी ॥ के तपी ॥ के तपी छे ॥ तेमज ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के काया भागी ॥ के भागी ॥ के भागी के भागी छे ॥३॥ ॥ सवैया ॥ ॥ वाह्नि रु दारू संजोग भडाको ॥ भयो के भयो के भयो के भयो है ॥ प्यादेके लार सवार चढ्यो सो ॥ लह्यो के लह्यो के लह्यो के लह्यो है ॥ चोरनके संग साहकुं चोर ॥ कह्योके कह्योके कह्योके कह्योहै॥ ब्रह्ममुनि कहे युं तन आयु ॥ गयो के गयो के गयो के गयो है ॥ ४ ॥ ॥ अर्थ—दारूना अने अग्निना संजोगथी भडाको थयो ॥ के थयो ॥ के थयो ॥ के थयो छे ॥ पगे चालनारनी पाछल तेने पकडवा सारु अस्वार चढ्यो होय ॥ तेणे तेने पकडी लीधो ॥ के लीधो ॥ ॥ के लीधो ॥ के लीधो छे ॥ चोरनी सोबते साहुकारने चोर कह्यो ॥ के कह्यो ॥ के कह्यो ॥ के कह्यो छे ॥ तेमज ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के शरिरनुं आयुष्य गयुं॥ के गयुं॥ के गयुं के गयुं छे ॥ ४ ॥ सवैया ॥ काष्ठ चितामहि बैठि सति सो ॥ जरीके जरीके जरीके जरीहै ॥ सिंघके अग्रखडि बकरी सो ॥ मरीके मरीके मरीके मरीहै॥ ज्युं धरि या-

रके पास कटोरी भरीके भरीके भरीके भरीहे ब्रह्ममुनि कहे तेसेहि देह ॥ परीके परीके परीके परीहे ॥ ५ ॥
॥ अर्थ ॥ लाकडानी चितामां सति बेठी ते बळी ॥ के बळी ॥ के बळी ॥ के बळी छे ॥ अने जेम सिंहनी आगळ बकरी उभी होय ॥ ते मुई ॥ के मुई ॥ के मुई ॥ के मुई छे ॥ अने जेम घडीआळनी पासे पाणीनी कुंडीमां कटोरी मूकी होय ॥ ते भराई ॥ के भराई ॥ के भराई ॥ के भराई छे ॥ तेमज ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के काया पडीके ॥ के पडी ॥ के पडी ॥ के पडी छे ॥५॥
॥ सवैया ॥ ज्युं अरी सेनमें उखको खेत ॥ लुट्यो के लुट्यो के लुट्यो के लुट्यो हे ॥ ज्युं कपटि मिल हेत कियो सो ॥ तुट्यो के तुट्यो के तुट्यो के तुट्योहे ॥ जेसेहि तोलत धानको ढेर ॥ खुट्यो के खुट्यो के खुट्यो के खुट्योहे ॥ ब्रह्ममुनि कहे त्युं यह देह ॥ छुट्यो के छुट्यो के छुट्यो के छुट्योहे ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ जेम शत्रुनी फोजमां शेलडीनुं खेतर आव्युं ॥ ते लुटयुं ॥ के लुटयुं ॥ के लुटयुं ॥ के लुटयुंछे ॥ अने जेम बे कपटीये मळीने हेत कर्युं होय ते तुटयुं ॥ के तुटयुं ॥ के तुटयुं ॥ के तुटयुं छे ॥ अने जेम अनाजनो ढगलो तोळतां तोळतां खुट्यो ॥ के खुट्यो ॥ के खुट्यो ॥ के खुटयोछे ॥ तेमज ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के आ देह छुटयो ॥ के छुट्यो ॥ के छुटयो ॥ के छुटयो छे ॥ ६ ॥

॥ अंतकाले हरिनुं नाम न लई शकाय ते विषे ॥

॥ सवैया ॥ श्रीघनश्यामके अंघ्रिसरोजमें ॥ देहछते जेहि नेह करयोहे ॥ लोकनकी तजिलाज निरंतर ॥ अंतरमें द्रढपक्ष धरयोहे ॥ अंतकि बेरजो नाम लियो नहि ॥ तो पुनि सो निश्चे उगरयोहे ॥ ब्रह्ममुनि घनचीटिगई घर पीछे लुटाय कहा बिगरयो हे ॥ ७ ॥ अर्थ— प्रगट प्रभु श्री घनश्यामजीना चरण कमळमां जेणे देह छतां स्नेह कर्यो छे ॥ अने निरंतर लोकनी लाज तजीने भगवानना अचळ पक्ष अंतःकरणमां धार्योछे ॥ पछी तेणे कदापि अंतकाळनी वखते भगवाननुं नाम लइ शकायुं नहीं ॥ तो पण ते जन्म मरणथी जरूर उगर्यो छे ॥ जेमके ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के परदेशमांथी कमाइने हुंडी घेर पहोंचाडी ॥ अने पाछळथी ते लुटायो ॥ तेमां तेनुं शुं बगडयुं छे ॥ ७ ॥

॥ संतने पीडा करे ते विषे ॥

॥ सवैया ॥ श्रीघनश्याम कहे सुन नारद ॥ अंतर सुध मेरो मत एहे ॥ मोसंग प्यार उदार सदा मन ॥ नाम उचार अहोनिश लेहे ॥ संत मचे जगमांई फिरे ॥ तिनकुं दुख आय निरंतर देहे ॥ ब्रह्ममुनि भगवंत कहो सोई ॥ सोय भजे पुनि नर्कमें जेहे ॥ ८ ॥ ॥ अर्थ श्री कृश्न भगवाने कह्युं के हे नारदजी सांभळो ॥ शुद्ध अंतःकरणथी मारो मत ए छे जे ॥ कोई माणस

मारी साथे प्रीति राखे ॥ तथा मन उदार राखे ॥ अने दिवस ने रात मारा नामनो उच्चार करे ॥ पण जो ते जगतमां साचा संत फरता होय ॥ तेने जईने निरंतर दुःख दे तो ॥ ब्रह्मानंद स्वामी कहेछे के भगवाने कह्युं जे ॥ ते मने भजतो हशे तोपण नरकमां जशे ॥८॥ इति उपदेशी सवैया संपूर्ण ॥

॥ अथ वनविहार विषे सिंधावलोकन ॥

॥ सवैया ॥ करतें हरिकंज फिरावतहे ॥ वन जावतहे वछले घरतें ॥ घरतें मन घाट सुघाट मुनि ॥ छवि थाट निराट अनुसरतें ॥ सरतें संग ग्वालन बाल मही ॥ व्रज पालन व्याल असु हरतें ॥ हरतें धरतें सुख मोद धुनी ॥ कहे ब्रह्ममुनि विनाति करतें ॥ १ ॥ ॥ अर्थ श्रीक्रश्न भगवान कमल हाथमां लईने फेरवेछे ॥ अने वाछडां घेरथी साथे लईने वीचरेछे ॥ ते केवाछे ॥ तो मुनीजनो जे छवीनो घाट घडेछे ॥ अर्थात मनमां चिंतवन करेछे ॥ एवी (निराट) अदभुत छबिना टाट ने अनुसरता व्रंदावननी वाटमां वीचरेछे ॥ वली गोवालोना बालक साथे सरतां एटले चालतां व्रजना पालनार भगवान सरपरूपे थईने आवेला अघासुरना प्राण लेता विचर्या ॥ त्यारे ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के आकाशमां शिवजी आदिक अने प्रथ्वी उपर गोप मुनी आदिकना सुख आनंदनी ध्वनीथी विनति क-

रवा लाग्या ॥ १ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ गहरी तरु शीतल छाई घटा ॥ जमुना तट नीर थटा लहरी ॥ लहरी नंदलाल सु ख्याल करे ॥ पट पीत पुनीत लिये पहरी ॥ पहरी पट कान सु पान करे ॥ द्रग देख विशेख अघं दहरी ॥ दहरी वहरी कहे ब्रह्ममुनि ॥ तजि अंब कदंबनकुं गहरी ॥ २ ॥ ॥ अर्थ–त्यां झाडझुंडनी शीतळ अने घाटी छाया छवराई छे ॥ अने जमुनांजीने कांठे पाणीनी लेहेरोनो ठाठछे ॥ त्यां लेरी नंदलाल सारा खेल करेछे ॥ तेमणे पवित्र पीळां वस्त्र पेहेरी लीधांछे ॥ ते लुगडां पेहेरीने श्रीकृष्ण भगवान जमनां जळनुं पान करेछे ॥ ते नजरे जोतांज घणा पापने बाळी नांखेछे ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहेछेके पछी भगवान ते जमनांजीना (द्रह) धराथी वहन करीने एटले चालीने आंबानां झाड तजीने कदंबना झाडनुं ग्रहण कर्युं ॥ २ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ अलके मुखपें लपटाय रहे ॥ अहिबाल मनुं सशीपें ललके ॥ ललके उर मोतिन माल हीये ॥ शुभ केसर भाल किये तिलके ॥ तिलके शुभ फूल छबि नककी ॥ शुककी नक देखि परी हलके ॥ हलके व्रजनार निहारनकुं ॥ कहे ब्रह्ममुनि घुमती अलके ॥ ३ ॥ ॥ अर्थ–वाळनी लटो भगवानना मुख उपर लपटाई रही छे ते जाणेके चंद्र उपर नागनां बच्चां लटके छे ॥ अने छाती उपर मोतीनी माळा लटके छे ॥ अने

कपालमां सुंदर केसरनुं तिलक कर्युंछे ॥ अने नाकनी छवि सुंदर तलना फुल जेवी छे ॥ ते जोईने पोपटनी नासिका हलकी पडी ते भगवानने निरखवा सारु व्रजनी स्त्रीओ दोडी ॥ अने ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के तेना चोटला घुमता एटले लटकता हता ॥ ३ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ रसिया रंग रास विलास करे ॥ कटी जोर पीतांवरमे कसिया ॥ कसिया भर नेन चलावत हे ॥ रंग रीझत भिज रसव्वसिया ॥ वसिया सुरतें ग्रह त्याग चली ॥ व्रजनार उजार लखी शशिया ॥ शशियादिक आनन कान धरे ॥ कहे ब्रह्म सनेह गले रसिया ॥ ४ ॥ ॥ अर्थ–रसिक भगवाने आनंद रंगथी रासनो खेल कर्यो ॥ अने केडे जोरथी पीतांबर बांधी लीधुं ॥ अने खेंचीने जोर भर दृष्टि चलावे छे ॥ अने रंगमां रीझीने भींजाइने रस बस थया छे ॥ तेनी वांसलीना स्वरथी अने चंद्रमाने जोइने व्रजनी स्त्रीयो घर तजीने वनमां गइ ॥ अने चंद्र आदिकनी शोभा श्री कृश्न भगवाने पोताना मुखमां धारण करी छे ॥ तेथी ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के ते रसियाना स्नेहथी गोपियो गली गइ ॥ अर्थात् लीन थइ गइ ॥ ४ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ वनमें हरि वेन बजावत हे ॥ सुनी टेर सव रही सो तनमें ॥ तनमें मोय चाह अथाह जगी ॥ रट एक लगी उमंगी मनमें

मनमें नवनीत लीये निकरी ॥ तुछ लाज करी न डरी जनमें ॥ जनमे व्रह ब्रह्ममुनि उरमें ॥ तुरमें जुं चली हरी जो बनमें ॥ ५ ॥ ॥ अर्थ–सखी सखीनी आगल कहे छे के श्री कृष्ण भगवान वनमां वांसली वगाडे छे ॥ ते जाणे के अमने बोलावता होय एवो स्वर सांभलीने सर्वे गोपिकाओ (श्रोतनमें) सांभलवा रही ॥ पण मारा शरीरमां तो अपार चाहना जागी ॥ अने ते परमेश्वरनी एकज रटना लागी ॥ अने मनमां आनंद पामी ॥ पछी हुं (नवनीत) मांखण लइने वेचवाने वाने नीकली ॥ अने मनमांथी लज्जाने तुच्छ करी ॥ अने माणसमां कोइथी डरी नहीं ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के मनमां विरह (जाग्यो) उत्पन्न थयो ॥ तेथी (त्वरामां) उतावलमां ज्यां जे वनमां भगवान हता त्यां चाली ॥ ५ ॥ ॥ सवैया ॥ कनिया छवि रूप अनुंप वने ॥ शिर केश सुवेश नव घनीया ॥ घनिया अती वात कहात नहिं ॥ नवरंग उमंग कसे तनीया ॥ तनया रवि तीर अहीरनमें ॥ बलवीर लखे मे गइ पनियां ॥ पनियां तजि वृंद मुनंद फिरे ॥ कहे ब्रह्ममुनि रस ले कनीयां ॥ ६ ॥ ॥ अर्थ–श्री कृष्ण भगवाननी छविने कोइनी उपमा आपी शकाय नहीं एवी बनी ॥ अने माथे वाल सुशोभित नवीन वरसाद नां रंग जेवा छे॥ ए विषे अतिशे घणी वात कही शकाती

नथी ॥ तेमणे उमंगथी नवीन रंगनो पायजामो बांधी लीधो छे ॥ अने सूरजनी पूत्री जमनांजीने कांठे गोत्रा लीआओमां बलदेवजीना भाईने हुं पाणी भरवा गई हती सां दीठा ॥ जेने वास्ते महा मुनियोनां मंडल जोडा तजीने अडवाणे पगे फरेछे ॥ तोपण ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के ते रसने कणिका मात्र ले छे ॥ ६ ॥

॥ सवैया ॥ हरिकी दृग भाल रसाल छवि ॥ उर ढाल सुचाल बनि करिकी ॥ करिकी पुनि बात नजात कही ॥ कसनी मनरंज पीतांबरिकी ॥ बरिकी बरि नारी उधारी वकी ॥ अतिशे अघनी भगनी अरिकी ॥ अरिकी महिमा कहे ब्रह्ममुनि ॥ मोरली धुनी तान मनोहरकी ॥ ७ ॥

॥ अर्थ ॥ भगवाननां नेत्र अने कपालनी छावि रसाल छे ॥ छाती ढाल जेवी अने चाल हाथीना जेवी बनी छे ॥ पीतांबरनी मनोरंजन बांधणी एवी छे के ते वात कांइ करी जाती नथी ॥ मोटामां मोटी स्त्री पूतनाने उध्धारी ॥ ते अतिशय पापीणी अने शत्रुनी बेन हती ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के ते भगवाननी मोरलीनी ध्वनिना मनोहर ताननी मोटाई एटले महिमा हे अली हुं शुं कहुं ॥ ७ ॥ सवैया ॥ उरमें बन माल विशाल लसे ॥ विलसे रमनी धुनि नेपुरमें ॥ पुरमे त्रय व्याप रही मोरली ॥ बनबाजतहे मधुरे सुरमें ॥ सुरमें नरमें नाहि तुल छबि ॥ खुसि शेष महेश अंघ्रि धुरमें ॥ धुरमें

पद पाय रीझाय हरि ॥ धरि ब्रह्ममुनि मुर्त्ति उरमें ॥८॥ ॥ अर्थ ॥ ते भगवाननी छातीमां मोटी वनमाला शोभे छे ॥ अने पगना झांझरमां पण सुंदर ध्वनि शोभे छे ॥ अने एनी मोरलीनी धुनी त्रण पुरमां एटले त्रिलोकमां व्यापी रही छे ॥ ते वनमां मधुरा स्वरमां वागे छे ॥ देवताओमां के माणसोमां तेमनी बराबर कोइनी छबि नथी ॥ अने शेष नाग तथा महादेवजी ते भगवानना चरणनी रजमां आनंद पामे छे ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के गोपी कहेछे ते चरणनी रज हुं पामी ॥ अने में भगवानने रीझव्या ॥ अने तेनी मूर्ति अंतःकरणमां राखी ॥ ८ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ रजकीपती दुष्ट हन्यो हथसें ॥ हथमें कुबरि त्रियकुं सजकी ॥ सजकी रचना रंगमंडपमें ॥ लखि कंस घटा सु छटा तनकी ॥ तनकी महिमा नहि जात कही ॥ बुद्धि थाकत शेश शंभु अजकी ॥ अजकी छबि खूब बनी ब्रह्मानंद ताहिकी चाह अंघ्रि रजकी ॥ ९ ॥ ॥ अर्थ—ते भगवाने हाथे करीने धोबणना पापी धणीने मार्यो अने एज हाथे करीने कुबजा स्त्रीने साजी करी ॥ अने रंग मंडपमां कंसे रचना सजी हती ॥ त्यां भगवाने पोतानी छबिनी घटा देखाडी ॥ ते भगवाननी मूर्तिनो महिमा कह्यो जतो नथी ॥ ते कहेतां शेषनागनी शिवनी अने ब्रह्मानी बुद्धि थाकी जाय ॥ ते भगवाननी आ-

जनी छबि खूब बनी छे ॥ अने ब्रह्ममुनि कहे छे के तेमना चरणनी रजनी चाहना मने थइ छे ॥ ९ ॥
॥ सवैया ॥ ॥ चलरी सखि देखनकुं कनिया ॥ हुलसाय हिया पियेकुं मलरी ॥ मलरी अब मोय सुनाय कहो ॥ सब क्युं न कहो कहेगी कलरी ॥ कलरी कहि वात रिझात चितं ॥ हरि देखि छबि नजरि पलरी ॥ पलरी ॥ पलरी लखि कं तब ब्रह्ममुनि ॥ मुर्त्ति मधुरि अति चंचलरी ॥ ॥ १० ॥ ॥ अर्थ—हे सखी श्री कृष्ण भगवानने नीरखवाने चाल ॥ ते प्रीतमने मलवाथी हयुं हुल्लास पामशे ॥ हे सखि मने मलीने हमणां बधी वात संभलावीने तुं कहे ॥ ते बधी वात केम नथी कहेती अने काल कहीश एम केम कहे छे ॥ कालनी वात कहीने मनने रीझवे छे ॥ ते भगवाननी छबि नेत्रना पलथी तें दीठी छे ॥ त्यारे ब्रह्ममुनि कहे छे के ते जोइने तुं भिंजाइ हती ॥ अने ए चंचल भगवाननी मूर्त्ति तें अंतःकरणमां धारी हती ॥ १० ॥
सवैया ॥ ॥ बनतें व्रज आवत स्याम पिया ॥ लखि गोपत्रिया हुलसें मनतें ॥ मनतें धन भाग अथाग मनोहर सुंदर स्याम छबि घनतें ॥ घनतें पुनि हस्त कठोर करे अघ आदि मरे बिखरे तनतें ॥ तनतें कर लेप टरी कुबरी ॥ लखि ब्रह्ममुनि न कहि बनतें ॥११॥
॥ अर्थ—श्री कृष्ण स्वामि वनमांथी व्रजमां आवे छे ॥

तेमने नीरखीने गोवालनी स्त्रियो मनथी आनंद पामे छे ॥ अने पोतानुं अपार धनभाग्य माने छे ॥ अने ते सुंदर स्यामनी मनोहर छबि वरसादना रंग करतां पण (वर) उत्तम छे ॥ अने ते भगवाने लुहारना घण करतां पण पोताना हाथ कठोर करीने अघासुर आदिकना शरीर वींखी नाखीने मारी नाख्या ॥ ते भगवानने शरीरे कुबजाए चंदननो लेप कर्यो तेथी ते कुबडी मटी गई ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहेछेके ते लीला जेणे दीठी ते जाणे ॥ पण कह्याथी बनी शकती नथी ॥ ११ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥नखमें रंग लालमनी मु कनी ॥ अंगुरि मु दनी मुनिके लखमें ॥ लखमें पुनि कोक लखे जिनके ॥ पदकंज छबि द्रगके पखमें ॥ पखमें हरीकी सोई सा मही ॥ बिन पक्ष प्रतक्ष बुद्धि रखमें ॥ रखमें घनस्याम छटा उरमें ॥ कहे ब्रह्म बिजोग अबे नखनें ॥ १२ ॥ ॥ अर्थ भगवानना नखमां राती मणीनी कणीनी शोभा छे ॥ अने तेमनी आंगळीओ मुनिजनना (लक्षमां) ध्यानमां बनी रहीछे ॥ जेना चरणारविंदनी छबी नेत्रनी पापणोमां लाखो मुनीयोमांथी कोईकज देखे ॥ ते भगवानना पक्षमां एज नक्की साचो कहेवाय के जे बीजानो पक्ष न राखतां प्रत्यक्षमांज बुद्धि राखे ॥ एम जाणीने घनश्यामनी छबी में अंतरमां राखी ॥

माटे हवे ब्रह्मानंद स्वामी कहेछेके तेमनो विजोग खमी शकातो नथी ॥ १२ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ पदमें उर्ध रेख राहि विलसि ॥ निकसि मनुं गंग गिरि हदमें ॥ हदमें लखिचित्त धरे उरमें ॥ मुनिवृंद स्वछंद एहि मदमें ॥ मदमें अब देह सनेह तेहि विन ॥ व्यास लख्यो एहि कागदमें ॥ गदमें पुनि वेद करि विनति ॥ रति ब्रह्म-मुनि वेहि संपदमें ॥ १३ ॥ ॥ अर्थ—भगवानना चरणारविंदमां उर्द्धरेखा शोभी रहीछे ॥ ते जाणे के पर्वतनी हदमांथी गंगाजी नीकल्यां ॥ ते रेखानी हदमां सोल चिन्ह जोईने मुनि मंडले अंतःकरणमां धर्या ॥ अने तेना मदथी तेओ स्वछंद रहेछे ॥ ते शरीरमां स्नेहविना (मुदमां) आनंदमां रहेछे ॥ एम व्यास ऋपिये कागलमां लख्युं छे ॥ वली वेदे गद्यमां ते भगवाननी स्तुती करी ॥ अने ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के भगवान उपर प्रीति एज संपदा एटले समृद्धिमां समृद्धि मानी ॥ १३ ॥ ॥ सवैया ॥ कररी चलनी कटिकी कसनी ॥ लसनी मुगना फलकी लररी ॥ लररी अब आय समीप लगे रहे ॥ आज निशि कुनके घररी ॥ घररी जबवेन निराट कहे ॥ गहिकें पद वाट महि पररी ॥ पररी सबतें गुनपार हरि ॥ कहे ब्रह्ममुनि सु धनी कररी ॥ १४ ॥ ॥ अर्थ—जे भगवानना हाथनी चपलता अने केडनी बांधणी अने मो-

नीनी मेरनी शोभा ॥ ते ललीने हवे आवीने मारा नेत्रनी आगल लागी रहीछे ॥ ते भगवान आजनी रात्रिये कोने घेर रह्या हशे ॥ अने ज्यारे घरमां वांसलीनो अद्‌भुत नाद सांभल्यो त्यारे ते स्वरनुं ग्रहण करीने ते तरफ हुं पगवाटे पडी ॥ ते भगवान त्रण गुणथी परछे अने सर्वथी पारछे माटे ब्रह्ममुनि कहेछे के तेनेज तुं (भनि) स्वामि कर ॥ १४ ॥ ॥ सवैया ॥ गहके वन मोर टकोर करे ॥ घनस्यामके कुंजनमें रहके ॥ रहके कछु पाय विचार लता ॥ फल फूलन झूल रही महकें ॥ महकें छन धेनु सुवेन सुने ॥ एहि जानत रूख त्रखा सहकें ॥ सहके गउ ग्वालन वाल लीये ॥ कहे ब्रह्ममुनि मग ले गहकें ॥ १५ ॥ ॥ अर्थ—वृंदावनमां भगवाननी कुंज गलीमां रहीने मोर टहुका करी गाजी रह्या छे ॥ त्यां भगवान (रह) एकांते रहीने कांइ विचार पाम्या ॥ अने त्यां वेला फल फूल झुकी रह्यां छे ॥ अने *महेकेछे ॥ अने प्रभातना क्षणमां गायोये सारी वांसली सांभली अने त्यां वननां (रूख) झाडवां वृष्टि सहन करी रह्यांछे मतलब के वरसाद थायछे ॥ त्यारे साथेनी गायो अने गोवालोना बालकोने लइने ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के प्रभु रस्तो पकडीने चालता थया ॥ १५ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ चलनी

* सुगंधी आवे छे.

अति चंचल रि हरिकी ॥ मनरंजन नेन उकी मलनी ॥ मलनी बिन केश करी मगरी ॥ कहि जात न पेच रूकी कलनी ॥ कलनी कहि भाति हन्यो गजकुं ॥ पद चातुरता फुरता वलनी ॥ वलनी तब देखीत कंस भई ॥ कहे ब्रह्ममुनि छतियां चलनी ॥ १६ ॥ ॥ अर्थ—हे सखी भगवाननी चाल अति चंचल छे ॥ अने नेत्र नुं मलवुं मनोरंजन छे ॥ अने मेल वगरना माथाना केशवडे करीने शिरपेचनी कला मवली कही शकाती नथी अने कीया प्रकारनी कलाये करीने ते भगवाने कंस ना हाथीने मार्यो हशे ॥ अने एनां पगलां भरवानी चातुरता अने वलनी स्फुरता छे ॥ ते दीठी त्यारे ब्रह्ममुनी कहेछे के कंसनी छाती निर्बल थईने चलायमान थई ॥ १६ ॥ सवैया ॥ ॥ पगीयां मनमोहनकी लखरी ॥ शिर स्याम धरी सु जरी लगीयां ॥ लगीयां उरमें प्रीय पानरुतें ॥ रसवंत अतंत कृति रगियां ॥ रगियां तेहि ओर सजोर भई ॥ दिश नंदकीशोर रती जगियां ॥ जगियां व्रजवासि हुलासि भये ॥ कहे ब्रह्ममुनि रसधा पगियां ॥ १७ ॥ ॥ अर्थ—हे सखि मनमोहन भगवाननी पाघ जो ते कृष्ण भगवाने मस्तक उपर धरी छे ॥ अने तेमां जरियान लागेलुं छे ॥ ते मारा अंतःकरणमां प्राणथी वहाली लागी ॥ ते रसीली असंत कारीगरीथी रंगेली छे ॥ तेनी तरफ मारा श-

रीरनी रगो जोरथी खेंचाइ ॥ अने ते नंदजीना पुत्र तरफ प्रीति जागी ॥ अने व्रजना वासी लोको जागृत थइने आनंद पाम्या ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के एवी ते पाग रसमां भींजाएली छे ॥ १७ ॥

॥ सवैया ॥ ॥ गलियां शुभ कुंजनकी गहरी ॥ लहरी लखि नीर धरा ललियां ॥ ललियां ब्रखुभान सुजान पीया ॥ तिन कारन जोर घटा मलिया ॥ मलियां मधु चंपक मालतियां ॥ पिय प्यारीकुं देख खुली कलियां ॥ कलियां मुख बात करे मधुरी ॥ कहे ब्रह्म लगि मनकुं गलियां ॥ १८ ॥ ॥ अर्थ—कुंजनी गलीओ मारी घाटी छे ॥ ते जमनाजीना पाणीनी लहेरोने जोइने पृथ्वी तरफ लली छे ॥ त्यां व्रष भानुनी लाडीली राधीकाजी तथा तेमना चतुरपति श्री कृश्न छे ॥ ते कारणथी जोरथी वरसादनी घटा मली ॥ वली ते पियाने ने प्यारीने देखीने मल्लिका मधु चंपो अने मालतिनी कलीओ उघडी ॥ अने ते बन्ने जणां कलरव एटले हंसना बच्चांना जेवा मधुर स्वरथी मुखे वात कहे छे ॥ ते ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के मनने गली लागी ॥ १८ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ झुकियां शिर पाग कसुंभलकी ॥ व्रजनार निहार व्रती रूकियां ॥ रूकियां मनुं लेखक चीत्र लखे ॥ किधुं रंभके थंभ घटा सुकियां ॥ सुकियां द्रग पान सुजान

मुखं ॥ लखि साम छबि पलमें लुकियां ॥ लुकियां तजि लाज समाज लीये ॥ कहे ब्रह्म पिया पदमें झुकियां ॥ १९ ॥ ॥ अर्थ भगवानने माथे कसुंबल रंगनी पाग झुकी रही छे ते जोईने व्रजनी स्त्रियोये तेमां पोताना मननी वृत्तिरोकी ॥ ते जाणे के रोकडी एटले प्रत्यक्ष चित्रामणमां चितारे लखेली होय ॥ अथवा केलना थांभलानी घटा ते करेली छे ॥ एवी बनी गई ॥ अने ते भगवानना मुखारविंदनुं पान ते नेत्रवडे करीने कर्युं ॥ अने ते कृष्ननी छवी जोईने नेत्रनी पांपणमां संताडी राखी ॥ अने लोकनी लाज तजीने सखियोनो समाज साथे लईने ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के भगवानना चरणारविंद उपर झुकी रहीं ॥ १९ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ बतियां घनस्याम कहो हमसें ॥ रहे आज पीया कुनके रतियां ॥ रतियां द्रग होय रहे मुखतें ॥ तुतलात हो बेन नई भतियां ॥ भतियां पुनि हार उठे छतियां ॥ गतियां कुन प्रापत आ गतियां ॥ गतियां पग शिथल होय रहीं ॥ कहे ब्रह्ममुनि कुन सो बतियां ॥ २० ॥ ॥ अर्थ राधिकाजी कहेछे के हे घनश्याम अमारी साथे वात करो के आज राते तमे कोने घेर रह्या हता ॥ तमारी आंखो राती बनीछे ॥ अने मुखे वचन तोतलां नवी भातनां बोलोछो ॥ वली कोई भातना हार छातीमां उठयाछे ॥ आवी गति तमे शी

गतिथी पाम्या ॥ तमारा पगनी चाल नरम थईने रहीछे ॥ ते ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के कोनी मोवतथी एम थयुं ॥ २० ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ मलना मलना करि पीर हिया घनश्याम पिया कहा संकलना ॥ कलना कछु पूरव मोय परी ॥ तुमरी रति आकृतीको गलना ॥ गलनां विन छान सनेह किया ॥ उरमांई अछेह भई बलनां ॥ बल ना हमरो तुमपें कछुवे ॥ कहे ब्रह्ममुनि अबतो मलना ॥ २१ ॥ ॥ अर्थ—हे प्रभु तमने मलवुं मलवुं एवी झंखना करीने हुं हैयामां पीडा पामी ॥ पण हे घनश्याम स्वामि एवी शी (संकलना) गोठवण तमे करीछे ॥ तेनी प्रथम मने कांई कल पडी नहीं ॥ के तमारी प्रीति ते शरीरना आकारने गली जाय एवीछे ॥ अने प्रथमथी गलणे गल्या वगर मतलबके विचार्या वगर में स्नेह कर्यो मतलब के विचार्या वगर में स्नेह कर्यो ॥ अने हवे छातीमां अपार बलतरा थई ॥ पण तमारा उपर अमारुं कांइ बल चालतुं नथी ॥ माटे ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के हवे तो आवीने मळो ॥ २१.

॥ *राधिकाजी अने भगवानना विजोग विषे ॥

* जाणेके हुंज राधिकाजी छुं एवा भावथी ब्रह्मानंदस्वामिये आ विरहनु वर्णन कर्युं छे.

॥ सिंधावलोक सवैया ॥ ॥ पीयसें एही जाय कहो मुखसें ॥ सहि जात न पिर ब्रहा हीयमें ॥ हियमें बिन भेटन भेट व्यथा ॥ सब जानमें काह कथा जियसें ॥ जियमें अब जानकी घातबनी ॥ कहा बात घनी मुखमें कियमें नहि घेर बने ॥ ब्रह्मानंद ॥ टेर सुनाय कहो पियमें ॥ १ ॥ ॥ अर्थ—राधिकाजी कहे छे के हे सखि मारा स्वामि पासे जईने मोढेथी एटलुं कहे के मारा हैयाथी विरहनी पीडा सही जाती नथी ॥ अने आ छातीये भेटया वगर पीडा मटती नथी ॥ तमे सर्व वात जाणोछो ॥ माटे जीभे करीने शी वात कहीए ॥ हवेतो जीवथी जवानी वात बनीछे ॥ घणी वात मोढेथी शी कहीये ॥ ब्रह्मानंद स्वामी कहेछे के कोईनाथी (वार) मदद बनी शके एम नथी माटे बोलावीने संभलावीने स्वामिने कहो ॥ १ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ मनकि सबजाननहार तुमे ॥ तन भेटन पीर मिटे तनकी एही रीत जो प्रीत करे ॥ जेहि चात्रुक चित्त-त्रपा धनकी ॥ धनकि विधि डंस लग्यो उरमें ॥ सहि जात व्यथा न प्रतिदिनकी ॥ दिनकी निश-कि ब्रह्मानंदके ॥ तुम पास लगि व्रति मो मनकि ॥२॥ ॥ अर्थ—हे प्रभु तमे मननी बधी वात जाणनारछो ॥ माटे आ शरीरे ज्यारे हुं तमने भेटीश ॥ त्यारे शरीर-नी पीडा मटशे ॥ (तनकी) लगारे जो एवी रीते

प्रीती करे तो जेम बपैयाना चित्तमां वरसादनी तरशा रहेछे ॥ एम थाय ॥ जेम घण नामनो जीवडो लाकडानी अंदर डंख मारे ॥ तेम मारी छातीमां विरहनो डंक लाग्योछे अने रोज रोजनी पीडा सहन करी जती नथी ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के रात अने दहाडो मारा मननी व्रत्ति तमारी पासे लागी रहीछे ॥ २ ॥

॥ सवैया ॥ पियरा नहि जानत पीर सखि ॥ मोय धीर धरात नहि हियरा ॥ हियरा बिन भेट भये अवतो ॥ विधि क्रून कटे दुखके दियरा ॥ दियरा दिल द्योत नहिं तवलु जवलुं नहिं ताप मिटे जियरा ॥ जियरा ब्रह्मानंद चाह जगी ॥ रट एक लगी पियरा पियरा ॥ ३ ॥ ॥ अर्थ–हे सखि मारी पीडा भगवान जाणता नथी अने माराथी हैयामां धीरज धराती नथी ॥ हवे तो हैयुं भगवानने मल्या वगरनुं थयुं माटे हवे दुःखना दहाडा कये प्रकारे कापीये ॥ ज्यांसुधी जीवमांथी आ विरहनो ताप मटे नही त्यां सुधी * दिवस मनमां प्रकाश करतो नथी ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के जीवमां एवी चाहना जागी रही छे अने हे स्वामी हे स्वामि एवी एकज रटना लागी रहीछे ॥ ३ ॥ ॥सवैया॥

---

* मनलबके दिवसे पण अंतःकरणमां वेशुद्धि रुपी अंधारुं रहेछे.

कहीये किनसें दिल बात एहि ॥ अब साम विजोग व्यथा सहिये ॥ सहिये जुत प्रेम प्रसे बिन मान ॥ विराम केसें दिलमें लहिये ॥ लहिये विधि अंकनकी गतियां ॥ छतियां ब्रह तापनसें दहिये ॥ दहिये ब्रह्मानंद दोष किसे ॥ सब घात न प्रीतमकी कहिये ॥ ४ ॥ अर्थ–हवे आ मननी वात केने कहीये अने भगवानना विजोगनी पीडा सहन करीये छीये ॥ नक्की प्रेमसहीत ए भगवाननो स्पर्श कर्या वगर मनमां विराम शी रीते पामीये ॥ ब्रह्माना लखेला आंकनी गति समजी लइये छीये अने विरहना तापथी छाती बालीये छीये ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के केने दोष दइये ॥ आ बधी घात, प्रीतमनीज कहीये अथवा आ बधीज घात प्रीतमनी नहीं पण देवना आंकनो वांक पण खरो ॥ ४ ॥ ॥ सवैया ॥. उरकी विपरीत भइ गतियां ॥ जबतें सुनि टेर बंसी सुरकी ॥ सुरकी नरकि चित चाह टरी ॥ उनमें जु लगी जन आतुरकी ॥ तुरकि तेहि भेटत तिव्र उठे ॥ कछुवे चीत डार दइ भुरकि ॥ भुरकि नीसाकी सुध भुल गइ ॥ पीय जान ब्रह्मानंदके उरकी ॥ ५ ॥ ॥ अर्थ–ज्यारथी ए भगवाननी वांसलीना स्वरथी पोते अमने बोलावता होय एवुं अमे सांभळ्युं त्यारथी अमारा मननी गति विपरित थई गई ॥ अने बीजा देवनी

अने माणसनी चाहना अमारा मनमांथी टली गई ॥ अने जेम प्रेमातुर माणस होय तेवी प्रीति एनी साथे अमारे लागी ॥ अने तेमने मळवाना तिव्र तर्क मनमां उठेछे जाणे के कोई प्रकारनी भुरकी तेमणे नांखी होय ॥ अने सवारनी अने सांजनी सुध भुली गई ॥ ब्रह्मानंद स्वामी कहेछे के ते मारा मननी वात भगवान जाणेछे ॥ ५ ॥ सवैया ॥ ॥ घटमें घन डंस लग्यो सजनी ॥ नाहिं नंदकिशोर पिया पटमें ॥ पटमें भरमास उदास रहुं ॥ लगी सास उसास वाहि रटमें॥ रटमें गति चात्रुकाकि जुं भई ॥ नाहिं सीतल साम भुजा तटमें ॥ तटमें वटमें मग ढुंढत हुं ॥ ब्रह्मानंद क्षीन भई घटमें ॥ ६ ॥ ॥ अर्थ—हे सखि मारा शरीरमां घण नामना जीवडाना जेवो विरहनो डंक लाग्यो छे ॥ केम के नंदना पुत्र श्रीकृश्न स्वामी (खाटमां) पलंगमां नथी ॥ तेथी (में) हुं छ महिना थयां उदास रहुंछुं ॥ अने श्वासो श्वासे तेमनी रटना लागी रहीछे ॥ ते रटनामां बापैयाना जेवी मारी गति थईछे ॥ अने शीतळ एवा श्रीकृश्न भगवान मारा हाथ पासे नथी ॥ अने जमनाजीना कांठामां तथा रस्तामां ते भगवाननो मारग गोतुंछुं ॥ अने ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के हुं शरीरमां क्षीण थई गई छुं ॥ ६ ॥ ॥ सवैया ॥ सजनी नाहिं स्याम सुजान पीया ॥ भरआत हिया अतिसें

दजनी ॥ दजनी कहा लेख लख्यो उलटो ॥ रहुं आतुर सोक दिवा रजनी ॥ रजनी मोय अंघ्रीसरोजहुकी ॥ केहि भांत रखुं तन आलजनी ॥ लज नी मोय मेल अकेल गयो ॥ ब्रह्मानंद पीर भई सजनी ॥ ७ ॥
॥ अर्थ–हे सजनी सुजाण एवा श्रीकृष्ण स्वामि आंहीं नथी तेनी अतीशे दाझथी मारुं हैयुं भराई आवे छे अने द्रिजनी एटले ते ब्रह्माणिये एवो शो अवलो लेख लख्यो के तेथी हुं दिवस ने रात शोकातुर रहुंछुं ॥ ते भगवानना चरण कमलनी रजनी मने आशा छे माटे आ शरीरे करीने शी रीते लाज राखी शकुं ॥ अने ते निर्लज मने मुकीने एकलो गयो माटे ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के हे सजनी मने पीडा थई अथवा ओढवानी सुजनी ते मने पीडा रूप थई पडी छे ॥ ७ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ कुनमें कहुं घातकि वात सखी ॥ दहि देहपें लेपगयो लुनमें ॥ लुनसें भरअंक नसंक बसे करी प्रीत विलंब रहे उनमें ॥ उनमें नहिं भाल में लाभ आलि ॥ वनमाली गये कहा ओगुनमें ॥ गुनसें पुनसें धन भेटतनुं ॥ ब्रह्मानंद वात कहे कुनसें ॥ ८ ॥ ॥ अर्थ–हे सखि एना दगानी वात हुं कोने कहुं मारुं शरीर बालीने उपर लूण लगावी गयो ॥ अने ते (सलुणी) रसिली कुबजा साथे आलिंगन करीने निःशंक थईने त्यां रह्यो अने एनी साथे प्रीति

करीने रोकाइ रह्यो ॥ हे (आली) सखि ए भगवान नाथी मारा नशीबमां लाभ लखेलो नथी ॥ नहीं तो ते वनमाली मारा कया अवगुणथी तजीने गया ॥ कोइ प्रकारना गुणथी के पूर्वना पुन्यथी ते जेमने भेटे तेनो देह धन्यछे ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के ते वात कोनी आगल कहीये ॥ ८ ॥

॥ सवैया ॥ ॥ बरहा तन तावत है सजनी ॥ अब तो सुख अंतरमें न रहा ॥ न रहा सुख वास उदास फिरुं अरु प्रेमको पास गले परहा ॥ परहा घर आवनकी जुं कहि ॥ सुधहु न लहि तिनको डरहा ॥ डरहा जबलुं नहि देख परे ॥ तबलुं कछुं वक्र भये गरहा ॥ गरहा डर नेक नहिं उनके ॥ कहे ब्रह्ममुनि उमग्यो बरहा ॥ ९ ॥ ॥ अर्थ—हे सजनी मारा शरीरने विरह तपावे छे ॥ अने हवे तो अंतःकरणमां सुख रह्युं नहीं ॥ अने घरमां पण सुख रह्युं नहीं तेथी उदास थइने फरुं छुं ॥ अने प्रेमनो पासलो मारा गलामां पड्यो छे ॥ पर एटले शत्रुना हणनारे घर आववानुं कह्युं हतुं ॥ पण फरीथी शुध लीधी नहीं ॥ हायरे तेनो मने भय उपजे छे ॥ अने ते भयनो हणनार ज्यां सुधी मारी नजरे नहीं पडे त्यां सुधी हुं जाणुं छुं के मारा ग्रह कांइक वांका थया छे ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के ते ग्रह वांकानो तो डर

हुं लगारे ग्रहण करती नथी पण आ विरहनुं दुःख वडी आव्युं छे तेनो डर छे ॥ ९ ॥ ॥ सवैया ॥ कुबरि संग जाय विलंब रहे ॥ हम तो दुःख दूर झूर भइ दुबरि ॥ दुबरि इनकि अब बात सखि ॥ इन बातनतें करिकें तुं बरी ॥ तुं बरी ज्युंहि खार कछु न तज्यो उन संग करि लगनी खुबरी ॥ खुबरि तन दासि विलासि भये ॥ कहे ब्रह्ममुनि विलंबेकुं बरी ॥ १० ॥ ॥ अर्थ–जइने कुबजानी साथे रोकाइ रह्या ॥ अने हुं तो दुःखे झुरीने दुबली थइ गइ ॥ हे सखि हवे एनी वात दबावी राख अने एनी वातो करवामां तुं मोटी छे ॥ अने तुं बडी जेम लगारे कडवाश तजे नहीं ॥ तेवा गुणवाली कुबजा साथे तेमणे खुब प्यार कर्यो ॥ अने ते दासीना शरीर साथे खूब विलास करनारा थया ॥ अने ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के ते कुबजा पण (विलंबेकुं) रोकी राखवामां बडी हुशियार छे ॥ १० ॥ सवैया ॥ ॥ ठगनिकु नार मिलि पियकुं ॥ हमरे उर जार गये अगनि ॥ अगनी हमकुं सुगुनी कुबजा ॥ लगी वाहि के संग अती लगनी ॥ लगनी सुख सेज करेज बरे ॥ भइ साचि कृतांतहुकी भगनी ॥ भगनी मोय आस विलासहुकी ॥ कहे ब्रह्ममुनी अब तो ठगनी ॥ ११ ॥ ॥ अर्थ–मारा स्वामिने कोइ ठगारी नारी मली तेथी ते

मारी छातीमां आग लगाडीने गया मने अवगुणी गणी अने कुबजाने मारा गुणवाली गणी ॥ तेथी तेनी माथे वणी प्रीति लागी ॥ अने ज्यारे मुख मज्या मारी नजरे लागेछे त्यारे मारुं काळजुं बळेछे ॥ अने जाणुंछुंके ते खरेखरी जमनी वेन थई लागी हे वेन मने ते भगवान माथे विलास करवानी आशाछे ॥ पण ब्रह्ममुनि कहेछे के हवे तो हुं ठगाई ॥ ११ ॥

॥ सवैया ॥ ॥ दुखमें दुख एहि विदेश पिया ॥ भर-आत हिया पियरी मुखमें ॥ मुखमें व्रह ताप विलाप करु ॥ पिय आपतो जाय रहे मुखमें ॥ मुखमें एहि धीरसु धीर छरी ॥ नहिं मुजगति न परी रुखमें ॥ रुखमें रहनो सो भलो ब्रह्मानंद ॥ जान वरो दहनो दुखमें ॥ १२ ॥ ॥ अर्थ—स्वामि परदेशमां होय ॥ एज मोटुं दुःखमां दुःखछे ॥ अने एज मुख्य पीडामां हैयुं भराइ आवेछे ॥ तेथी मुखमां विरहना तापनो विलाप करुंछुं ॥ अने स्वामि पोते तो मुखमां जईने रह्याछे ॥ अने मारी छाती धीरज धरीने ते पीडा शुं खमी शके ॥ मने कांई गति सुजती नथी ॥ केमके मारो स्वामि मारी रुखमां एटले मारी मरजीमां चालतो नथी ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के (रुख) झाडीमां रहेवुं ते मारुं पण आवा दुःखमां बळवुं ते महा भुंडुं जाण ॥१२॥

॥ सवैया ॥ ॥ जरिऊं दिन रेन न चेन हिया ॥ परदेश

पिया अब क्या करिऊ ॥ करिहुं तन जारकें खाख सखी ॥ एहि पीरमें धीर केसें धरिहुं ॥ धरिहुं शिर जोगन भेख अबे ॥ भगवा करिकें जगमें फरि हुं ॥ फरिहुं कब देखीहुं नेननमें ॥ कहे ब्रह्ममुनि व्रहेमे जरिहुं ॥ १३ ॥ ॥ अर्थ–दिवसने रात वलुंछुं अने हैया मां चेन पडतुं नथी ॥ अने जाणुंछुं के स्वामि परदेश छे हवे हुं शुं करीश ॥ हे सखि आ शरीर बालीने राख करीश केमके आवी पीडाथी धीरज शी रीते धरी शकुं ॥ कांतो हवे माथे जोगणनो वेश धरीने भगवां वस्त्र करीने जगतमां फरीश ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के हुं विरहमां बली मरीश माटे ॥ भगवानने आ आंखे फरीथी क्यारे देखीश ॥ १३ ॥

॥ उपदेश अंग सिंहावलोक सवैया ॥

॥ रटरे एक नाम निरंजनको ॥ मन रंजन मेल सबेह टरे ॥ हटरे विषया सुखतें अबतो ॥ घट जात छिन छिनमें घटरे ॥ सुख काज अकाज भ्रमे ॥ सठ काज न होय रयो लटरे ॥ लटरे जगसें सुध सोध हरि ॥ ब्रह्मानंद स्याम सदा रटरे ॥१॥ ॥ अर्थ–हे जीव अंजन जे माया तेणे रहित एवा एक भगवानना नामनुं रटण कर के जेथी मन मेलथी रंगाएलुं होय ते बधो मेल टले ॥ अने हवे तो विषयना सुखथी पाछो हठ ॥ केमके आ शरीर क्षण क्षण वारमां

घटतुं जाय छे ॥ अने घट एटले दृढ सुखने वास्ते न करवाना काम करवाने भमेछे ॥ अने हे शठ तुं लोकनी लाजमां लटकी रह्योछे ॥ हवे जगतथी पाछो लटीने शुध्ध भगवाननो शोध कर अने ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के सदैव घनश्यामनुं रटन कर ॥ १ ॥ ॥सवैया ॥ ॥ करले दृढ नेह रमापतिसें ॥ सुनी संत गीरा चितमें धरले ॥ धरले त्रीविधि क्रम पुंज सबे ॥ पल एक हि होत सही परले ॥ परले तट जानकी चाह रखे ॥ सतसंगत रीत अनुसरले ॥ सरले चित लोकन लाज तजी ॥ ब्रह्मानंद काज स्वयं करले ॥ २ ॥ अर्थ—हे जीव लक्ष्मिजीना पति साथे दृढ प्रीति करीले ॥ अने संतनी वाणी सांभलीने चित्तमां धरीले ॥ जेथी (धरले) आगलनां त्रण प्रकारनां कर्मना ढगला (संचित प्रारब्ध क्रियमाण) करेला ते बधा एक पलमां नक्की प्रलय थई जाय ॥ अने जोतुं भवसागरने सामे कांठे जवानी चाहना राखतो होय तो सतसंगनी रीतीने अनुसरीले ॥ अने (सरल) पांशरा मनथी लोकनी लाज तजीने ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के पोतानु काम करीले ॥ २ ॥ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ लखरे नररूप अनुंप हरि ॥ तेहि ध्यान सदा उरमे रखरे ॥ रखरे दिन एक देहादि सबे ॥ मनसें अव मेल विषे परखरे ॥ परखरे जमदूत खरे शिर-

पें ॥ नहिं आवत लाज करतें नखरे ॥ नखरे धन धाम अकाम सबे ॥ ब्रह्मानंद साम छबी लखरे ॥ ३ ॥ ॥ अर्थ–हे जीव जेनुं अनुपम रुपछे एवा नररूप अनुपम भगवानने नीरख अने तेनुं ध्यान निरंतर मनमां राख ॥ केमके एक दिवस एवो आवशे के आ देह आदिक बधुं रखडतुं रहेशे ॥ माटे हवे विषयनो पक्ष मनथी मूकीदे ॥ अने पाखरेला जमदूत माथा उपर उभा छे तोपण तने लाज आवती नथी ॥ अरे तारूं धन अने धाम वगेरे बधुं कांई कामनुं नथी माटे तेने नांखीदे ॥ अने ब्रह्मानंद स्वामि कहेछेके बधुं तजीने भगवान नी छबि निरख ॥ ३ ॥ सवैया ॥ ॥ हकहे एक नाम हरि जगमें ॥ तेहि प्राप्त होनाकि यातकहे ॥ तकहे एहि छांड विषे सुखकुं ॥ तीनके नीत जीवतकुं धिकहे ॥ धिकहे जमदुत तनायु गई ॥ कुबधि नर राम अजु न कहे ॥ नक हे के नहिं संत टेर कहे ॥ ब्रह्मानंद एक हरि हकहे ॥ ४ ॥ अर्थ–आ जगतमां एक परमेश्वरनुं नामज योग्य छे अने ते प्राप्त थवानो आ समय छे ॥ तेम छतां तेने छांडीने विषयना सुखने जे ताकशे तेना जीवतरने नित्य धिक्कार छे ॥ अने जमदूत धकशे एटले मलशे ॥ केम के शरीरनुं आयुष्य जतुं रहेछे ॥ तोपण कुबुध्धि माणस हजु सुधी जीभे रामनुं नाम कहेतो नथी ॥ साधु पुरुषो पोका-

रीने कहेछे के तारे नाक छेके नहीं ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के एक परमेश्वरनुं नामज खरुं छे ॥ ४ ॥ सवैया ॥ ॥ घरकी मुख बोलत डोल विषे ॥ अति बुद्धि बेकाई गई नरकी देह प्राप्य अप्राप्य आलोचत ॥ सोचत चित विषे तरकी ॥ तरकी जुत काम विराम न पामत ॥ धाम धनं ममता धरकी ॥ धरकी सुध सोध सो बोध गुरू ॥ ब्रह्मानंद सुध स्वयं घरकी ॥ ५ ॥ अर्थ–डोल घालीने हे माणस तुं धुरकीने मोढेथी बोलेछे अने तारी बुद्धि छेके बेचाई गई छे ॥ अने न पामी शकाय एवी नरनी देह पामीने झंख ना करेछे ॥ अने चित्तमां फिकर करीने विषयना तर्क करेछे ॥ कामनाए सहित तर्क करवामां विराम पामतो नथी ॥ अने घर धन अने जमीननी ममता राखे छे ॥ पण घरनी एटले प्रथमनी शुध्धीनो शोध कर ॥ अने गुरुनो बोध सांभल अने ब्रह्मानंद स्वामि कहेछेके पोताना खरा घरनो शोध कर ॥ ५ ॥

॥ भक्ति अंग सिंहावलोक सवैया ॥

॥ अटकी जिनके चित आय अहो निस ॥ नाथ सुजान छवी नटकी ॥ नटकी भ्रम चाल तिसे उर अंतर ॥ साधन व्याध नहीं घटकी ॥ घटकी नहीं वार हजार संभारत ॥ तार लगी पलनां मटकी ॥ मटकी ब्रह्मानंद आस तिसे ॥ एहिलोक परलोक नहिं

अटकी ॥ १ ॥ अर्थ–जेना अंतःकरणमां रातादिवस नटवर एवा सुजाण कृष्ण स्वामिनी छवि आवीने ठरी होय ॥ तेना मननी अंदर भ्रमणानी जाल टकी रहे नहीं ॥ अने शरीरनुं सुख साधन करवानी व्याधि तेने रहे नहीं ॥ अने हजार वार एटले अनेक वार शरीरनी संभाल ते ले नहीं अने भगवानना मूर्ति साथे एकतार दृष्टि लागी होय तेथी पांपणे मटकुं मारे नहीं ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के तेने बीजी बधी आशा मटी गई होय अने आलोकनी के परलोकनी आशा मनमां अटकी न होय १ ॥ सवैया ॥ उलटि अंखियां जगमें अतिमें ॥ लखि श्याम स्वरुप भई सुलटी ॥ सुलटि भ्रंग रीत व्रति उनकी ॥ वसि व्यापक आप रहे समटी ॥ समटी तुल देह रु गेह सबे ॥ प्रभु कंज पदे रतीओं प्रगटी ॥ प्रगटी उर जोत सद्योत पीया ॥ ब्रह्मानंद रिस भई उलटी ॥ २ ॥ अर्थ–आ जगतथी तेनी अतिशे उलटी दृष्टि थाय अने भगवाननुं स्वरुप जोईने सवळी दृष्टि थाय ॥ अने एना मननी वृत्ति भमरानी पेठे जेम एल लटकी रहे ॥ तेमज सारी रीते भगवाननी मूर्ति साथे लटकी रही होय अने ते भगवाननी मूर्तिमां व्यापक थईने पोते सामटी वशी रहे अने देह तथा घर आदिक बधामांथी समटी एटले एकठी थईने भ-

गवानना चरणारविंदमां प्रीति प्रगट थाय ॥ अने तेना अंतःकरणमां भगवानना प्रकाशनी जोत सदा प्रगट थई तेथी ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के आ जगतनाथी तेनी रीत उलटी छे ॥ २ ॥ सवैया ॥ ॥ दिलमें दिलदार वाहि संग प्यार ॥ ओहि मेरा यार वसे पलमें पलमें तेहि वार हजार संभारत ॥ तो हु अपार नये कलमें ॥ कल में जु गई छबि देखनकुं ॥ विधिरूप अनूंप धरे वलमें ॥ वल में ब्रह्मानंदकुं जुं मिले ॥ दिलदार मो यार वसे दिलमें ॥ ३ ॥ अर्थ–अंतःकरणमां जे अंतरजामी रहे छे ॥ तेनी साथे मारे स्नेह थयो ॥ अने एज मारा प्रीतम मारी आंखोमां वश्या ॥ तेने हुं एक पलमां हजार वार संभारुं छुं तो पण ते भगवाननुं रूप अपार छे ते कल्पनामां आवतुं नथी ॥ ते छबि जोवा सारु काले हुं गई हती ॥ त्यारे उपमा न आपी शकाय एवा प्रकारनुं रूप सबल धर्युं हतुं ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के जे भगवान मने मल्या ॥ तेना उपर हुं बलहारी जाउं छुं ॥ अने ते प्यारा मोटा मनवाला मारा मनमां वश्या ॥ ३ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ छुटियां शिर केशहुंते अलके ॥ झलके बिच कुंडलसें थटियां थटियां अति लोल कपोलनपें ॥ अहि बाल रु मक्र शशि नटियां ॥ नटियां फटियां द्रग देखतहि ॥ मुखचंदमें कुंद क-

लि घटियां ॥ घटियां जगता भ्रति मंद भ्रति ॥ ब्रह्मानंद साम छटा छुटियां ॥ ४ ॥ अर्थ–भगवानना मस्तकना केशनी लट छूटी छे ते कानना कुंडलनी वच्चे अथडाई झलके छे ॥ ते अति चपल लमणा उपर ठरी छे ॥ ते जाणे के मुखरूपी चंद्रनी कोर उपर सरपनुं बच्चुं अने मगरनुं बच्चुं शोभे छे ॥ एमां सरपना जेवी लट छे ॥ अने मगरना गुंचलाने आकारे कुंडल छे ॥ वली ते मुखरूपी चंद्रमां डोलरनी कलीना जेवा दांतनी (घटना) रचना देखतां अंतःकरणनो (तटीयां) अज्ञानरूपी पडदो फाटी गयो तेथी जगतना आकारनी अज्ञानपणानी वृति घटी गइ ॥ अने ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के भगवाननी शोभा अथवा प्रकाश अंतःकरणमां छूट्यो एटले फेलाइ गयो ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥ ॥ मुर्ति मन मोहनकी मधुरी ॥ मगजात लखे इगसें दुरनी ॥ दुरती नहिं नेक पले न छपे ॥ पलह्र नटरे जनके उरती ॥ उरती भ्रभ जाल विशाल भगे ॥ छबि सुंदर साम लगी सुरती सु रति द्रढ अंघ्रिसरोजहुसें ॥ ब्रह्मानंद चित्त बसे मुरती ॥ ५ ॥

॥ अर्थ–मनने मोह पमाडे एवा भगवाननी मूर्ति मधुरी छे ॥ ते भगवाननी मूर्तिने में रस्ते जतां वेगलेथी दीठी ॥ ते मूर्ति छानी राखतां एके पल छानी रेहेती नथी ॥ केमके ते हरिजनना हृदयमांथी एक

पल खसे एवी नथी ॥ अने मनमां रहीने ते मूर्ति कर्मनी जालने भांगी नांखे छे ॥ एवी सुंदर श्याम-नी छबिमां मारी सुरत लागी छे ॥ अने तेमना चरण कमल साथे दृढ मारी प्रीति लागी छे ॥ अने ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के ते मूर्ति मारा चित्तमां वशी छे ॥ ८ ॥ सवैया ॥ द्रगमें छवि साम सुजाहुकी ॥ उर्धरेख विशेख जुंके पगमें ॥ पगमें ॥ क्रम पुंज समूरतसें ॥ दुख दूर गये जो अये ढगमें ॥ ढगमें पुन पूरव देह किये ॥ मनरंजन आय मिले मगमें ॥ मगमें अब देह सनेह कछु ॥ ब्रह्मानंद साम वसे डूगमें ॥ ९ ॥ ॥ अर्थ–सुजाण श्री कृष्णनी छाबि मारी दृष्टिमां वशी तेमना चरणारविंदमां उर्द्ध रेखा विशेष जुकी रही छे ॥ तेथी एक पगलामांज मारा कर्मना जथा मूल सहित तेमज दुःखना ढगला दूर जता रह्या ॥ में पूर्व भवना देहमां पुन्यना ढगला कर्या हशे ॥ तेथी मनरंजन भगवान मने रस्तामां आवीने मल्या ॥ हवे मने मारा देह साथे स्नेह कांइ गमतो नथी ॥ अने ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के घनश्याम मारी दृष्टिमां वश्या ॥ ९ ॥ सवैया ॥ ॥ लखियां छवि कांनऊकि दुरतें ॥ पुरतें हद्रि प्रेम चले सखियां ॥ सखियां आति होय विलास करे ॥ एक तार लगे पीयमें अखियां ॥ अखियां छवि नेनसें पान करे ॥

प्रति अंग थटे न जुटे पखियां ॥ पखियां ॥ रखियां द्रग भालहुमें ॥ ब्रह्मानंद माम छबि लखियां ॥ ७ ॥ ॥ अर्थ–श्रीकृष्ण भगवाननी छबि वेगलेथी में दीठी तेथी हे सखि मारा हृदयमां प्रेमनुं पूर वही चाल्युं ॥ अने मारी आंखो ते स्वामिनी साथे एक तार लागी ॥ ते आंखो भगवाननी सखियो थईने अतीशे विलास करवा लागी ॥ अने ते अखंडित छवि में नेत्र वडे पीधी ॥ अर्थात् मनमां उतारी ॥ अने मारी दृष्टि भगवानना अंग अंग प्रत्ये ठरी रहेती हती ॥ अने पांपणो जोडाती न होती मतलब के मठकुं मारती न होती ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के मारा नेत्रनी पांपणो चडावीने कपालमां में राखी ॥ अने एवी खुल्ली आंखे भगवाननी छबि निरखी ॥ ७ ॥ सवैया ॥ ॥ गजरे झुक फूल हुके गलमें ॥ सब अंग सुचंग किये सजरे ॥ सजरे क्रम जाल बिशाल सबे ॥ निज नाथ जिनुं सु लखे नजेर ॥ नजरे जप जोग समाधिहुसें ॥ जेहि चाहत शेश शंभू अजरे ॥ अजरे मद मोह टरे लखतें ॥ ब्रह्मानंद चित चितें गजरे ॥ ८ ॥ अर्थ–भगवानने गजरा एटले फूलना बेरखा झुकी रह्यां छे तथा गळामां फुल झुकी रह्या छे ॥ अने सर्वे अंग सजीने स्वच्छ करयां छे ॥ एवा पोताना स्वामिने जेणे नजरे निरखा होय ॥ तेनी कर्मनी

मोटी जाल ते वधी (जरे) बळी जाय ॥ जे भगवानની छबिने जोग जप ने समाधी वडे नजरे जोवाने शेष नाग महादेवजी अने ब्रह्मा चहाय छे ॥ अने ते जोतां मद अने मोह अजर होय ते पण टळी जाय ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के जे छबिने गजराजे एटले हाथीए चित्तमां चितवन करी हती ॥८॥

राधारमण देवनी स्तुति ॥ दोहा ॥ ॥

रहो अंतर राधारमन ॥ सुंदर वर घनश्याम ॥ भवजल पार उताराहि ॥ निगमसार जेहिनाम ॥ १ ॥

अर्थ– सुंदर वर घनश्याम एवा राधारमण देव मारा अंतःकरणमां रहो ॥ जे भगवाननुं नाम वेदनो पार छे अने ते भवसागरने पार उतारे छे ॥ १ ॥

हरिगीत छंद ॥ ॥ जेहि नाम आधा गयंद साधा जल अगाधा अंतरे ॥ जब जुड खाधा करी हाधा शरण लाधा अनुसरे ॥ मिट गे उपाधा चेन बाधा बंध दाधा धा करी ॥ जय रमन राधा मित्र माधा मित्र माधा हरन बाधा श्रीहरी ॥ १ ॥ ॥ अर्थ–जे भगवाननुं अरधुं नाम अथाह पाणीनी गजराजे साध्युं ॥ ते हाथीने ज्यारे (जुडे) मगरे पकडयो अने खावा मांडयो हतो ॥ त्यारे ते हाथी भगवानना शरणना लाभने अनुसर्यो मतलब के भगवाननुं शरण माग्युं ॥ तेथी तेनी उपाधी एटले दुःख मटी गयुं ॥

अने चेन एटले सुख वध्युं ए रीते भगवाने घा करी एटले दोडीने ते हाथीनुं बंधन बाली नांख्युं ॥ मतलब के मगरने मारीने. तेनुं बंधन मटाडयुं ॥ एवा हे राधारमण देव हे मित्ररूप माधव पीडाना हरनारा श्रीहरी तमारी जय थाओ ॥ १ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ वसुदेव द्वारे देह धारे भार टारे भोमके ॥ सुर काज सारे संत तारे द्वेषि मारे होमके ॥ सुरपति हंकारे मेघ वारे व्रज उगारे गिरि धरी ॥ जय रमन राधा मित्र माधा हरन बाधा श्रीहरी ॥ २ ॥ ॥ अर्थ—तमे वसुदेवने घेर देह धरीने पृथ्वीनो भार उतारयो ॥ देवतानां काज सार्यां संतने तार्या अने यज्ञना द्वेशि दैत्योने मार्या ॥ अने इंद्रे ज्यारे वार मेघने हकार्या ॥ त्यारे गोवर्धने पर्वतने धारीने व्रजवाशीने उगार्या ॥ एवा हे राधारमण देव ॥ २ ॥ छंद ॥ ॥ बक लीन प्राना शकट भानां जगत जाना जोरहे ॥ व्रज हा तुफाना व्योम तानां कंठ डाना दो रहे ॥ अतिसं मुझाना मृत्यु माना करी त्रिछाना शिल परी ॥ जय रमन राधा मित्र माधा हरन बाधा श्री हरी ॥ ३ ॥ ॥ अर्थ तमे पूतनाना प्राण लीधा अने शकटासुरने भांगी नांख्यो ते तमारुं जोर बधा जगते जाण्युं ॥ त्यारे व्रजमां तोफान थयुं अने तमने दैत्य आकाशमां ताणी गयो त्यारे तेने कंठे बे

हाथ भीडीने तमे रह्या ॥ त्यारे ते दैत्य अतिशे मुझायो ॥ अने पोतानुं मोत आव्युं एम मान्युं ॥ अने शीला उपर बिछानुं कर्युं ॥ मतलब के पथ्थर उपर पछडायो ॥ एवा हे राधारमण देव ॥ ३ ॥ ॥ छंद ॥ राधा सु गोरी वय किशोरी सांज भोरी नीसरे ॥ तब आत दो- री अंग खोरी दान चोरी शिर धरे ॥ करि द्रग कठोरी जोर जोरी बाह मोरी बल करि ॥ जय रमन राधा मि- त्र माधा हरन बाधा श्रीहरी ॥ ४ ॥ ॥ अर्थ–सारा गोरा रंगनां राधिकाजी जेनी उमर थती जुवानीमां हती ॥ ते सांज सवार मही वेचवा नीकलतां हतां ॥ त्यारे तमे दोडी आवीने तेनुं मुख उघाडुं करीने दाणनी चोरी तेने माथे मूकता हता ॥ अने कठोर दृष्टि करीने तेनी दृष्टिनी जोडे जोडीने बल करीने तेनो हाथ मरड- ता हता ॥ एवा हे राधारमण देव ॥ ४ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ नटवर तरंगी चाल चंगी नवलरंगी नाथ ज्युं ॥ लटके कलंगी मानतंगी जीत जंगी हाथ ज्युं ॥ तनतें त्रिभंगी गोप संगी त्रिय उमंगी ईश्वरी ॥ जय रमन राधा मित्र माधा हरन बाधा श्रीहरी ॥ ५ ॥ ॥ अर्थ–हे नृत्यकलामां श्रेष्ठ एवा अने मनना तरंगवाला जेनी चाल सुंदर छे एवा नवा रंगवाला श्री कृष्ण स्वामि ॥ तमारी पागमां कलगी लटके छे ॥ अने तमे मोटा, मान वाला छो ॥ अने घणा जुद्धमां जीतेला एवा तमारा

हाथ छे ॥ तमे शरीरे त्रण ठेकाणे वलेला छो (डोके केडे अने पगने कांडे) अने गोवालानी माथे छो; अने गोपनी स्त्रियो उमंगे तमने जुवे छे ॥ एवा हे राधारमण देव ॥ ५ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ मुरली वजैया गोपरैया लार-गैया वन फिरे ॥ बल्देव भैया संगलैया व्रज कनैया वीचरे ॥ वलिजात मैया नृत करैया कहत थैया फरि फरी ॥ जय रमन राधा मित्र माधा हरन बाधा श्री हरी ॥ ६ ॥ ॥ अर्थ—गोवालामां रहीने मोरली वजाव-नारा अने जेनी केडे केडे गायो वनमां फरती हती ॥ अने बलदेव भाइने साथे लइने हे कनैया तमे व्रजमां विचरता हता ॥ वली नृत्य करीने फरी-फरीने थेई थेईकार कहेता हता ॥ ते जोईने माता जसोदाजी बलीहारी जतां हतां ॥ मतलबके ओवारणा लेतां हतां ॥ एवा हे राधा रमण देव ॥ ६ ॥ ॥छंद॥ ॥ पुतना ज्यु मारी नथ्यो कारी धेनु चारी प्रीतसें ॥ त्रिय गोप तारी व्रज विहारी रमन न्यारी रीतसें ॥ द्विजदेव नारी समज सारी ॥ अचल यारि अनुसरी ॥ जय रमन राधा मित्र माधा श्रीहरी ॥ ७ ॥ ॥ अर्थ —तमे माशी पूतनाने मारी तथा कालीनागने नाथ्यो अने प्रीतिए करीने गायो चारी ॥ हे व्रजमां विहार क-रनारा तमे जूदी तरेहथी रमण करीने व्रजनी स्त्रियोने तारी ॥ अने ब्राह्मण देवनी स्त्रियो एटले ऋषि पत्नि

योनी समजण सारी हती ते तमारी साथे अचल प्रीति ने वलगी रही एवा हे राधारमण देव ॥७॥ ॥ छंद ॥ ॥ अहि नथ्यो काला जहरवाला महित ताला नृत करे ॥ विष तोय टाला जीयत बाला हरि कृपाला नज्जरे ॥ गल फूल माला संग ग्वाला बात लाला बांसरी ॥ जय रमन राधा मित्र माधा हरन बाधा श्रीहरी ॥ ८ ॥ ॥ अर्थ—ज्यारे तमे काली नागने नाथ्यो ॥ अने तेनु झेर बाली नांख्युं ॥ त्यारे तेनी फणा उपर ताली दईने नाच कर्या ॥ अने ते जमुना जीना पाणीनुं झेर टाल्युं अने हे हरी तमे कृपाल नजरथी गोपनां बालकोने जीवतां राख्यां ॥ हे लाल तमे गलामां फूलनी माला धरीने गोवालाओनी साथे रहीने वांसली वगाडी ॥ एवा हे राधा रमण देव ॥८॥ ॥ छंद ॥ ॥व्रजके विलासी प्रेम पासी वदन हासी मंदज्युं ॥ जुधके अभ्यासी दुष्टनासी जन प्रकासी चंद-ज्युं ॥ रसरूपरासी नित हुलासी अरण्यवासी त्रिय तरी ॥ जय रमन राधा मित्र माधा हरन बाधा श्रीहरी ॥९॥ ॥ अर्थ—हे व्रजमां विलास करनारा तमारा मुखनुं जे हलवे हलवे हसवुं ॥ ते प्रेमना फांसा जेवुंछे तमे युद्ध कलानो अभ्यास करवा वाला अने दुष्टनो नाश कर-नारा अने व्रज जनमां चंद्रनी पेठे प्रकाशितछो ॥ तमे रसना ने रूपना तो समुदाय छो ॥ अने नित्य आनंदमां

रहोछो ॥ अने तमारा दर्शनथी वनमी रहेनारी स्त्रियो भवसागर तरी एवा हे राधा रमण देव ॥९॥ ॥ छंद ॥ ॥ प्रेमी खजीना रंग भीना तिलक दीना भालज्युं ॥ वसु कोप कीना जान दीना राखि लीना ग्वालज्युं ॥ ज्या कें अधीना लोक तीना प्रवीना सर वो परी ॥ जय रमन राधा मित्र माधा हरनबाधा श्रीहरी ॥ १० ॥ अर्थ—तमे प्रेमीजनना खजाना रूप छो अने भीने रंगे छो अने कपालमां तिलक करी दीधुं छे ॥ अने इंद्रे ज्यारे कोप कर्यो त्यारे तमे जीवतदान दइ ने गोवालियाओनुं रक्षण करी लीधुं ॥ स्वर्ग मृत्यु अने पाताल त्रणे लोक जेने आश्रित छे अने सर्वोपरि प्रवीण तमे छो ॥ एवा हे राधारमण देव ॥ १० ॥ ॥छंद॥ व्रज नार वाली मुक्तमाली नयन लाली रेखहे ॥ फनि दम्यो काली करी वेहाली त्रिया उताली देखहे ॥ द्रह कीन खा ली पीर टाली चरित्र भाली श्रीवरी ॥ जय रमन राधा मित्र माधा हरनबाधा श्रीहरी ॥ ११ ॥ ॥ अर्थ—तमने व्र जनी स्त्रियो वहाली छे अने तमे मोतीनी मालावाला छो अने तमारा नेत्रमां राती रेखाओ छे ॥ अने तमे काली नागने दम्यो अने तेना वेहाल कर्या ते तेनी स्त्रियो उतावली आवीने जोती हती ॥ अने जमुनाजीनो धरो नागने काढीने खाली कर्यो अने सौनी पीडा टाली एवां तमारां चरित्र भालीने लक्ष्मिजीनो अवतार एवां रुक्म-

णिजी तमने वरयां एवा हे राधारमण देव ॥ ११ ॥
॥छंद॥ वनमें विलासा हो हुलासा रमत रासा रंगमें ॥
कुल दैत्य नासा करि तमासा अति उजासा अंगमें ॥
मुनिब्रह्म दासा रखो पासा दर्शआसा उर खरी ॥ जय
रमन राधा मित्र माधा हरनबाधा श्रीहरी ॥ १२ ॥ अर्थ–
ज्यारे तमे रंगमां रास रम्या त्यारे वनमां तमारा विला
सथी आनंद थयो ॥ तमे तमासा करीने दैत्यना कुलनो
नास कर्यो अने तमारा अंगमां अतिसे प्रकाश देखाड्यो
॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के तमारा दर्शननी आशा मा
रा मनमां खरेखरी छे ते माटे मने तमारी पासे राखो ॥
एवा हे राधारमण देव हे मित्ररूप माधव पीडाना हरनारा
श्रीहरी तमारी जय थाओ ॥ १२ ॥ ॥छपय॥ बाधा हरण
व्रजेश वेश नर कुंजबिहारी ॥ ले मोरलि निज हाथ ॥
नाथतारे नर नारि ॥ दिनादि चरित्र उदार ॥
भार महि हरण भुजा कर ॥ मनहर नंदकुमार
॥ नार कर प्यार निरंतर रस रूप भूप राधा
रमन ॥ अजब बनि छबिं आजकी ॥ कहे ब्रह्ममुनि
मम उर सदा ॥ रहो मुर्त्ति व्रजराजकी ॥ १३ ॥ ॥
अर्थ–पीडाना हरनारा हे व्रजना इश्वर तमे नरनो
वेष धरयो छे अने कुंजमां विहार करो छो ॥ हे नाथ
तमे हाथमां मोरली लईने पुरुषोने अने स्त्रियोने
भवसागरथी तारयां ॥ तमे दिवसे दिवसे मोटां

चरित्र करयां अने हाथे करीने पृथ्वीनो भार हरयो ॥ मनना हरनारा हे नंदना कुंवर तमारी साथे व्रजनी स्त्रियोये निरंतर स्नेह करयो ॥ एवा रम ने रुपवाला महाराजा हे राधा रमण देव तमारी आजनी छवि अजायब जेवी बनी छे ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के एवा व्रजराजनी छवि मारा मनमां सदा वसो ॥ १३ ॥ ॥ रामाष्टक ॥ दोहा ॥ एक समय शसि उदित अती ॥ होय मन अधिक हुल्लास ॥ यमुना तट व्रजनार जुत ॥ रच्यो मनोहर रास ॥ १॥ ॥ अर्थ–एक समे चंद्रमा * अतिशे प्रकाशित थयो त्यारे मनमां अतिशे आनंद पामीने ॥ जमनाजीने कांठे व्रजनी स्त्रियो सहित मनने हरे एवा भगवाने रास रच्यो ॥ १ ॥ दोहा ॥ ॥ भरभर तन सज आभरण ॥ वर वन करण विहार ॥ कर कर ग्रह नटवर कृष्ण ॥ सरसर अनुसर सार ॥ २ ॥ ॥ अर्थ–त्यारे गोपिकाओ घराणां सजीने शरीर भरीभरीने सुंदर वनमां विहार करवा सारु गइओ ॥ त्यारे नटविद्यामां श्रेष्ट एवा श्रीकृष्ण भगवाने हाथेहाथ ग्रहण करीने ॥ जमनाजीना सारा कांठा उपर अनुसर्या एटले

* शरद पुनमनी मध्य रात्रियेज चंद्रमानो प्रकाश सौथी वधारे होय छे.

विचर्या ॥ २ ॥ छंद रेणकी ॥ ॥ सरसर पर सधर अमरतर अनुसर ॥ करकर वरधर मेल करे ॥ हरिहर सुर अवर अछर अति मनहर भरभर अति उर हरख भरे ॥ निरखत नर प्रवर प्रवरगण नीरजर ॥ निकर मुकट शिर सवर नमे ॥ घ्रण खपट फरर घरर पद घूघर रंगभर सुंदरश्याम रमे ॥ जीयरं ॥ १ ॥ ॥ अर्थ—ते जमनाजीना कांठा कांठा उपर सधर एटले सारां देवतरु एटले कल्पवृक्षनां जेवां झाड जोर करीने मतलब के फलने भारे नमीनमीने पृथ्वीनो मेलाप करे छे ॥ ने ते नभे आकाशमां हरि एटले इंद्र शिव तथा बीजा देवताओ अने अतिशे मनने हरण करे एवी अप्सराओ ते भरी भरीन अंतःकरणमां अतिशे हरख भरे छे ॥ अने नररूपे गोवालियाओ त्यां परवरी परवरीन एटले जइ जइने निरखे छे तथा निर्जर एटले देवताओना जथा के जेओन माथे मुगट धरेला छे ते निकर एटले जथाबंध वर एटले मोटेरा सहित भगवानने नमे छे ॥ त्यां घंणा शब्द थाय छे लूगडां फरर थाय छे ॥ अने पगना घुघरा घरर वागे छे अने रंग भर्या सुंदर श्याम रमे छे ॥ १ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ झणणणणण झणण खणण पद झांझर ॥ गोम धणण गणणण गयणे ॥ तणणण वज तंत ठणण टंकारव ॥ रणणण सुर घणणण रयणे ॥ त्रह त्रह अति त्रणण घ्रणण

बज त्रांसा ॥ भ्रमण भमरवत रमण भ्रमे ॥ घणरव पट फरर घरर पद घूघर ॥ रंगभर सुंदर श्याम रमे ॥२॥

॥ अर्थ–झणणणणण झणण अने खणण एम पगनां झांझर वागे छे (गो) पृथ्वी धणण थाय छे ॥ अने गयण एटले आकाशमां गणणण एवो शद्ब थाय छे ॥ अने तणणण एम मरोदानी तांत वागे छे अने ठणण एम मंजिराना टकोरा थाय छे तथा बीजा वाजाना रणकारा तथा घणकाराना स्वर ते रात्रिमां थाय छे ॥ त्रह त्रह त्रणण अने ग्रणण एम अतिशे त्रांसां वागेछे ॥ अने जेम भमरा भमे ते रीत गोप ने गोपियो रमण करतां भमेछे ॥ त्यां घणा शब्द थाय छे ॥ २ ॥

॥ छंद ॥ झटपट पट उलट पलट नटवट झट ॥ लटपट कट घट निपट लले ॥ कोकट अति उकट त्रुटक गति घिनकट ॥ मन डर मतलट लपट मले ॥ जमुनांतट प्रगट अमट अट रट जूट सुर थट खे खट तेंण समे ॥ घणरव पट फरर घरर पद घूघर रंगभर सुंदर श्याम रमे ॥ ३ ॥

॥ अर्थ–झटपट लूगडां अवलां सवलां थई जाय छे अने नटनी पेठे झट लटपट थई जईने केडेथी शरीर अतिशे लले छे ॥ कोइ तो केडेथी अतिशे उत्कृष्ट रीते त्रण कटका एटले त्रिभंगीनी रीते घणी केड मरडेछे ॥ अने मनमांथी लोक लज्जानो डर मटी गयो छे ॥ अने परस्पर लटीने लपट थईने मली गयां छे ॥ जमुनाजीने कांठे प्रगट भ-

गवान अघट एटले अविनाशी अटन एटले फरवामां अने रटन एटले गावामां जोडाया छे ॥ ते समे देवताओनो (थट) जथो आकाशमां उभो छे ॥ त्यां घणा शब्द थाय छे ॥ ३ ॥ ॥ छंद ॥ ॥घम घम अति घमक ठमक पद घूघर ॥ धमधम क्रम सम होत धरा ॥ भ्रम भ्रम वत विषम परिश्रम वत भ्रम खमखम दम अहि विफम खरा ॥ गमगति अति अगम निगम न लहत गम ॥ नटवट रमझम गम मनमें ॥ घणरव पट फरर घरर पद घूघर ॥ रंग भर सुंदर श्याम रमे ॥ ४ ॥ ॥ अर्थ—पगना घूघराना घम घम घमकारा अने ठमकारा अतिशे थाय छे ॥ अने धम धम एम पगलां मांडे छे ॥ तेथी पृथ्वी उचीनिची होय ते सरखी थई जाय छे ॥ एम मंडलने फेर फुंदडी फेरवेछे ॥ तेथी विषम एटले सहन न थइ शके एवो परिश्रम एटले महेनत पडे एवी रीते भमावे छे तेथी शेश नाग दुःख मांखी मांखीने विफम एटले भान भूलीने उभो रह्यो छे ॥ जे भगवाननुं ज्ञान अने गति अतिशय छे तेनुं पुरुं ज्ञान शास्त्र के वेद लइ शकता नथी ॥ ते भगवान नटनी पेठे रमझम नाचे छे ॥ तेनुं ज्ञान तेमनाज मनमां छे ॥ त्यां घणा शब्द थाय छे ॥ ४ ॥ ॥ छंद ॥ गत गत पर उगत तृगत नृत प्रियगत ॥ रत उनमत चित वधत रति ॥ ततपर ध्रत नचत उचत मुख थै तत ॥ आव्रत अतउत भ्रमत अति ॥ धिधीतत गत वजत म्रदंग

मूर उथथत ॥ भ्रत भ्रत नरतत अतंत क्रमे ॥ घण रव पट फरर घरर पद घूघर ॥ रंगभर सुंदर श्याम रमे ॥ ५ ॥ अर्थ–जूदी जूदी चाल उपर उक्ति एटले वाणी बोलेछे ॥ अने तेमज पिया एटले भगवान जेवी चाल चाले तेवी चाल उपर पोतानी चाल बीजाओ चालेछे ॥ अने सौ उन्मत्त रहेछे अने चितमां प्रीति वधेछे ॥ तत्परपणुं एटले हुंशियारी धरीने नाचेछे ॥ अने मुखेथी थेइतत थेइतत एम उचरे छे ॥ अने आम तेम अतिशे फुदडी फरेछे ॥ त्यां मृदंग धिधितत धिधितत एवी गतिथी वागेछे ॥ तेनो स्वर उथथत एटले उंचो थायछे ॥ अने सौने भ्रत एटले दास करी लीधां छे ॥ तेओ अत्यंत अनुक्रमे नाचेछे ॥ त्यां घणा शब्द थाय छे ॥ ५ ॥

॥छंद॥ थनगन तन नचत पवन प्रचल नथन॥ सुमन गगन धुन मगन सुरा मनमन वर कृष्न प्रशन धन तन मन॥ धन धन वन धन तास धरा ॥ विशरे तन भान खान पान विधि ॥ गान तान जेहिकान गमे घणरव पट फरर घरर पद घूघर ॥ रंग भर सुंदरश्याम रमे ॥ ६ ॥ अर्थ-गोपी अने गोवाल शरीरे थन गन थन गन नाचे छे ॥ (थन) ते स्थाने पवन चालतो नथी ॥ अने आकाशमां देवताओ मग्न थइने धुनि करे छे ॥ अने सुमन एटले पुष्प बरसावे छे ॥ अने तेओ मनमां एम मानेछे के वर एटले सुंदर श्रीकृष्न जेना उपर प्रसन्न थया छे ॥ ते-

ओना तनने अने मनने धन्य छे ॥ तथा ते वृंदावनने अने ते पृथ्वीने पण धन्य छे ॥ जेओने ते भगवानुं गान तान गमे छे ॥ तेओने शरीरनुं भान वीसरी गयुं अने खावा पीवानी रीत पण वीसरी गइ त्यां घणा शब्द थाय छे ॥ ६ ॥ ॥ छंद ॥ ढलढल रंग प्रगल अढल जनपर ढल झल झल अणकल तेज झरे ॥ खलखल भुज चुड चपल अति खलकत ॥ कान कतोहल प्रबल करे ॥ वल वल गल हस्त तुमल चल चित वल ॥ जुगल जुगल प्रति रंग जमे ॥ घणरव पट फरर घरर पद घुघर ॥ रंग भर सुंदर श्याम रमे ॥ ७ ॥ ॥ अर्थ–त्यां भगवान दयार्थी पीगलीने दयाना रंगवडे व्रज जन उपर ढली ढलीने अढलक ढल्या छे ॥ अने तेमना शरीरनुं तेज कली शकाय नहीं ॥ एवुं झल झलाट थई रह्युं छे ॥ गोपियोना हाथनी चूडियो अति चपल अने खल खल एम खखडेछे अने त्यां श्रीकृष्न भगवान मोटुं कौतक करेछे ॥ एक बीजाने गले हाथ वालीवालीने तेमज चपल चित ते पण वलीवलीने मली गयां छे अने बबे जण वच्चे रंग जाम्यो छे ॥ त्यां घणा शब्द थाय छे ॥ ॥ ७ ॥ ॥छंद॥ ॥ सरवस वस मोह दरस सुरथित शशि ॥ अरसपरस त्रस चरस अति ॥ कसकस पट हुलस विलस चित आक्रस ॥ रसवस खुसहस वरस रति ॥ द्रस नव रस सरस भयो ब्रह्मानंद ॥ अनरस मनस तरस

अथमे ॥ घणरव पट फरर घरर पद घूघर ॥ रंग भर सुंदरश्याम रमे ॥ ८ ॥ ॥अर्थ–ते देखीने सर्व मोहने वश थई गयां अने सूरज अने चंद्र पण स्थिर थया अने गोपी तथा गोवालाने परस्पर ते रास रमवानी तृष्ना तथा चडस अतिशय वध्यो छे ॥ लूगडां ताणीने पहेरी पहेरीने हुल्लासथी विलसे छे अर्थात रमे छे ॥ अने एक बीजाना चित्तनुं आकर्षण करे छे ॥ अने रसवस थइने खुशी थइने हसे छे अने प्रीतिनी वृष्टि थइ रही छे ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे, के नवरस मय भगवाननुं दर्शन सारुं थयुं अने अनरस एटले खोटो रस तथा मननी तृश्ना आथमी गइ ॥ त्यां घणा शद्ब थाय छे. ॥ ८ ॥ ॥ छप्पय ॥ रमत मनोहर रास ॥ सदा सुख वास स्वतंतर ॥ प्रबल गोपजन पास ॥ कमल आभास शसिकर ॥ विहरत करत विनोद मोद अंतर नहि मावे ॥ अरस परस एक तार दरस नवरस दरसावे ॥ सुखरूप सदा अशरण शरण ॥ फनां करण भव फंदके ॥ संत साथ सदा खेलत सहि ॥ नाथ सो ब्रह्मानंदके ॥ १ ॥ ॥ अर्थ–सदा सुखना निवासरूप अने स्वतंत्र भगवान मनोहर रास रमे छे ॥ ते गोपजननी पासे बीजा जे महा बलिया हता ॥ तेओ जेम चंद्रनी किरणोथी कमलनो आभास झांखो पडी जाय तेम झांखा पडी गया ॥ ते गोपजन विहार करे छे ॥

एटले फरे छे ॥ अने विनोद करे छे तेमज तेओना अंतःकरणमां आनंद समातो नथी ॥ अने परस्पर एक दृष्टिथी नवरसमय दर्शन देखाडे छे ते भगवान सदा सुखरूप छे अशरणना शरण छे ॥ अने भवना बंधनने तोडी नांखे एवा छे ॥ अने एज ब्रह्मानंदनो स्वामि हमणां संतोनी साथे सदा खेले छे ते नक्की छे ॥ १ ॥

॥ अमृतध्वनि छंद ॥ ॥ हरि महिमा विषे ॥

॥ कमल मुखक्क कर कमल ॥ कमल नाभि अतरक्क ॥ कर जग बुध जन शांतिकर ॥ कुल शुभ धर्म तिलक्क ॥ कुल धर्म तिलक्क ॥ कमठ धरक्क ॥ कर्म शुभक्क ॥ क्रोध करक्क ॥ कमर कसक्क ॥ कंस वधक्क ॥ कथन अथक्क कौल नशक्क ॥ कपट हरक्क ॥ कीर्ति धरक्क ॥ क्रत अतरक्क ॥ कलिजुग ठक्क कौक लखक्क ॥ करन अरक्क ॥ कहे ब्रह्म हक्क ॥ कमल मुखक्क कर कमल ॥ १ ॥ ॥ अर्थ—भगवाननुं कमलना जेवुं मुख अने कमलना जेवा हाथ छे ॥ अने अतर्क्य एटले विचारमां आवी शके नहीं एवी कमलना जेवी नाभि छे ॥ जगतने बोध करनारा अने हरिजनने शांति करनारा अने धर्मकुलना तिलकरूप छे ॥ धर्म कुलना तिलक एज काचबानुं रूप धरनारा ॥ अने शुभ काम करनारा ॥ अने क्रोध करीने केड बांधीने कंसने मार्यो ॥ अने जे भगवाननां अपार वाक्य छे ॥ अने

वाम मार्गनो नाश करनारा ॥ कपट हरनारा ॥ अने कीर्तिनुं धारण करनारा ॥ अने जेना कृत्य अतर्क्य एटले तर्कमां आवी शके नहीं एवां छे ॥ कलियुगने ढांकी नांखनारा ते भगवानने कोइकें ज ओलख्या ॥ अने सूर्यादिकने उत्पन्न करनारा छे ॥ ब्रह्मानंद स्वामि साचुं कहेछेके ते भगवाननुं मुख ॥ हाथ ॥ अने नाभी कमल जेवां छे ॥ इत्यादि ॥१॥ छंद ॥ ठाह धरठ्ठ ठीकहे ॥ ठोरहिठोर सुमठ्ठ ॥ ठाल जगठ्ठ ठाठपर ॥ ठरठव पद चित हठ्ठ ॥ ठरठव पद हठ्ठ ॥ ठरण जनठ्ठ ॥ ठीम कमठ्ठ ॥ ठंभ अगठ्ठ ॥ ठाट मथठ्ठ ॥ ठाम अमिठ्ठ ॥ ठलव सुरठ्ठ ॥ ठहर मथठ्ठ ॥ ठीक दतठ्ठ ॥ ठगण वलिठ्ठ ॥ ठमक तनुठ्ठ ॥ ठान द्विजठ्ठ ॥ ठेल नभठ्ठ ॥ ठाड व्रधठ्ठ ॥ ठोर ब्रह्मठ्ठ ॥ ठाह धरठ्ठ ठीकहे ॥२॥ अर्थ—ते भगवान अचलपणुं धरनारा ठीक छे ॥ अने ठेकाणे ठेकाणे तेमनां सारां आश्रम छे ॥ आ ठाला एटले मिथ्या जगतथी जेनो ठाठ जूदो छे ॥ अने जेना चरणारविंदमां हठयोग वाला पोताना चितने ठरावीने स्थिर करे छे ॥ हठयोग वाला जेना पदमां ठरीने स्थिर थायछे ॥ अने जे भगवान पोताना जनने ठरवानुं ठेकाणुं छे ॥ अने जेणे काचबानुं शरीर धार्युं हतुं ॥ अने (अग) मंथाचल पर्वतनो थंभ वांसा उपर धर्यो हतो ॥ अने समुद्र मथन करवानो ठाठ रच्यो हतो ॥ पछी अमृतनुं ठाम देवता

ओना हाथमां जेणे ठलव्युं ॥ अने पोते देवो ने दैत्योनी मध्ये ठेरी रह्या ॥ अने ठीक एटले यथायोग्य जेने जेम देवुं घटे तेम दीधुं ॥ वली जे भगवानने (ठमक) वामणु शरीर धरीने वलीराजाने ठग्यो ॥ अने जे ठेकाणे यज्ञ-मां ब्राह्मणोनुं स्थानक एटले बेठक हती ॥ त्यां वैराट रूप करीने आकाशने ठेल्यो ॥ अने त्यां (ठाड) उभा रहीने शरीर वधारयुं ॥ ते भगवान ब्रह्मानंद स्वामिने ठरवानुं ठेकाणुं छे ॥ ते भगवान अचलपणुं धरनारा ठीक छे ॥ इत्यादि ॥ २ ॥ ॥ छंद ॥ डंड उडंडु डर निडर ॥ डढ धर दृढ महि मंडु ॥ डगत न अडग ब्रह्मंड डर ॥ डर मर दैत्य प्रचंडु ॥ डर दैत्य प्रचंडु ॥ डाण उडंडु ॥ डग ब्रह्मांडु ॥ डाप अखंडु ॥ डक सुर खंडु ॥ डरण वितंडु ॥ डढण पखंडु ॥ डाल जनंडु ॥ डोल करंडु ॥ डमर धरंडु ॥ डंभ विखंडु ॥ डंस कुभंडु ॥ डोक्रे सुपंडु ॥ डेर उरंडु ॥ डोर ब्रह्मंडु ॥ डंडु उडंडु डर निडर ॥ ३ ॥ ॥ अर्थ–जे भगवान कोइथी न डंडाय एवाने डंडनारा अने भय पामेलाने निर्भय करनारा ॥ अने दृढ एटले मजबूत रीते पृथ्वी मंडलने वाराहरूपे दाढ उपर धरनारा ॥ अने पोते चले नहीं एवा अचल छे ॥ अने आखुं ब्रह्मांड जेनी बीक-थी डरे छे ॥ अने प्रचंड दैत्यो जेनाथी बी मरे छे ॥ (प्रचंड) जबरा दैत्यो डरे छे ॥ जेने कोइ डंडी

शके नहीं तेनी पासेथी पण दाण लेनारा अने ब्रह्मांड-ने डगावनारा अने जेनुं डहापण अखंड छे ॥ अने देवनुं खंडण करनारा असुरोने डंक देनारा (वितंड) वाद करनारा जेनाथी डरे छे ॥ अने पाखंडने दाटनारा ॥ अने हरिजनने वेसवानी डालरूप ॥ अने हाथ डोलावीने आडंबरना धरनारा ॥ अने (दंभ) ढोंगनुं विशेषे खंडन करनारा ॥ अने कुभांडीओने डंस करनारा ॥ अने डुकर एटले वराहनुं मारूं शरीर धरनारा ॥ अने जे भगवाननुं ऊर एटले हृदय सर्वने रहेवाना डेरा रूप अर्थात् आश्रय रूप छे ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के मने दोरनारा एटले हाथ झालीने चलावनारा जे भगवान कोइथी न डंडाय एवाने डंडनारा ॥ इत्यादि ॥३॥ ॥ छंद ॥ ढाहकुमढ्ढ ढाकज्युं ॥ ढिम तेज बल अढ्ढ ॥ ढाल भक्त तन सहज ढल ॥ ढल अढलक परगढ्ढ ॥ ढल अढलक गढ्ढ ॥ ढिग बुधि अढ्ढ ॥ ढलण जनंढ्ढ ॥ ढक कुरढ्ढ ॥ ढोंगि विमुढ्ढ ॥ ढकण उहढ्ढ ॥ ढालु उरढ्ढ ॥ ढेर सुखढ्ढ ॥ ढाली जगढ्ढ ॥ ढक सुरमढ्ढ ॥ ढाह कढ्ढ ॥ ढेर रजढ्ढ ॥ ढवन पढ्ढ ॥ ढालत्रषढ्ढ ॥ ढव ब्रह्मढ्ढ ॥ ढाह कुमढ्ढ ढाकज्युं ॥४॥ ॥अर्थ—ढाक एटले खाखराना झाडने सहेजमां पाडी नांखे तेवी रीते कुत्सीत मढ (महागढ ते मढ) एटले दैत्योना गढने पाडी नांखनारा ॥ अने तेजनुं तो ढीमरूप अने अदभुत छे

वल जेनुं ॥ अने पोताना भक्तनी ढाल रूप ॥ अने पोताना शरीरनो सहेजे एवो ढाल छे के पारका उपर गाढी रीते एटले मजबूत रीते अढलक ढलनारा ॥ गाढी रीते अढलक ढलनारा ॥ अने जेनी पासे अद्‌भुत बुद्धि छे एवा ॥ पोताना जनो उपर ढलनारा ॥ अने कुत्सीत रढने एटले लतने ढांकनारा ॥ अने ढोंग करनारा ॥ विशेष मुरखोना (उह) तर्कने ढांकी देनारा ॥ अने जेनी छाती पोहोली ढाल जेवी छे ॥ सुखना ढगला रूप छे ॥ अने आ जगतने ढाली नांखनार अर्थात् नाश करनारा अने देवताओना (मढ) महेलोनो पण ढांकण रूप अर्थात् रक्षण करनारा ॥ अने अंते पाडीने काढनारा पण एज अने रजनो ढगलो करनारा मतलब के परमाणुंना जथा रूपे करनारा ॥ अने भवजलमां (ढबवुं) तरवानुं भणावनार ॥ अने धर्मनी ढाल रूप अर्थात् धर्मनुं रक्षण करनारा ॥ अने ब्रह्मानंद स्वामिने तारनार ॥ ढाक एटले खाखराना झाडने जेम सहेजमां पाडी नांखे तेवी रीते ॥ इत्यादि ॥ ४ ॥ छंद ॥ तरत तुरत्त तिमरतर ॥ त्रिभुवन तरल तखत्त ॥ तारण जन बुध तन धरत्त ॥ तन मन हरत विपत्त ॥ तन हरत विपत्त ॥ तोड अमत्त ॥ तत्वकहत्त ॥ त्रिनयन नत्त ॥ त्रियसुरनृत्त ॥ तनक हसत्त ॥ तबल बजत्त ॥ तवन करत्त ॥ तट जल मत्त ॥ तक्र हरत्त ॥ तकत सुरत्त ॥

तान लहत्त ॥ तनुत स्त्रमत्त ॥ तुनल उकत्त ॥ तत्रब्रह्म भ्रत्त ॥ तरत तुरत्त तिमरतर ॥८॥ ॥अर्थ–अज्ञानरूपी अंधकारथी तरतने तरत तारनार ॥ अने त्रण भुवनना उत्तम तखतना अधिकारी ॥ मतलबके त्रण भुवनना राजा जनने तारनारा ॥ बुध्धा अवतार धरनारा ॥ अने माणसोना शरीरनी अने मननी विपत्तिने हरनारा भगवान छे ॥ तननी विपत्ति हरेछे अने खोटा मतने तोडे छे ॥ अने तत्व एटले सार ज्ञानना कहेनारा अने जेना आगल त्रण नेत्रवाला महादेवजी पण नमेछे ॥ अने देवनी स्त्रियो नाच करेछे ॥ अने लगार हस्तें मोढे ताल बजावी स्तुति करेछे ॥ अने जमुनांजीना जलने कांठे उन्मत्त थईने जे भगवाने गोपीकाओनी छाशनुं हरण कर्युं ॥ अने ते भगवाननी सुरतने गोपिकाओए ताकीने तान लइने गान कर्युं ॥ ते भगवाने पोतानो मत विस्तार्यो ॥ अने तेज रीते जेने मल्या तेना आगल वाणी कही॥एवा हे भगवान ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के हुं तमारो दास छुं ॥ अज्ञानरूपी अंधकारथी तरतने तरत तारनार ॥ इत्यादि ॥ ८ ॥ ॥ छंद ॥ थिर समरथ्थ थान थिर ॥ थकत शेष गुण कथ्थ ॥ थिर चर प्रेरक अकल थल ॥ थट हटवण बल हथ्थ ॥ थट हटवण हथ्थ ॥ थान परथ्थ ॥ थंभ जगथ्थ ॥ थूल तनथ्थ ॥ थाप सुपथ्थ ॥ थानिं भरथ्थ ॥ थित शुभ कथ्थ ॥ थाह न गथ्थ

॥ थन वकि मथ्थ ॥ थूक विखथ्थ ॥ थीर सुणथ्थ ॥ थनक नचथ्थ ॥ थड भु न मथ्थ ॥ थल जलमथ्थ ॥ थोभ ब्रह्मथ्थ ॥ थिर समरथ्थ थान थिर ॥ ६ ॥

॥ अर्थ—जे भगवान सदा स्थिर एटले अचल छे अने समर्थ छे ॥ अने जेनुं रहेवानुं ठेकाणुं अक्षरधाम ते पण स्थिर छे ॥ अने जेना गुण कहेतां शेशनाग पण थाकी जाय छे स्थावर जंगम प्राणियोने प्रेरणा करनारा ॥ अने जेनुं स्थान कलाय नहीं एवुं छे ॥ अने जेना हाथ एवा वलिया छे के असुरोना मोटा थटने पण हठावे ॥ मोटा ठाठने हठावे ॥ एवा हाथवाला छे ॥ अने जेनुं स्थानक मायाथीपर छे ॥ अने जगतना स्थंभरूप छे ॥ मतलव के जेने आधारे जगत रह्युं छे ॥ अने जेनुं शरीर पुष्ट छे ॥ अने मारा पंथनुं स्थापन करनारा ॥ ॥ भरत राजाना स्थानकमां एटले भरतखंडमां जेनां रूडां वचन प्रख्यात रह्यां छे अने जेनी गाथाओनो पार नथी ॥ अने जेणे पूतनाना स्तनने मथ्यां एटले चूशी लीधां ॥ अने ते स्तन उपर जे विख चोपडीने आवी हती ते थुकी काढयु ॥ जे भगवाने स्थिर रहीने गोपियोनां गीत सांभल्यां ॥ अने वली थनक थनक नाच्या ॥ अने जे भगवान पृथ्वी अने आकाशना थड रूप छे अने थलनी अने जलनी साथे पण रहे छे ते भगवाने ब्रह्मानंद स्वामिनो हाथ थोभ्यो एटले झाल्यो

॥ जे भगवान सदा स्थिर एटले अचल छे ॥ इत्यादि ॥ ६ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ दोष अरद दिल दमन ॥ दुक्रीत दहन दरद ॥ दुर्गनिवास दिनेश दुनि ॥ दत्त स्वमत बेहद ॥ दत स्वमत बेहद ॥ दमत प्रमद ॥ इशत मवद ॥ दुक्रत दहद ॥ दास सुखद ॥ दिल बुधिप्रद ॥ दूर कुमद ॥ दुष्ट दुखद ॥ दांनि मरद ॥ दुरमति छद ॥ दरिद हरद ॥ दीन वरद ॥ दलण दरद दिप्ति धरद ॥ दास ब्रह्मद ॥ दोष अरद दिल दमन ॥ ७ ॥ ॥अर्थ–दिलदमन एटले मनमथ अर्थात कामदेव आदिकना दोष एटले विकारने टाळनारा ॥ पापरूपी दरदने बाळनारा ॥ गढपूरमां रहेनारा ॥ अने दुनियाना सूर्यरूप ॥ तेमणे हद वगरनो पोतानो मत विस्तारी दीधो पोतानो मत वेहद विस्तारी दीधो ॥ अने जनोना प्रमादने दम्यो एटले मटाडयो ॥ तथा प्रकर्ष रीते एटले उत्तम रीते (वदतां) भाषण करतां देखाया॥ अने पापने बाळ्युं अने पोताना दासने सुख दीधुं ॥ तथा मनमां बुद्धि आपी ॥ अने खोटा मदने एटले गर्वने दूर कर्यो ॥ अने दुष्टने दुःख देनारा ॥ दान करवामां अथवा व्रजमां दाण लेवामां समर्थ ॥ अने खोटी बुद्धिने छेदनारा ॥ दरिद्र हरनारा ॥ गरिबने वरदान आपनारा॥ पीडाने दलनारा एटले तोडनारा कांतिना धरनारा ॥ अने ब्रह्मानंद स्वामि जेनो दास छे एवा भग-

वान छे ॥ दिल्दमन एटले मनमथ अर्थात कामदेव आदिकना दोष एटले विकारने टालनारा ॥ इत्यादि ॥ ॥ छंद ॥ ॥ धर्म धुरंद्ध धरनधिर ॥ धर्मनंद वपु शुध्ध ॥ धर व्रत दृढ उर ध्यान धर ॥ धन धन तनुं धर बुध्ध ॥ धन धन तनुं बुध्ध ॥ धर्म विशुध्ध धरनी प्रबुध्ध ॥ ॥ ध्वंस विरुध्ध ॥ ध्वेसी अबुध्ध ॥ ध्यात विबुध्ध ॥ धाव उरध्ध ॥ धौत पटद्ध ॥ धडक अघध्ध ॥ व्रत मत उध्ध ॥ ध्वनित अधध्ध ॥ धर उर सिध्ध ॥ धनुप धरध्ध ॥ धसत गमध्ध ॥ धर ब्रह्म मध्ध ॥ धर्म धुरंध्ध धरनिधर ॥ ८ ॥ ॥ अर्थ—धर्मनुं धुंसरूं धरनारा अर्थात् धर्मना आगेवान ॥ तथा पृथ्वीना धारण करनारा ॥ अने धर्मदेवना पुत्र जेनुं शरीर शुद्ध एटले अमायिक छे एवा भगवान ॥ अने दृढ व्रतने धरनारा ॥ जोगियो जेनुं ध्यान मनमां धरे छे एवा अने बुध्धावतार धरनारा ॥ भगवानने धन्य छे ॥ धन्य छे ॥ बुध्धावतार धरनार धन्य छे ॥ धन्य छे ॥ जेनो विशेष शुध्ध धर्म छे ॥ पृथ्वीना लोकोने बोध आप्यो ॥ अने विरुध्ध मतनो नाश कर्यो ॥ अने जे अज्ञानी छे ते ते भगवानना द्वेषि थाय छे ॥ अने जे ज्ञानी छे ते ध्यान करे छे अने ते ऊंची गतिये धाय छे ॥ एटले, जाय छे ॥ ते भगवाने धोएलां वस्त्र पहेर्यां छे ॥ अने जेनाथी अघ एटले पाप धडके छे

अथात् वीएछे ॥ ते भगवाने उध्धव मतनुं धारण कर्युं छे ॥ अने जगतमां जेने विषे अधध एवी आश्चर्य ध्वनि कहेवाय छे ॥ अने सिद्ध पुरुषो अंतःकरणमां जेनुं ध्यान धरे छे ॥ रामकृष्न रूपे धनुष धारण करीने अथवा चरणारविंदमां धनुषनुं चिन्ह धारण करीने (गो) पृथ्वी मध्ये धस्या ॥ एवा भगवाननुं ब्रह्मानंद स्वामि ध्यान धरेछे ॥ धर्मनुं धुंसरूं धरनारा ॥ इत्यादि ॥ ८ ॥

॥ खट विधानी कवित ॥

॥ १ पीक २ कंज ३ कीर रु ४ कुरंग ५ भ्रंग ६ शशि शो
भा ॥ १ कंठ २ मुख ३ नक ४ नेन ५ भृंह ६ भाल लेखीये
॥ १ वसंत २ शरद ३ हिम ४ शशीर ५ मधुप ६ दुज ॥
१ अंब २ अंबु ३ बिंब ४ पब्ब ५ कंज ६ संज पेखीयें ॥
१ व्रही २ वात ३ व्रीड ४ वक्र ५ वाद स्वाद ६ राह ग्राह
१ जोर २ भोर ३ ठोर ४ दोर ५ कोर ६ गोर रेखीयें ॥
१ क्रीड २ क्रांत ३ कुंज ४ कृष्न ५ कोश रु ६ सदोश कीन
॥ ब्रह्मानंद राधे तन स्वाधे खट देखिये ॥१॥ ॥अर्थ—राधीकाजीना छ अंगने छ प्रकारनां विशेषणवाली उपमाओ आपी होय ते खट विधानी कवित कहेवाय ॥ १ कोयल ॥ २ कमल ॥ ३ पोपट ॥ ४ हरण ॥ ५ भमरो ॥अने ॥ ६ ॥ चंद्रना जेवी शोभा धरनारा ॥ १ राधिकाजीनो मधुरो कंठ ॥ २ मुख ॥ ३ नाक ॥ ४ नेत्र ॥ ५ भमर ॥ अने ६ कपाल गणाय ॥ १ ते कोयल वसंत

ऋतुनी ॥ २ कमल शरदऋतुनुं ॥ ३ पोपट हेमंतऋतुनो ॥ ४ हरण शिशिरऋतुनुं ॥ ५ भमरो वसंतऋतुनो ॥ अने ६ चंद्र बीजा पखवाडियानो अरधो अने जेनां शिग नीचां होय एवो ॥ १ वली ते कोयल आंबामां रहेली ॥ २ कमल पाणीमां रहेलुं ॥ ३ पोपट पाका *घीलोडा उपर रहेलो ॥ ४ हरण पर्वतमां रहेनारुं ॥ ५ भमरो कमलमां रहेनारो अने ॥ ६ चंद्र सांझनी वखतनो देखीए एवा ॥ १ वली ते कोयल विरही एटले टोलाथी विजोगी थयेली ॥ २ कमल वायुथी हालतुं ॥ ३ पोपट लज्जा पामेलो ॥ ४ अने हरण वांकी दृष्टि करतुं होय ॥ ५ भमरो ॥ गणगणाट करतो तथा स्वाद लेतो होय तेवो ॥ अने ६ चंद्र अरधो राहुए गलेलो होय तेवो ॥ वली १ ते कोयल जोरथी बोलती होय तेवी ॥ २ कमल प्रभातना पहोरनुं ॥ ३ पोपट एक ठेकाणे बेठेलो ॥ ४ हरण दोडतुं ॥ ५ भमरो कमलनीकोर उपर भमतो ॥ अने ६ चंद्र चितरेला अर्ध गोल जेवो ॥ अने ते कोयल क्रीडा करती एटले रमती होय तेवी ॥ २ कमल मनोहर ॥ ३ अने पोपट झाडना झुंडमां रहेलो ॥ ४ हरण कालीयार जातनुं ॥ ५ भमरो कमलना दोडा उपर भमतो होय एवो ॥ ६ अने चंद्र दीपा रात्रि सहित होय एवो ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के राधिकाजीना शरी-

* घोलुं.

रमां उपर लखेलां छए वानां स्थापित करेलां देखाय छे ॥ १ ॥

॥ अष्ट विधानी कवित ॥

॥ १ गज २ हंस ३ रंभ ४ सिंध. ५ सुक ६ मृग ७ अली ८ व्याल ॥ १ ग २ ति ३ जंघा ४ लंक ५ नाक ६ दृग ७ भृह ८ वेनीहे ॥ १ मद २ मान ३ मध्य ४ मारु ५ मुन ६ मंजु ७ मत ८ मिले १ धी २ र ३ हल ४ वल ५ फल ६ चल ७ दल ८ फेनीह ॥ १ मास २ श्वेत ३ स्थुल ४ शूर ५ शोभ ६ शंक ७ वंक ८ छेल ॥ १ रू २ प ३ रस ४ रोश ५ तोष ६ फू ७ वं ८ सुरभेनीहे ॥ १ नी २ क ३ नत्र ४ छोट ५ सुद्ध ६ मोद ७ मकरंद ८ मनी ॥ ब्रह्मानंद राधे व्रजचंद सुखदेनीहे ॥ २ ॥ ॥ अर्थ–राधिकाजीना आठ अंगने छ छ प्रकारनां विशेषणवाळी उपमाओ आपी होय ते अष्टविधानी कवित कहेवाय ॥ १ हाथी २ हंस ३ केळ ४ सिंह ५ पोपट ६ हरण ७ भमरो अने ८ सरपना जेवां राधिकाजीनां अंग छे ॥ तेमां १ हाथी २ हंस ए बेना जेवी चाल ३ केलना जेवी झांघ छे ॥ ४ सिंहना जेवो केडनो लांक ॥ ५ पोपटना जेवुं नाक ॥ ६ हरणना जेवां नेत्र ॥ ७ भमरानी पांखोना जेवी भमरो ॥ अने ८ सर्पना जेवो चोटलो छे ॥ १ ते हाथी मदमां आवेलो ॥ २ हंस

मान सरोवरनो ॥ केळ मध्य भागनी ॥ ४ सिंह मारवाड देशनो ॥ ५ पोपट मौन एटले बोल्या वगर रहेलो ॥ ६ हरण सुंदर ॥ ७ उन्मत्त थएलो भमरो ॥ ८ अने सर्प मलयाचळ पर्वतमां रहेनारो ॥ वळी ते १ हाथी २ हंस धीरे धीरे चालनारा होय तेवा ॥ ३ अने केळ लगार वळेली ॥ ४ सिंह चालतां पाछो वळतो होय तेवो ॥ पोपट फळ उपर बेठो होय तेवो ॥ ६ हरण चंचळ होय तेवुं ॥ ७ ॥ अने भमरो कमळनी पांखडी उपर भमतो होय तेवो ॥ ८ अने सरप फेण चडावेली होय तेवो ॥ वळी ते १ हाथी कालो ॥ २ ने हंस धोलो ॥ ३ केळ जाडी ॥ ४ सिंह शूरो ॥ ५ पोपट शोभीतो होय तेवो ॥ ६ हरण शंका पामेलुं एटले त्रास पामेलुं होय तेवुं ॥ ७ भमरो पांखो वांकी राखी होय तेवो अने ८ सरप छेलाइमां डोलतो होय एवो ॥ वळी ते १ हाथी २ हंस रूपाला होय एवा ॥ ३ अने केळ रस भरेली ॥ ४ सिंह क्रोधित थयेलो ॥ ५ पोपट संतोष पामेलो ॥ ६ हरण अने ७ भमरो फरतां होय तेवां ॥ अने ८ सरप (सुरभि) चंदनना झाडमां रह्यो होय एवो ॥ वळी ते १ हाथी अने २ हंस मनोहर होय तेवा ॥ ३ केळ नमेली ॥ ४ सिंह नानी उमरनो ॥ ५ पोपट शुद्ध जातिनो ॥ ६ हरणं आनंदमां होय तेवुं ॥ अने

७ भमरो सुगंध लेतो होय तेवो ॥ ८ सर्प माथे मणी होय तेवो ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के एवां अंगवाळां राधिकाजी श्री कृष्ण भगवानने सुख देवावाळांछे ॥२॥

॥ समश्या प्रश्न दोहा ॥

॥ राधे कर दरपन लीयो ॥ निज मुख कौतक जान ॥ तब प्यारी श्रीकृष्णकुं ॥ पूछत प्रश्न सुआन ॥ १ ॥ ॥ अर्थ–राधिकाजीए पोताना मुखारविंद विषे कांइ कौतक जेवुं जाणीने ते जोवा माटे हाथमां दर्पण लीधुं ॥ त्यारे (आन) अन्य एटले बीजी वहाली सखिये श्रीकृष्ण भगवानने पूछयुं के ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ भक्षवदन दो निकटहे ॥ अंतर क्षुधा सरोष ॥ चाह अति खावत नहीं ॥ कहो श्याम कुण दोष ॥ २ ॥ अर्थ–खावानो खोराक अने मुख बे पासे पासे छे ॥ अने मनमां भूख अने तेथी थएली रीस पण छे ॥ तेथी खावानी चाहना घणी छे तो पण हे भगवान कहो के शा दोषथी ते खातुं नथी ॥ २ ॥ ॥दोहा॥ बिंब अनार तियार दो ॥ कीर अधीर सुहात ॥ हंस भक्ष बिंब भानसें ॥ निज भखनाहिं चखात ॥ ३ ॥ ॥अर्थ–त्यारे उत्तर आप्यो के पाकुं घोलुं अने दाडम ए बेय तैयार छे अर्थात पाका घोला जेवा राता राधिकाजीना होठ छे ॥ अने दाडमना बीज जेवा दांत छे ॥ जेनी पासे

नाक रूपी पोपटनी चांच छे ॥ अने ते पोपट भूख्यो अने अधीरो स्थिर थईने रहेलो शोभे छे ॥ पण ते बन्ने हंसनो भक्ष होय एवुं भान आववाथी पोतानो भक्ष छतां चाखी शकतुं नथी ॥ अर्थात होठने राता कमळनी पांखडी जेवा देखे छे ॥ अने दांतने मोती जेवा देखे छे ॥ अने कमळनी पांखडी तथा मोती ते बन्ने हंसनो खोराक छे ॥ एम जाणीने पोपट खातो नथी ॥ ३ ॥

॥ अथ शब्दालंकार सवैया ॥

॥ या भगरी मगरी तगरी॥ नगरी न गरी सगरी बगरीहै॥ बाट परी डगरी डगरी खगरी खगरी कगरी अगरीहै ॥ सीस भरी गगरी पगरी ॥ पगरी घुघरी उगरी भु गरी है ॥ ब्रह्ममुनि द्रगरी दगरी ॥ लगरी लगरी फगरी रगरीहै ॥ १ ॥ ॥अर्थ—एक समे गोपियोए जसोदाजी आगळ जईने फरियाद करीके तमारो बालक वृंदावनमां अमने हेरान करेछे ॥ माटे तमे वनमां जईने तेने ठवको द्यो ते सांभळीने जसोदाजिये वनमां जईने ठवको दीधो ॥ त्यारे भगवाने गोपियोनो वांक काढीने कह्युं ॥ तेनो अर्थ आ नीचे लखेला सवैयामां छे ॥ आ मारगे मारगे में तेओने तगडी तेओ नगरीमां पेठी नहीं ॥ अने ते सघळी (बगडी) खोटी छे ॥ ते आंहीथी रस्ते पडीने डगलुं डगलुं भरती हती ॥ पण ते पं-

वीणी मानी पंखीणी जेवी अने कागडीओमां आगली एटले आगल वधे एवी छे ॥ माथे गागर भरेली हती ॥ अने पगलां भरती हती ॥ तेना पगनां झांझरनी घुघरी उछलीने (भू) भोंय पडी गई छे ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के भगवाने कह्युं के ते नेत्रनी दगावालीने फगी जातां लगार लगार में (रखडी) हेरान करी छे ॥ १ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ मैं अटकी अटकी नटकी ॥ चटकी चटकी मटकी फटकी हु ॥ घुंघटकी घटकी रटकी ॥ लटकी लटकी तटकी कटकी हु ॥ ज्यां पटकी थटकी थटकी खटकी खटकी हटकी हटकी हु ॥ ब्रह्म लज्या झटकी झटकी वटकी वटकी झटकी झटकी हु ॥ २ ॥ ॥ अर्थ—मैं तेओने अटकावी अटकावीने राखवा मांडी पण ते टकी नहीं अर्थात रही नहीं अने चटक चटक चालवा मांडीने मटकी पोतानी मेले फोडी नांखी ॥ तेमनी पोताना घुंघटानी शरीरनी के वोलवानी के चोटलानी लट जे केडना किनारा उपर लटकी रहेली तेनी ॥ तथा जेवी रीते लुगडांना थाट माटनी तथा गोवालानो थट मल्यो हतो तेनी पण खटक एटले फिकर तेमना मनमांथी हटी गई ॥ तेमज बीजा चरणमां कहेली वावतोनी खटक पण हटी गइ ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के भगवाने कह्युं

के ते गोपियोए पोतानी लाज खंखेरी खंखेरीन व-
टकी वटकीने एटले घुस्से थइ थइने जती रही जती
रही ॥ २ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ जोबनमें बनमें दिनमें
॥ घनमें तनमें कनमें मनमें जुं ॥ माखनमें खनमें न-
नमें ॥ धनमें धनमें उनमें गनमे जुं ॥ आपनमें पन-
में रनमें ॥ छनमें छनमें जनमें अनमें जुं ॥ ब्रह्म-
मुनि फनमें थन ॥ मेडनमें भनमें भनमें चनमें ज्यूं
॥ ३ ॥ ॥ अर्थ—ते गोपियो भर जुवानीमां वृंदावन
मां दिवसमां अने वरसाद चडेलो होय तेवामां श-
रीरमां कानमां अने मनमां अने माथे माखणनां गो-
रस लीधेलां तेनी मगरूरीमां एक क्षण मात्र पण
नमती नहोती ॥ अने वली एमना गणमां एटले ज-
थामां गायोना धणना तथा पैशाना गर्वमां तेओ
नमती नहोती ॥ वली तेओअे आप आपमां प्रतिज्ञा
लीधेली तेमां ते रणवगडामां क्षण क्षणवारमां गोवाल
आदिक माणसोमां तेओ अनम्र जणाती हती ॥ ब्र-
ह्मानंद स्वामि कहे छे के भगवाने कह्युं के जेम फणी
एटले नागना जथामां स्थानक करनारा (मेड) दे-
डका भणवामां एटले फक्त बोलवानाज भानमां
अने चणवाना एटले चारो करवाना भानमां ॥ अ-
नम्र रहे तेम तेओ अनम्र हती ॥ ३ ॥ ॥ सवैया ॥
मुखपें अलके झलके ललके ॥ व्रज त्रिय मीलकें क-

लके कल कही ॥ कुंडलके तलके चलके मनु मीन-
हुके वलके हलकेही ॥ नारि चली जलके छलके ॥
गलके नलके वलके दलकेही ॥ ब्रह्ममुनि पलके फ-
लके भलके ॥ सलके डलके ढलकेही ॥ ४ ॥
॥ अर्थ—तेओना मुख उपर लट झलकती अने लट-
कती हती ॥ एवी व्रजनी स्त्रियो मलीने कलकल क-
लकल करवा लागी ॥ एना तुल्य एटले बे सरखां
कुंडलना चलकाटमां मानीए के मांछलां गोल वल्यां
होय ॥ अने हालतां होय एवी शोभा हती ॥ ते
नारियो पाणी भरवाना छलथी एटले कपटथी, चाली
॥ तेना गलानी नली वलीने दिलनी वात कहेती
हती ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के भगवाने कहुं जे
एनी आंखनी पांपणोनुं फलकवुं एटले फरकवुं भली
रीतनुं हतुं ॥ अने आंखना सलकारा थता हता ॥
डोला डलकता हता ॥ अने भमरो ढलकती हती
॥ ४ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ नहीं वात पहांनयकी पयकी ॥
लयकी लयकी वयकी वयकीरी ॥ या तयकी तयकी
अयकी ॥ मयकी भयकी भयकी भयकीरी ॥ हे ग-
यकी गयकी गयकी सयकी सयकी बयकी बयकीरी
॥ जो खयकी कयकी कयकी ॥ कहे ब्रह्ममुनि जय-
की जयकीरी ॥ ५ ॥ ॥ अर्थ—एनी वात पाणी भ-
रवानी के दूध वेचवा जवानी नहीं पण तेमने ले

लागेली ॥ ते लेनी ने लेनी तथा तेनी जुवानीनी उ-
मरनी ने उमरनीज वात हती ॥ जे स्त्रियो ताकी
ताकीने आवेलियो तेनी मायानी ने मायानी अर्थात्
कपटनी ने कपटनी तथा भयनी ने भयनीज वात
हती ॥ वली तेना बापने घेर हाथी ने घोडा होय ते-
नी तथा बलदने गायो सेकडे सेकडा होय तेनी मगरू-
रीथी वहेकी वहेकी गइ होय एवी हती ॥ ब्रह्मानंद
स्वामि कहे छे के भगवाने कह्युं जे एमांनी में कोयनी
कोयनी (क्षयनी) हानी करवानी वात जो कोइ कहे-
ती होय तो तेमनी जीतनी ने जीतनी कहेवाय ॥ ५ ॥
॥ सवैया आंखुवरी खुवरी लुवरी दुवरी दुवरी बुवरी
गुवरी है ॥ हे जुं वरी जुवरी छुवरी ॥ डुवरी डुवरी उ-
वरी तुवरी है ॥ में बुवरी झुवरी भुवरी नुवरी ॥ नुवरी
हुवरी फुवरी है ॥ ब्रह्ममुनि थुवरी मुवरी कुवरी ॥ कु-
वरी कुवरी कुवरी है ॥ ६ ॥ ॥ अर्थ-एनी आंखो
वडी खूब लवाड छे अने शरीरे दुबली दुबली तथा
कोइ बोबडी अने गोबरी छे ॥ ते वडी जबरी छे अने
छोवामां एटले मने अडवा आववाने तो जेम डुबावी
डुबावीने तुंबडी राखिये ॥ तो पण उछली आवे तेम
आवती हती ॥ ते बोबडीने में पृथ्वी तरफ झोकावी
त्यारे ते फूवड नवली नवली थइने झुंबी रही ॥ ब्रह्मा-
नंद स्वामि कहे छे के भगवाने कह्युं जे तेओ थुंकारवा

योग्य अने बडी मां बलेली ॥ (कुंबरी) बालकी ए बालकी पण (कुबडी) वांकी वांकी छे ॥ मतलब के एओनेज बधो वांक छे मारो वांक नथी ॥ ६ ॥

॥ सिद्धेश्वर महादेवजीनुं सपाखरु गीत ॥

॥ धरा उपरा अगाध घरा ॥ हरानरा रूप धरा ॥ अमरा नमरा कंध भ्रमरा अमीर ॥ करा खेम गेम हरा कामरा विनाशकरा ॥ भरा भरा कीन भरा बुधिरा गंभीर ॥१॥ अर्थ–ते सिद्धेश्वर महादेवनी मूर्ति जूनागढना मंदिरमां पधरावेली छे ॥ ॥ पृथ्वी उपर जेना घर अपारछे एवा हे हर एटले महादेव नरनुं रूप धरवा वाला ॥ अने देवताओ जेना आगळ पोतानां कांध नमावेछे ॥ तथा मर्मना जाणनारा अमीरो पण नमावेछे ॥ तमे क्षेम करनारा दुःखना हरनारा ॥ अने काम देवना नाशकरनारा ॥अने भरी भरीने जगतमां कीर्ति भरनारा अने गंभीर बुद्धिवालाछो ॥ १ ॥ ॥ गीत ॥ ॥ सागरा रागरा लेत नागरा श्रगार सरा ॥ आगरा त्यागरा चिन भागरा अथाह ॥ ज्यागरा अधीश रुद्र सदा ध्यान अजागरा ॥ बाघरा अंबरा वेण बागरा सुवाह ॥ २ ॥ अर्थ–तमे रागना समुद्रछो अने तमे चतुर पणार्थी सारो शणगार धरी ल्योछो ॥ अने त्यागीओमां आगेवानछो तमारा नशीबना चिन्ह अपार छे ॥ अने हे रुद्र तमे यज्ञना अधिष्ठाताछो ॥ अने निरंतर ध्यानना धर-

नारा उत्तमछो ॥ अने वाघनुं चर्म धरनारा तथा पोताना वचन रूपी वागने सारी रीते वहन करोछो॥अर्थात् कहेलां वचन पालोछो ॥२॥ गीत ॥ डंमरा भ्रमरा फरा देख भेख आडंवरा थरथरा अथराहो डरा काल ठीक–जरा जीत जाम जरा अजरा हलाहल जरा ॥ जरातरा अंगपरा नां जरा नजीक ॥ ३ ॥ ॥ अर्थ–तमारा डमरुना शब्द ना मर्मथी फरीने तमारा भेखनो आडंवर देखीने ॥ काल अस्थिर थईने थरथर ध्रुजेछे ॥ अने डरेछे ते ठीक छे ॥ तमे जरा एटले बुढ्ढाईने जीतनारा ॥ जाम एटले राजाछो ॥ तथा न जीरवाय तेने जीरवी राख-नारा जेमके हलाहल झेरने जीरवनाराछो ॥ अने त-मारा अंग उपर जरातरा एटले लगार पण (जरा) बुढ्ढाई (नजीक) पासे आवी शकती नथी ॥ ३ ॥ ॥ गीत ॥ वरा देण सतीवरा शेखरा सरीत वरा ॥ परवरा जोगेशरा उचरा अपार ॥ सीरा गंग नीरझरा मुनिब्रह्म अनुसरा ॥ सिधेशरा देवखरा उधरा संसार ॥ ४ ॥ ॥ अर्थ–हे वरदानना आपनारा ॥ पार्वतिना स्वामि तमा-री जटाना तोरारूपे गंगाजीछे ॥ अने अपार जोगेश्वरो तम-ने सर्वोपरी कहेछे ॥ अने तमारा मस्तक उपरथी गंगानुं जळ झरेछे ॥ अने ब्रह्मानंद स्वामि तमने अनुसरेछे ॥ अर्था-त् तमे जेनुं ध्यान करो छो तेनुं ते ध्यान करे छे ॥ अने हे सिध्धेश्वर देव तमे संसार सागरमांथी उ-

ध्धार करनारा खरा छो ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पारवती पति अति प्रबळ ॥ विमल सदा नरवेश ॥ नंदि संग उमंग नीत ॥ स्मरत जेहि गुण शेश ॥ १ ॥ ॥ अर्थ—हे पार्वतीना स्वामि महाबलवान जेना सदा निर्मल पुरुषनो वेश छे ॥ पोठियानी साथे नित्ये आनंदमां रहो छो ॥ अने जेना गुण शेषनाग स्मरण करे छे ॥ एवा तमे छो ॥ १ ॥ ॥ त्रिभंगी छंद ॥ ॥ समरत जेहि शेशा ॥ दिपत सुरेशा ॥ पूत्र गणेशा ॥ निज प्यारा ॥ ब्रह्मांड प्रवेशा ॥ प्रसिध परेशा अजर उमेशा ॥ उदारा ॥ वेहद नर वेशा ॥ क्रत शिर केशा टळत अशेशा अघरेशा ॥ जय देव सिधेशा ॥ हरन कलेशा ॥ मगन हमेशा माहेशा ॥ १ ॥ ॥ अर्थ—शेषनाग जेनुं स्मरण करे छे ॥ अने बधा देवोना ईस रूपे तमे दीपो छो ॥ अने पोतानो वहालो पूत्र गणपति छे ॥ तमे प्रसिध्ध परमेश्वर छो ॥ अने ब्रह्मांडमां प्रवेश करो छो ॥ हे उमाना ईश तमे अजर एटले घडपण रहीत छो ॥ अने उदार मनवाला छो ॥ तमारो नरनो वेश बेहद छे ॥ अने माथे सुंदर जटा करी छे ॥ तमारा दर्शनथी कांई बाकी रहे नहीं ॥ एम पापनी रेखाओ टली जाय छे ॥ एवा हे सिध्धेश्वर देव तमारी जय थाओ ॥ तमे कलेशना हरनारा छो अने हे महेश्वर तमे सदा आनंदमां रहो

छो ॥ १ ॥ ॥ छंद ॥ भक्तन थट भारी ॥ हलक हजारी ॥ कनक अहारी ॥ सुखकारी ॥ शिर गंग सुधारी ॥ दृढ ब्रह्मचारी ॥ हर दुख हारी ॥ त्रिपुरारी ॥ रहे ध्यान खुमारी ॥ ब्रह्म विहारी ॥ गिरजा प्यारी ॥ जोगेशा ॥ जय देव सिधेशा ॥ हरन कलेशा ॥ मगन हमेशा माहेशा ॥ २ ॥ ॥ अर्थ–भक्तोनो मोर जमाव जेनी आगल रहे छे एवा ॥ अने हलकमां एटले छोलमां हजारो रीद्धिना देनारा ॥ अने हे सुखकारी तमे धतुरानो आहार करो छो ॥ तमे मस्तक उपर गंगाजी धर्यां छे ॥ अने तमे दृढ ब्रह्मचारी छो ॥ एवा अने दुःखना हरनारा हे हर तमे त्रिपुरासुरना शत्रु छो ॥ तमने ध्याननी खुमारी रहे छे ॥ अने सच्चिदानंद ब्रह्ममां विहार करो छो ॥ अर्थात् तेमां मन प्रवेश करो छो ॥ अने तमने पार्वती जी वहाल्यां छे ॥ अने जोगियोना इश्वर छो एवा हे सिध्धेश्वर देव० ॥ २ ॥ ॥ छंद ॥ ॥कैलास निवासी॥ जोग अभ्यासी ॥ रिधि सिधि दासी ॥ पतिकासी ॥ चिद व्योम विलासी ॥ हित जुत हासी ॥ रटत सयासी सुखरासी ॥ मुनि सहस्र अठ्यासी ॥ कहि अविनासी ॥ जेहि दुख त्रासी ॥ उपदेशा ॥ जय देव सिधेशा ॥ हरन कलेशा ॥ मगन हमेशा ॥ माहेशा ॥ ॥ ३ ॥ ॥ अर्थ–हे कैलाशमां रहेनारा तमे जोगनो अभ्यास क-

रो छो अने रिध्धि अने सिध्धि ए बे तमारी दासियो छे अने तमे काशीपुरीना पति छो तमे चिदाकाशमां विलास करो छो अने तमारुं हसवुं भक्तोना हित एटले कल्याण युक्त छे अने हे सुखना राशि एटले समुदाय तपस्विओ तमारुं रटण करे छे अने अठ्ठाशी हजार रुषिओ तमने अविनाशी कहे छे अने जे दुःखथी भय पामे छे तेओने तमे उपदेश करो छो एवा हे सिध्धेश्वर देव० ॥ ३ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ गौरि नित संगा ॥ अति शुभ अंगा ॥ हार भुयंगा ॥ शिर गंगा ॥ रहवत निज रंगा ॥ उठत अथंगा ॥ ग्यान तरंगा ॥ अति चंगा ॥ उर होत उमंगा ॥ जय कृत जंगा ॥ अचल अभंगा ॥ आवेशा ॥ जय देव सिधेशा ॥ हरन क्लेशा ॥ मगन हमेशा ॥ माहेशा ॥ ४ ॥ ॥ अर्थ—तमारी संगे गिरजा-जी नित्य रहे छे तेनुं अंग अतिशे सुंदर छे अने तमे सर्पना हार पहेर्या छे ॥ तथा मस्तके गंगाजी धर्यां छे ॥ तमे पोताना आत्म स्वरूपना रंगमां रहो छो अने तमारा मनमां ज्ञानना तरंग अपार उठे छे ते अतिशय पवित्र छे तमे युध्धमां ज्यारे जय करो छो ॥ त्यारे मन-मां उमंग थाय छे अने तमारो (आवेश) प्रवेश अचल अने अभंग छे ॥ एवा हे सिध्धेश्वर देव० ॥ ४ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ नाचत निशंका ॥ मृगमद पंका ॥ घम-घम घमका ॥ घुघरुका ॥ ढोलूका ढमका ॥ होवत

हंका ॥ डमडम डमका ॥ डमरूका ॥ रणतूर रणंका ॥ भेर भणंका ॥ गगन झणंका ॥ गहरेशा ॥ जय देव मिधेशा ॥ हरन कलेशा ॥ मगन हमेशा ॥ माहेशा ॥ ५ ॥ ॥ अर्थ—तमे निःशंक थइने नाचो छो ॥ त्यां कस्तुरीनो कादव थाय छे ॥ अने पगे घुघराना घमघम घमकारा थाय छे ॥ त्यां ढोलना ढमकारा अने गणना हुंकारा थाय छे ॥ अने डमरूना डंका डमडम वागे छे ॥ रणशींगाना रणकारा थाय छे ॥ अने नोबतना भणकारा थाय छे ॥ तेना आकाशमां झणकारा उंडा थाय छे ॥ एवा हे मिध्धेश्वर देव० ॥ ५ ॥ छंद ॥ ॥ मणिधर गल माला ॥ भूप भुजाला ॥ शीश जटाला ॥ चरिताला ॥ जगमूल प्रजाला ॥ शूल हथाला ॥ जन प्रतिपाला ॥ जोराला ॥ द्दग त्रीतय कराला ॥ हारफणाला ॥ रहत कपाला ॥ राकेशा ॥ जय देव मिधेशा ॥ हरन कलेशा ॥ मगन हमेशा ॥ माहेशा ॥ ६ ॥ अर्थ—तमारा गलामां सर्पनी माला छे ॥ हे लांबा हाथवाला राजा माथे जटावाला तमे चरित्र करवावाला छो ॥ आ जगतनुं मूल बालनारा एटले नाश करनारा अने हाथमां त्रिसुलवाला अने पोताना भक्त जनने पालनारा अने बलवाला छो ॥ तमारुं त्रीजुं नेत्र विकराल छे ॥ अने तमारे सर्पना हार छे अने तमारा कपालमां चंद्रमा रहे छे ॥ एवा

हे सिद्धेश्वर देव०॥ ६ ॥ ॥ छंद ॥ खलकत शिर नीरा ॥ अदल अमीरा ॥ पीरन पीरा हर पीरा ॥ विहरत संग वीरा ॥ ध्यावत धीरा ॥ गोर शरीरा ॥ गंभीरा ॥ दातार रिधीरा ॥ झाझ बुधीरा ॥ कांत सिधीरा ॥ शिर केशा ॥ जय देव सिधेशा ॥ हरन कलेशा ॥ मगन हमेशा ॥ माहेशा ॥ ७ ॥ ॥ अर्थ—तमारा मस्तक उपरथी गंगाजल खलखल वहे छे ॥ अने तमे अदल इनसाफवाला अमीर छो ॥ पीरना पीर छो ॥ अने पीडाना हरनारा छो ॥ तमारी साथे केटलाक वीर विहार करे छे ॥ एटले फरे छे अने धीर पुरुषो तमारुं ध्यान धरे छे ॥ तमारुं शरीर गोरा रंगनुं छे अने तमे गंभीर छो ॥ तमे रिध्धिना दातार छो अने बुध्धिना जहाज छो ॥ अने सिध्धिना स्वामि छो ॥ अने तमारे मस्तके जटा छे ॥ एवा हे सिध्धेश्वर देव०॥ ७ ॥ ॥ छंद ॥ नर रूप बनाया ॥ अकल अमाया ॥ कायम काया ॥ जगराया ॥ तन काम जलाया ॥ सांब सुहाया ॥ मुनि उर लाया ॥ मन भाया ॥ सिधेश्वर छाया ॥ जन सुख पाया ॥ मुनि ब्रह्म गाया ॥ गुण लेशा ॥ जय देव सिधेशा ॥ हरन कलेशा ॥ मगन हमेशा ॥ माहेशा ॥ ८ ॥ अर्थ—तमे पोतानुं नर रूप बनाव्युं छे ॥ तमे अकलित

अने अमायिक छो ॥ तमारी काया * अखंड रहेछे ॥ अने तमे जगतना राजा छो ॥ तमे कामदेवनुं शरीर बाल्युं हे सांब तमे शोभित थया ॥ मुनिजनोए तमने अंतःकरणमां धरया ॥ अने तेओना मनमां तमे गम्या ॥ हे सिध्धेश्वर देव तमारी छायामां तमारा जन सुख पाम्या ॥ ब्रह्मानंद मुनिये तमारा लेशमात्र गुणगाया ॥ एवा हे सिध्धेश्वर देव ॥ ८ ॥ ॥ छप्पय ॥ ॥ जय जय देव सिधेश ॥ शेश निश दिन गुण गावे ॥ दरस परस दुख दूर ॥ सूर जन अंतर लावे ॥ अणभय अकल अपार ॥ सार सुंदर जग स्वामि ॥ अगणित कीन उधार ॥ नार नर चैतन धामी ॥ नर रूप भूप मूर्ति नवल ॥ नहिं संख्या जेहि नामकी ॥ कहे ब्रह्ममुनि बलिहरिमें ॥ सिधेश्वर जग सामकी ॥१॥ ॥ ॥ अर्थ–हे सिध्धेश्वर देव तमारी जय थाओ जय थाओ रात अने दिवस शेश नाग तमारा गुण गाय छे तमारा दर्शनथी अने तमारा स्पर्शथी दुःख दूर जायछे ॥ माटे देवताओ अने माणसो तमने अंतरमां संभारेछे ॥ तमे निर्भयछो ॥ अकलछो ॥ अने अपारछो तमे सर्वनो सार रूपाला अने जगतना स्वामिछो हे चैतनमय धामवाला तमे अगणित पुरुषोनो अने स्त्रियोनो उध्धार करयो ॥ हे महाराज नर रूप आ तमा-

* अमर.

री नवी मूर्तिछे अने जेना नामनी संख्या नथी ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के एवा जगतना स्वामि सिध्धेश्वर उपर हुं बलिहारी जाउंछुं ॥ १ ॥

॥ अथ ध्यानाष्टक ॥ चरचरी छंद ॥

देखत बड भाग लाग ॥ पोत सरस नवल पाग ॥ अंतर अनुराग जाग ॥ छबि अथाग भारी ॥ अति विशाल तिलक भाल ॥ निरखत जन हो निहाल ॥ उंनत त्रय रेख जाल ॥ काल व्याल हारी ॥ विलसित भृंह साम वंक ॥ चिंतत उर जात शंक मृगमद भर बीच पंक ॥ अंक भ्रमर ग्यानी ॥ जय जय घनसाम साम ॥ अंबुज द्रग क्रत उदाम ॥ सुंदर सुख धाम नाम सामरे गुमानी ॥ १ ॥ ॥ अर्थ–श्रीजी महाराजना मस्तक उपर सारा पोतनी नविन पाग छे ॥ तेनी छबि अथाग भारेछे ॥ ते जोतां जोनारना अंतःकरणमां प्रीत जागे छे ॥ अने ते देखनारना मोटां भाग्य लागे छे ॥ वली घणुं मोटुं कपाल छे ॥ तेमां तिलक करेलुं छे ते निरखतां हरिजन निहाल थाय छे ॥ वली ते उंचा कपालमां त्रण रेखाओनी जाल छे ॥ ते कालरूपी सरपने हरावे एवी छे ॥ अने काली भमरो वांकी शोभे छे तेनुं चिंतवन करतां मननी शंका एटले भय जतो रहे ॥ ते जाणे के कस्तुरीना भर कादव वच्चे ज्ञानी भमरानुं चिन्ह करेलुं

छे ॥ अर्थात् कस्तुरीनुं तिलक छे ॥ अने तेनी पासे भमराना चिन्ह जेवी भमरो छे ॥ एवा हे घनश्याम स्वामि तमारी जय थाओ ॥ जय थाओ ॥ तमारां कमल जेवां नेत्र छे ॥ अने तमारां काम मोटां छे ॥ अने तमारुं नाम सुंदर सुखनुं धाम छे ॥ एवा हे काम मोटा मानवाळा तमारी जय थाओ ॥ १ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ श्रोन कोन द्रग छकीर ॥ तीक्षण मनुं काम तीर ॥ नासा छबि दीप कीर ॥ धीर ध्यान लावे ॥ कुंडल शुभ श्रवन कीन ओतम क्रांति अति नवीन ॥ मनहु हेम जुगल मीन ॥ चंद्र मिलन आवे ॥ गुणनीधी कपोल गोर ॥ चितवत चित लेत चोर ॥ ताके बिच दछन कोर ॥ जोर तिल निसानी ॥ जय जय घन- साम साम ॥ अंबुज द्रग क्रत उदाम ॥ सुंदर सुख धाम नाम ॥ सामरे गुमानी ॥ २ ॥ ॥ अर्थ—तमारा नेत्रना खूणानी लीटी कान सुधी छे अने ते नेत्र एवां तिक्षण छे के जाणे कामदेवनां बाण होय ॥ अने नाकनी शोभा दीवानी शग जेवी अथवा पोप- टना नाक जेवी छे ॥ ते धीर पुरुषो ध्यानमां धरे छे ॥ कानमां सारां कुंडल करेलां छे ॥ तेनुं काम उपमा आपी शकाय नहीं एवुं नवीन छे ॥ ते मानि- ये के सोनानां बे मांछलां मुखरूपी चंद्रने मलवा आव्यां छे ॥ गुणना भंडार एवा गोरा गाल छे ॥

ते जोतां मन चोरी ले छे ॥ तेनी वच्चे जमणी कोर
वे तळनी निशानी छे ॥ एवा हे घनश्याम० ॥ २ ॥
॥ छंद ॥ मंदमंद मुख हसंत ॥ दारिम सम पंति दंत
॥ सभरत महंत संत खंत चंत करकें ॥ शोभित चित
अधर लाल ॥ विलसित विद्रुम प्रवाल ॥ राजत अति-
शय रसाल ताल वंसी धरकें ॥ अंवक फल चिबुक
जान ॥ कंबु सम कंठमान ॥ धारत शिव आदि
ध्यान ॥ आन उर न आनी ॥ जयजय घनश्याम श्याम ॥
अंबुज द्रग अत उदाम ॥ सुंदर सुख धाम नाम ॥ समरे
गुमानी ॥ ३ ॥ ॥ अर्थ—वळी मुखारविंद थोडुं थोडुं
हसतुं छे ॥ अने दांतनी पंक्ति दाडमनां वीज जेवी
छे ॥ महांत साधुओ मनमां खांत धरीने तेनुं स्मरण
करे छे ॥ चित्तने लोभावे एवा होठ राता छे ॥
ते विद्रुम मणी तथा परवाळा जेवा शोभे छे
॥ तेना उपर वांसळी धरी छे ॥ तेना ताळवी ते अ-
तिशे रस भरेला विराजेछे ॥ आंबाना फळ जेवी
दाढी जणाय छे ॥ अने शंख जेवो गळानो घाट छे
॥ तेनुं शिव आदि ध्यान धरे छे ॥ अने वीजुं कांई
मनमां आणता नथी ॥ एवा हे घनश्याम ० ॥ ३ ॥
छंद ॥ ॥ दीरघ अति दोरदंड ॥ मोतिन भुजवंध
मंड ॥ खल दलवल कर वीखंड ॥ अरिप्रचंड मारे
॥ हियपर वन नवलहार ॥ शोभित अति जलज

सार ॥ देखत जन वारवार अघ अपार टारे ॥ प्रौ-
ढ उंच उर प्रथुल ॥ ॥ फहरे सुभ गंध फूल ॥ मनि
भर नंग बर अमूल ॥ दूलरी ॥ वखानी ॥ जय जय
धनसाम साम ॥ अंबुज द्रग क्रत उदाम ॥ सुंदर
सुखधाम नाम ॥ सामरे गुमानी ॥ ५ ॥ ॥ अर्थ—इंड
जेवा हाथ घणा लांबा छे ॥ ते उपर मोतीना बाजुबंध
मांडेला छे ॥ ते हाथवडे दैत्यना लश्करनुं बल खंडन
कर्युं ॥ तथा मोटा शत्रुओने मार्या ॥ हैया उपर नवीन
वनमाला छे ॥ अने अतिशे शोभितां सारां कमल ध-
र्यां छे ॥ तेने हरिजन वारेवारे निरखे छे ॥ अने पों-
तानां अपार पापने टाले छे ॥ मोटी उंची अने पोहोली
छाती छे ॥ ते उपरथी सारां फूलनो गंध फेलाय छे
॥ अने मणियो भरेली तथा मोटां अमूल्य नंगवाली
दुगदुगी वखाणवा योग्य पहेरी छे ॥ एवा हे घनश्याम० ॥
॥ ६ ॥ ॥ छंद ॥ उदर तुंग अति अनूप ॥ गुणवत
तिल साम गूप ॥ नाभि मानू प्रेमकूप ॥ रूप अजब
राजे ॥ शोभित हद कटि प्रदेश ॥ कांची नंगजटित
वेश ॥ चितत उरगें मुनेश ॥ अघ अशेष भांजे ॥ उरु
अतंत रूपवान ॥ गरुड पिठ शोभमान ॥ निज जन
जोहि धरत ध्यान ॥ प्रान प्रेष्ट जानी ॥ जयजय
धनसाम साम ॥ अंबुज द्रग क्रत उदाम ॥ सुंदर सुख-
धाम नाम ॥ सामरे गुमानी ॥ ५ ॥ अर्थ—पेट उंचुं

अति सुंदर छे ॥ ते उपर गुणवान काला तिल गुप्त एटले रूवाटांमां ढंकाएला छे ॥ अने नाभि जाणे के प्रेमनो कूवो छे ॥ तेनु रूप अजायब जेवुं शोभेछे ॥ केडनी जग्याए शोभानी हद एवो कंदोरो नंग जडाव सरस छे ॥ तेनुं मुनिश्वर मनमां चिंतवन करेछे ॥ तेथी बधां पाप भागी जायछे ॥ साथल अतिशे रूपालांछे ॥ ते गरुडना वांसा उपर शोभायमान थाय छे ॥ जेनुं पोताना जन प्राणथी वहाला जाणीने ध्यान धरेछे ॥ एवा हे घनश्याम ० ॥ ५ ॥ ॥ छंद ॥ जांनु दो रूपवंत ॥ लालित कर श्री अनंत ॥ स्मरत जेहि मुनि अनंत ॥ अंत जन्म आवे ॥ जन मन प्रिय जुगल जंग ॥ रोम अल्प अजब रंग ॥ चितवत चित चढत रंग ॥ अति उमंग पावे ॥ गुल्फन छवि अधिक शोभ ॥ स्थिति चल मन देत थोभ ॥ निरखत उर मिटत क्षोभ ॥ लोभ आदि ग्लानी ॥ जय जय घनसाम श्याम ॥ अंबुज द्रगक्रत उदाम ॥ सुंदर सुखधाम नाम ॥ सामेर गुमानी ॥ ६ ॥ ॥ अर्थ—बे ढींचण रुपालां छे तेने लक्ष्मिजिये बहु लडावेलां एटले सेवेलां छे ॥ जेनुं अपार मुनियो स्मरण करेछे ॥ तेथी जन्म मरणनो अंत आवेछे ॥ बे जांगो हरिजनना मनने वहाली लागेछे ॥ तेना उपर अजायब जेवा रंगनी थोडी थोडी रुवांटी छे ॥ तेने जोतां मनमां प्रेमनो रंग चडेछे ॥ अने ते

जोनार अतिशे आनंद पामेछे ॥ मोटी घुंटीयोनी छवि वधारे शोभेछे ते चंचल मननी स्थितिने अटकावी देछे ॥ वली ते जोतां मननी दिलगीरी मटी जायछे ॥ अने लोभ आदिक झांखाश पामेछे ॥ एवा हे घनश्याम ॥ ३ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ चरन प्रष्ट चित हरात ॥ तरु तमाल छाबि लजात ॥ समरत ततकाल आत ॥ रात प्रात मनमें ॥ जाकुं नित शेष गात ॥ अजहु पुनि नहि अघात ॥ तुलसी जाहि स्थल रहात पात मानुं जनमें ॥ नख उतंग रंग लाल ॥ शोभित मनु दीपमाल ॥ राजत किधुं चंद्रबाल ॥ ख्याल करत ध्यानी ॥ जय जय घनसाम साम ॥ अंबुज द्रग कृत उदाम ॥ सुंदर सुख धाम नाम ॥ सामरे गुमानी ॥ ७ ॥ ॥ अर्थ–अने चरणारविंदनो उपलो भाग मनने हरीलेछे ॥ तेने जोतां तमालना झाडनी छवि लजायछे ॥ ते राते अने सवारे संभारतां तरतज मनमां सांभरी आवेछे जेना गुण हमेशां शेष नाग गायछे ॥ पण हजी सुधी ते धरातो नथी ॥ अने जे चरणारविंदना पृष्ट उपर तुलसी रहे छे ॥ ते मानिये के त्यां रहेवा सारुंज जन्म पामी छे ॥ राता रंगना उपडता नख छे ते जाणे के दिपमाला शोभे छे ॥ अथवा जाणिये के नाना नाना चंद्र बिराजे छे ॥ एवो (ख्याल) विचार ध्यानियो करे छे ॥ एवा हे घन-

श्याम०॥ ७ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ विलसित चरणारविंद ॥ कोमळ अति प्रेम कंद ॥ ध्यावत भव मिटत फंद छंद स्तवन बोले॥ प्रसरत जेहि पद प्रसंग ॥ पुन्य भरित सरित गंग ॥ अघ विनाश पर्स अंग हो उतंग डोले ॥ राजत महिं उर्ध रेख ॥ वज्रादिक सहित प्रेख॥ ब्रह्मानंद देख देख लेखत कुरबानी ॥ जय जय घनसाम साम ॥ अंबुज द्रग क्रत उदाम ॥ सुंदर सुख धाम नाम ॥ सामरे गुमानी ॥ ८ ॥ ॥ अर्थ—कमल जेवा चरण शोभे छे ते अतिशे कोमल छे अने प्रेमनां मूल जेवां छे तेनुं ध्यान करतां भवनो (फंद) फांसो मटी जाय ॥ अने वेद जेनी स्तुति करे छे ॥ जे चरणारविंदना प्रसंगथी पुन्य भरेली गंगा नदी फेलाई छे ॥ तेनो अंगे स्पर्श करवाथी पाप नाश थाय छे ॥ अने ते उत्तम थईने फरे छे ॥ ते चरणारविंदमां उर्द्धरेखा शोभे छे ॥ अने वज्र आदिकनां चिन्ह सहित देखाय छे ॥ ब्रह्मानंद स्वामि तेने जोइने पोतानुं सरवश कुरबान करवानुं गणे छे ॥ एवा हे घनश्याम ०॥ ८ ॥ ॥

अथ हरिकृष्णाष्टक ॥ चरचरी छंद ॥

धर्म वर्म मर्म धार फरन मरन हरनहार ॥ चरन शरन करन पार ॥ अति उदार सोहे ॥ हित क्रत चित जात हुलास ॥ रटत मिटत विकट पास ॥ प्रेम नेम अति प्रकास ॥ दास हास मोहे ॥ छबि अनुप

रुप बनित ॥ हरष ओघ शोक हनित ॥ धन धन जुबानी भनित ॥ अगनित नरनारी ॥ जयजय हरिकृष्ण राज जगकर वर गुण जहाज ॥ प्रगटत संग ले समाज ॥ ॥ काज भक्तकारी ॥ १ ॥ अर्थ–हे धर्मना बखतररुप मर्मना धरनारा ॥ अने जनम मरणनुं दुःख हरनारा ॥ पोताना चरणने शरणे आवनारने पार उतारनारा ॥ तमे अतिशे उदार अने शोभायमान छो ॥ तमारा मनमां जननुं हित करवानो नित्य (हुल्लास) आनंद छे ॥ तमारा नामनुं रटन करतां भयंकर जमनो पाश मटी जाय तमे प्रेम अने नियमनो अतिशे प्रकाश कर्योछे ॥ तमारुं हसवुं दासने मोह पमाडेछे ॥ उपमा अपाय नहीं एवी तमारी छबी बनीछे ते हरखना समुदाय करेछे ॥ अने शोकने हणेछे ॥ अने अगणित पुरुषो अने स्त्रियो धन्य छे ॥ धन्य छे ॥ एम वाणी बोलेछे ॥ एवा हे हरीकृष्न महाराज तमारी जय थाओ ॥ जय थाओ ॥ हे जगतनी उत्पाति करनारा ॥ तमे श्रेष्ट गुणना *जहाज रूपछो ॥ अने मुनि मंडलनो समाज साथे लईने तमे प्रगट थया छो ॥ अने भक्त जननां कारज करनाराछो ॥ १ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ प्रेम कंद

*मोटुं वहाण

चंद जोर ॥ निरख हरप जन चकोर ॥ भुजग गात रात भोर ॥ अघ कठोर तोरे ॥ प्रानेपत कृत हरत पाप ॥ दरस परस अति दुराप ॥ टलत त्रिविध त्रिविध ताप ॥ व्याप सबहि ठोरे ॥ अग जग अज गज आरूढ ॥ प्रसरन जस किरन प्रौढ ॥ मत कृत नहि मनत मौढ ॥ गूढ चरित भारी॥ जय जय हरिक्रश्न राज ॥ जगकर वर गुण जहाज ॥ प्रगटत संग ले समाज ॥ काज भक्त कारी ॥ २ ॥ अर्थ–तमे प्रेमना मूळ रूपछो ॥ तथा चंद्र-मानी जोड गणीये एवुं तमारुं मुखछे ॥ तेने निरखीने हरिजन रूपी चकोर हरखेछे ॥ अने शेश नाग रात अने दहाडो तमारा गुण गायछे ॥ अने महा कठोर पापने तोडी नाखेछे ॥ तमारी प्रार्थना करवाथी पाप हरोछो ॥ तमारुं दर्शन अने तमारो स्पर्श अति दुःखे प्राप्त थाय एवो छे ॥ के जेथी नाना प्रकारना त्रिविधि ताप टली जाय छे ॥ अने तमे सर्व ठेकाणे अंतरजामी पणे व्यापक छो ॥ तमे (अग) स्थावर (जग) जंगम-रूपी सृष्टिमां जन्म धरता थका अजन्मा छो ॥ अने तमे हाथीनी अस्वारी करी छे ॥ अने तमारा जसनी मोटी कीरणो जगतमां प्रसरी छे ॥ अने मत करनारा मूरख लोको तमने मानता नथी तमारां चरित्र भारे गुप्त छे ॥ एवा हे हारिक्रष्ण महाराज ॥ २ ॥ ॥ छंद ॥ मंगल बल प्रबल मूल ॥ दरशन जन विघन

दूर ॥ समजत शुध विबुध सूर ॥ पूर सुकृत पावे ॥ निरखत चितकों निरोध ॥ बुधिकर सुख भर प्रबोध ॥ सरस लहत लेत शोध ॥ जोध क्रोध जावे ॥ गेम गहन दहन ग्यान ॥ दुखहर सुख देत दान ॥ त्रणवत जग करन तान ॥ मान जर उरवारी ॥ जय जय हरिकृष्णराज ॥ जगकर वर गुण जहाज ॥ प्रगटत संग ले समाज ॥ काज भक्तकारी ॥ ३ ॥ ॥ अर्थ—तमारूं बल कल्याणनुं जोरावर मूल छे ॥ अने तमारां दर्शनथी हरिजननां विघ्न दूर थाय छे ॥ एम नाना प्रकारनां पंडीतो अने देवताओ शुद्ध रीते समजे छे ॥ तेथी तेओ पूरां पुन्य पामे छे ॥ तमारी छबिने निरखतां मन तेमां अटके छे ॥ अने तमारो उपदेश बुध्धि करे एवो तथा सुख भरे एवो छे ॥ ते सारमां सार जाणीने शोधी ले तेना मनमांथी क्रोधादिक जोध्धा जता रहे ॥ तमारूं ज्ञान मोटा अज्ञानने बाली नाखे एवुं छे ॥ अने ते दुःखने हरे छे अने सुखनुं दान आपे छे ॥ अने देहाभिमाननी जड उखाडी नाखीने आ जगतने तरखला बरोबर करवानुं तान राखेछे ॥ एवा हे हरिक्रश्न महाराज ०॥ ३ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ तनुं वन घन त्रिगुन नीत ॥ नौतम भ्रम अजवनीत ॥ प्रनिपत रत नवल प्रीत ॥ विश्रमीत बानी ॥ वरद मरद अति

प्रवीन ॥ अरद दरद जन अधीन ॥ कलबल खल
निबल कीन दीनन सुख दानी ॥ सुंदरवर कांति
सरस ॥ बेन नेन पीयुष बरस ॥ पाप ताप मिटत
परस ॥ तरस नरस टारी ॥ जयजय हरिकृश्न राज ॥
जग कर वर गुण जहाज ॥ प्रगटत संग ले समाज
॥ काज भक्तकारी ॥ ५ ॥ ॥ अर्थ–तमारुं शरीर
वरसादना जेवुं अने मायिक त्रण गुणथी जूदुं
बनेलुं छे ॥ अने तमारो मर्म अजायब जेवो सदा उ-
त्तम छे ॥ अने नविन प्रीतिथी स्तुति करवामां वा-
णी देवी रहे छे ॥ पण ते थाकी जाय छे (पण पार
पामती नथी) ॥ हे वरदानना आपनारां नररूप
तमे अतिशे प्रवीण छो ॥ तमारे आधिन जे जन
थाय ॥ तेनां दरद नाश करो छो ॥ अने कलाथी त-
था बलथी दुष्टोने तमे निर्बल कर्या छे ॥ अने ॥ तमे
गरीबोने सुख देनारा छो ॥ तमारी कांति सुंदर
श्रेष्ट अने रसिक छे ॥ तमारा नेत्रमां अने वचनमां
अमृत वरसे छे ॥ अने तमारो स्पर्श करवाथी पाप
तथा ताप मटी जाय छे ॥ अने नरसी तृश्नाने टाली
नाखे छे ॥ एवा हे हरिकृश्न महाराज ॥ ६ ॥
छंद ॥ ॥ नवल प्रबल कमल नेन ॥ वीर धीर अ-
मल बेन ॥ दनुज दुष्ट कष्टदेन ॥ मेन सेन मारे ॥ जय
धुनि मुनी व्रंद साथ ॥ दुखहर वरदान हाथ ॥ जन

अधीन दीननाथ ॥ के अनाथ तारे ॥ निज जन धन सुख निकेत ॥ विमुखन दुख शोक देत ॥ हरत विपत अमित हेत ॥ लेत जग उगारी ॥ जयजय हरिकृष्ण राज ॥ जगकर वर गुण जहाज प्रगटत संग ले समाज ॥ काज भक्तकारी ॥ ५ ॥ अर्थ–नवीन कमल जेवां अने जोरावर तमारां नेत्रछे ॥ वीररस तथा धिरज भरेलां तमारां निर्मल वचन छे ते दुष्ट जनने अने दैत्योने दुःख देनारां छे ॥ अने कामदेवनी सेनाने मारी नाखेछे ॥ तमे संत मंडळनी साथे जयकारनी धुनी करोछो ॥ अने तमे हाथे करीने दुःख हरवानुं वरदान आपोछो ॥ अने हे गरीबना नाथ तमारे आ- धीन जे जन थायछे एवा केटलाएक अनाथने तमे तारयाछे ॥ तमे पोताना जनना धनरुप तथा सुखना घररुप छो ॥ अने विमुख जनोने दुःख तथा शोक आपोछो ॥ वळी तमे जगत उपर अपार हेत राखीने विपत्ति टाणे विपत्ति हरीने बचावी ल्योछो ॥ एवा हे हरीक्रिष्न महाराज ॥ ५ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ द्रग विशाल लाल कंज रस प्रकार दास रंज ॥ रति पति अति गरव गंज तेज पुंज राजे ॥ होत जोत दुक्रत हान ॥ पुरुष सरस जग पुरान ॥ धरत सनक जनक ध्यान ॥ लखि अग्यान भाजे ॥ कोमल दिल अति कपाल ॥ प्रफुलित चित प्रणत पाल ॥ सरवस वस जस विशा-

ल ॥ जाल जगत जारी ॥ जय ॥ ६ ॥ ॥अर्थ—राता कमल जेवां अने मोटां तमारां नेत्र छे ॥ अने नव प्रकारना रसथी तमे दासने रंजन करोछो ॥ अने कामदेवनी कांतिने तथा अभिमानने तोडी नाखे एवो तमारा तेजनो समुदाय बिराजेछे ॥ तमे जगत करतां पुराण एटले जूना पुरुष माराछो ॥ ने तमने जोतां पापनो नाश थायछे॥ अने सनकादिक तथा जनक विदही तमारुं ध्यान धरे छे अने तमने देखीने अज्ञान नाशी जायछे ॥ तमारुं मन अतिशे कोमल अने दयालु छे ॥ अने तमारुं चित सदा प्रफुल्लित रहेछे ॥ अने तमे आश्रित जनना पालनाराछो ॥ अने सर्व तमारे वश छे तथा तमारो जश मोटो छे ॥ अने जगतनी जंजालने बालनाराछो एवा हे हरिकृश्न महाराज० ॥ ६ ॥ ॥ छंद ॥ नितनित भ्रत रूप नेक ॥ अकल सकल व्याप एक ॥ तपत विपत कपत टेक ॥ शुध विवेक दाता ॥ धेय अगम निगम ध्यात ॥ गोर रुदय चोर गात ॥ चित ध्रत शुभ क्रत सुचात ॥ तात धर्म त्राता ॥ जुग जुग प्रति सुभग देह॥ ॥ नटवर घट नवल नेह ॥ गुननिधि सिधि सुबुधि गेह ॥ अति अछेह यारी ॥ जय जय हरि क्रष्णराज ॥ जगकर वर गुण जहाज ॥ प्रगटत संग ले समाज ॥ काज भक्तकारी ॥ ७ ॥ ॥ अर्थ—रोज रोज तमे सारुं रूप

धरोछो ॥ तमे अकलित छो ॥ अने अंतर्यामीपणे सर्वत्र व्यापक छो ॥ अने तमे एकज परमेश्वर छो ॥ तमारा जेवो बीजो कोइ नथी ॥ माणसना मनने तपावे एवी विपत्तिने कापवानी टेक तमे, धरो छो ॥ अने तमे शुध्ध विवेकना देनारा छो तमे ध्यान करवा योग्य छो ॥ शास्त्र तथा वेदमां तमारुंज ध्यान कह्युं छे ॥ तमारां गात्र गोरा रंगनां अने हृदयने चोरी ले एवां छे ॥ ते चित्तमां धरवाथी शुभ शुची एटले पवित्र करे छे ॥ अने धर्म पितानुं, रक्षण करनारा तमेछो ॥ तमे जुग जुग प्रत्ये मारो देह धारण करो छो ॥ अने नटमां श्रेष्ठ एवी काया नविन स्नेहथी धारो छो ॥ तमे गुणना भंडार छो ॥ तथा सिध्धिना अने सारी बुध्धिना घररूप छो ॥ अने अतिशे अपार मित्रतावाला छो ॥ एवा हे हरिकृष्ण महाराज ॥ ७ ॥

॥ छंद ॥ ॥ उतपति स्थिति प्रलय पलक ॥ झगमग तन कांति झलक ॥ अतुलित व्रत शीश अलक ॥ तिलक भाल दीने ॥ वाम काम करन वाध ॥ गावत श्रुति कहि अगाध ॥ चिंतत व्रत हो समाध ॥ साध अभय कीने ॥ प्रान भक्त जगत प्रेर ॥ जग कवीन कीन जेर ॥ ब्रह्मानंद बेरबेर ॥ हेरत छबि प्यारी ॥ जय जय हरि कृष्णराज ॥ जगकर वर गुण जहाज ॥ प्रगटत संग ले समाज ॥ काज भक्त कारी॥

॥ ८ ॥ ॥ अर्थ-तमे एक पळमां जगतनी उत्पत्ति स्थिति अने प्रळय करो छो ॥ तमारा शरीरनी कांति झगमग झगमग एम झळके छे ॥ जेनी तुल्य कोइ न आवे एवा तमारा मस्तकना केश वळेला छे ॥ अने कपाळमां तिलक करी दीधुं छे ॥ वास एटले वांको एवो जे कामदेव तेने तमे वंचन करनारा छो अने वेद तमने अपार कहीने गाय छे ॥ तमारुं चिंतवन करतां तरत समाधी थाय छे ॥ अने तमे घणा साधुओने निर्भय कर्या छे ॥ तमे भक्तना तथा जगतना प्राणरूप अर्थात् अंतर्यामी छो ॥ अने जगतना कवियोने अर्थात् पंडितोने तमे जेर कर्या छे अर्थात् जीती लीधा छे ॥ ब्रह्मानंद स्वामि वारंवार ते तमारी प्यारी छबिने निरखे छे ॥ ॥ एवा हे हरिकृष्ण महाराज ॥ ८ ॥

॥ अथ रामाष्टक ॥ चरचरी छंद ॥

॥एक निशिशशिअति उजास॥प्रौढ शरद्‌रतु प्रकाश॥रमन रास जगनिवास ॥ चित विलास किने ॥ मोरलिधुन अति रसाल ॥ गेहरे सुर कर गोपाल ॥ तान मान सुभग ताल ॥ मन मराल लिने ॥ व्रज त्रिय सुन भर उछाव ॥ बन ठन तन अति बनाव ॥ चितवत गत नृत उठाव ॥ हावभाव साचे ॥ हरिहर अज हेरहेर विकसत सुर बेरबेर ॥ फरगट घट फेरफेर ॥ नटवर

नाचे ॥ १ ॥ ॥ अर्थ—एक रात्रिमां चंद्रमानो उजास घणो थयो ॥ अने ते चंद्र मोटो शरद ऋतुनो प्रकाशित हतो अर्थात् पूनमनो हतो ॥ ते समे आखा जगतमां जेनो निवास छे एवा श्रीकृष्ण भगवाने रास रमवानो पोताना मनमां विलास कर्यो एटले उमंग धरयो ॥ त्यारे गोपाल एटले श्रीकृष्णे अति मोटा स्वरथी मोरलीनो नाद कर्यो ॥ तेमां तान मान अने सरस ताल लावीने हंसनां मन खेंची लीधां ॥ ते स्वर सांभळीने व्रजनी स्त्रीयो भर उमंगथी शरीरे अतिशे शणगारना बनावथी बनीठणीने नाचवानी चालनो उठाव मनमां साचा हाव भावथी चितववा लागी ॥ त्यां (हरि) इंद्र अथवा विश्नु (हर) शिव अने ब्रह्मा आदिक देवो आवीने वारेवारे निरखवा लाग्या ॥ तेमज वारेवारे ते गोपियोना गावानो स्वर पण खुल्लो थतो हतो ॥ अने शरीरे वारेवारे फुदडी फरीने नटवर एवा जे भगवान ते नाचवा लाग्या ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ ॥ ठेंठें बज त्रंबक ठोर ॥ चेंचें सरनायी सोर ॥ धेंधें वज प्रगव दोर ॥ घेंघें बोले ॥ झुक झुक झुक बजत झंज ॥ टुक टुक मंजिर रंज ॥ डुक डुक उपंग चंग ॥ अति उमंग डोले ॥ द्रगडदा द्रगडदा पखाज ॥ थ्रगडदा थैथै समाज ॥ कडकडदा कडकडदा दुकड त्रुकट ॥ घन थट राचे ॥ हरिहर अज हेर हेर

॥ विकसत सुर बेरबेर ॥ फरगट घट फेर फेर ॥ नट-वर नाचे ॥ २ ॥ ॥ अर्थ–ते ठेकाणे ठें ठें एम त्रंबालु वागवा लाग्यां ॥ अने चेंचें एम शरणाईओना सोर थवा लाग्या ॥ अने धें धें ए रीते ढोलक वागे छे ॥ अने मोटो ढोल धें धें एम बोले छे ॥ झुकझुक एम झांझ वागे छे ॥ अने टुकटुक एवा शब्दथी मंजिरा मनरंजन करे छे ॥ तेमज डुकडुक ए रीते उपंग नामनुं वाजुं तथा मोर चंग वजावे छे ॥ अने घणा उमंगथी फरे छे ॥ अने द्रगडदा द्रगडदा ए रीते पखाज वागे छे ॥ अने ते गोपी अने गोवालानो समाज थगडदा अने थेइ थेइ नाचे छे ॥ अने कुकडदा कुकडदा एम नरघां वागे छे तथा तृकट घन एम पण वागे छे ॥ तेथी जोवा मळेलो थट खुशी थाय छे ॥ सां इंद्र शिव ब्रह्मा आदिक देवो आवीने ० ॥ २ ॥ छंद ॥ संतन अभिराम धाम ॥ क्रमत रमत भ्रमत काम ॥ समत श्रमत नमत ग्राम ॥ वाम हाम लोभे ॥ अटन घटन आति उदाम ॥ थनगन तन टाम ठाम ॥ तज विश्राम अति विभ्राम ॥ साम सुंदर शोभे ॥ जमुनाके नीर तीर ॥ खेलत बलवीर वीर ॥ चहुंवट थट सघट भीर ॥ कटि सुधीर काचे ॥ हरि हर अज हेरहेर ॥ विकसत सुर बेरबेर ॥ फरगट घट फेरफेर ॥ नटवर नाचे ॥ ३ ॥ अर्थ–

ते भगवान संत पुरुषोना मनने ठरवाना सुंदर धाम रुप छे ॥ ते कदम भरे छे ॥ अने रमे छे ॥ तेने जोईने कामदेव पण भ्रममां पडे छे ॥ अने उन्मत्त एवा गोवालियाना ग्राम एटले समुदाय थाकी जईने भगवानने नमे छे ॥ अने वामा एटले ते गोपियोनी हिम्मत भगवानने जोईने लोभाई जाय छे ॥ अति उत्तम रीते शरीरे फरे छे ॥ अने ठेकाणे ठेकाणे शरीर थनगन थनगन नाचे छे ॥ ते विसामो लेवानुं तजीने अतिशेजं भ्रमण करे छे ॥ तेमां श्री कृष्ण भगवान सारा शोभे छे ॥ ए रीत जमनांजीना जलना किनारा उपर बलवीरना भाई रमे छे ॥ अने चारे तरफ रस्ता-ओमां माणसोना थटनी घणी भीड थई छे ॥ अने ते सारा धीरजवान गोवालियाओए केडे काछडा वाल्या छे ॥ त्यां इंद्र शिव ब्रह्मा आदिक देवो आवीने ०॥ ३ ॥ ॥ छंद ॥ झललल तन कांति जलक ॥ खललल भुज चूड खलक ॥ सललल जों हि वीज सलक ॥ भलक भाल साजे ॥ अटपट लट छूट अलक ॥ त्रट घट शुभ कीन तलक ॥ हटहट घट त्रुगट हलक ॥ नट बिलास राजे ॥ तन तन प्रति सुगत तान ॥ जनजन मन एक जान ॥ क्रत उत मुख कान कान ॥ मान गान

माचे ॥ हरिहर अज हेर हेर ॥ विकमत मुर वेरवेर ॥ फरगट घट फेरफेर ॥ नटवर नाचे ॥ ४ ॥ अर्थ– अने झललल एम गोपियोना शरीरनी कांति झलके छे ॥ अने तेमना हाथना चुडा खललल एम खलके छे ॥ अने ॥ वीजलीनी पेठे सललल एम सलके छे ॥ अने तेमणे पोताना कपालनो भभको मच्यो छे ॥ तेमना चोटलानी लट वांकी चूंकी छूटी पडी छे ॥ अने शरीरना किनारा उपर अर्थात् कपालमां सारां तिलक एटले आड्यो करेली छे ॥ अने शरीरे हठी हठीने त्रिभंगी चालनी पेठे हाले छे ॥ तेथी नटना जेवो खेल शोभे छे ॥ प्रत्येक शरीर धारी सारी गति करीने तान ले छे ॥ अने प्रत्येक माणसनां मन मलीने जाणे एकज थई गयां छे ॥ अने मोढेथी उक्ति एटले वाणी हे कान हे कान एम करे छे ॥ अने गानना मानमां मची रह्यां छे त्यां इंद्र शिव ब्रह्मा आदिक देवो आवीने ०॥ ५ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ घममम घुघरु धमंक ॥ ठममम झंझर ठमंक ॥ धममम मम भू धमंक ॥ गत निशंक गावे ॥ झग झग झग झगमगाट ॥ थग थग थैथैत थात ॥ नौतम पग द्रग निराट ॥ ललित नाट लावे ॥ लथबथ हथ गूंथ लीन ॥ पथ पथ पिय सथ प्रविन ॥ कथ

कथ ग्रथ शेश कीन ॥ जुथ नविन जाचे ॥ हरिहर अज हेरहेर ॥ विकसत सुर वेरवेर ॥ फरगट घट फेर फेर ॥ नटवर नाचे ॥ ९ ॥ अर्थ–घमघम एम घुघरा घमके छे अने ठमठम एम झांझर ठमके छे ॥ अने घमममम एम पृथ्वी घमके छे ॥ अने निःशंक थइने गति करीने गाय छे ॥ ते भगवाननी कांतिनो झगमगाट झगझगी रह्योछे ॥ अने थगथग तथा थेई थेई एवा नृत्यनो थाट मच्यो छे ॥ अने सौथी सरस चरण शोभेछे तथा नेत्र पण अद्भुत शोभेछे ॥ अने सुंदर नृत्यनो भेद लावेछे ते गोपी अने गोवालाए लथबथ थइने एक बीजाना हाथ गुंथी लीधाछे ॥ अर्थात् आंकडा भीडयाछे ॥ अने ते प्रवीण गोपियो रस्ते रस्ते श्रीकृष्ण स्वामिनी साथे फरेछे ॥ ते लीलानुं कथन करी करीने शेष नागे ग्रंथ बनाव्यो ते नवा नवा मुनियो वांचवाने मागेछे ॥ सां इंद्र शिव ब्रह्मा आदिक देवो आवीने० ॥ ९ ॥ ॥ छंद ॥ नौतम छबी नंदनंद ॥ मुख सुहास मंदमंद ॥ दंपतिजुत द्रंद द्रंद ॥ जगत वंद डोले ॥ विनता सुर व्रंदव्रंद ॥ निरखत आनंद कंद ॥ गति अति स्वच्छंद छंद ॥ जय जय बोले ॥ जुगलित कर जोर जोर ॥ ठमक झमक ठोरठोर ॥ विमल तान तोर घोर मोरली वाचे ॥ हरिहर अज हेरहेर ॥ विकसत सुर बेरबेर ॥

फरगट घट फेरफेर ॥ नटवर नाचे ॥ ६ ॥ ॥अर्थ-नंदना पूत्रनी छवि अतिशे उत्तम बनी छे ॥ अने तेमनुं मुखारविंद थोडुं थोडुं हसतुंछे ॥ अने ते जगतने वंदवा योग्य एवा भगवान प्रिया अने प्रियनां जोडे जोडां बनीने फरेछे ॥ त्यां देवनी स्त्रियो टोले टोले मलीने आनंदना थड रुप एवा भगवानने निरखेछे ॥ ते भगवान अतिशे स्वच्छंद पणे गति करेछे ॥ ते जोईने (छंद) वेद जयजयकार बोलेछे ॥ अने ते जोडलांए हाथे हाथ जोडयाछे ॥ अने ठेकाणे ठेकाणे ठमकारा अने झमकारा थायछे ॥ अने निर्मळ तान तोडेछे ॥ अने घणा घोरथी मोरली वजावेछे ॥ त्यां ईंद्र शिव ब्रह्मा आदिक देवो आवीने ॥ ६ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ लख छवि सुरपति लजीत ॥ गुप्त गान तान गति ॥ पिये प्रिया सहित प्रीत ॥ समरजीत शोभे ॥ रमत भ्रमत अजब रीत ॥ चकित झुकित थकित चीत ललित हलित मलित लीत ॥ निरख मीत लोभे ॥ झुंब झुंब एक लगन ॥ विमलित द्रग जात विघन ॥ तक तक चक होत तगन ॥ मौढ मगन माचे ॥ हरिहर अज हेर हेर ॥ विकसत सुर वेरवेर ॥ फरगट घट फेरफेर ॥ नटवर नाचे ॥७॥ ॥अर्थ-ते भगवाननी छविने जोईने इंद्र लजाय छे ॥ अने तेमना गीतनुं गान तथा तान गुप्त रीतनुं छे ॥ ते प्रिया अने पियु प्रीतिये सहित छे ॥ पण स्मर-

एटले कामदेवने जीती लीधो होय एवा शोभे छे ॥ ते अजायब रीते रमे छे ॥ अने भमे छे ॥ अने मनमां चकित थईने अर्थात आश्चर्य पामीने झुके छे ॥ अने वली थाकी जाय छे ॥ तेमज सुंदर रीते हलीमली लीधुं छे ॥ ते निरखवाने तेमना मित्रोनां मन लोभाय छे ॥ लुबीझुंबीने एकरूप थई गया होय एम लागे छे ॥ अने नेत्र शोभायमान छे ॥ ते जोतां चित्र जतां रहे छे तेमना कानमां तगन एटले कुंडल तक तक एम चकचकी रह्यां छे ॥ ते जोईने प्राचीन काल-ना मोटा मुनियो मग्न थाय छे ॥ त्यां इंद्र शिव ब्रह्मा आदिक देवो आवीने ०॥ ७ ॥ छंद ॥ तत तत तत होत तान ॥ अचुंबित गत आन आन ॥ धुरजटि घट छुटत ध्यान ॥ कान बान सुनते ॥ गेह रि धुन होत गान ॥ मंगल सुर मान मान ॥ भुल भान खान पान ॥ प्रान जान भनते ॥ थिंधकट नृत धार धार ॥ त्रि मित तहां सतार तार ॥ ब्रह्मानंद वारवार ॥ चरनन चित राचे ॥ हरिहर अज हेरहेर ॥ विकसत सुर वेरवेर ॥ फरगट घट फेरफेर ॥ नटवर नाचे ॥८॥ अर्थ–त्यां तत तत तत एमतान लेवानो शब्द थायछे ॥ अने अचुंबित एटले आगल कोईए कहेली नहीं एवी जूदी जूदी गति लावेछे ॥ अने ते गीतनी वाणी काने सांभलीने शिवजीना शरीरनुं ध्यान छूटी जाय

छे ॥ एवा घाटा स्वरथी गान थायछे ते सांभलीने देवताओए मंगलकारी मानी मानीने शरीरनुं तथा खावा पीवानुं भान भुली जईने ते भगवाननी स्तुति भणतां भगवानने पोताना प्राण जेवा जाण्या ॥ अने थिधिकट एवी ढबनो नाच धरीधरीने स्त्रियो एटले गोपियो अने मित्र एटले गोवालाओ तालीए ताली दईने हसेछे ते जोईने ब्रह्मानंद स्वामिनुं मन ते भगवानना चरणारविंदोमां राचेछे ॥ त्यां ईंद्र शिव ब्रह्मा आदी देवताओ आवीने० ॥ ८ ॥

॥ अथ दश अवतार रूपें श्रीजी महाराजनी स्तुति ॥

॥ दोहा ॥ ॥मच्छ कच्छ वाराह मण नरासिंघ वामन नाम ॥ कर फरसि रघुपती क्रष्ण ॥ बुध नीकलंक प्रणाम ॥१॥ मच्छकच्छ अने वाराह कहीए ॥ तथा नरसींघजी अने वामनजी जेनां नामछे ॥ तथा हाथमां फरशी धारी एवा फरशुराम रघुनाथजी श्रीक्रष्ण बुध्ध तथा निकलंकने प्रणाम करुंछुं ॥ १ ॥ दोहा ॥ वेद संखासुर ले वटे ॥ वाणी घटे सो ब्रह्म ॥ तोय उदधि चाडण त्रटे ॥ प्रगटे मच्छ प्रथंम ॥२॥ अर्थ—संखासुर नामनो दैत्य वेद लईने वटी गयो ॥ तेथी ब्रह्मानी वाणी घटी गई ॥ त्यारे समुद्रने चालववा वास्ते तेने कांठे प्रथम मच्छ रूपे भगवान प्रगटया ॥२॥

॥ रूप मुकुंद छंद ॥

॥ प्रथमं धर रूप अनूप प्रथिपर ॥ कायम मच्छ स्वयं छकला ॥ जल लोध करे महा जोध पति जग ॥ कारण सोध लई कमला ॥ शिर छेद शंखासुर वेद लिये सब ॥ मेटण खेद विरंचि महि ॥ अति आनंद कंद मुनिंद आराधत ॥ सो सहजानंद रूप सही ॥ १ ॥ अर्थ—पृथ्वी उपर (समुद्र पृथ्वी उपर छे माटे पृथ्वी उपर कह्युं) प्रथम मच्छनी कायानुं रूप उपमा न आपी शकाय एवुं धर्युं ॥ ते पोतानी इच्छाथी कलानो अवतार कहेवाय ॥ मोटा योध्धाओना स्वामि एवा मच्छदेवे समुद्रना जलनुं आलोडन एटले मथन कर्युं ॥ अने जगतने वास्ते पृथ्वी रूपी दोलत शोधी लीधी ॥ अने संखासुर दैत्यनुं माथुं कापीने तेनी पासेथी बधा वेद पाछा लीधा ॥ अने ब्रह्मानो तथा पृथ्वीनो खेद मटाड्यो ॥ एवा अतिशे आनंदना थड रूप अने मुनिना इंद्र जेनुं आराधन करेछे ते आज सहजानंद स्वामी रूपे नक्की थया छे ॥ १ ॥ छंद ॥ कछ धार वपू अवतार रसाकज ॥ सार लहि मथया सगरं ॥ करतार चक्रेश्वर राह कपे सर अंम्र अमी विष दे असुरं ॥ वडवान घटं वंधिवान कियो वल ॥ त्रिसधि रूप अनूप तहिं ॥ अति आनंदकंद मुनिंद आराधत ॥ सो सहजानंद रूप सही ॥ २ ॥ अर्थ—पछी लक्ष्मी दुर्वासा ऋषिना श्रापथी समुद्रमां पडी

हती ॥ ते लक्ष्मीने वास्ते काचबाना देहनो अवतार धरयो अने सागर मथन करीने लक्ष्मीनी सुध लीधी ते जगत कर्त्तारे हाथमां चक्र धरीने राहुनुं माथुं काप्युं॥ अने देवोने अमृत पायुं अने असुरोने झेर जेवी मदिरा पाई ॥ वली ते समे बले करीने वडवानल अग्निने घडामां बंधीवान कर्यो ॥ एवां त्रण प्रकारनां अनुपम रूप धरीने सां काम साध्यां ॥ एवा अतिशे आनंदना थडरूप० ॥२॥ छंद ॥ हरि होय वाराह हण्यो हरणायक ॥ नायक लायक नूर नलं ॥ घरवाल लई प्रतिपाल डढां धर ॥ ख्यात विशालह काल खलं ॥ जगनाथ नमो समराथ जगो जग ॥ आथ जनं गुन गाथ अही ॥ अति आनंदकंद मुनिंद आराधत ॥ सो सहजानंद रूप सही ॥ ३ ॥ अर्थ–पछी भगवाने वाराहरूपे थईने हिरण्याक्ष दैत्यने मार्यो ॥ ते भगवान सर्वेना उपरी लायक अने तेजना नलरूप बन्या ॥ तेमणे पृथ्वीने वाली लईने ते प्रतिपालन करनारा भगवाने दाढ उपर धरी ॥ ते वात प्रख्यात छे ॥ अने ते मोटा दुष्टना काल रूप छे ॥ एवा हे जगतना नाथ तमने नमस्कार करुं छुं ॥ तमे जुगो जुगमां समर्थछो ॥ तमे हरिजननी (आथ) पुंजी रूपछो ॥ अने शेषनाग तमारा गुण नी गाथा गायछे ॥ एवा अतिशे आनंदना थडरूप० ॥ ३ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ प्रगटे नरसिंघ अबीह प्रथिपर

॥ त्रास निवारण दास तणं ॥ मल्हाद हितं असुरांध महारण ॥ वेश कराल भयाल बणं ॥ हरणाकंस मार ओधार जनं ॥ हरिके जश वार उचार कहि ॥ अति आनंद कंद मुनिंद आराधत ॥ सो सहजानंद रूप सही ॥ ४ ॥ ॥ अर्थ–पछी मल्हाद रूपी पोताना दासनो त्रास निवारण करवाने जेना जेवो बीजो कोई नथी ॥ एवा नृसिंहरूपे पृथ्वी उपर मगट्या ॥ मल्हादना हितने वास्ते मदमां अंध थएला असुरने मारवा सारु महा विक्राल भयंकर वेशे बन्या ॥ हीरण्यकश्यपुने मारीने जननो उध्धार कर्यो ॥ एवा भगवानना जश वारे वारे उच्चारीने कहुं छुं ॥ एवा अतिशे आनंद ना थडरूप ॥ ४ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ सुरराज कजं महाराज सुधारण ॥ वामण अंग सुचंग बणं ॥ द्विज दिन चलंवल आगल दापत ॥ तीन क्रमं घर देत्रिपणं ॥ वर ले वध व्योम सु भोम भरे वल ॥ दाब रसातल राज दई ॥ आति आनंद कंद मुनिंद आराधत ॥ सो सहजानंद रूप सही ॥ ५ ॥ अर्थ–पछी महाराज इंद्रनुं काज सुधारवाने वास्ते पवित्र वामन अंगे बन्या अने गरीब ब्राह्मण थईने चाल्या ॥ अने बली राजा आगल जइने कह्युं के त्रण पगलां पृथ्वी आपवानी मतिज्ञा कर ॥ पछी एवुं वरदान लईने आकाशमां वधीने पृथ्वी भरी लीधी ॥ अने बली राजाने

रसातलमां दाब्यो ॥ अने सांनु राज आप्युं ॥ एवा एवा अतिशे आनंदना थइ रूप० ॥५॥ छंद ॥ धन धाम द्रिजं फरसराम तनं ॥ धर हेत पिता निज मात हणं ॥ कर पाण फरसि नक्षत्राण करे धर ॥ तोड भुजा सहस्त्राण तणं ॥ किरतार अपार प्रकार बहुकर ॥ वार केहि अवतार बहि ॥ अति आनंदकंद मुनिंद आराधत ॥ सो सहजानंद रूप सही ॥ ६ ॥ अर्थ–पछी जे ब्राह्मणने घेर परशुरामनो देह धरयो ॥ ते ब्राह्मणना घरने धन्य छे ॥ ते फरशुरामे पिता उपर हेत राखीने पोतानी माने मारी नांखी ॥ अने हाथमां (कृपाण) तरवार जेवी फरशी धरीने नक्षत्रि पृथ्वी करी ॥ अने सहस्त्रार्जुनना हजार हाथ तोडी नाख्या ॥ ते जगतकर्त्तारे बीजा पण केटलाएक अवतार लईने अनेक प्रकारथी घणीवार एटले बहु सहायता करी छे ॥ एवा अतिशे आनंदना थइरूप ॥ ६ ॥ छंद ॥ होय नाथनरं रघुनाथ सुरां हित ॥ ईशजग दश शिश अरं ॥ सुध सित लई ज़ुध जीत निशाचर ॥ कीत जगं सप्रबित करं ॥ धनुषं धर भार उतार सबे धर ॥ नार रुषि अविधारन हि ॥ आति आनंदकंद मुनिंद आराधत ॥ सो सहजानंद रूप सही ॥ ७ ॥ अर्थ–पछी देवताओना हितने वास्ते ते नाथ नररूपे रामचंद्रजी थया ॥ ते जगतना ईश्वर दस माथावाला रावणना (अरि) शत्रु थया ॥ तेमणे

सीताजीनी सुध लीधी ॥ अने राक्षस साथे जुध्ध जीत्या ॥ अने जगतमां कीर्त्ति (पवित्र) विस्तारवाली करी ॥ अने धनुष धरीने पृथ्वीनो वधो भार उतार्यो ॥ अने गौतम ऋषिनी स्त्री अहल्यानो उध्धार कर्यो॥ एवा अतिशय आनंदना थड रूप० ॥७॥ छंद ॥ कृष्न अवतार ओधार जनं हरि ॥ कंस संहार विहार कियं ॥ वछवाल वयालनथे विसवेसर ॥ रीझत बाल गोपाल रीयं ॥ वसु कोप अनोप कियो व्रजपें तव ॥ गोप रखे गिरिराज ग्रहि ॥ अति आनंदकंद मुनिंद आराधत ॥ सो सहजानंद रूप सही ॥८॥ अर्थ—वली कृष्ण अवतार धरीने जननो उध्धार कर्यो ॥ अने ते हरिये कंसनो संहार कर्यो ॥ अने व्रजमां विहार कर्यो अने ते विश्वेश्वरे वाछडां अने बालक साथे जइने (व्याल) सरपने नाथ्यो ॥ तेथी त्यां रहेला गोवालना बालको रीझया ॥ वली इंद्रे व्रज उपर अतिशे कोप कर्यो ॥ त्यारे गोवर्धन पर्वतनुं धारण करीने गोवालियाओनुं रक्षण कर्युं ॥ एवा अतिशय आनंदना थड रूप० ॥८॥ छंद ॥ प्रगटे बुध सो सुध बोध प्रकासण ॥ जोध मनं अवरोध जगं ॥ सव मत्सरं उपरंत व्रतंशत ॥ भूर उमंत असंत भगं ॥ निसप्रेहि निकाम नस्वाद नलोभीय ॥ मान विना व्रतमान महि ॥ अति आनंदकंद मुनिंद आराधत ॥ सो सहजानंद रूप सही ॥९॥ अर्थ—पछी शुध्ध ज्ञान

प्रकाश करवा सारु बुध्ध रूपे प्रगट थया अने जगतमां मन रूपी जोध्धानो अवरोध कर्यो ॥ मतलब के मनने वश कर्युं ॥ बीजा सर्व मतने माथे अने सर्वोपरि व्रत धारण कर्यां ॥ अने भूरलोकमां साचा साधुओने उन्मत्त कर्या ॥ अने असंतने भगाडी मूक्या ॥ अने वली ते साधुने एवा कर्या के निस्प्रेही निष्कामी निःस्वादी अने निर्लोभी थइने अभिमान तजीने वर्तमान पालवा खबरदार रह्या ॥ एवा अतिशय आनंदना थड रूप ॥९॥ ॥छंद॥ जब होसिय रोर करोर महाजग ॥ होय कलु ध्रम लोप होसि ॥ असुराण जुराण भयाण वधे अल ॥ द्रेष शुभेष देखे धरसि ॥ धजराज चढे निकलंक चक्र धर ॥ भय हरसी जयकार मही ॥ अति आनंद कंद मुनिंद आराधत ॥ सो सहजानंद रूप सही ॥१०॥ ॥अर्थ–वली ज्यारे जगतमां महाक्रूर रोल वरतशे ॥ अने कलियुग होवाथी धर्मनो लोप थशे ॥ अने (अल) पृथ्वीमां भयानक जोरावर असुरो वधशे ॥ अने तेओ सारा भेखधारीने देखीने द्रेश धरशे ॥ त्यारे निकलंक रूपे चक्र धरीने वावटो लईने महाराज चडशे ॥ अने भय हरीने पृथ्वीमां जयजयकार करशे ॥ एवा अतिशय आनंदना थडरूप ॥१०॥ ॥छंद॥ अवतार अनेक लिया अविन्यासीय॥ लाख अलेख अवे लेयसी ॥ सहजानंदरूप अनूप सबे हिय॥ व्यापक रूप रयो विलसी ॥ नित

नीमत रूप अनूप निरंजन ॥ लाडुय ताकिहि ओटल-हि ॥ अति आनंद कंद मुनिंद आराधत ॥ सो सहजा-नंद रूप सही ॥ ११ ॥ ॥अर्थ–ते अविनाशी भगवाने अनेक अवतार लीधा ॥ अने हवे वली गणी न शकाय एटला लाख अवतार लेशे ॥ ते सर्वेमां उपमा न आपी शकाय एवा श्री सहजानंद स्वामीनुं रूप व्यापक रूपे शोभी रह्युं छे ॥ अर्थात् श्रीजी महाराज सर्वे अवतारना अवतारी छे ॥ अने ते अंजन जे माया तेणे रहित एवा जे भगवान उपमा आपी शकाय नहीं एवा वली नित्य-रूप अने नैमितिक रूप धरनारा ॥ एवा श्रीजी महा-राजनुं लाडु वारोटे (ब्रह्मानंद स्वामि) शरण लीधुं ॥ एवा अतिशय आनंदना थड रूप०॥ ११ ॥छपय॥ ॥एहि मछ एहि कछ॥ एहि शुकरतनु धार्‍यो ॥ एहि बने नर-सिंघ ॥ दुष्ट हरनाकंस मारयो ॥एहि वामन वपु किन॥ लीन पदतीन भुवन त्रय ॥ एहि फरसिधर राम॥ एहि रघुपति किय जगजय॥ एहि कृष्ण बुध न कलंक एहि॥ ताहि भेटत भव भ्रम टले ॥ कृत नेक रूप लाडू कहे ॥ सो यह सहजानंद मले ॥ ॥ १ ॥ ॥ अर्थ–एज मच्छ अने एज कच्छ अने एणेज वराहनो देह धार्‍यो ॥ अने एमणेज नृसिंह रूपे थईने दुष्ट हिरण्यकश्यपुने मार्‍यो ॥ अने एमणेज वामन देह धरीने त्रण पगलामां त्रण भुवन लई लीधां ॥ अने एज

फरशीना धरनारा फरशुराम थया ॥ अने एमणेज रा-
मचंद्रजीनुं रूप धरीन जगतमां जय कर्यो ॥ एज कृष्ण
बुद्ध अने निकलंक पण एज॥तेमने मळतां संसारमां भम-
वानुं मटी जाय लाडु बारोट कहेछे के जेणे अनेक रूप कर्यां
त सर्वना अवतारी आज सहजानंद स्वामि मने मल्या ॥१॥

॥ षट दर्शन विषे ॥

॥ साखी ॥ ॥ देख्यां सब दुभियानभे ॥ षट दरसनकुं
खोज ॥ वर्णाश्रम बेपारके ॥ सब डोल्त ले बोज
॥ १ ॥ ॥ अर्थ–ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के बधी
दुनियामां छ दर्शनने खोलीन में जोयां ॥ पण ते
सर्वे पोत पोताना वरणना अने आश्रमना व्य-
वहारना भार उपाडीने भमेछे ॥ १ ॥ ॥ साखी ॥
॥ पंडीत सन्यासी प्रसिध ॥ जोगीजंगम जान ॥ शेख
भक्त अरु सेवडा ॥ सबमें खेंचा तान ॥ २ ॥ ॥ अर्थ-
(१) पंडित एटले ब्राह्मण ॥ (२) सन्यासीरूपे प्रसिध्ध
छे ते ॥ (३) जोगी एटले कानफटा ॥ (४) जंगम
जे शिवना उपासक घंट बजावता फरेछे ते जाणो ॥
(५) शेख भक्त एटले फकिर ॥ (६) शेवडा एटले
जैनना गोरजी ॥ ए सर्वेमां ताणा खेंच रहीछे ॥ मतलब
क सर्वे पोतपोतानो मत खेंचेछे ॥ २ ॥ ॥ साखी ॥
आंटी छुटे न अंतरे ॥ मिटेन मनका खेद ॥ काम क्रोध
मद लोभ वस ॥ वक्ता श्रोता वेद ॥ ३ ॥ ॥ अर्थ–ए-

मनां अंतरमां पडेली आंटी छुटती नथी ॥ अने मननो खेद मटतो नथी ॥ अने जे ब्राह्मणो वेदना कहेनारा अने सांभळनाराछे ॥ तेओ पण काम क्रोध मद अने लोभने वश छे ॥ ३ ॥ ॥ छंद त्रिभंगी ॥ ॥ भट वेद पढंदा ॥ संध्या वंदा ॥ कर्मन फंदा उझुंदा ॥ ओंकार जपंदा मुन्य रहंदा अंतर मंदा मुकुंदा ॥ पुनी कथा कहंदा लोक ठगंदा विकल फीरंदा वर्तंदा ॥ सद्गुरुका बंदा ब्रह्मानंदा साच कहंदा सब हंदा ॥ १ ॥ ॥ अर्थ—ब्राह्मण वेद भणेछे संध्यावंदन करेछे ॥ अने कर्मनी जाळमां लटकी रहेछे ॥ कोईतो ऊँकार जपेछे ॥ अने मौनरहेछे ॥ पण ते मूरख अंतःकरणमां मुंझायछे ॥ वळी कथा कहीने लोकोने ठगेछे अने व्रत्ति एटले आजिविकाने वास्ते गांडा थईने फरेछे ॥ सद्गुरुनो बंदो ब्रह्मानंद सर्वेनी साचे साची वात कहेछे ॥ १ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ संन्यास सहूता खिन न थरूता फिरत वगुता जग खूता मायाके पूता नगर रहूता धरन विभूता धन धूता ॥ भेख अरु भूता जपत संजुता रंडिरूता नतरंदा ॥ सद्गुरुका बंदा ब्रह्मानंदा साचकहंदा सबहंदा ॥ २ ॥ ॥ अर्थ—सन्यासी जे होयछे तेना मन क्षण मात्र स्थिरता पामतां नथी ॥ अने ते जगतरूपी कादवमां खुची जईने वगोवाता फरेछे ॥ तेओ नागा रहेछे पण मायाना पूत्रछे अने बिभूति धरे छे पण धनना धूतना-

रा छे ॥ भैरव अने भूतना मंत्र पण भेला जपे छे ॥ अने रांडनी (रति) प्रीतिने तरी शकता नथी ॥ सद्गुरूनो बंदो० ॥ २ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ जगकावत जोगी सव विधि भोगी अंतर रोगी अघ ओघी ॥ मद्मांस भखोगी भूत जपोगी लज्या खोगी कामोगी ॥ तनकान फटोगी वेशुध्य होगी फरतहे पूंगी फूंकंदा ॥ सद्गुरूका बंदा ब्रह्मानंदा साच कहंदा सब हंदा ॥ ६ ॥ ॥ अर्थ—वली जगतमां जोगी कहेवायछे ॥ पण तेओ सरवे प्रकारे भोगी होय छे एना अंतः करण विषयादीकना रोगी अने पापना (ओघ) ढगला जेवां होयछे ॥ मदिरा ने मांसनो भक्ष करेछे ॥ अने भूतनो जप करेछे ॥ अने लाज खोई नाखेछे अने कामना (ओघ) ढगलाछे ॥ शरीरे कान फडावेछे अने बेभान थई जायछे ॥ अने शिंगडी फूंकता फरता फरेछे ॥ सद्गुरूनो बंदो० ॥ ३ ॥ ॥ छंद ॥ अरु जंगम कहावे लींग लटकावे घंट बजावे शिव गावे ॥ पुनि भीख मंगावे पैसा पावे त्रपत न आवे तन तावे ॥ फिर श्वान भसावे लोक हसावे भेख लजावे भरमंदा ॥ सद्गुरूका बंदा ब्रह्मानंदा साच कहंदा सबहंदा ॥ ४ ॥ ॥ अर्थ—वली जंगम कहेवायछे ॥ ते पोताना माथा उपर शिवना लिंग लटकावेछे ॥ घंट बजावीने शिवना गुण गायछे ॥ वळी भीख

मागेछे ॥ पैसा पामेछे ॥ तोपण तृप्ति थती नथी ॥ तेथी शरीर तपावेछे ॥ वस्तीमां फरीने कूतरां भसावेछे ॥ लोकने हसावेछे ॥ अने ते पोते भरमाएला पोताना भेखने लजावेछे ॥ सद्गुरूनो बंदो०॥ ४ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ अरु फकिरा फरता कलमा भरता अंतर जरता नहिं ठरता ॥ जिवनकुं मरता संक न धरता जुं हर करता नहि डरता ॥ बोलत बरबरता कंठ हुकरता पछीम धरता घूमंदा ॥ सद्गुरूका बंदा ब्रह्मानंदा साच कहंदा सबहंदा ॥ ५ ॥ ॥ अर्थ–वली फकीरो फरेछे ॥ तेओ कलमो भणेछे ॥ तेमना अंतःकरण बलतां होयछे ॥ पण ठरतां नथी ॥ अने जीवडां मारतां शंका धरता नथी ॥ अने जेम हर एटले शिव संहार करे तेम संहार करतां बीता नथी ॥ अने कंठ घोघरो करीने बडबडता बोलेछे ॥ अने पश्चिम दिशाए माथुं धरीन घुमेछे ॥ अर्थात् पश्चिम दिशाने नमेछे ॥ सद्गुरूनो बंदो० ॥ ५ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ आखत अरिहंता जंता जंता कर्म कथंता भरमंता ॥ विषये वरतंता कंचन कांता ॥ अंतर शांता नहि अंता ॥ अरु कर्म करंता नही डरपंता नही भगवंता उचरंदा ॥ सद्गुरुका बंदा ब्रह्मानंदा साच कहंदा सबहंदा ॥६॥ ॥ अर्थ–तेमज जातियो अरिहंत अरिहंत एम बोले छे ॥ तथा अरे जंतु मरशे जंतु मरशे ॥ एम कहे छे ॥

अने कर्मनी मुख्य वात कहीने लोकोने भमावे छे ॥ अने पंच विषयमां वरते छे ॥ तथा सोनुं. अने स्त्रीथी अंतःकरणमां शांति पामता नथी ॥ अने कर्म करतां कांइ बीता नथी ॥ अने भगवाननुं नाम बोलता नथी ॥ सद्गुरूनो बंदो ॥ ६ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ कहावत वैरागी लुबध्या लागी अंतर आगी त्रियरागी ॥ ज्वाला वीष जागी माया पागी अकल वेकागी निर्भागी ॥ बांधत घर बागी लज्या त्यागी धन अरु ढांगी धारंदा ॥ सद्गुरुका बंदा ब्रह्मानंदा साच कहंदा सबहंदा ॥ ७ ॥ ॥ अर्थ–वली केटलाएक वेरागी कहेवाय छे पण तेमने लोभ लागेलो होय छे ॥ अने स्त्री उपर प्रीतिवाला होय ॥ तेथी तेमना अंतःकरणमां कामनी आग सलगती होय छे ॥ तेमने पंच विषयनी झाल लागेली अने मायामां भिजाएला होवाथी ते अभागीआओनी अकल वेचाइ गइ होय छे ॥ तेओ घर अने बाग बनावे छे अने लाज तजीने पैसा तथा ढोंगपणुं धारण करे छे ॥ सद्गुरुनो बंदो० ॥ ७ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ भक्तीके भगला बातन फगला अंतर दगला विष ढगला ॥ देखत टगटगला ॥ डोलत नगलौं थिरठव पगला ॥ जगठगला बाहर गती बगला अंतर कगला वाका संगला छांडंदा ॥ सद्गुरुका बंदा ब्रह्मानंदा साच कहंदा सबहंदा ॥८॥

॥ अर्थ–भक्तिनो वेष धरनारा अने वातमां फगी जनारा अने अंतःकरणमां दगावाला तथा विषयना ढगला जेवा नागा थइने फरता फरे ॥ पण स्त्री आदिक सामुं टगटग जोइ रहे ॥ अने ते जगतने ठगनारा थिर ठरावीने पगलां मांडे ॥ तेमनी वहारनी चाल चलगत बगला जेवी ॥ अने अंतःकरण कागडा जेवां होय ॥ एवानो संग छोडी देवो जोइये ॥ सद्गुरुनो वंदो ॥ ८ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ गल धारत माला अंतर काला विषे बिहाला चित चाला ॥ मजबूत मसाला त्रपत रसाला ठाकुर थाला पंडपाला ॥ मन क्रोध कराला जरत जंजाला ॥ अंतर ठाला मुझुंदा ॥ सदगुरुका वंदा ब्रह्मानंदा साच कहंदा सबहंदा ॥ ९ ॥ अर्थ-गले माला धारे अने तेनुं अंतःकरण कालुं होय छे ॥ अने पंच विषयथी बेहाल थयो होय एवा तेना चित्तना चाला होय ॥ खूब मशाला अने तृप्त थाय एवी रसवाली रसोइथी ठाकोरजीना थालने बाने पोताना पंडने पालनारा ॥ तेना मनमां तो विकराल क्रोध होय ॥ अने संसारनी जंजालमां बलतो होय ॥ अने अंतःकरण ज्ञान वगरनुं ठालुं मुझातुं होय ॥ सदगुरुनो वंदो॰ ॥ ९ ॥ ॥छंद॥ वैरागां झंडी देखत भंडी ॥ आतम खंडी क्रम कंडी ॥ उर जडता उंडी ममता मंडी टीला टुंडि पाखंडी ॥ राखत घर रंडी सब विधि छंडी पथरा पिंडि

पूजंदा ॥ सद्गुरुका बंदा ब्रह्मानंदा साच कहंदा सब-
हंदा ॥१०॥ अर्थ–वली केटलांक वैरागीना झुंड देखवा
मां भांड जेवां होय ॥ अने आत्मज्ञाननुं खंडन करीने
कर्मकांडमां लागेलां होयछे ॥ एना अंतःकरणमां उंडुं
अज्ञानपणुं होय ममतमां मंडेला अने ते पाखंडीओ टीला
टपकां करेछे ॥ अने शास्त्रमां कहेली बधी विधि छो-
डीने घेर रांड राखीने पथरा पींडीने पुजेछे ॥ (मतलब
के जेम धेडनो स्पर्श थाय त्यां ब्राह्मण रहे नहीं ॥ तेमज
व्यभिचारी के व्यसनी पूजा करनारा होय ॥ त्यां देव
रहे नहीं ॥) माटे एवा देवने मानवा ते पथराने मानवा
बराबर छे ॥ सद्गुरुनो बंदो० ॥१०॥ ॥ छंद ॥ नावत
जल नीका धारत टीका गल कंठीका तूलसीका ॥ अरु
मिठा जीयका कपटी हियका नाहिन ठीका मुरखीका
॥ बाना हरजीका वीकल बिलिका ॥ किंकर त्रियका
विषकंदा सद्गुरुका बंदा ब्रह्मानंदा साच कहंदा सबहंदा
॥११॥ अर्थ–जइने सारा जलमां न्हाय अने टीलां करे॥
तथा गले तुलसीनी कंठी राखे ॥ तेओ जीभना मीठा
पण हैयाना कपटी ॥ कूकडीनां बच्चां जेवा अज्ञानी
ठीक वरतता नथी ॥ ते हरिनुं बानुं धरे पण बिला-
डीनां बच्चांनी पेठे विकल थईने फरे ॥ अने स्त्रिना
चाकर तथा पंच विषयना थड रूप होय छे ॥ सद्गुरुनो
बंदो ॥ ११ ॥ ॥ छंद ॥ भेषनके धारी सबमें

ख्वारी अंतर भारी अहंकारी ॥ बोलत मुख गारी राखत नारी ॥ माया यारी ॥ व्यापारी ॥ जब मंगल कारी ॥ गुरु मिल्यारी ॥ भ्रमना टारि जग फंदा ॥ सद्गुरुका बंदा ब्रह्मानंदा साच कहंदा सबहंदा ॥१२॥ ॥ अर्थ–ए रीते भेखने धरनारा सर्व प्रकारे खुवार मलेला छे ॥ तो पण अंतःकरणमां भारे अहंकारी छे मोढे गालो बोले स्त्री राखे ॥ मायाना यारी ॥ अने केटलाएक वेपारी पण होय छे ॥ पण मने ज्यारे कल्याणकारी गुरु मल्या ॥ त्यारे जगतनो फांसो तथा भ्रमणा टाली नांखी ॥ सद्गुरुनो बंदो०॥ १२ ॥

॥ छपय ॥ ॥ गुरु पूरन अद्वैत ॥ मिले जब भर्म मिटाये ॥ गुणातित दे ज्ञान ॥ असत अग्यान नसाये ॥ करुणासिंधु क्रपाल ॥ हाथ जब सिरपर दीने ॥ काल व्याल विकराल ॥ ताहिसें निर्भय किने ॥ संसार विघन सब मेटकें ॥ पार किया भवफंदसें ॥ कहे ब्रह्मानंद ममता टरि सद्गुरु सहजानंदसें ॥ १ ॥ ॥ अर्थ–पूरा अद्वैत एटले तेमना जेवो बीजो कोइ नाहिं ॥ एवा गुरु ज्यारे मल्या ॥ त्यारे भ्रमणा मटाडी ॥ मायिक त्रण गुणथी जूदा एवा परमेश्वरनुं ज्ञान आपीने असत्य अने अज्ञाननो नाश कर्यो ॥ ॥ दयाना सागर होय एवा दयालुए ज्यारे माथा उपर हाथ मूक्यो ॥ त्यारे विकराल कालरूपी सरप-

थी निर्भय कर्यो ॥ अने संसारनुं विघन बधुं मटाडी ने भवना फांसाथी पार उतारयो ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहे छे के एवा सद्‌गुरु श्री सहजानंद स्वामिना प्रतापथी संसारनी ममता टली गइ ॥ १ ॥

॥ ज्ञानरूपी बाजी विषे कुंडलियो ॥

॥ बंदे बाजी बेशहे ॥ खुब जुक्ति करी खेल ॥ सार अकेली मरतहे ॥ तातें तु रख बेल ॥ तातें तुं रख बेल ॥ दाव दे समझ विचारी ॥ तीन चारकुं साग ॥ पंच खट जीत खेलारी ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ सप्त अठ नव दश खंदे ॥ सब ताजि निज घर आय ॥ बेशहे बाजी, बंदे ॥ १ ॥ ॥ अर्थ–हे बंदा ज्ञानरूपी बाजी बेश छे ॥ माटे तुं खूब जुक्ति करीन खेल ॥ तेमां सार एटले सोगठी एकली होय ते मरे छे ॥ पण *जुग होय ते मरतो नथी ॥ ते माटे तुं सद्गुरुनी बेल राख ॥ अने सद्गुरुनी बेल राखीने समजी विचारीने दावदे ॥ अने काम क्रोध अने लोभ ए त्रणने तथा चार अंतःकरणनी मायिक वृत्तिओने तजीने पंच विषय ॥ छ उर्मि (भूख॥ तरश॥ मोह॥ शोक ॥ जरा ॥ मृत्यु) रूपी खीलाडीओन जीत ॥ ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के जेम बाजीमां ९६ खंड एटले घरछे ॥ तेम ज्ञान बाजीमां सोना आदिक सात धा-

*जोड

तुनी वासना तथा आठ प्रकारनी सिध्धिनी तथा नव प्रकारनी निधिनी वासना तथा दस इंद्रियो रूपी खंड एटले घरछे ॥ ते बधांने ओलंघीने पोताने घेर आव्य ॥ अर्थात आत्मज्ञान पाम्य ॥ अथवा भगवानना धामने पाम ॥ हे बंदा एवी ज्ञाननी वाजी वेशछे ॥ १ ॥

॥ विश्वास विषे सवैया ॥

॥ देव तरूवरकी छईयां फलिहे फलिहे फलिहे फलिहेरी ॥ ज्युं उदधी जलमें नदीयां भलिहे भलिहे भलिहे भलिहेरी ॥ ज्युं हरी सेवत पाप सब जलिहे जलिहे जलिहे जलिहेरी ॥ ब्रह्ममुनि अंन पान सदा मलिहे मलिहे मलिहे मलिहेरी ॥ १ ॥ ॥ अर्थ–कल्पवृक्षनी छाया फलशे ॥ फलशे ॥ फलशे ॥ ने फलशेज ॥ अने जेम समुद्रना पाणीमां नदीओ भलशे ॥ भलशे ॥ भलशे ॥ ने भलशेज ॥ अने जेम भगवानने सेवतां पापनो ढगलो बलशे ॥ बलशे ॥ बलशे ॥ ने बलशेज ॥ तेमज ब्रह्मानंद स्वामि कहेछे के अन्न अने पाणी सदा मलशे ॥ मलशे ॥ मलशे ॥ ने मलशेज ॥ माटे प्रभुनो विश्वास राखवो ॥ १ ॥

॥ अथ पूर्णानंद स्वामिकृत ध्यान चिंतामणि ॥

॥ दोहा ॥ ॥ नख शीख सुंदर नाथकि ॥ मूर्ति मनोहर जोय ॥ यथाशक्ति वरनन करुं ॥ चरन कमल

चित प्रोय ॥ १ ॥ ॥ अर्थ–श्रीजी महाराजनी नख-
थी शिखा पर्यंत सुंदर मूर्ति जेछे ॥ तेमना चरणार-
विंदमां चित परोविने मारी शक्ति प्रमाणे वर्णन
करुंछुं ॥ १ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रभुपद कोमल जलजवत ॥
भक्त भमरता पाय ॥ सुखद सुगंधि लहत नित ॥
जुगल चरन चित लाय ॥ २ ॥ ॥ अर्थ–श्रीजी महा-
राजना चरण कमल जेवा कोमलछे ॥ तेमां भक्तजननां
मन भमरा रूपे थईने ॥ ते बन्ने चरणने चित्तमां ला-
वीने नित्य प्रत्ये सुखदायक सुगंधी लेछे ॥ २ ॥ ॥
छंद मधु भार ॥ सोहंत सोय ॥ प्रिय अधिक मोय ॥
तेहि चित प्रोय वरनुं हुं दोय ॥ १ ॥ ॥ अर्थ–ते चरणं
शोभेछे ॥ ते मने वधारे प्रियछे ॥ तेमां चित परोवीने
बन्ने चरणनुं वर्णन करुंछुं ॥१॥ ॥छंद॥ ॥पदतल सुढार
॥ कोमल उदार ॥ उर एकतार ॥ राखुं समार ॥ २ ॥
॥ अर्थ–चरणनां तलियां सारा ढालवालां छे ते कुमलां
अने उदार छे ॥ते अंतःकरणमां एक तारनी रीते संभारी
ने राखुं ॥२॥ ॥छंद॥ तेहि मध्य चेन ॥ नित प्रीत देन
॥ महि जोरिनेन ॥ वरनुं सो एन ॥३॥ अर्थ–ते चरणमां
चिन्ह छे ते नित्य प्रीति आपे एवां छे ॥ तेमां दृष्टि जो-
डीने सुंदर वर्णन करुंछुं ॥३॥ ॥छंद॥ पद दच्छनमांहि
॥ लच्छन सोहाहीं ॥ नव कहत ताहि ॥ उपमा लजाहि
॥ ४ ॥ अर्थ–जमणा चरणमां जे चिन्ह शोभेछे तेनी

संख्या नव कहेवायछे ॥ तेने जोतां सर्व उपमाओ लाजेछे ॥ ४ ॥ ॥ छंद ॥ सोहंत स्रष्ट ॥ शुभ कोण अष्ट अघ ओघ नष्ट ॥ काटंत कष्ट ॥ ५ ॥ ॥ अर्थ–तेमां मारु १अष्टकोण श्रेष्ट शोभेछे ॥ ते पापना ढगलानो नाश करेछे ॥ अने कष्टने कापेछे ॥ ५ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ जव जंबु रेख ॥ श्रणि स्वास्ति पेख ॥ नित देख देख ॥ द्रग सुफल लेख ॥ ६ ॥ ॥ अर्थ–अने २जव तथा ३जांबु अने ४उर्ध रेखा ५अंकुश तथा ६माथीयो देखायछे ॥ ते रोज जोई जोईने नेत्र सुफल थयां ॥ एम गणिये छीये ॥६॥ ॥छंद॥ ॥ ध्वज कुलिश कंज ॥ सुंदर सुरंज ॥ मद मोह गंज ॥ अघ अंध भंज ॥७॥ ॥ अर्थ–७धजा ८वज्र अने ९कमल सुंदर मनोरंजन छे ॥ ते मदने अने मोहने गंजन करेछे ॥ तथा पापरूपी अंधाराने तोडी नाखेछे ॥ ७ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ पद वाम सात ॥ लच्छन रहात ॥ नितदीन रात ॥ मुनि चीत लात ॥ ८ ॥ अर्थ–डाबा चरणमां सात चिन्ह रह्यांछे ॥ तेने मुनियो रातने दहाडो हमेशां मनमां धारेछे ॥ ८ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ शुभ धनुष्य मीन ॥ गोपदप्रचीन ॥ लख कोण तिन ॥ कर काम खीन ॥ ९ ॥ ॥ अर्थ–ते रुडुं १धनुष ॥ २माछलुं अने गायना ३पगलानुं चिन्ह ॥ अने ४त्रिकोणनुं चिन्ह जोतां कामादिकने क्षीण करी नाखे ॥ ९ ॥ ॥छंद॥

नभ कुंभ चिद्र ॥ शिर धर फनिंद्र ॥ मनमें नरिंद्र ॥
होवत अनिंद्र ॥ १० ॥ ॥ अर्थ-५आकाशनुं चिन्ह ॥
६कलशनुं चिन्ह ॥ तथा ७अर्धचंद्रनुं चिन्ह जोतां
एवां चरणारविंद शेष नाग पोताना माथा
उपर धारण करेछे ॥ तेथी पोताना मनमां-
ते नागनो राजा अज्ञानरूपी निंद्रा तजे छे ॥ १० ॥
॥ छंद ॥ ॥ शुभ जुगल चरन ॥ आनंद करन ॥
जन लेत सरन ॥ भव भीति हरन ॥ ११ ॥ ॥ अर्थ-
एवां सारां बे चरण आनंद करे एवां छे ॥ तेनुं शर-
ण जे जन ले तेना भवनो भय हरे छे ॥ ११ ॥
॥ छंद ॥ ॥ अंगुलि रुचीर ॥ उर धरत धीर ॥
मुनि सूर वीर ॥ भव हरत पीर ॥ १२ ॥ ॥ अर्थ-
वली सुंदर आंगलीओ धीर पुरुष अंतःकरणमां धरे
छे ॥ तथा मुनिजननी अने शूरवीरोनी भवनी पीडा
हरे छे ॥ १२ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ नख पंक्ति दोय ॥
झलकंत सोय ॥ जन जोय जोय ॥ चित्रीत होय
॥ १३ ॥ ॥ अर्थ-नखनी बे पंक्तियो छे ते झलके छे
॥ तेने जोइनेहरीजनो विस्मित थाय छे ॥१३॥ छंद ॥
॥ दच्छन अंगुष्ट ॥ नखं लछन जूष्ट ॥ पुलकीत पूष्ट ॥
मुनिं जोत सुष्ट ॥ १४ ॥ ॥ अर्थ-जमणा पगना
अंगुठामां चिन्ह पूजवा योग्य छे ॥ ते (सुष्ट) सुंदर
जोतां मुनिजनोनां शरीर रोमांचित थइने पुष्ट थाय छे

॥ १४ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ गुल्फां सुचार ॥ वरतुलाकार ॥ उरवीच मार ॥ रखीहू उतार ॥ १५ ॥ ॥ अर्थ-चारे घुंटीओ गोलाकार छे ॥ तेने मारा अंतःकरणमां उतारीने सारी रीते राखीश ॥ १५ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ शुभ शुद्ध अंग ॥ नेपुर प्रसंग ॥ नाना सुरंग ॥ महि जटित नंग ॥ १६ ॥ ॥ अर्थ-वळी ते सारा अने पवित्र अंग साथे झांझर छे ॥ तेमां नाना प्रकारना रंगना नंग जडेलां छे ॥ १६ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ झांझर घटीत ॥ झनकत झटीत ॥ रत्ने जटीत ॥ उपमा हटीत ॥ १७ ॥ ॥अर्थ-ते झांझर सारा घाटनांछे॥ अने झटझट झणकारा करे छे ते रत्ने जडेलां छे ॥ अने तेनाथी बधी उपमाओ हठेछे ॥ १७ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ जन वृंद जोत ॥ नित चीत प्रोत ॥ मन मल सु धोत ॥ दिल होत द्योत ॥ १८ ॥ ॥ अर्थ-हरिजनना मंडल नित्य जोई जोईने तेमां मन परोवेछे ॥ तेथी मनना मेल धोवाई जायछे ॥ अने अंतःकरणमां प्रकाश थायछे ॥ १८ ॥ ॥छंद॥ ॥जंघा रु जानु ॥ नित चित ठानु ॥ रंभा समानुं ॥ उरू प्रमानु ॥१९॥ ॥अर्थ-बे जांघो तथा बे ढींचण नित्य चित्तने ठरवानुं ठेकाणुंछे ॥अने साथल केलना थंभ जेवाछे ॥ १९ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ कटि तट अमीत ॥ उपजात प्रीत ॥ हरलेत चीत ॥ पट चोल पीत ॥ २० ॥ ॥ अर्थ-केडनो लांक घणी प्रीतिः उपजावेछे ॥ ते उपर

पीलुं पीतांबर पहेर्युंछे ॥ ते चित्तने हरी लेछे ॥ २० ॥ छंद ॥ ॥ कांची कलाप ॥ सोभा अमाप ॥ ॥ हरलेत ताप ॥ नित प्रीत आप ॥ २१ ॥ ॥ अर्थ—कंदोरानी रचनानी शोभा अपारछे ॥ तेना उपर प्रीति राखनारना तापने हरी लेछे ॥ २१ ॥ ॥ छंद ॥ ॥नाभि व्रतूल ॥ सोहत अतूल ॥ त्वंदा प्रथूल ॥ प्रद प्रेम मूल ॥ २२ ॥ ॥ अर्थ—नाभि गोलछे तेनी शोभा अतुल्य छे ॥ तथा दुंद मोटी छे ॥ ते प्रेम उपजवानुं मूलछे ॥ २२ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ त्रिवली सहीत ॥ उदर कहीत ॥ राजी सुरीत ॥ सोहत अमीत ॥ २३ ॥ ॥ अर्थ—अने पेट त्रण वांटा सहित कहेवाय छे ॥ तेथी उंचे रुंवाटांनी (राजी) पंक्ति सारी रीतनी छे ते अपार शोभेछे ॥ २३ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ शुभ उर उतंग ॥ सुंदर सुचंग ॥ देखंत दंग ॥ कोटी अनंग ॥ २४ ॥ ॥ अर्थ—छाती सारी उपडती छे ॥ ते सुशोभित अने पवित्रछे ॥ तेने जोतां क्रोड कामदेव आश्चर्य पामे ॥ २४ ॥ ॥छंद॥ ॥स्तन उभय सार ॥ सोभा अपार ॥ मुनि वारवार ॥ उर लेत धार ॥ २५ ॥ ॥ अर्थ—सारां बे स्तननी शोभा अपारछे ॥ तेने वारेवारे मुनिजनो मनमां धारी लेछे ॥ २५ ॥ ॥ छंद ॥ पुनि उर विलास ॥ वैजंतिमाल ॥ निरखि नीहाल ॥ मुनिजन मराल ॥ २६ ॥ ॥

अर्थ–वली छाती उपर मोटी वैजयंती (कंठथी पगनां कांडा सुधी पहोंचे ते) मालाछे ॥ ते जोईने मुनिजन रूपी हंस निहाल थायछे ॥ २६ ॥ ॥छंद ॥ ॥ हिय वाम स्वच्छ ॥ ओपत श्रीवच्छ ॥ दिल लच्छ लच्छ ॥ डोलंत दच्छ ॥ २७ ॥ ॥ अर्थ–हैया उपर कांइक डाबी तरफ निर्मल श्रीवत्सनुं (भ्रगुलांछन) चिन्ह शोभेछे ॥ तेनो लक्ष अंतःकरणमां करी करीने डाह्या जनो डोलता फरेछे ॥ २७ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ गलमांहि डार ॥ गुलाब हार ॥ हियमे निहार ॥ तिल स्यामचार ॥ २८ ॥ ॥ अर्थ–अने गलामां गुलाबना हार नांख्याछे ॥ वली छातीमां चार काला तल निहालीने जोईए छिए ॥ २८ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ शुभ कंठ नील ॥ बिच एक तील ॥ देखंतदील ॥ सुख होत कील ॥ २९ ॥ अर्थ–अने कंठ वच्चे लीला रंगनो एक सारो तिल छे ॥ तेने जोतां दिलमां नक्की सुख थाय॥ २९ ॥ ॥ छंद ॥ तिल अष्ट ओर ॥ ढिग कंठ ठोर ॥ जन करत दोर ॥मृगमदकि खोर ॥ ॥३०॥ ॥ अर्थ–वली ते कंठनी पासे बीजा आठ तिल छे॥ अने ते भगवानने अंगे कस्तुरीनी खोल हरिजनो दोडीने करे छे ॥३०॥ ॥छंद॥ ॥ भुज दोय डंड ॥ लंबित प्रचंड ॥उरमध्य मंड॥ रखिउं अखंड ॥ ३१ ॥ ॥ अर्थ–दंड जेवा बे हाथ लांबा अने प्रचंड छे॥ ते अंतःकरण

मां मांडीने अखंड हुं राखीश ॥३१॥ छंद ॥ भल युगल अंस ॥ मंसल उतंस ॥ कंधर प्रसंस॥ भय लखित भ्रंस॥ ॥३२॥ अर्थ-भला बे खभा पुष्ट अने ऊंचा छे॥ अने कांध प्रशंसा करवा जेवी छे ॥ तेने जोतां भय भागी जाय छे ॥ ३२ ॥ ॥ छंद ॥ बेउ बाहुकोर ॥ भुजबंध जोर ॥ चित लेत चोर ॥ शुभ सोन बोर ॥ ३३ ॥ ॥ अर्थ-बे बाहु उपर बे बाजुबंध बांधेला छे ॥तेनां सोना-नां बोर चित्तने चोरी लेछे ॥३३॥ ॥ छंद ॥ ॥ कंकन वलीत ॥ लख चित चलीत ॥ मुनि मनकुं जीत ॥ नित धरत चीत॥३४॥ ॥अर्थ-कांडे कडां सुंदर छे ते जोतां चित्त चले छे॥ तेणे मुनिजनोनां मनने जीती लीधांछे॥ तेथी मुनियो नित्य चित्तमां धरेछे ॥ ३४ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ करतल म्रदूल॥ मनहु अमूल गुल्लाब फूल ॥रूचिरा अंगूल ॥३५॥ ॥ अर्थ-हाथेलियों कोमल छे अने ते मानो के अमुल्य छे॥ अने आंगलियो गुलाबना फूल जेवी सुंदर छे ॥३५॥ ॥ छंद ॥ मणि कणि समान ॥ नख कांतिवान॥ मुनि एक तान ॥ नित धरत ध्यान ॥ ३६ ॥ अर्थ-अने मणिनी कणी जेवा कांतिवाला नख छे॥ तेनुं मुनिजन एक तानथी नित्य ध्यान धरेछे ॥३६॥ ॥छंद॥ ॥ शुचि म्रदुल दीव ॥ लखि चिबूक ग्रीव ॥सनकादि शीव॥ अटकात जीव ॥३७॥ ॥अर्थ-पवित्र कोमल अने दिव्य दाढी तथा गलुं छे॥ ते जोईने

मनकादिक तथा शिवजी पोताना आत्माने सां अटकावे छे ॥३७॥ ॥छंद॥ म्रदु अधर रक्त॥ लखि मगन भक्त ॥ मुख एमो मक्त ॥ जलजास जक्त ॥ ३८ ॥ ॥ अर्थ–कोमल राता होठ छे ॥ ते जोईने भक्त जन मग्न रहेछे॥ जगतमां जेवुं कमल शोभे तेवुं मुखार्विंद मुक्तजनो कहेछे ॥ ३८ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ मुख मंद हास ॥ निरखंत त्रास ॥ तन त्रास नास ॥ मन मगनदास ॥ ३९ ॥ ॥ अर्थ–मुख थोडुं थोडुं हसतुं छे॥ ते निरखतां दासजन मनमां मग्न थाय छे॥ अने तेनो त्रास नाशी जाय छे ॥ ३९ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ कलि कुंद दंत ॥उपमा मीलंत॥ श्रुचि द्युतीवंत ॥ सुंदर दिपंत ॥ ४० ॥ अर्थ–डोलरनी कलीना जेवी दांतनी उपमा मलेछे ॥ ते दांत पवित्र अने कांतिवाला सुंदर शोभेछे ॥ ४० ॥ ॥ छंद ॥ ॥ मणि भर अमोल ॥ झलकंत लोल ॥ कुंडल कपोल ॥ जन देख डोल ॥ ४१ ॥ अर्थ–कानमां कुंडल अमुल्य मणिये भरेलां चपल झलके छे॥ ते लमणा उपर आवेलां ते जोवाने हरिजन दोडेछे ॥ ४१ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ शुभ करन वाम ॥ तिल एक स्याम ॥ लखि अष्ट जाम ॥ करं नष्ट काम ॥ ४२ ॥ ॥ अर्थ–डावा कानमां सुंदर कालो एक तल छे ॥ ते आठे पहोर जोईने कामादिकनो नाश करे छे ॥ ४२ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ नासा नवीन ॥ मणि दीप चीन ॥ ढिग बिंदुझीन ॥ चितत

प्रवीन ॥ ४३ ॥ ॥ अर्थ—अने नविन नाशिका जाणेके दीपक मणिजेवी छे ॥ तेनी पासे झीणुं टपकूं छे ॥ ते प्रवीण जन चिंतवे छे ॥ ४३ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ दल कमल नेन ॥ ॥ सुख सदन सेन ॥ सुख मधुर वेन ॥ उपजात चेन ॥ ४४ ॥ अर्थ—कमलनी पांखडी जेवां नेत्र छे ॥ अने ते नेत्रनो अणसारो सुखनुं स्थानक छे ॥ अने मुखे मधुर वचन बोले छे ॥ ते सुख उपजावे छे ॥ ४४ ॥ ॥ छंद ॥ कुटिल्ल रसाल ॥ भ्रकुटि विसाल ॥ झलकंत भाल ॥ त्रय रेख जाल ॥ ४५ ॥ अर्थ—अने मोटी वांकी भ्रकुटियो रस भरी छे ॥ अने कपालमां त्रण रेखाओनो जथो झलके छे ॥ ४५ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ सोभा अथाग ॥ निरखंत पाग ॥ अनुराग जाग ॥ जन धन्य भाग ॥ ४६ ॥ अर्थ—अने पागनी अथाग शोभा निरखवाथी प्रीति उपजे छे ॥ अने माणसो पोतानां धन्य भाग्य गणे छे ॥ ४६ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ सोइ धर्म नंद॥ आनंद कंद ॥ नैष्टिक वंद ॥ भव हरत फंद ॥ ४७ ॥ ॥ अर्थ—ते धर्मना पुत्र आनंदना थड छे ॥ ते नैष्टिक ब्रह्मचारियोने वंदवा योग्य छे ॥ अने भवना फांसानी पीडा हरे छे ॥ ४७ ॥ छंद ॥ अतिस दयाल ॥ जन प्रतीपाल ॥ कंपंत काल ॥ आग्या संभाल ॥ ४८ ॥ अर्थ—ते भगवान जनना प्रतिपालनार अतिशे दयालु छे ॥ अने तेमनी आज्ञा

संभालवाने काल कंप छे ॥ ४८ ॥ छंद ॥ ॥ सोई कृष्ण देव ॥ आप अभेव ॥ धरियेसि टेव ॥ नर करत सेव ॥ ४९ ॥ ॥ अर्थ—तेज पोते श्री कृष्ण देव अभेद छे ॥ मतलब के जुदा नथी एवी टेव धारीने हरिजन सेवा करे छे ॥ ४९ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ सोई घनश्याम ॥ जन अभिराम ॥ नर ठरन ठाम ॥ सुख धाम नाम ५० ॥ ॥ अर्थ—अने तेज घनश्याम जनने रंजन करे छे ॥ तेमनुं नाम सुखनुं धाम छे ॥ अने जनोने ठरवानुं ठेकाणुं छे ॥ ५० ॥ छंद ॥ धर मनुष वेस ॥ भयेहै सुनेष ॥ काटत कलेस ॥ जनके अशेश ॥ ॥ ५१ ॥ अर्थ—ते मनुष्यनो वेष धरीने मुनिना ईश्वर थया छे ॥ अने माणसना समग्र क्लेशने कापे छे ॥ ५१ ॥ ॥ छंद ॥ अतिशे अलक्ष ॥ निज भक्त पक्ष ॥ बलबुध्धि लक्ष ॥ देखे न दक्ष ॥ ५२ ॥ ॥ अर्थ—ते भगवान अतिशे लक्षमां आवे नहीं एवा छे ॥ अने पोताना भक्तनो पक्ष राखे छे ॥ अने डाह्या पुरूषो बुध्धी बलथी पोताना लक्षमां पण देखी शक्ता नथी ॥ ५२ ॥ छंद ॥ भुवनेस भूप ॥ सुंदर अनूप ॥ भये मनुषरूप ॥ सहे सित धूप ॥ ५३ ॥ अर्थ—ते भगवान त्रिभुवनना अधिपतिना राजा छे ॥ अने उपमा आपी

शकाय नहीं एवा सुंदर छे ॥ पण मनुष्यरूपे थईने टाढ अने तडको सहन करे छे ॥ ५३ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ तेहि कृष्ण चंद ॥ सुंदर स्वछंद ॥ कलि मल विखंद ॥ लखिहे नमंद ॥ ५४ ॥ ॥ अर्थ–ते रूडा कृष्ण चंद्र स्वतंत्र छे ॥ अने ते कलियुग रूपी मलनुं खंडन करे छे ॥ पण मूर्ख लोको तेने देखी शकता नथी ॥ ५४ ॥ छंद ॥ ॥ एसे अमाप पूरन प्रताप ॥ जपिहुं मे जाप ॥ हरने त्रिताप ॥ ५५ ॥ अर्थ–एवा भगवानने मापी न शकाय एवो संपूर्ण प्रताप छे ॥ तेना नामनो जप त्रिविधि ताप-हरवाने वास्ते हुं जपीश ॥ ५५ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ एमे अनंत ॥ कर खूब खंत ॥ चितवंत चंत ॥ मा-हंत संत ॥ ५६ ॥ अर्थ–ए रीते अनंत महां-त संतो चितमां खांते करीने ते भगवानने चिंतवे छे ॥ ५६ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ शिव शेश गात ॥ सनकादि ध्यात ॥ चित चात चात ॥ नाहिन अघात ॥ ५७ ॥ ॥ अर्थ–वली शिवजी अने शेष नाग तेमना गुणनुं गान करेछे ॥ अने सनकादिक ध्यान करेछे ॥ अने तेओ चितमां चाहता चाहता तृप्त थता नथी ॥ ५७ ॥ ॥ छंद ॥ मुनिवर सुजान ॥ हो सावधान ॥ बस करत प्रा-न ॥ प्रभु मिलन तान ॥ ५८ ॥ ॥ अर्थ–वली डाह्या मुनिवरो सावधान थईने प्राणायाम करीने प्राणने वश

करेछे ॥ तेनुं तान भगवानने मलवानुंछे ॥ ८८ ॥ ॥ ॥ सोइ प्रगट पाय नित नीत ताय ॥ चित लाय लाय ॥ मुनि पूर्ण गाय ॥ ८९ ॥ ॥ अर्थ–ते प्रत्यक्ष भगवानने पामीने ॥ नित्य नित्य तेने चितमां लावी लावीने पूर्णानंद मुनि गायछे ॥ ८९ ॥ ॥ छपय ॥ ॥ श्वेत वसन तन श्याम ॥ नाम घनश्याम ॥ निरंतर रटत कटत भव फंद॥ कंद सुख मदन मनोहर ॥ अमळ कमल दळ नेन ॥ वेन मुख वदन सुधासें ॥ अकळ सकळ सुख धाम ॥ काम लखि ग्राम्य वि- नासे ॥ श्री भक्ति धर्म सुत कृष्णकुं निरख निरख उरमें धरुं ॥ पूर्णानंद कहेत भितमें नित नित चित चिंतन करुं ॥ १ ॥ ॥ अर्थ–श्वेत वस्त्र पेहर्यांछे ॥ अने शरीर वर्षादना जेवुं शाम छे अने निरंतर ते- मनुं नाम घनशामछे ॥ ते नामनुं रटन करतां भवनो फांसो कापी नांखेछे ॥ अने ते सुखनुं थड छे ॥ तथा कामदेवना मनने पण हरे एवा छे ॥ निर्मळ क- मळनी पांखडी जेवां नेत्रछे ॥ अने मुखे अमृत जेवां वचन बोलेछे ॥ ते भगवान कळी न शकाय एवा छे ॥ तथा सर्व सुखना धाम छे ॥ तेमने जोतां ग्राम्य कामना एटले मायिक वासना नाश पामे ॥ एवा श्री भक्ति धर्मना पुत्र श्रीकृष्णने निरखी निरखीने मनमां धरुंछुं ॥ पूर्णानंद स्वामि कहेछे के प्रीते

करीने रोज रोज चित्तमां चिंतवन करुं छुं ॥ १ ॥

इति श्री पूर्णानंद स्वामिकृत ध्यान चिंतामणीनी टीका संपूर्ण

॥ अथ टीका विषे ॥ ॥कवित॥

॥ मतमंगी शिरोमणि लायक लोधीका धणी ॥ भक्ति पूत्रतणी जेने भक्ति भली भावी छे ॥ भक्त अभेसिंह नाम जेने वाला घनश्याम ॥ तेणे परमार्थ काम टीका आ करावी छे ॥ संवत ओगणीशसें चालीशनी साल शुभ ॥ जेठमासी स्वासी अमावासी ज्यारे आवी छे ॥ सुंदर श्रीपुरनामे धर्मनंदतणे धामे ॥ रही दलपतरामे आ टीका बनावी छे ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥ ॥ भक्ति धर्म मुनिवृंदकुं ॥ जान्यो भयो ज्युं श्राप ॥ असुर सबे मिल एक होय ॥ प्रसिध करतहे पाप ॥ १ ॥

॥ छंद अर्ध नाराच ॥

॥ भये गुरुसु आयके ॥ रहे अघोघ छायके ॥ अहारि मद्य मंसके ॥ कुटंबि केसि कंसके ॥ १ ॥ विचीत्र चिन्ह धारियां ॥ तके पराइ नारीयां ॥ नचीत जोग जापमें ॥ प्रसिध प्रीत पापमें ॥ २ ॥ करंत बोध नारकुं ॥ चहे विषे विकारकुं ॥ असत्य नित्य बोलही ॥ महंत होय डोलही ॥ ३ ॥ जपंत भूत डाकनी

॥ त्रिया विकार ताकनी ॥ अनंत दोष अंगमें ॥ जि-
यंत मान रंगमें ॥ ४ ॥ अनंत काम अंधहे ॥ क्रोधी-
अनम्र कंधहे ॥ विरूप सव वैष्णवा ॥ करे अघं-
नवा नवा ॥ ५ ॥ न जान आन शक्तितें ॥ गिरात
कृष्ण भक्तितें ॥ असत्य बोध देतहे ॥ लगे जुमानुं
प्रेत हे ॥ ६ ॥ कृतू हिंस कारहे ॥ अनंत जंत
मारहे ॥ भजंत जाप भैरवी ॥ विख्यात वेद वैर-
वी ॥ ७ ॥ भरीष्ट मानके भरे ॥ कुबूधि काम कि-
करे ॥ नरेश शीष्य ताहिके ॥ करत पाप चाइके
॥ ८ ॥ * भुपाल कामके भरे ॥ धर्म रहित मंदिरे ॥
विना पराध डंडही ॥ सुधर्म देखि खंडही ॥ ९ ॥
दोहा ॥ ॥ एसे गुरू मिल जगतमें ॥ वरतायो
पाखंड ॥ धर्म हटायो वेद जुत ॥ वाढयो पाप प्र-
चंड ॥ १ ॥ अधर्म करत निशंक होय ॥ गुरू शि-
ष्य जगके मांइ ॥ निंद्य कर्मके उदयते ॥ मेघ
अल्प वरषाई ॥ २ ॥ एहि विधि भूपर असुरको
॥ अतिशें भयो कलेश ॥ ता पिछे सुखकर धर्म
॥ प्रगटे पूरव देश ॥ ३ ॥ धर्म प्रगट जग होईकें ॥ जन
सुख करार्हि अपार ॥ ब्रह्ममुनि तेहिं वरनन करे ॥सुनत

* काम विकारना भरेला राजाओ रैयतना घरमां घसछे एटले
व्यभिचार करवाने जायछे.

होत भव पार ॥ ४ ॥ ॥ छप्पय ॥ ॥ जन्मत हरि जय-
कार ॥ भयो त्रिलोकीमांई ॥ व्योम घटावे मान ॥ रहे
थट वदत वधाई॥ ब्रह्म ईश सुरराज ॥ पुष्पवृष्टि झडलावे
॥ मारद नारद शेष ॥ सिद्ध चारण हुलसावे ॥ कोई
वाचत नाचत गान करि ॥ वाजत वाजां गगनमें ॥ सुख
करण हरण दुख जगतको ॥ प्रगटे प्रभु शुभ लगनमें
॥ १ ॥ ॥ छंद ॥ मोतिदाम ॥ करे अति मंगल ओत्सव
कीध ॥ द्विजं शुभ दान बहु विधि दीध ॥ दशे दिश
होय रह्यो जयकार ॥ पुरंत्रय ओत्सव ओघ अपार ॥१॥
सबे मील संत सो देत आशीश ॥ वदे अज वेद नचे
अति ईश ॥ गुनिजन गात सबे मुद होय ॥ फुले सिध
चारण गांध्रव सोय ॥ २ ॥ बनं सुभ नंदनके फुल लाय
॥ किये झर ताहिसचि पति आय ॥ फुले वृशदेव प्रभु
मुख पेख ॥ रहे सब फूल लखि पदरेख ॥ ३ ॥ भये
सरितासर निर्मल नीर ॥ भये मन निर्मल संत सुधीर ॥
उडुगण सोत उडुराज सोय ॥ सोहो नभमें अति नि-
र्मल होय ॥ ४ ॥ फुले नरनार हरिकूं निहार ॥ करे
जयकार सो वार हिवार ॥ बजे देव दुंदभि ताहिके
संग ॥ गजे भुवके पणवादि उमंग ॥ ५ ॥ छटे दिन
जन्महुसें सो क्रव्याद ॥ आये बालग्रह जो कहे कादराद
॥ कियो हरिकूं हनने महा क्रुर ॥ देखि द्रग ताहि
भगायेउ दूर ॥ ६ ॥ करे हरिबालीलला वहु भात ॥ के

ते अज शेप शंभू शकुचात ॥ भये मो त्रिमासहुके ज्युं भुमंड ॥ तबे एक आये मुनि मारकंड ॥ ७ ॥ *भुवी तींनकूं जोतसी धर्मजानं ॥ महा तीनको जुं कियो संनमानं ॥ वदेवाहिसें धर्म युं मुद होय ॥ कहो मम पूत्रहुके नाम जोय ॥ ८ ॥ तबे बहु वीध करे विधिवेद ॥ भला शुभ जानन अक्षर भेद ॥ दिनं सुभ वार घडि शुभ देख ॥ लेह अति उत्तम अक्षर लेख ॥ ९ ॥ विचक्षण जोस लखे ग्रह ग्राम ॥ धरे हरि आदि नीके चहुं नाम ॥ पाये प्रभु अष्ट व्रशे उपवीत ॥ पढे तातसें वेदशास्त्र पुनीत ॥ १० ॥ भये वर्ष अग्यारहुके भगवान ॥ दियो मात तातहु कूं निज ज्ञान॥ मुनिशापहुमे छोडाय सो दोउ ॥ रखे पास निजं लखे ज्युं न कोउ ॥ ११ ॥ अनंत उधारण अंतर लाय ॥ निज ग्रह जांन दियो छटकाय ॥ मिस नावको जुं महाप्रभु लेह ॥ चले सो कुटंबी नजांनेउ तेह ॥ १२ ॥ महा मन तुछ विषे सुख मेल ॥ करे अटनं भुवी साम अकेल ॥ ग्रहे प्रभु त्याग अथागहि उर ॥ सरयु उतरे श्रीहरि जलपूर ॥ १३ ॥ वनं पर्वतादिक घाटि अनेक ॥ तालं सरितादि उल्लंघे हरेक ॥ कियो पुल्हाश्रममें तप भार ॥ अरु महायोग

* पृथ्वीमां तेने धर्मदेवे जोशी जाण्या अने तेनुं मोटुं सनमान करयुं ॥

मध्यो जगधार ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रगटेउ श्री महाराज जब ॥ भयो हरख त्रैलोक ॥ दाम वाम रत भेष जग ॥ तेहि उर बढेउ शोक ॥ १ ॥ ॥छंद भुजंगी॥ ॥ सुणो सुखकारी कहुं बात सारी मनुआकृती धार राजे मुरारी ॥ महा तेज पिंडे प्रचंडे प्रतापे थिरू दास वासं निजं पास थापे ॥१॥ जगं तारणं वीचरे दीन जांणी ॥ प्रथीनाथ जाणे नही मूढ प्राणी कृपानाथ ॥ सानंद आनंदकारी ॥ धरं भार उतारवा देह धारी ॥ करे केद वेरी जगं काम क्रोधं ॥ जला वोल जोराण उडंड जोधं ॥ भ्रता भूम जाणे नहिं मंद भागी ॥ रहि घर माया त्रिया देह रागी ॥ ३ ॥ भजे ओर देवं गया वाट भूलू ॥ अदेखो न देखे ज्युंही सुर ऊलु ॥ पूरा भाव वंता भूवी मोज प्राणी ॥ आयकें हरिकुं नमे भाव आणी ॥ ४ ॥ निजं मतके व्रत सबे तजिकें ॥ रहे श्रीहरिके पदं सो रजिकें ॥ करंही गुणातीत सो नाथ साथं ॥ सुने भाग वंता जनं स्याम माथं ॥ ५ ॥ कृपाधार राजे कला जोर कांती ॥ सही देखते होत आतंत शांती ॥ बद्रीकाश्रमे जोहती रीत बाधी ॥ कलीके समे आय साक्षात साधी ॥ ६ ॥ लखे को नहीं चिन्ह धारे अलक्षं ॥ प्रतीपाल संतां द्रढंकीध पक्षं ॥ सबे अंग चंगी रही छाय शोभा ॥ लखे रूप भागे मदं काम लोभा ॥ ७ ॥ तनं धार आये सबे

संत त्यागी ॥ रता श्रीहरिसें मता ध्यांन रागी ॥ कहुं लक्षणं ताहि आनंदकारी ॥ भरे भावहुके कला ग्यान भारी ॥ ८ ॥ हरि कीध अग्या धरी शीस लीधी ॥ कली मध्य पुरातनी रीत कीधी ॥ अलक्षं धरे चिन्ह चिते अरोगी ॥ जगंतार दाता अमाधार जोगी ॥ ९ ॥ व्रतं पंच धारि महासुर बीरा ॥ व्रतीवंत आतंत शोभंत धीरा ॥ सुणो पंचही व्रतके नाम सारे ॥ द्रढं धीर अंगं मुनिराज धारें ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ निर लोभि निस्काम पुनि ॥ निस्वादि निरधार ॥ निस्नेहि निर्मानता ॥ मुनिवर करत विचार ॥ १ ॥ ॥ छंद भुजंगी ॥ तजे दोष रूपी सबे वात त्यागी ॥ भजे देव नारायणं मोक्ष भागी ॥ १ परत्रिय क्रिया २ द्यूतही ३मद्य पानं ॥ हते ४जीव मृनो ज्युंही मांस खानं ॥ १ ॥ ५कनं* कादि धातू तणो यो खजांनो ॥ जरू पंच थाने कलूवास जांनो ॥ करे प्रीत सेवे कलू थान कोई ॥ हिये तासहुके कलीवास होइ ॥ २ ॥ अविद्या अघंवास जांणि अनीती ॥ रूडी संत हृकि करी सूध रीती ॥ अविद्या तजे जो हरि पास आवे ॥ जरा म्रत्यु जाको महारोग

* सोना आदिक धातुनो जे खजानो इत्यादि पांच स्थानकमां जरूर कालियुगनो वास जाणो.

जावे ॥ ३ ॥ कलीवास जे ते सबे दूर कीने ॥ लखे
साम धामं अभेथान लीने ॥ हरिवाक्य वासी नरं नार
जे ते ॥ तरं हो गये पार संसार ते ते ॥ ४ ॥ हरिवा
क्य त्यागे कहुं ठोर जावे ॥ पडे फंद माया-
गले दुख पावे ॥ मुनिकाज ते हि करे वाक्य वासा ॥
असारं लखे त्याग संसार आसा ॥ ५ ॥ कली कालमें
सत्यकी रीत कीधी ॥ लखे नेक जीवे महा मोक्ष लीधी
॥ अबे लोभसो स्वर्ग मृत्यु पताला ॥ सबकुं लिये बहु
भांति बेहाला ॥ ६ ॥ सुरंआसुरं नाग मानुष ताकुं ॥
सरावंत मांहोमांही लोभताकुं ॥ तेहि जीतकि रीत नीकी
करीकें ॥ कहुं चित्तमें श्रीहरिकूं धरीके ॥७॥ ॥दोहा॥
चउद लोकके बीचमें ॥ फिरत लोभकी फोज ॥ ताहि
त्यागकि रीत कहुं अति जाको जगओज ॥ १ ॥ ॥ छंद
संजुता ॥ हरिचर्ण उरमें धारकें ॥ कहुं बात एक बिचा-
रकें ॥ जग काम झाल कठोरहे ॥ पुर तीनमें बडजोर
हे ॥ १ ॥ दिल होत आविर जाहिके ॥ तन नाश लज्या
ताहिके ॥ नहि जोत गोत अगोतकुं ॥ गलिजात छोत
अछोतकुं ॥ २ ॥ कलिकाम जेजेहि रितमें ॥ बदी हुं में
पूरण प्रीतसें ॥ मुनि जीत काम अरु मानकूं ॥ थिर
पांमही हरिथांनकुं ॥ ३ ॥ कर एकवारहि भोजनं ॥
तरूवास भूमहि आसनं ॥ ईसरीत रहेजन जाहिकुं
॥ बनमांय मारत ताहिकुं ॥ ४ ॥ इह काम वेरिय

जीवको ॥ दुखरूप चोर दईवको ॥ विहरंत कोटिक
वांमसें नहि होत पूरण कामसें ॥ ५ ॥ व्रध रोगी अं-
ध वधीरकुं ॥ धन हीन कायर वीरकुं ॥ कुलहीन दूर्बल
दीनहे ॥ सब काम किंकर कीनहे ॥ ६ ॥ ॥ कृत रीत
कोनाहिं अंत जुं ॥ तजे काम जो विधि मंतजुं ॥ जग म-
र्व हारत काममें ॥ जनत्याग हे अभिराममें ॥ ७ ॥
तज काम प्रभुपद प्रीतकुं ॥ सबहि कहुं अब री-
तकुं ॥ मुनि जीत रीत मनोजकुं ॥ सब मोवतात्र-
हुं चोजकुं ॥ ८ ॥ ॥ छंद अर्ध भुजंगी ॥ ॥ चले
स्नानकाजा ल्यिये साथ साजा ॥ तने संग ताजी
॥ नचे रंग वाजी ॥ १ ॥ अतंता उड्डांणा ॥ वहे म्रग
डांणा ॥ जरी साज जोपे ॥ अछे अंग ओपे ॥ २ ॥
कपि रीत झंपे ॥ नीजं छाहि कंपे ॥ अति तेगवंता ॥
अकासे उडंता ॥ ३ ॥ तनं रूप ताता ॥ करे व्योम वाता
॥ भरे जोर फाली ॥ नचे मांहि थाली ॥ ४ ॥ छबिदार
चंगा ॥ कुदे जुं कुरंगा ॥ रमीमें फरेला ॥ ममाला
चरेला ॥ ५ ॥ दिमंता दिवाला ॥ *छति पुर ढाला सध
वाग साचे ॥ नटां रीत नाचे ॥ ६ ॥ रते श्वेत रोजे
॥ मदा शील मोजे ॥ पटादा रपीले ॥ नली साम
नीले ॥ ७ ॥ किते रंगकारे ॥ भरे जोर भारे ॥ तिखे
खूब ताजा ॥ रिझे देखि राजा ॥ ८ ॥ वडा जोध

*पुरी ढालना जेवी घोडानी छातीछे.

बंका ॥ धरे नाहि संका ॥ प्रभुनाथ प्रीती ॥ रहे
सूध रीती ॥ ९ ॥ हरीदास पूरा ॥ सदा अंग सूरा
॥ सबे निमराखे ॥ मिथ्या नांहि भाखे ॥ १० ॥
लीये हाथ भाला ॥ किये नाथ वाला ॥ नहिं निम
चूके ॥ उडे टुक टुके ॥ ११ ॥ सदा शिल साचे ॥ नहिं
निम काचे ॥ हरि केफ माते ॥ रहे रांम राते
॥ १२ ॥ हरिके हजुरी ॥ प्रीति अंग पूरी ॥ परा पार
पाला ॥ व्रजा धीश वाला ॥ १३ ॥ गुनि संत ग्यानी
॥ अनंता अमानी ॥ भरे प्रेम भारि ॥ बडे ब्र-
ह्मचारी ॥ १४ ॥ ग्रहि त्यागि जे ते निति के नि-
के ते ॥ सबे रंग भीने ॥ हरी संग लिने ॥ १५ ॥
कहे होरी होरी ॥ उडे रंग झोरी ॥ चले नाथ सेरी
॥ जनं जुथ घेरी ॥ १६ ॥ त्रिया गोख ठाढि ॥
लखी प्रीत वाढि ॥ झरूखे निहारे ॥ धनं
धाम वारे ॥ १७ ॥ कबु आप हेरे ॥ त्रिया फूल
वेरे ॥ वदे जीतवानी ॥ जगंनाथ जानी ॥ १८ ॥
छडीदार टेरे ॥ बहु वेर वेरे ॥ चले संग गाते ॥ मा-
हा मोद माते ॥ १९ ॥ नदि तिर आये ॥ हरी चीत
भाये ॥ तरु वेलि तिरा ॥ सुगंधिः समीरा ॥ २० ॥
तहां तिर सारी ॥ फूली फूल वारी ॥ अलिले सु-
गंधी ॥ रहे तार संधी ॥ २१ ॥ छपय ॥ जय-
जय हरि दिनेश ॥ वेश नटवर प्रिये बानी ॥ भक्ति

धर्म कुमार ॥ पारकीनि भव प्रानी ॥ व्रत नैष्ठिक महावीर ॥ धीरजन चरन उपासे ॥ प्रतिदिन अधिक प्रताप ॥ दरश जेहि पाप विनासे ॥ सुख सिंधु बंधु दिनन सदा ॥ लीजे चरण लगायकें घनस्याम हरि अहो निश बसो ॥ ब्रह्ममुनि उर आयकें ॥ १ ॥

अथ थाल

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जाते मन वाणि थके ॥ शकेन गुण कहि शेष ॥ सो प्रभु द्रगगोचर फिरे ॥ वपु धर नटवर वेष ॥ १ ॥ रहे जाके एक रोममें ॥ कोटि कोटि ब्रह्मंड ॥ हरि व्रजमें लघु बाल होय ॥ खेलत रहत अखंड ॥ २ ॥ अश्वमेधादि आदिले ॥ जेह्न त्रप्त न होय ॥ आहिरणीकि छासकुं ॥ स्वादु पिवत सोय ॥ ३ ॥ मज्जन मनरंजन सदा ॥ रतिपति गंजन रुप ॥ करमंजन जिमत कृष्ण ॥ व्यंजन पाक अनूंप ॥ ४ ॥ ॥ छंदनाराच ॥ अनूंप चित्रके अवास ॥ नेक वास निर्मलि ॥ हरंत त्रास १ वक्रहास ॥ दास पास मंडलि ॥ सुगंधनीर स्नान धीर ॥ भक्त भीर चहुं धरे ॥ जिमंत नाथ

२ समराथ ॥ संतहाथ सुंदरे ॥ १ ॥ ३ पवित्र पाक शाल भाल ॥ पाठ ढाल प्रीतसें ॥ विशाल हेम थालमें ॥ रसाल प्रेम रीतसें ॥ चत्वार अन लेह्य चोश भक्ष भोज ले धरे ॥ जिमंतनाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ २ ॥ तलेल लड्डुका तयार ॥ मार धात शरकरा ॥ कंसार स्वादमें अपार ॥ फार घ्रत फाफ-रा ॥ विलोक लोक वारवार दया धार नजरे ॥ जि-मंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ ३ ॥ सुस्वा-दु सेव सुक्षमा ॥ पुपा तलेल पूरियां ॥ पुनित मी-ष्ट दुध पाक ॥ लेखडे हजुरियां ॥ गिरिष्ट शिष्ट ई-ष्टके ॥ अनेक भाति अपरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ ४ ॥ बरंज खांतसें बनाय ॥ ॥ प्रेम जुक्त पिरसे ॥ खुआसु गाढ माल पुड ॥ खात चात खीरसें ॥ महा अनुप मोतिया ॥ शिरा करे घी शकरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ सं-त हाथ सुंदरे ॥ ५ ॥ लजत दार लाफसी ॥ बने अछि जलेबियां ॥ गले गगन गांठिये ॥ रखे मेवा रकेबियां ॥ प्रचुरके गुलाब पाक ॥ प्रखास प्रवरे

१ मुखारविंदनुं हंसवुं त्रासने हरे छे. २ समर्थ. ३ पवित्र पाकशाला एटले रसोडुं भालीने त्यां प्रीतिएं करीने पाटलो ढाल्यो.

॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ ६ ॥
मेसुब खूब मीष्टता ॥ सुस्वादु लाडु सेवरा ॥ खरे
गिरिष्ट खाजले ॥ घीयाल श्रेष्ट घेवरा ॥ पुनीत
दृढ पेंडका ॥ गिरिष्ट नंत दैथरे ॥ जिमंत नाथ स-
राथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ ७ ॥ बने अनुंप बरफियां
॥ पतास सक्क पारीयां ॥ विविध स्वाद वेष्टिता ॥
सुगंधसं समारियां ॥ थिरा खरा तले लठोर ॥ और
नेक दुसरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे
॥ ८ ॥ म्रदु अनुंप सरकियां ॥ सुकोमलि सांवणियां
सुगंध मिश्र सुखडी ॥ पुनित सुत्रफेणिया ॥
तले पाकटोपरां ॥ कलेव शाकरे करे ॥ जिमंत
नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ ९ ॥ साटा द्रिभात
शोभिता ॥ प्रसिच तूप पोलियां ॥ रसाल नर्म गे-
हलि ॥ बहु घ्रत तेण बोलियां ॥ भोजननेक भात
भात खात पीरसे खरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ
सुंदरे ॥ १० ॥ रुचिरुचि लेत ग्रास ॥ हास जुक्त है
रहे ॥ पुनीत नीर हेम पात्र ॥ दास पास ले रहे ॥
पुनी पुनी पिवंत साम ॥ वास प्रीतसे लेरे ॥ जिमंत
नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ ११ ॥ हवेज
खूब डारके ॥ भुंजेल घ्रत भुजियां ॥ विविध भांत
कावडा ॥ रसिक साम रजीयां ॥ पकेल घी पको-
डियां ॥ प्रमाण नेक सर्फरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥

संत हाथ सुंदरे ॥ १२ ॥ गरम स्वादु गांठिया ॥ कलितलेल आकारि ॥ पुरे हवेज पूडले ॥ वडिमु मीश्र पाकारि ॥ विशालके फुलवडी ॥ चण तलेल चरपरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ १३ ॥ टंका मुवा तंदूलजा ॥ वीविध भांत भाजियां ॥ वघारदे लवंगसें ॥ तलेल घ्रत ताजियां ॥ अलवि सुपान पानलि ॥ लुणि तलेल लालरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ १४ ॥ सुनील चील सुंदरा ॥ पणंजकुंज पतियां ॥ गंभिर स्वाद गोहली ॥ तलेल खूव ततीयां ॥ नवीन के निलोतरी ॥ अनेक भांत ईतरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ १५ ॥ मुला वैताक मोगरि ॥ वालोल घी वघारियां ॥ रसालहि रतालुवां ॥ केशुरणां समारियां ॥ फली नवीन ग्वारकी ॥ चोलाफलीं अनुसरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ १६ ॥ भिंडि डोडि द्रिभांतकी ॥ कंकोडके कारेलियां ॥ काजु नवीन कोचलां ॥ मामूक पास भेलियां ॥ भडथशाक चिभडां ॥ सिंचेल घ्रतमेलरे ॥ जिमंतनाथ समराथ संत हाथ सुंदरे ॥१७॥ निराट स्वादु नीलवा ॥ तलेल खुव तूरीयां ॥ रसाल नेक राईतां ॥ करे तले कचूरियां ॥ प्रचूर तीक्ष पापडे ॥ कडी मथे दधि करे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ १८ ॥ कोलां कणंक कुंभियां ॥ बहु

विधि बणायकें ॥ धरे तलेल दृधियां ॥ चूंकार घ्रत चायकें ॥ तमंकार दार ताजियां ॥ त्रकारियां तरे तरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ मंत हाथ मुंदरे ॥ ॥ १९ ॥ प्रनिधके प्रकारके ॥ आचार नेक आनकें ॥ रमाल अंब राइति ॥ अंबोल बोल टानकें ॥ काजु आयेल केरियां ॥ सथुल मुल गरमरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ मंत हाथ मुंदरे ॥ २० ॥ आदा अद्रक आथणां ॥ काजु तलेल काचरि ॥ लजंत दार केवुवां ॥ अचां धमंक आकरि ॥ त्रिविध केर वांसके ॥ सवाद लेत मादरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ मंत हाथ मुंदरे ॥ २१ ॥ टजे खारक राइतां ॥ कलि तले कटेरियां ॥ तिखी तमंक चटणि ॥ कलां सुपक्क केरियां ॥ मेवा मेरूक मांखणं ॥ अनेक स्वाद अंतरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ मंत हाथ मुंदरे ॥ २२ ॥ अवल दाल अददकी ॥ चणा चोला कटोरियां ॥ खाभि चडेल खीचडि ॥ कमेल घी कटोरियां ॥ वघार मुंग जरदवान ॥ तान मान सत्वरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ मंत हाथ मुंदरे ॥ ॥ २३ ॥ समूत्र अंब शालके ॥ बनाय भांत भांतसें ॥ अनेक रंगरंगके ॥ खासे पकाय खांतसें ॥ अपार शाक उमदे ॥ विवीध पाक विस्तरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ मंत हाथ मुंदरे ॥ २४ ॥ अ-

नुंप दुध आवटेल ॥ धोत मशरी धरि ॥ भोजन नेक भांतके हसंत लेत श्रीहरि ॥ करंत दास वारवार मनुवार आदरे ॥ जिमंतनाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ २५ ॥ सुआचमन लेत साम ॥ खूब त्रप्त होयके ॥ नवीन नीर जमुना ॥ पुनीत हस्त धोयके ॥ करे कुरला वहु प्रकार ॥ वक्र अंबुजे वरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ २६ ॥ अवल लुंग एलची ॥ काथो चुनो सोपारियां ॥ बनाय पान वीडिका ॥ सु सुवास धारियां ॥ महा प्रसाद लेत दास ॥ वास पास सोटरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ २७ ॥ चरच अंग चंदनं ॥ करे सु आडकेसरे ॥ आरोप कंठ फुल माल ॥ अग्रवर्तीयां धरे ॥ उतार दीप आरती ॥ अहो कृपाल उच्चरे जिमंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ २८ ॥ अजव खाट उपरे ॥ रसीक साम राजही ॥ छविस्वरूप देखकें ॥ अनेक काम लाजही ॥ निज गुलाम ब्रह्मानंद ॥ पाय आयकेंपरे ॥ जिमंत नाथ समराथ ॥ संत हाथ सुंदरे ॥ २९ ॥ छपय ॥ ॥ एहि विध जिमे अघाय ॥ वने घनस्याम वराजे ॥ प्रतिदीन अधिक प्रताप ॥ छवि सुंदर अतिछाजे ॥ हरस्व मनोहर हास ॥ दास उर त्रास निवारन ॥ प्रफुलित वदन प्रकास ॥ विविध जन मोद वधारन ॥ सज

अंग वसन भुषण सुभग ॥ वपु नर धर जग वीचरे ॥ एहि छबि आय ॥ अहो निशबसो ॥ ब्रह्मानंदके अंतरे ॥ १ ॥ दोहा ॥ देखत सहज समाधिमें ॥ ॥ प्रगटज्युं अक्षरधाम ॥ एहि विधि अपने दासकुं ॥ देखावत घनस्याम ॥ १ ॥ वहत तहां विरजा विमल ॥ गो गोपनके वृंद ॥ नीर झकोल कलोल नित ॥ गावत मिल वृजचंद ॥ २ ॥ छंद त्रोटक ॥ ॥ विरजा शुभ नीर भरी गहरी ॥ अति ऊठत हे जलकी लहरी ॥ तिन स्नानहि होवत सुधमती ॥ तन चेतन होय स्वछंद गती ॥ १ ॥ अति शोभित हे तट दोय तहां ॥ बहु भांति मनीनकि खांनि जहां ॥ मानि नील रु फाटक इंद्रमनी ॥ कम नीय मनोहर हीरकनी ॥ २ ॥ विरजा वहे नीर अथाह सदा ॥ तिन तीर नहीं दुख शोक कदा ॥ वहु नंग सुरंगित घाट बने ॥ मनि लाल विशाल सोपान घने ॥ ३ ॥ तिनके पर व्रक्ष रु वेलि जुकी ॥ मनु सुंदर छाय वितानहुकी ॥ सब कंचन तीर सुनीर वहे ॥ रमनीक तहां खग व्रंद रहे ॥ ४ ॥ झलके सुभ रंग सु नंग जरे ॥ निरखे मनु नेन अनेक करे ॥ रमनिक छबि अतिछायरही ॥ नित सुंदर रूप कहात नहि ॥ ५ ॥ विरजातट थाट सुधेननके ॥ व्रष नाद मनूं रव मेघनके ॥

गहरे सुर होवत गोपिनके ॥ तन ते हरिप्रीय सदा-
तिनके ॥ ६ ॥ लगि भीर सु गोपिन ग्वालनकी ॥
लगनी अति अंतर लालनकी ॥ मिल गोपिरु ग्वाल-
हि स्नान करे ॥ गुन गात हरि मन मोद भरे ॥ ७ ॥
रतनुं करि कंचन कुंभ जटे ॥ त्रिये नीर भरे सरिता
सु तटे ॥ नर नारि सबे जल झीलतहे ॥ रस रूप
हरिगुनमें रतहे ॥ ८ ॥ हरिक्रीडनके शुभ थानक है
॥ मनि मोति मनोहर मानक है ॥ तरु शोभित सुंदर
तीरनमें ॥ मिलखेल अहीर अहीरनमें ॥ ९ ॥ मिल
घूंमत गोपिन मंडलियां ॥ करमें शुभ चंपककी कलि-
यां ॥ विरजा सब धामकुं घेर रही ॥ तिनकी छबि
में कछु लेश कही ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ कही विरजा
संक्षेपकरि ॥ हरिकेलिको स्थान ॥ विहरत गोपि
गोप सब ॥ करत रहत गुन गान ॥ १ ॥ विरजा
पार विहारजुत ॥ शोभित गिरिशतभृंग ॥ गढजिमि
श्रीगोलोकको ॥ रह्यो ओप नवरंग ॥ २ ॥ उंचो
जोजन कोटि एक ॥ दशगुन चोडो जान ॥ पारि-
जातिक आदितरु ॥ प्रसरे अधिक प्रमान ॥ ३ ॥ का-
मधेनुके वृंद पुनि ॥ गिरिपर रहत अपार ॥ अतुलित
शोभा देखकें ॥ मगन हेरत नरनार ॥ ४ ॥ क्रीडा
स्थानक कृष्णके ॥ रह्यो रत्नकरिमंड ॥ सो गिरिवरके
शिखरपर ॥ अद्भुत रास अखंड ॥ ५ ॥ रसप्रद मं-

ढ्ळ रासके ॥ जोजन दश विस्तार ॥ गोलसुभग प्रकारजुत ॥ च्यार च्यार सब्द्वार ॥ ८ ॥ छंद पधरि ॥ ॥ गो लोकहूके चहुं आसपार ॥ व्रंदावन शोभित सुख विल्यास ॥ तरु वेलि मनु तनु मुक्तधार ॥ हरि गुजन हित भये बहु प्रकार ॥ १ ॥ वन छायरहि तहां विविध वेल ॥ बहु फूल जाय जुथी चंबेल ॥ मल्लीका सुछाय सुंदर सुवास ॥ माधवी पुष्प अतिशें प्रकाश ॥ २ ॥ केतकी हार सृंगारकुंद ॥ तेहि गंध लपट रहे भ्रमरव्रंद ॥ पुनि लवंग लता अतुलित अनूप ॥ फल मिष्ट द्राख सुंदर रसरूप ॥ ३ ॥ पुंनी नांग नांगकेसर प्रफूल ॥ झुक झुम रहे अलिव्रंद झुल ॥ मंदार देवतरु कोविदार ॥ पिष्पला पूंगि पाटल अपार ॥ ४ ॥ अतिरूप अशोकरू सफल अंव ॥ वहु फूल झुल सुंदर कदंब ॥ जांबु ननीप अरु पारिजात ॥ पुनि पनस तनस चंदन सुपात ॥ ५ ॥ नारंग खजूरी नालीरकेर ॥ ॥ वहु भाति बने जंबेरबेर ॥ तरु सामरूप सुंदर तमाल ॥ शोभीत बकुल विलंबादिशाल ॥ ६ ॥ वटप्लक्ष नीवचंपक सुहाय ॥ थल कमल रहे धरे विमल छाय ॥ कल्हार कंज उत्पल अपार ॥ दीपंत अधिक मकरंद दार ॥ ७ ॥ रसमत्त भ्रमर तहां करत गान ॥ खग विविध करत हरिगुन वखान ॥ मींना कपोत अरु क्रूंच मोर ॥

तहां करत नाद सुंदर टकोर ॥ ८ ॥ सारंग कूंज कोकिल सुढार ॥ चक्रवाक हंस हरिगुन उचार ॥ तहां विविध कूप वापी तडाग ॥ चित्र गात गोप तहां विविध राग ॥ ९ ॥ गोवाल गोपि गोधन अमाप ॥ वन रह्यो सर्व तेहि शब्द व्याप ॥ हरि केलि करन कूंजनकुटीर ॥ वहे सुरभि मंद शीतल समीर ॥ १० ॥ वछवृषभ धेनु अरु गोपि गोप ॥ अति विमल रह्यो तहां शब्द ओप ॥ बतीश विपन ॥ तेहि मध्य अनूप ॥ एकैक हूतें अति सरसरूप ॥ ११ ॥ फुले फूल निरंतर अति अनंत ॥ तहां सदा रहत रतुवर वसंत ॥ ज्यो आय करत एहि वन प्रवेश ॥ कोउ भांति रहत नहि तेहि कलेश ॥ १२ ॥ दोहा ॥ ॥ एहि विधि वृंदावन कह्यो ॥ हरिकेलिको स्थान ॥ विहरत गोपी गोप सब ॥ करत रहत गुन गान ॥ १ ॥ ताकेपर गोलोककी ॥ शोभा वनि अपार ॥ सुंदरपुरके सदनकि ॥ अतिशय छवि उदार ॥ २ ॥ ॥ छंद त्रोटक ॥ वहुरंगित नंग सु धाम मही ॥ मनिलालहुकी छवि शोभि रही ॥ जन मंडित नंग उमंग लहे ॥ शुभ मंदिर धाम प्रकास रहे ॥ १ ॥ सुमनी झुक गोख विशोक सदा ॥ महा शोभितदास विलास मुदा ॥ मनि मानकसें कारि चोक भरे ॥ कमनीय प्रवालन थंभकरे ॥ २ ॥ मुनि देखत चाह

अथाह जगी ॥ छबि भारि अटारिसु व्योमलगी ॥ मनिफाटक हाट कपाट जरे ॥ जन देख विशेख उमंग भरे ॥ ॥ ३ ॥ मलियागर गार अगार मही ॥ अति वास अवासन छाय रही ॥ कस्तुरीयके सरगंध भरे ॥ मद अंध सुगंध छके भमरे ॥ ४ ॥ पुखराज अमोलिक नील मनी ॥ मनि इंद्र विचीत्र प्रकार धनी ॥ शुभ तोरन अंब्र अशोकनके ॥ मनु चोरनहार मुनि मनके ॥ ५ ॥ कहु चीत्रनके बहु पंखि करे ॥ जन देखत सत्य प्रतित धरे ॥ शुभ मंडप चीत्र विचित्र बने ॥ जन बेठ अटा अपने अपने ॥ ६ ॥ तिन उपर कूंभ कनंकहुके ॥ जुत मानक नोतम रीतहुके ॥ नहि होत प्रमान थके अजही ॥ छबि देखत सूर शशी लजही ॥ ७ ॥ हरेहं जु पताक मुनी मनकुं ॥ मनु लेत हि टेर हरी जनकुं ॥ तिनके पर चीत्रन मोर किये ॥ जन देखत अंग उमंग लिये ॥ ८ ॥ प्रति द्वारन रंभ सुथंभ धरे ॥ विहरे हरिदास हुलास भरे ॥ कस्तुरीय केसर कुंकुमके ॥ छडकावहुतें अलि गंध छके ॥ ९ ॥ आति गाढ अनूपम रूप अटा ॥ छबि धार रही मनु आय छता ॥ जनवृंद अनंदहुसे विलसे ॥ हरिको मुख देखि हसे विकसे ॥ १० ॥ सुख वास अवास हरी जनके ॥ तन काम वि-

कार नहीं तिनके ॥ बहु भांति न भोग अरोग जहां ॥ करहें हरिदास विलास तहां ॥ ११ ॥ रत-नुं जुत भूषन अंग धरे ॥ विन क्रोध सुबोध सदा विहरे ॥ छवि मान विमान कि पंगतियां ॥ द्रग देख विशेख बढे रतियां ॥ ११ ॥ हरिदास-नके हित साम रचे ॥ ॥ मन रंजन अलौकिक भीर मचे ॥ लखि मारग राज समाज लिये ॥ हरि-रूप निहारन मोद हिये ॥ १३ ॥ नित उठत मो-दहुकी लहरी ॥ जन व्रात सुगात धुनी गहरी ॥ विन पार बजार तहां प्रसरे ॥ पच रंगन नंग सु वाट जरे ॥ १४ ॥ लर तोरन मोतिन मालनके ॥ रचि थंभ अचंभ प्रवालनके ॥ मन मोहन भा-रि अटारि मली ॥ अति पात सुगंध मदांध अ-ली ॥ १५ ॥ ग्रह पास तहां लघु बाग खुले ॥ फहरे शुभ गंधित फूल फुले ॥ बनि नीर भरी तित बा-वरियां ॥ पुखराज पिरोज कि पावरियां ॥ १६ ॥ हदहोज जरे शुभ हीरनके ॥ रव होवत कोकिल कीरनके ॥ अति नंग जरे शुभ अंगनमें ॥ रति रीझ मुनीवर रंगनमें ॥ १७ ॥ खुब लाल प्रवालन-की खटियां ॥ मुक्ताफल मानकसें जटियां ॥ कृत चीत्र विचित्र कमारनमें ॥ घनसार प्रचार प्रति घरमें ॥ १८ ॥ झुकि मोतिनकी लर जारिनमें

॥ अति शोभित नारि अटारिनमें ॥ कृत नेन कुरंगनमें कजरा ॥ गहिहाथन फूलनके गजरा ॥ १९ ॥ म्रगलोचनि नार अपार भली ॥ हरि पूजन आवत जात चली ॥ नव जोवन नारि अटारि चढे ॥ हरि देखत अंग उमंग बढे ॥ २० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ललित विमल गोलोकमें ॥ एहि विधि धाम अनूप ॥ मंगलपद अति तेज मय ॥ रसिक मनोहर रूप ॥ १ ॥ सब गोपीनके सदन मध्य ॥ राधा ग्रह सुखकंद ॥ राजत एहि विधि रूप मय ॥ ज्युं उडगन महि चंद ॥२॥ ॥ छंद पधरी ॥ ॥ एहि भांति रहे सब सदन ओप ॥ गुन गात आत हरखात गोप ॥ राधिका भुवन सब मध्य शोभ ॥ तेहि देखि बढत मन अधिक लोभ ॥ १ ॥ प्राकार कनंक षोडश प्रचंड ॥ प्रतिद्वार गोप रहे हिं अखंड ॥ सब कहु ताहि अनुक्रम सहीत ॥ प्राति दिवस बढत हरि चरनप्रीत ॥ २ ॥ रहे वीर भानुं तहां प्रथम द्वार ॥ लक्ष रहत अनूंचर गोप लार ॥ रहे द्वितिये द्वार चंद्र भानुवीर ॥ लख पंच गोप चाकरसु धीर ॥३॥ पुनी तृतिये द्वार तहां सूरज भांन ॥ नव लाख गोप अनूंव्रत प्रमान ॥ वसुभानूं चतूरथ द्वारपाल ॥ दशलक्ष गोप अनुव्रत सुमाल ॥ ४ ॥ रहे देव भानूं पंचमसु प्रोल ॥ ईग्यारलक्ष चाकर अडोल ॥ षष्टमे द्वार पुनि शक्र भान ॥ लखबार गोप अनूचर बखान ॥ ५ ॥ चित्र भानू द्वार

सप्तम प्रवीन ॥ दश तीन लक्ष अनुव्रत नवीन ॥ अष्टमे द्वार सुंदर अनूप ॥ रहे वीरसु पारशद विमल रूप ॥६॥ लख चौद गोप अनुव्रत हमेश ॥ नंग जडित अंग भूषन सुवेश ॥ पुनि सुबल द्वार नवमे अभंग ॥ दश पंच लक्ष तेहि गोप संग ॥ ७ ॥ दशमे जु सुदामा वीर देख ॥ लख वीश गोप अनुव्रत सु लेख ॥ नंग जडित अंग भूषण नवीन ॥ प्रभु चरन कमल रत अति प्रवीन ॥८॥ दश एक द्वार पर अंश्रुदास ॥ चोवीश लक्ष तेहि गोप पास ॥ दश दोय द्वार अर्जुन प्रवीन ॥ लखतीस गोप तेहि संग लीन ॥९॥ दश तीन द्वारपर भृत विशाल ॥ पेंतीस लक्ष अनुचर गोवाल ॥ पुनि देव प्रस्थ दश चतुर्द्वार ॥ चालीस लक्ष अनुभ्रत उदार॥१०॥दश पंच द्वार पर रूप-भजान ॥ पंचास लक्ष अनुचर प्रमान ॥ सोलमे द्वार सुंदर श्रीदाम ॥ एक कोटि गोप अनूव्रत सुनाम ॥११॥ हरिनिकट रहत ललीतादिवाम॥ पुनि प्रसिध प्रसिधके कहहूं नाम ॥ ललिता रुजया शशिकला जान ॥ माधवि अरू यमुना प्रमान ॥१२॥ जाह्नवि सुशिला रति पुनीत ॥ शशिमुखी कुंतिहरिचरन प्रीत ॥ स्वयंप्रभा पद्म मुखि कदंब माल ॥ अरू सुखा सुभा मधुमति रसाल ॥१३॥ सरस्वति अरू पद्मा रू गंग ॥ सुमुखीही सर्व मंगल सुरंग ॥ भारति पारिजाता सुभाम ॥ कमलाहि एक हरिचरन काम ॥ १४ ॥ नंदनी सुभग नंदा अनूप ॥ पुनि कृष्ण

प्रिया सुंदर सरूप ॥ कोटान कोटि वय कारि किशोर॥ शुभ हाव भाव सुंदर सुगोर ॥ १५ ॥ प्रति अंग नंग भूषन अपार ॥ सज रहत सदा सोरहिसंगार ॥ धुनि होत पाय नेपुर अभंग ॥ तन देख लजत तेही कनक रंग ॥ १६ ॥ कुच चर्च कंकू अतिलंब केश ॥ विकसायमान सुकुमार वेश ॥ हिय लसत निरतर रत्नहार ॥ नालेर शीश अति वेनिभार ॥१७॥ वाजंत्र नाद होवत विशाल ॥ रतिवंत गीत गावत रसाल ॥ चित चोर वजत उपंग चंग ॥ मनु मेघ धूनि गरजत म्रदंग ॥ १८ ॥ राधिका भुवन एहिरीति जान ॥ रंगराग अलोकिक होत तान ॥ गढ बाहर बनि परिखा अनंत ॥ अति उंडि अणं कल जल प्रजंत ॥ १९ ॥ गढगोल अलोकिक बीन प्रमान ॥ छविराज दुर्ग विस्तारमान ॥ परिखाके तीर चहुं ओर आय ॥ छविवंत कल्पतरु रहे छाय ॥ २० ॥ चित चोर वनेउपवन अनूप ॥ झुकराहि छाहि नहिं लगत धूप ॥ सवतें जुं अजब सुंदर अचंभ ॥ कंगुरे रत्नमनिहेमकुंभ ॥ २१ ॥ सब गोपी राधिका रमा तोल ॥ पतिव्रत धर्म राखत अडोल ॥ पतिभाव एक श्रीकृष्ण साथ ॥ तेहि देत नवल सुख नवल नाथ ॥ २२ ॥ गोलोक धाम एहि विधि बिशाल ॥ गुन गान करत हरि गोपि ग्वाल ॥ नहिं कांम कुमति अंतरकलेश ॥ संताप शोक दुखनांहिं लेश ॥ २३ ॥ शुभ कुंकुम केसर अति सुवास ॥

लेसुरभिं गंध उर धर हुलास ॥ घनसार अगर म्रगमद अपार ॥ हरि दरश जात ले पुष्पहार ॥२४॥ दोहा ॥ ॥ मोरहि पोरि उलंघकें ॥ चोक विलोकत आय ॥ शोभा अगनित ताहिकी ॥ मुख बर्नि नहिं जाय ॥ १. ॥

॥ छंद हरिगीता ॥

तेहि चोक महिं अति सुखद सुंदर ॥ अधिक तेज अपार हे ॥ रूचि चंद्रकोटि समान उज्वल ॥ तेज पूंज उदार हे ॥ तेहि नाम अक्षर ब्रह्म अगनित कहतहे मुनि व्रंद जूं ॥ अरु विमल आदि रु अंत वर-जित ॥ गुणातीत स्वछंदजूं ॥ १. ॥ पुनि काल पुरुष प्रधान आदिक ॥ जक्त कारन जेहजूं ॥ इन सबनको यह अचल आश्रय ॥ सकल व्यापक तेहजूं ॥ सत चीद आनंद कंद सुंदर ॥ अचल वस्तु अनूपहे ॥ रमनीक सुंदर तेज रासी ॥ रुचिर सुंदर रूप हे ॥ २ ॥ तेहि मध्य मंदिर कृष्णको ॥ रसरूप सुखकर राजहीं ॥ तहां हेमकि वलभि मनोहर ॥ चीत्र मनिमय छाजही ॥ जन मूदित होत सजोत मंदिर ॥ अधिक सबके उपरी ॥ जटि चटकिदार उदार चुंनी ॥ लट मोतिनकी लरी ॥ ३ ॥ अरु विविध नंग सुरंग नौतम ॥ रत्न संजुत थंभहे ॥ पुनि सीत मंद सुगंध सुंदर ॥ आत वात अचंभहे ॥ मनि दाम अधिक उदाम

॥ मनहर ॥ चतुमाळ सोहामनी ॥ तहां करत पद झनकार झंझर ॥ राधिकादिक कामनी ॥ ४ ॥ दोहा ॥ ॥ चंदन वार प्रकार बहु ॥ मनि संजुत चहुं पास ॥ चासर श्वेत निकेत शुभ ॥ नंग सुरंग प्रकाश ॥ १ ॥ कळश मनोहर रत्नके ॥ तोरन आम्र अशोक ॥ मृगमद चंदन अगरके ॥ अति सुगंध हरिओक ॥ २ ॥ सुंदर गिरि शत शृंगतें ॥ उंचो हरि आवास ॥ धूप दीप मंगळ सकळ ॥ तेहि जुत अधिक प्रकाश ॥ ३ ॥ मंगळमय प्रतिद्वारपें ॥ कुंभ कनंक दरशाइ ॥ फळ दळकुंकुम जुक्त करि ॥ धरे विविध तहां लाइ ॥ ४ ॥ विविध सेज तहां रत्नकी ॥ पुष्पन सेज अपार ॥ भोग द्रव्य पूरन भुवन ॥ रत्न पात्र अंवार ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ शरद पुरन शशि सुख कमळ ॥ विविध पूष्पके हार ॥ केसर चंदन चर्च तनुं ॥ दिव्य वस्त्र अलंकार ॥ १ ॥ एहि करि शोभा नवळ अति ॥ नीरखत रही समीप ॥ मंत्र कही मुख कहतहे ॥ अर्पहुं आरती दीप ॥ २ ॥ श्रीकृष्णाय नमहुं कही ॥ प्रीत अधिक उर धार ॥ देनहुं नाथ प्रदक्षणा कीजहु अंगीकार ॥ ३ ॥

छंद हरिगीता

॥ गोविंद माधव दयाळय प्रभु ॥ दीन हित नरतनुं धरी ॥ श्रीमंत मन द्रग हरषदायक ॥ दिव्य मुर्त्ति

श्रीहरि ॥ मणि निल इंद्र सु अंग मनहर ॥ वीनती अवधारियें ॥ श्रीवासुदेव श्रीरुक्मणीवर ॥ मोय नाथ उगारियें ॥ १ ॥ कंसादि दुष्टन दमनकारक ॥ प्रणतबंधुएकजुं ॥ कौमोदकी कर कमल सुंदर ॥ शंखचक्र सेवकजुं ॥ श्रीद्वारिकापुर इंद्रपूरन ॥ काम कुबुधि निवारियें ॥ श्रीवासुदेव श्रीरुक्मणीवर ॥ मोयनाथ उगारियें ॥ २ ॥ सुख हरष कंद स्वछंद सुंदर ॥ द्वंद फंद विनाश है ॥ रतु शरदचंद सु बिंब मुखसेंहि ॥ मंदमंदसुहासहै ॥ भूव भार नृपदल नाश कारक ॥ बंधु आहि दुख टारियें ॥ श्रीवासुदेव श्री रुक्मणीवर ॥ मोयनाथ उगारियें ॥ ३ ॥ भामानुरंजन इंद्रमदहर ॥ लाये पारिजात जुं ॥ जेहि पुत्र प्रद्युमन यज्ञ बहु कृत ॥ सभा सुगट सुहात जुं ॥ त्रीय शोल सहस्रके कांत सुंदर ॥ काम मम अरि मारियें ॥ श्रीवासुदेव श्रीरुक्मणीवर ॥ मोयनाथ उगारियें ॥ ४ वसहेत पारथ सारथी भय लीन पांडव पक्षजुं ॥ कृश्ना मनोरथ इष्ट सुख प्रद ॥ यनहो मुर अक्षजुं ॥ देवेंद्रवंद्य सु गरुडध्वज ॥ कर धनुष क्रोध प्रहारीयें ॥ श्रीवासुदेव श्रीरुक्मणीवर ॥ मोय नाथ उगारियें ॥ ५ ॥ शुभ धर्म पंथ मजाद रचना ॥ करन ततपर होसदा ॥ नित दान द्विजकुं करन पूरन ॥ हरन संकट आपदा ॥ गुण कोष नाष अदोष गिरिधर ॥

रोष दोष बिसारीयें ॥ श्रीवासुदेव श्रीरुक्मिणीवर ॥
मोय नाथ उगारियें ॥ ६ ॥ करुना महोदधि उदधि
भवके ॥ पारकरन अपार हो सुकल्यान कृत जन
पतित पावन ॥ नाम परम उदारहो ॥ ततखेव मम अ-
हंमेवहर ॥ द्रिजदेव दरद विदारीयें ॥ श्रीवासुदेव
श्रीरुक्मिणीवर ॥ मोय नाथ उगारियें ॥ ७ ॥ सं-
मार करिकें खीन नर ॥ चलि चरन आयो रावरी ॥
तेहि करन रक्षन सदा ततपर ॥ उधव प्रति निज
बुधि धरी ॥ प्रतिपाल ब्रह्मानंदकुं हरि ॥ क्रिपा न-
जर निहारीयें ॥ श्रीवासुदेव श्ररुक्मिणीवर ॥ मोय
नाथ उगारियें ॥ ८ ॥ ॥ घनश्यामाष्टक ॥ ॥ सवैया ॥
साहभयो उमराह भयो पतसाह भयो जगशिषनयो हे ॥
रागि भयो बड भागि भयो वितरागि भयो वन
जाय रह्योहे ॥ मानि भयो निरमानि भयो परमा-
नि भयो जमत्रास लयोहे ॥ ब्रह्म मुनि घनशाम-
को आश्रय जो न भयो तो कछु न भयोहे ॥ १ ॥ ना-
रि मिलि फूलवारि मिली जु अटारि मीलि महि
काच ढल्योहे ॥ पुत मीले घर सुत मिले बहु दुत
मीले निज वेन पल्योहे ॥ खांन मिले अरु पान मि-
ले सनमान मिले कहुं भाग्य खुल्यो हे ॥ ब्रह्ममुनि
घनशामको आश्रय जो न मिल्यो तो कछु नमि-
ल्योहे ॥ २ ॥ भोग लियो रु उद्योग लियो तन

जोग लियो बिन रोग जियोहे ॥ जांन लियां कहु तांन लियां बहुदान लियो गजराज कियो है ॥ बाज लियो गजराज लियो सब साज लियो जस राज रयोहे ॥ ब्रह्ममुनि घनशामको आश्रय जो नलियो तो कछु न लियो है ॥ ३ ॥ योग बन्यो अनुराग बन्यो बडभाग बन्यो अरिभंग न हन्यो है ॥ सूर बन्यो मगरूर बन्यो धनपूर बन्यो सकलूर सुन्यो है ॥ तालि बन्यो अरु ख्यालि बन्यो सुख पालि बन्यो बड भालि गन्यो है ॥ ब्रह्ममुनि घनशामको सेवक ॥ जो नबन्यो तो कछु न बन्यो है ॥ ४ ॥ धाम कियो कहुंकाम कियो जग नाम कियो जस व्याप रयो है ॥ दान कियो सनमान कियो अभिमान कियो करके झुकियो है ॥ दाव कियो कहु भाव कियो ठहराव कीयो कहुं राज लियो है ॥ ब्रह्ममुनि घनशामको आश्रय जो न कियो तो कछुन कियो है ॥ ५ ॥ गीत पढ्यो जग रित पढयो नृप निल पढयो तन रंग चढयो है ॥ भास पढयो अनु प्रास पढयो रस रास रु न्याय प्रकास ऋढयो है ॥ कद पढयो बहु भेद पढयो सब वेद पढयो पढि मा-

*मोटा कपालवालो.

न बदयोंहै ॥ ब्रह्म मुनि घनशामके नामकुं जोन पढयों तो कछु नपढयो है ॥ ६ ॥ देश गयो परदेश गयो धर मेप गयो नहु भाम रयो है ॥ कासि गयो अरु नासिक गयो तन घासि गयो अति पंथ मयो है ॥ लोक गयो सुर लोक गयो विधि लोक गयो सब शोक ठयो है ॥ ब्रह्म मुनि घनशामके आश्रय जो न गयो तो कहुंन गयो है ॥ ७ ॥ जग कर्यो पुन्य भाग कर्यो सब त्याग कर्यो कहु राग धर्योहै ॥ न्यास कर्यो उपवास कर्यो वनवास कर्यो तहां प्यास मर्योहै ॥ जाप कर्यो सुर थाप कर्यो सु विलाप कर्यो तन ताप पर्योहै ॥ ब्रह्ममुनि घनश्यामको आश्रय जो न कर्यो तो कछु न कर्योहै ॥ ८ ॥

॥ अथ माया पंचक ॥

छपय ॥ ॥ कों करत अपवास ॥ कोउक अन खात अलुना ॥ कोउ खात फल कंद ॥ कोउ बालत कोउ मुना ॥ को टाढे तप करत ॥ कोउक उंधे शिर झुले ॥ मनकल कुं मत्य मान ॥ मोक्ष मारगमें भुले ॥ वासना छुट त्याग विना ॥ विफल करत वनवासहै ॥ कहे ब्रह्ममुनि हरि प्रगट विन ॥ सब मायाके दास है ॥१॥ जडीयां बुटी जाय ॥ कोय कीमिया बनावे ॥ काहुके वस वीर ॥ कोउ मसमान जगावे ॥ कोउक नागा

फिरत ॥ कोउ तापत नित धुंनी ॥ कोउक मनकी कहत ॥ कोउ कहे हुईरु हुनि ॥ धारि भेष भेद पाये विना ॥ मरत भूख अरु प्यासहे ॥ कहे ब्रह्ममुनि हरि प्रगट विन सब माया के दासहे ॥ २ ॥ अग्नी बात्रि करत ॥ घोर कोउ होत अघोरी ॥ कोउक वाचा सिध ॥ देत धन छोरा छोरी ॥ कोउक करत जलसेन ॥ कोउक पावक माहि पेमे ॥ कोउक पीवत पौन ॥ गफा गिरिवर महि बेसे ॥ पेसंत कोउक पातालमाहिं ॥ उडत कोउ आकाशहे ॥ कहे ब्रह्ममुनि हरि प्रगट बिन सब मायाके दासहे ॥ ३ ॥ करत सरोदा कूट ॥ कालकष्टन-कुं बाधे ॥ ईडा पिंगला आदि ॥ पंच भूतन स्वर साधे ॥ म्रतक जीवावत कोय ॥ कोय विद्या सब जाने निकट देखावत दूर ॥ दूरकुं निकटहीं आने ॥ नवनिधि अरु अष्ट हि सिधि ॥ रहत निरंतर पासहे ॥ कहे ब्रह्ममुनि हरि प्रगट विन ॥ सब मायाके दासहे ॥४॥ करा मात कोउ करत ॥ कोउक जग सिध्ध कहावे कोउक साधत कल्प ॥ जीरण जोबन दरशावे ॥ कोउ हिमालय गलत ॥ कोउक गिरवर ते गिरही ॥ कोउक काशी जाय ॥ धारि करवत शिरमरही ॥ मुख चार वेद अरु शास्त्र षट ॥ अहोनिश रखत अभ्यासहे ॥ ॥ कहे ब्रह्ममुनि हरि प्रगट बिन ॥ सब मायाके दासहे ॥ ५ ॥

॥ अथ उपदेश रत्न दिपक ॥ ॥ दोहा ॥

॥फूल्या नर निश दिन फिरे॥शिरें नसुजतकाल ॥ आइ अचानक पक रहीं ॥ ज्युं मुसेकुं व्याल ॥१॥ जोवन धनके जारमें ॥ उर धारत अभिमान ॥ सबे चवीना कालका ॥ कहा खान मुलतान ॥ २ ॥

॥ छंद भुजंगीनी चाल ॥

॥ कहा खान मुलतान उपमा कहावे ॥ सबे संपति जुक्त जुगमें सुहावे ॥ उदे अस्तलुं आपकि आण फेरी ॥ दिनं एक हांसि सबे खाख ढेरी ॥ १ ॥ कहा पास मंत्रि रहेजु प्रविना ॥ बुद्धिवंत सुजे सबे चोज झिना ॥ सदा राज काजं मनंमें लगेरी ॥ दिनं एक० ॥ २ ॥ कहा द्वार वाजंत्र निशाण वाजे ॥ घनंघोर मानुं जेहि मेघ गाजे ॥ सदा रागरंगं उमंगं भरेरी ॥ दिनं एक० ॥ ३ ॥ दिलं रंज मारंज राजे दलिचा ॥ सदा अंबरं अंग शोभे जरिचा ॥ जडे नंग आभूषणं अंग पेरी ॥ दिनं एक० ॥ ४ ॥ बने इंद्र ज्युंहि सभामे विराजे ॥ करे चमरं के शिर छत्र छाजे ॥ छडिदार उचारहि बेरिबेरि ॥ दिनं एक० ॥ ५ ॥ तनं मारवारंगनातान तोडे ॥ जपे क्रितबंदिजनं हाथ जोडे ॥ घरे राज भोमि रहे जुथ घेरी ॥ दिनं एक० ॥ ६ ॥ अखाडा मंडे मल्लनिसान आगे ॥ ल्ले आय भोमि सबे पाय लागे करे संक बंके गढे आपकेरी ॥ दिनं एक० ॥७॥ गुणि गान सारं अति तांन गावे ॥

सदा पंडितं काव्य गाथा सुनावे ॥ कडा जुड सामंत शोभे कचेरी ॥ दिनं एक०॥ ८ ॥ रहे सज फुलां वि-छा जाम सरबं ॥ खजिना सचंगा नंगा अर्ब खर्ब ॥ मने आप भुम नहि तोल्य मेरी ॥ दिनं एक०॥ ९ ॥ सदा पात्र चंपा रहे दास संगं ॥ चुआ चंदनं गंध लपंत अंगं ॥ रहे अंध धंधं सदा कफ लेरी ॥ दिनं एक० ॥ १० ॥ जटे नंग हिराकनंकं महल्लां ॥ अति चित्र भिते विचित्रं अवल्लां ॥ सदावेम गात्रे करं शोख हेरि ॥ दिनं एक० ॥ ११ ॥ दिलरंज आगे खडे दास दासि ॥ खमाजिह बोले करंता खवासि ॥ जयं कारवारं हजारंजपेरि ॥ दिनं एक० ॥ १२ ॥ झुले फुल हिंडोलमें आठ जामं ॥ बने हाम कामं अति रूपवामं ॥ सदा भूषणं अंगनंगं सजेरी ॥ दिनं एक० ॥ १३ ॥ प्रतापां लखे त्राम सेवाम पाथे ॥ नरनाथ हाथं जटे माथनामे ॥ फरमाण सके नहि कोय फेरि ॥ दिनं एक० ॥ १४ ॥ सुखं पालखेठे चले जुथ संगं ॥ रथं सुंदरं बेल जुते तुरंगं ॥ तिखे साद आगे छडिदारघेरि ॥ दिनं एक ॥१५॥ रणंजित सामंत दिपे रहाला ॥ जुधं वार खागे झडे आग झाला ॥ फिरे न कबु पिटवंका अफेरि ॥ दिनं एक० ॥ १६ ॥ तुरिवेगवंता जरिसा जटाणां ॥ देयंता उडाणां जेहि स्रप डाणां ॥ सचे साग रागां

नटांजुं नचेरि ॥ दिनं एक० ॥ १७ ॥ * हठाला पटा-
ला दंताला हजारं ॥ शुंढाला बने मेघ मालं समारं
॥ झरंता मदेखंभठानं झुलेरि ॥ दिनं एक० ॥ १८ ॥
लगे साथ सेनावण पार लारां ॥ कडा जुड सामान
उंटां कतारां ॥ नगारां रणंतुर वाजे न फेरि ॥ दिनं
एक० ॥ १९ ॥ बणावे किलाके चितं चाह बंका ॥
सबे देख शत्रु मने होत संका ॥ भंडारा अति शोर
शिशा भरेरि ॥ दिन एक० ॥ २० ॥ खाइ खोद चोडि
सजे तोपखानां ॥ बुरज्जे बुरज्जे ठवेवे प्रमानां ॥
जडे लोहक पाट भारे जंजीरि ॥ दिनं एक० ॥ २१ ॥
बहु थाट भिडो हटां हो बजारां ॥ करे हाट पाट अति
चित्रकारां ॥ वेपारां लखां होत संजा सवेरि ॥ दिनं
एक०॥२२॥ प्रजा जास वासे रहे सांम प्यारी॥ करे देत
द्रव्यं अति सुखकारी ॥ अहोनिश उभे धनिकें अगेरी ॥
दिनं एक० ॥२३॥ दिसं देश वाजे जसं जास डंका ॥

* हठीला अने जेना शरीर उपर पटा पाडेला अने दांतवाला हजारो शुंढाला हाथी शमारेला मेघमाला जेवा बनेला होय ते मदमां झुलता बांधवाना थांभलाने ठेकाणे झुली रह्या होय पण ते बधा एक दीवस राखनी ढगला थइ जाशे. १८

समापें लखां दान नें होत संका ॥ १असाधार दातार आ-
क्रंत वेरी ॥ दिनं एक०॥ २४ ॥ बने व्रक्ष नाना बागिचा
विलासं ॥ खुले फुल्ल झुले लता लुंब खासं ॥ अति लेत
गंघं सुगंधं छकेरि ॥ दिनं एक० ॥२५॥ हजारं फुहारा छूटं
निर हौजं ॥ मिले मंडलि छेल माणंत मोजं ॥ जलं निर्मलं
क्रिडंत बरंबरि ॥ दिनं एक०॥ २६ ॥ दिशंदेश फेरि
अदल्लां दुहाइ ॥ सुभं साज बाजं बिराजे सदाइ ॥
समाने अतंते दुरंगं सजेरी ॥ दिनं एक०॥ २७ ॥ कुलं
उंच जन्मं तनं चमंतकारि ॥ धनाढयं छबि पुजहि छत्र
धारि॥पुराणां कथिता सहिता पठेरी ॥ दिनं एक०॥२८॥
प्रविना कला सोल धारा प्रवाहं ॥ सभाजित पंडित
चितं उछाहं ॥ अति मान देशं विदेशं वधेरी ॥ दिनं एक
०॥२९॥ दुलिचा बने साह बेठ दुकाने ॥ सजेहं अवासं
निवासं सुथाने ॥ जसे होत कोडुं कहावे अवेरी ॥ दि-
नं एक०॥ ३० ॥ कहावंसमं आप उद्योतकारी ॥ भइ
किर्त देशो दिश बहुत भारी ॥ कोटि धज संख्या
ग्रहे द्रव्यकेरी ॥ दिनं एक० ॥ ३१ ॥ जवानि
छके पिड उदंड २जोलि ॥ प्रतापं अतंत करंता पटे-
लि ॥ प्रजा संक माने चले आप प्रेरी ॥ दिनं एक०
॥ ३२ पिंडं तेजवंतं अत्यंतं प्रताप ॥ थपे आ-

१ असाधारण दातार होय अने शत्रुओने अकलावे एवा होय.
२ तोफानी.

पसो कोसके ना उथापि ॥ वडा किर्तवंता त्रिमंना वजेगी ॥ दिनं एक० ॥ ३३ ॥ चलंता निरखंत निजं पिंड छाया ॥ भजं वार भागं सजे मनभाया ॥ छटविन अक्रेन केफ छकेगी ॥ दिनं एक० ॥ ३४ ॥ पिता मात प्यारा सबं वंस पोषे ॥ मृषं वाण भांसे सबे हि संतोषे ॥ महा रूपवंति ग्रेह जास भरी ॥ दिनं एक० ॥ ३५ ॥ कहा हुनरं आप जाणे हजारं ॥ प्रथि देख रीझे सुखासं अपारं ॥ घणा चातुरि वंत शोभा घनेरी ॥ दिनं एक० ॥ ३६ ॥ प्रथी नारेह नारेह आप पानी ॥ हुतासं आकासं सबे नास होनी ॥ स्थिति ना रहे पींड ब्रह्मांड देगी ॥ दिनं एक० ॥ ३७ ॥ [१]दुनी ना रहे [२]इंद्र [३]चंदा [४]दुइंदा ॥ सबे उपरे काल ब्याले ग्रजंदा ॥ वडा जोध वंका निशंका प्रसेरी ॥ दिनं एक० ॥ ३८ ॥ दिनं चारका जीवना आ दुनीमें ॥ भ्रम मोहवंता वृथा आपनीमे ॥ तुछ सुखमें लब्ध होइ व्रती तेरी ॥ दिनं एक० ॥ ३९ ॥ ब्रह्मानंदके वयुं वंध मोह प्राणी ॥ विना मुझ तेरी बुधि क्यां वकाणी ॥ लक्ष्मी तणा नाथकी ओट लेरी ॥ दिनं एक होसि सबे खाख देरी ॥ ४० ॥ छपय ॥ खलक मलक होइ

---

[१]दुनियां रहेवानी नथी. [२]इंद्र [३]चंद्र [४]सूर्य रहेवाना नथी.

खाख ॥ एक दिन अंबर अवनकी ॥ ब्रह्मा कीट परयंत ॥ रहे नहीं देह कवनकी ॥ कहा राव कहा रंक कहा सुर असुर कहावे ॥ वितथ पींड ब्रह्मांड कों जग रहन न पावे ॥ कहा इंद्र चंद्र दुदंडहु ॥ उंच नीच अंतरालका ॥ कहे ब्रह्मानंद गुरु चरण वीन ॥ सब चवीना कालका ॥ १ ॥

उपदेश चिंतामणी ॥ ॥ छंद चंद्रायणा

॥ सुंदर पाइ देह नेह कर रामसें ॥ क्या लब्धावे काम धराधन धामसें ॥ आतन रंग पतंग संग नहि आवसि ॥ हरहां श्रीरंग जमहुके दरबार मार बहु खावसि ॥ १ ॥ गाफल मूढ गमार अचेतन चेतरे ॥ समजु संत सुजान सिखामन देतरे ॥ विषया मांहि बेहाल लगादिन रैनरे ॥ ह० सिरपेरि जमरांन समुज नेनरे ॥२॥ दिलहि युंकर देखके तेरा कोंन है॥ चलेनभेला साथ अकेला गोंनहे ॥ देहगेह धनदार इनुसें चित दिया ॥ ह०रख्या न नीस दिन राम काम तें क्या किया ॥ ३ ॥ देह गेहसें नेह निवारि दिजिये ॥ रार्जाजेम राम काम सोई कीजीये ॥ रया न रेश कोय रंक अरु रावरे ॥ ह०करले अपना काज बन्या हद दावरे ॥ ४ ॥ मेरि मेरि करत फरत मगरूरमें ॥ काया माया काज कमाया कुरमें ॥ पलकमांहि गृह आय

होय सब पारका ॥ ह० तें होयगा ते १हेकिक मरि-कत मारका ॥ ५ ॥ वंछत इश सुरेश एहि नरदेह-कों ॥ श्रीपति चरणसरोज बढावन नेहकों ॥ सो नरदेही पाय अकाज न खोईयें ॥ ह० सायबके दर-बार गुनाई होइयें ॥ ६ ॥ कोति तेरि जान केता ते रा जीवनां ॥ जेसा स्वप्न विलास मृषाजल पीवनां ॥ एस सुखके काज अकाज कमावनां ॥ ह० वारवार जम द्वार मार बहु खावनां ॥ ७ ॥ नहिं है तेरा को य नहिं तें कायका ॥ स्वारथका संसार बन्या दिन दोयका ॥ मेरि मेरि मान फिरत अभिमानमें ॥ ह० अवगने नर मुढ एहि अज्ञानमें ॥ ८ ॥ मात तात सुत भ्रात किया हित नारथि ॥ नाहि तेरा नदान सब निज स्वारथि ॥ याके संग अबुज खोई सब *आवरे ॥ ह० अजहु चेत अजान हरि गुन गावरे ॥ ९ ॥ कुडा नेह कुटुंब धनहित धायता ॥ जब घेरे जमगान करेको सायता ॥ अंत्तर फुटी आंख्य न सुजे आंधरे ॥ ह० अजहु चेत अजाण हरिमें मांधरे ॥ १० ॥ वारवार नरदेह कहो कित पाइये ॥ गोविंदके गुनगान कहो कब गाइये ॥ मत चुके अवसान अबे तनमां धरे ॥ ह० पाणि पेली पाल अज्ञानि बांधरे ॥ ११ ॥ जुठा जग जंजाल

१ नक्की. * आवरदा.

परत्या तेहिफंदमें ॥ छुटनीक नहि करत फिरत आनं-
दमें ॥ वास तेरा कोनसमा जब अंतका ॥
ह० उगरणका उपाय शरण एक संतका ॥ १२ ॥
कुडे धनके काज सब दिन धायया ॥ सच्चा सरजण
हार सोई विसरायया ॥ धिंक एस नर मुढ जनुके
जिवकुं ॥ ह० पाइ एसि देह न पाये पिवकुं ॥ १३ ॥
भवतारण भगवंत जनुने नां भज्या ॥ अनरथ किया
अपार अर्थ कोउनां सम्या ॥ सो नर श्रमण
ममान जनुका स्वास है ॥ ह० अंत समेंग अवस
गले जम फांसहे ॥ १४ ॥ जो पाइ नर देह नह कर
नाथमें ॥ वाजी जीति वेश महार हाथमें ॥ मृग
तृष्णा संसार कबु नहि धापणा ॥ ह० ममता सबकि
मेल सई कर आपणा ॥ १५ ॥ मुख उंधे उर्ध
पाउं रह्यो दश मासरे ॥ जठर अग्निकी झाल सहातन
त्रासरे ॥ किना कोलकरार रटण नित रामका ह० भुल
गया अभवास दास त्रीय दामका ॥ १६ ॥ मेगल
माल विलात अनोपम मंदिरा ॥ सजति नित सणगार
नार अति सुंदरां ॥ हुकल कलल हमेश हदर हलमलां
ह० रह्या धर्या सब राज गया नर एकला ॥ १७ ॥
छके रहंते छेल सलंते मोवतां ॥ तान झडंते तास
सलुनी सोवतां ॥ सुभट वजारा साज हजारां हदलां
॥ ह० सो नर हाथ घसंत वसंता जंगलां ॥ १८ ॥

अत्तर तेल फुलेल सदा तन आडते ॥ निकि त्रियका नेह निमिष नहि छांडते ॥ चलते चाल मरोड बनात १ बांनके ॥ ह० झपट गये जम दुत उंच शिर तानके ॥ १९ ॥ धर करतां एक पाव छबंता अंबरां ॥ शिर हथा ममरथ धरंता गीरिवरां ॥ वाकी खबर नवाज एसा कविर्तीया ॥ ह० जिन समस्या जगदिश सोइ नर जितीया ॥ २० ॥ मंदिर माल विलात खजाने मंडियां ॥ राज अरु सुख साजके चंचल चंडियां ॥ रहता पास खवास हमेश हजुरमें ॥ ह० एसे लाख असंख्य गये मिल धुरमें ॥ २१ ॥ सजराजे सगरुरके मुछ मरोडते ॥ नवल त्रीयाका नेह पलक नहि छांडते ॥ नित्य करते तरक गरक मदपानमें ॥ ह० सरगय संपत मल वसे मदानमें ॥२२॥ सुखमें करते सोख के रोखें झां- खता ॥ देख परोइ नारिय नजारां नाखता ॥ लोचन रहते लाल असलमें आकरे ॥ ह० सोवि गये विलाय गइ उड खाखरे ॥ २३ ॥ पुष्पें सेज बिछायके तापर पोढते ॥ आछे दुपटे साल दुसाले ओढते ॥ लेके दरपण हाथ निके सुख जोवते ॥ ह० ले गये जम उपाड रये सब रोवते ॥ २४ ॥ बंकि पाग बनायके छोगां मेलते ॥ छके रहते छेल खुसि दिल खेलते ॥ झुलते त्रिय संगके आठु जामरे ॥ ह० केते मर गये

१ बांचणी.

कोय न जाने नामरे ॥ २० ॥ जाके मुछां शिरके लिंबु ठरते ॥ विकट थटांके बीच के भाला फरते ॥ जुरतेल झुझार नमाते जगदमें ॥ ह० एसे जोध असंख्य गये मिल गरदमें ॥ २६ ॥ अत्तर तेल फुलेल लगाते अंगमें ॥ धंध धंध दिनरेन त्रियाके संगमें ॥ महल अवासा वेठ करंता मोजरे ॥ ह० एसे गये अपार जेठे नहि खोजरे ॥ २७ ॥ जाके आगे राग गुणिजन गावते ॥ मेवा अरु मिष्टांनके भोजन भावते ॥ खासे सेझरि माथ करंता खुविया ॥ ह० मिलगे मटिया मांयके एसि मुविया ॥ २८ ॥ खान अरु सुलतान वडे जग कहावते ॥ देश विदेशां मायके हुकम चलावते ॥ खाग तणे वल *भोम + वगांकि ※त्रटीयां ॥ ह० जीव गये जम आल मिले तन मटीयां ॥ २९ ॥ जसत रोज जरुरके चिजां ताजीयां ॥ चोसर चोपट हास्य रमंता बाजीयां ॥ छलबल चतुरा छेल अतिचल नाम्या ॥ ह० एसे आलम खेल फटाका होगया ॥ ३० ॥ रहते भिने छेल सदा रंगरागमें ॥ गजरा फुलां गुंथ धरंता पागमें ॥ दरपणमें मुख देखके मुछां तांणता ॥ ह० जगमें वाका कोय नाम नहि जानता ॥ ३१ ॥ मेल फुवारा होज के मोजु मानता ॥ समरथ आप समान ओर नहि

* पृथवी + वीजानी ※ जीनी लीधी

जानता ॥ पोरस तेज प्रताप चलंता पुरमें ॥ हो०
मालाला भुपाल गया जस उरमें ॥ ३२ ॥ सुंदर
नारि संग हिंडोले झुलते ॥ पेर पाटांबर अंग फरते
फुलते ॥ जोबन सुखि जायके बेठ बजारकि ॥ हो०
सोचि हो गये छलके हरि छागकि ॥ ३३ ॥ करते
रंग विलासके बेठ कचेरियां ॥ सरद ठरद मनुआर
कसुंबा करियां ॥ भोजन नवलि मानके स्वादु शा-
कके ॥ हो० उडगये तुर ससुरके जेसे आकके ॥ ३४ ॥
अणकलमाया मेल मंडारि उंडियां ॥ देश विदेशां
मांड चलंती हुंडियां ॥ जाके आगे देश कमाता
बोरिया ॥ हो० होगए फनां सकामके पेसे सेठिया
॥ ३५ ॥ गादि तकिया नाख रहेत *गमरमें ॥ रेशम
धोतीपेर कंदोरा कमरमें ॥ जाका चलता हुकम सेबहि
मलकमें ॥ हो० कोटि धज साहुकार विल्याने पलकमें
॥ ३६ ॥ सब दिन चाकर पास रहेते शास्ते
॥ कामकाज करनारके बोन गुमास्ते ॥ लखां करते
राजके लाख हजारके ॥ हो० हो गये छिन एकमांयके
हवाले गारके ॥ ३७ ॥ राज कचेरिमांयके आदर
पासते ॥ करते हुकम करुर पंचोल कासते ॥ पाग
धर्मोकि बांधके रेते अकडके ॥ हो० गये घेर धनमाल
गये जम पकडके ॥ ॥ ३८ इंद्रपुरि समान बसंति

* गर्वमां.

नगरयां ॥ भरती जल पनीहार कनक शिर गगरियां ॥ ॥ हिरालाल झवेर वेकाता तां माहि ॥ ह० एसि पुरि उजाड भयंकर हो गइ ॥ ३९. ॥ होति जाके शिशके छत्रे छांइयां ॥ अदल फिरंतीआण दिशो दिश मांइयां ॥ उदेअस्तलुं राज जनुका कावता ॥ ह० होगये देरी धुर नजर नाहि आवता ॥ ४० ॥ नित जाके दरबार झडंती नोबतां ॥ मंत्री पास प्रवीन करंता मोवतां ॥ चतुरा झीना चोज तरक अति सुजता ॥ ह० तिनहुंका जगमांहि नाम नहि बुजता ॥ ४१. ॥ ज्याके आगे मल्ल रोज अखाडा मंडते ॥ खगबल खाते खंड *उडंडा डंडते ॥ थटा कचेरि थाट छटा रंग छायके ॥ ह० सुता तांणी शोड मसाणु जायके ॥ ४२ ॥ रहते घेरे रोज अबंके रावते ॥ मछराले मेवासके कांध नमावते ॥ कनक छडि ले हाथ नकि पोकारते ॥ ह० रये धरे सब राज गये जख मारते ॥ ४३ ॥ बंके किला बनायके तोपा साजियां ॥ मत्त मेगल द्वारके तते ताजियां ॥ नित प्रति आगे आये नचंति नायका ॥ ह० याकुं गये उपाड दुत जमरायका ॥ ४४ ॥ माणक हिरालाल खजाना मोतियां ॥ सजेराणि सणगारके सनमुख जोतियां ॥ दिन दिन अधिक सुगंध लगाते देहमें ॥

* न डंडाय तेने डंडता.

ह० एसे भोगि भूप मिले सब खेहमें ॥ ४५ ॥ जो-
गि करते जोगके आसन सांधते ॥ अखंड भभूत
लगाय जटा शिर बांधते ॥ साधे कलप केदारके
ततपर होयरे ॥ ह० काल व्यालकि झपटबच्या नाहिं
कोयरे ॥ ४६ ॥ आतनरंग पतंगकल उडजायगा ॥
जमके द्वार जरूर खता बहु खायगा ॥ मनकि तजदे घात
बात मत मान ले ॥ ह० मनुषाकार सोगार ताहिकु जा-
नले ॥ ४७ ॥ अथ सार असारको अंग ॥ ॥ श्रीरंगक-
हे श्रीरंग कहे ये भदल्बात कहु एक विवेक विचार-
कि ॥ जब तिल भर नहि जुठ होत भव पारकी ॥
सयकुं निद्या समझ कोय मत किजियो ॥ हरहां श्री
रंग ताल अकल तेह किक धार उर लिजीयो ॥ १ ॥
दधि मथ घतकुं लेइ छास तजि दिजीये ॥ छलका
दुर निहारके चावल लिजिये ॥ एसे सार असार ज-
गतमें जानिये ॥ ह० असत सो नीत विसराय सयकुं
मानिये ॥ २ ॥ समझावत हुं रीत सो सार असारकि
॥ याकुं निंदा समझत सो नर नारकि ॥ साच्चि मोहर
सराफ परखके लहतहे ॥ ह० एसे समझु संत बात सय
कहतहे ॥ ३ ॥ सयकुं कहिये असत सो निंद्या जानि-
ये ॥ असय मत एक ताल नकहिये बानिये ॥ जाकुं
जेसा कहत जथारथ बात हे ॥ ह० सारासार विवेक
ग्रंथ सब गातहे ॥ ४ ॥ चोर चोरकि बात कहे कुन

बाहेरि ॥ जब देखे साहुकार करे तब जोहेरी ॥ षट दर्शन भए एक सो विप विचारके ॥ ह० जाकुं सतगुरु बाल कहत पोकारके ॥ ५ ॥ ॥ सबे त्रीया नहि सती सबे नहि सूरहे ॥ पारस सब पाषांन कहे सो कूरहे ॥ टके सेर सब एक वस्तु नव तोलिये ॥ ह० सबे भेष नहि संत सत्य मुख बोलिये ॥ ६ ॥ सांईया प्यारा सत्य असत्य न भाखहु ॥ वरण आश्रम वेवार कामनहि राखहु ॥ सुख मानो वा दुख फरक नहि होयसे ॥ह०राजी चहिये राम काम क्या कोयसे ॥७॥ जान लेहु संत रीत एकादश कंदसे ॥ गीता निस दिन गात रहिता फंदसे ॥ साखि पदके मांयी लखे गुन संतके ॥ ह०से अब कहुं सुनाय प्रकार असंतके ॥८॥ विघन दीपकुं प्रगट देखिये पवनका ॥ नवा अंकुरकुं विघन अजाके गवनका ॥ ज्युंहि अजाकुं विघन व्याघ्र नरवेशका ॥ ह० त्युहि जगतकुं विघन भक्त अरु भेषका ॥ ९ ॥

॥ अथ असंतको अंग ॥

॥ झिणि माला कंठके अजब उतारके ॥ दरपणमें मुख देखके तिलक सभारके ॥ काजु कोर कपालके खुटत छिपिये ॥ हरहां श्रीरंग वेश्या ज्युं मन विकल हरण पर धन त्रिये ॥ १ ॥ बाहर माला तिलक कतरणि अंतरे ॥ परधन पर त्रिय काज जगतमें विचरे ॥

मनमां चाहिये मान खांन पुरि खांडका ॥ इ० गावे सुंदर गांन ध्यान उर रांडका ॥ २ ॥ भक्तमाल भन लेन रु आवे गावना ॥ शिष्या गुरुके पास के लोक रिझावना ॥ जग चेतावन काजके पुस्तक ले फरे ॥ इ० रांडि छांडि देख ताहां जाय उतरे ॥ ३ ॥ नवरि रूप नविन हाथ पुस्ता साहि ॥ ताके घरके बिच चल्ण नरका नहि ॥ एसि एसि देख नजरमें राखियां ॥ इ० ताके आगे कहत शब्द अरु साखियां ॥ ४ ॥ सुन्या तुमारा भाव आएहे दरसकुं ॥ हमहरि ज्युंकी कथा कहत नहि पुरुषकुं ॥ नरका हिया कठोरहि चल्ण कुढंगमें ॥ ॥ इ० प्रेम भक्ति अति होत साइके संगमें ॥ ५ ॥ आओ माई तो य बात कहुं एक ग्यानकी ॥ आसन पर एकांत आवनां दानकी ॥ दिलके भितर घात बात मुख रामकी ॥ इ० माइ माइ कहि बोलात रु नजर हरा-मकी ॥ ६ ॥ भरतखंड के मांई भये धन मानवि ॥ नाम त्रियकि देह अधिक करि जानवि ॥ संतनको अंग संग करे सोई श्रेष्ट हे ॥ इ० एसा दे उपदेश सो पांज भ्रष्ट हे ॥ ७ ॥ उपनि भक्ति भाव स-हेर करनारकी ॥ अब नहि रखिये लेश लाज संसारकी ॥ अरधरात एकांत संतकुं सेवना ॥ इ० एसि कहवे बात सो गंडक टेवना ॥ ८ ॥ धन हे

विधवा नार जनुके मंनकुं ॥ जिन हरिजनके अरथ लगाया तंनकुं ॥ रसबस साधु साथ क लेवे रामसा ॥ ह० एसा माहानम गात सो खावत खामडा ॥ ९ ॥ कबहु मनके मांइ अभाव न लिजीए ॥ मन वच क्राम करि टेल संतकि किजिये ॥ अपना तन दे सांच सतकुं रखना ॥ ह० एसि बिगडि बात करे सो कुल रखना ॥ १० ॥ कामि होवे संत कृष्ण ज्यौं जानिये ॥ लोभि क्रोधि वामन नृसिंह प्रमानिये ॥ एसा दे उपदेश त्रिया धन इछहे ॥ ह० कामि क्रोधी र लोभि होवे सो निच हे ॥ ११ ॥ साधु परम दयाल दया दिल धरतहे ॥ तेरि भक्ति जानके सपरस करतहे ॥ सब दानमें उत्तम तनका दानहे ॥ ह० एसि कहवे बात संत नहि स्वान हे ॥ १२ ॥ पुरब पुन्य से होत हे सपरस संतका ॥ एहि असलोकि रित रहस्य एकांतका ॥ बटलावे धन लेत शिखावे कामहे ॥ ह० निश्चे नाहि संत सो निच गुलाम हे ॥ १३ ॥ धन हे एसि नारि जनुके जिवकुं ॥ संतन सेवा काज तज्या निज पिवकुं ॥ सज्या खुब बिछाने संतसंग सूतियां ॥ ह० ऐसा देवे ज्ञान सो मारो जूतियां ॥ १४ ॥ संत संगाथे काम सो काम न जानना ॥ सीत प्रसादि अन्न सो अन्न नमानना ॥ संत प्रसादि देह सो देह न देखना ॥ ह० ऐसा देवे ज्ञान सो पाजि लेखना

॥ १५ ॥ लुखि भक्ति करत सबे व्रत नेमकी ॥ कोउ न जानत रित प्रगट यह प्रेमकी ॥ खाना पिना खुब सिखावे खेलना ॥ ह० उस पाजीके शिषके जुति मेलना ॥ १६ ॥ क्या नारिमें पाप काहेकुं त्यागिये ॥ हमतो संतन काज द्रव्य बि मागिये ॥ चहिये मन साबुत देहकुं क्या लगे ॥ ह० एसि कहि कहि बात रु लोकनकुं ठगे ॥ १७ ॥ कलिमें होगये पंथ लोक भरमायगे ॥ हरि हथो हथ प्रगट प्रमाण मिलायगे ॥ कनक कामनि मान स्वाद् तजि फिरतहे ॥ ह० हम जेसेकुं देखके हांसि करतहे ॥ १८ ॥ भक्त मालमें बात भुप हरिदासकि ॥ वाकी कुवरि किन संतसे आसकि ॥ दोनु सुते सेज दिलभर देखके ॥ ह० दिनि शाल ओढाय भाग बड लेखके ॥ १९ ॥ एक साधु रहे द्वार कोउ साहुकारके ॥ लेगयो भूषण चोरि पुत्रकुं मारके ॥ सो वेश्याकुं दिन संत कृत जानियो ॥ ह०तब लागो पिछतान सो मनमे बानियो ॥२०॥ अपनि त्रियकुं कहत अपन भुले सहि ॥ विषे भोगकि खबर संतकि नांलहि ॥ शेवामे भई चुक अबे कहा किजिये ॥ ह० पुत्रि एहि परणाय संतकुं दिजिये ॥ २१ ॥ पुत्रीकुं परणाय रख्यो घर साधकुं ॥ मान्यो नहि मनमांहि संत अपराधकुं ॥ एसी भक्ति होत सुनो सब बाइयां ॥ ह० भक्त मालकि रहस्य सो बांच सुणाइयां ॥ २२ ॥ ऐसा खोटा ग्रंथ

सुनावे बांचके ॥ लोकनकुं भरमाय लेत द्रव्य जाचके ॥ चाहत अंतर मांय सो विष विकारकु ॥ ह० राम राम मुख बके तके परनारकुं ॥२३॥ तब कोउ बोली एक चेलि मोय किजीये ॥ तम हो परम दयाल हाथ शिर दिजिये ॥ जाते होय कल्याण सो मेरे जीवका ॥ ह० सबेस टले सनेह पुत्र धन पिवका ॥२४॥धनमाईकुं चोट लगी वैरागकि ॥ तेरि सुरत खुब संतके लागकि॥ते- रे सपरस संत बोत सुख पायगा ॥ ह० असा दे उपदेश सो जमपुर जायगा ॥ २५ ॥ हम हजारु किन हे चेला चेलियां ॥ जग्या मे पुहुचात हे पै- सा थेलियां ॥ करत हे संत कलोल खुसि तहां खात हे ॥ ह० अपने स्वारथ काज लोक भरमातहे ॥ २६ ॥ गुरु धनिमें भेद कबु नहि रखनां ॥ साधु जनके संग प्रेम रस चखनां ॥ जुक्तिसे जिमाय प्रसादि लिजीये ॥ ह० अरधरात एकांत सेव नित्य किजिये ॥ २७ ॥ चहिये एक नालियेर रुपैया रोकडां ॥ पुजा पात्रि काज पांच दश दोकडा ॥ दश हाथनके दोय पनाले पोतिये ॥ ह० एक पिछोरि अवल अवल दोउ धोतिये ॥ २८ ॥ एतना चहिये अवस ल्याए बिन नांचले ॥ पिछे तेरि पहुच अधिक होयतो भले ॥ राम तारक महा मंत्र कहेगे कानमें ह० एोर रहस्यकि बात समझनां सानमें ॥ २९ ॥

एसे दे उपदेश करे धन एकठा ॥ पिछे जग्या बांध करे नांणांवटा ॥ चेला कर दोउ चारके गौवां घोडियां ॥ ह० काम काज कर जाय द्वारकि छोडियां ॥ ३० ॥ पोहोर रातले नावत सेवा करनकुं ॥ धुनि रखे धखाय के होका भरनकुं ॥ जगा राखत शाफ भरे जल माटला ॥ ह० गाम धनिके काज बिछावत खाटला ॥ ३१ ॥ पटलाणि के काज प्रसादि मेलवे ॥ वाके नांने बाल गोदमें खेलवे ॥ हेत करे घर बेशके छोरां हिंचके ॥ ह० बांधे धागा मंत्र पटेलकि भेंमके ॥ ३२ ॥ मिठा चरणामृत जाय ले दांनकि ॥ पाडाकुं जल पात बात करे ज्ञानकि ॥ वाके बच्चेबाल सो जाने आपने ॥ ह० माइयांकुं शिखावत छांने थापने ॥ ३३ ॥ पटेल आवता देख बिछानां पाथरे ॥ मान भोग प्रसादि हाथमें ले धरे ॥ झट होका भरदेत बात करे हेतकी ॥ ह० रखे खबर दिनरेन पटेल के खेतकि ॥ ३४ ॥ अछे अछे लोक गाम के जब मले ॥ करत आपकि वात ताहि के आगले ॥ महातम जानत नाहि हमारा गाममें ॥ ह० हम नवरा नहि रहतहे आठो जाममें ॥ ३५ ॥ ठाकुरके लिये लोट दलतहे रातमें ॥ करी रसोई भोग धरे परभातमें ॥ दिन मांय दोय वार जग्या यह झडतहे ॥ ह० धूनि पांनि करताहि संज्या पडत हे

॥ ३६ ॥ पुजा उपर प्रित नहि या देशमें ॥ देख्या था एक ठोर फलाने देशमे ॥ कलिमें भक्ति भाव नहि कि जातमें ॥ ह० माइयां समझत वात ज्ञानकी वातमे ॥ ३७ ॥ आये गयेकि टल्ल मांडकर करतहे ॥ ठाकुर आगे भोगवि लुखा धरतहे ॥ छाम विन्या मन मंत दुःख अति होत हे ॥ ह० माकवाकाकि कोगवि शांकड वोतहे ॥ ३८ ॥ तब बोलेवे लोग बावा मत आयगा ॥ हरि मंदिरका काम सो हरि चलायगा ॥ तुम एसे परविन रहे कुन मलकमें ॥ ह० संज्या टाणे गात हो अछि हलकमें ॥ ३९ ॥ हम तिरथ बहु किये फिरे चहु धाममें ॥ महातम जानत कोन हमारा गाममें ॥ हमकुं तोया मलक कछु न सोहातहे ॥ ह० तुम जेसेकी सोबत तजी न जातहे ॥ ४० ॥ हम डोले बहु ठोरदेश बहु देखया ॥ जगन्नाथके मांय वोत दिनमे रया ॥ मुक्ता महा प्रसाद मिले नित्य खानकुं ॥ ह० वाहरवोत खुलास सो झाडे जानकुं ॥ ४१ ॥ जगन्नाथकि रित नाहि कहु जगतमें ॥ वरण अढारहि जिमत एकहि पंगतमें ॥ खाना पिना खुब हवेलि स्वामियां ॥ ह० दोहजार दरबारमहि देव दासियां ॥ ४२ ॥ माइयां वोत स्वरूप बंगाले देशमें ॥ कुरमंजन नित तेल लगावे केशमें ॥ वाके पुरुष दयाल सो इरखा नांकरे ॥ ह० साधु घरमे होय

जोय पिछा फिरे ॥ ४३ ॥ गौंवा भेंसो वोत देशमें अति भलि वड पिपलके व्रक्ष रु आंबा आंवलि ॥ मछि सवहि खात मलककि रितहे ॥ ह० परदेसिकुं देख करत अति प्रीत हे ॥ ४४ ॥ बंगाला सम मुलक न देख्या दुसरा ॥ पानि उपरथ्य तरत सुवोत निकिधरा ॥ चावल बारहि मास तहां निपजंत हे ॥ ह० वाके वासी लोक वोत धनवंत हे ॥ ४५ ॥ दुध दहिका वोत देशमें खावना ॥ ठाकुर ठाकुर कहि संत वोलावना ॥ संत जात मिजमान पलंग घर पाथरे ॥ ह० करत प्रान कुरबान संतके उपरे ॥ ४६ ॥ गाम गाम प्रति खेतठाकुरके वाडियां ॥ हथ निसि दस विसके भेंसां ठाडियां ॥ घोडि गौवां वेल संतके गाडियां ॥ ह० दुध छकी दोडंत मंदिरमें पाडियां ॥ ४७ ॥ एसि करकर वात सुनावे लोककुं ॥ संतन सेवा काज जनावे शोककुं ॥ परमारथके नाम वोवावत खेत हे ॥ ह० जो कोउ मागन जात तोल-कडि लेतहे ॥ ४८ ॥ तिरथवासि काज राखवि अधचडि ॥ खावे भरभर पेट आप घि खिचडि ॥ जो कोइ मागे अधिक तो देवे गालियां ॥ ह० रखे टेल-वि काज के शव सुवालियां ॥ ४९ ॥ तिरथवासि माइ होवे जो रामकी ॥ अंतर साधु अवल हमारे कांमकी ॥ चूचवता करि ताहि खवावे चूरमा ह० आसन कर

एकांत बोलात हजूरमां ॥ ५० ॥ जग्या धारि माहंत
सबे एक जातके ॥ खुवार हराभि खरे भरे सब घा-
तके ॥ लुबधि होय घरमांय रह्या लोभायके ॥ ह०
अब रमताकि बात कहुं समझायके ॥ ॥ ५१ ॥ ढुंगे
मिल दस विसके बांधि मंडलि ॥ अज्ञानि अडबंगके
भाखा अटकलि ॥ माखि लिनि भिख उदरके भर-
नकुं ॥ ह० चाले तिलक बनाय मुलकमें फिरनकुं
॥ ५२ ॥ एक बने मांहि महंत रु सेवक दुसरा ॥
जगकुं धुतत खात महा खल मसकरा ॥ लटपट टिकि
लगाय माइसें जइ मिले ॥ ह० कहेलालकुं बाल भोग
बिन नांचले ॥ ५३ ॥ विरक्त वाके नाम आसक्ति
अंतरे ॥ पेट भरनके काज कपट अतिशे करे ॥ कहवेकि
कछु ओर करनकी ओर हे ॥ ह० सेहरि धनकुं देख
रहे नहितो रहे ॥ ॥ ५४ ॥ एक एक दरपण अबल
थेलियां तलककि ॥ जाने जुक्ति रित सबेहि मलककि
॥ बाहर भेष गरिब मांहि ठग क्रोधके ॥ ह० शुद्ध
कंठ करलेत लोककुं बोधके ॥ ५५ ॥ माइयां बेसे
पास गात तब तांनमें ॥ बाबु आवत देखके बेसे
ध्यांनमे ॥ पुरि सीरा खाय बने रहे पठ्ठिये ॥ ह०
लोक होय नहि कोय तो आवे लीठ्ठये ॥ ५६ ॥
अंतर कपट अतंत भरोंसि बातके ॥ विध विध करत

वखांन माइकी जातके ॥ चोका *बरतन मांजके रखे चटापाटि ॥ ह० खाय पीये बन जायके करत खटापाटि ॥ ८७ ॥ लिये समरणि हाथ धरे पग जोयके ॥ अंगपर राखे वस्त्रके उज्वल धोयकें ॥ आओ रामजी बेठो आसन उपरे ॥ ह० एसे हेत देखाय जगतकु वश करे ॥ ८८ ॥ सबे गांमके लोक बेठेहे घेरके ॥ और ग्रामकि बात सुणावे टेरके ॥ एक फलाना भक्त बडा उदार हे ॥ ह० जेसा आप उदार तेसि घर नारय हे ॥ ८९ ॥ माई बडि भावीक फलाने गाममे ॥ आठ पोर लेलिन रहतेहे नाममें ॥ चतुर भलि नहि जान देत गुणवंतकूं ॥ ह० एक एक चदर ओढाय जिमावत संतकु ॥ ९० ॥ मतवालि माहुकार फलाने सहरमें ॥ खांड भात घ्रत देत आन जब लहरमें ॥ ठाकुरजिकुं भेट बि आछि धरतेहे ॥ ह० उसके घरमें माईसो पाउमें परतेहे ॥ ९१ ॥ एक एक कोठ लेहु माई तुम अछियां ॥ रखो गलेमें राज सुशोभित स्वछियां ॥ बडे पुरुषका हाथ न पिछा ठेलिये ह० जो पोहोचे सो भेट ले आगे मेलिये ॥९२॥ विरक्तडांकि रित कहि विस्तारके ॥ बगला ज्युं रहे बेस ध्यान दृढ धारके ॥ वाका भुलई संग कबु नहि किजिये ॥ ह० अब स्वारिथकि रित

* बामण.

कहुं मुणि लिजिये ॥६३॥ रुंड मुंड अति रिमके शिश जट्टरिया ॥ नित प्रते खाख लगायके किनि भुरिया ॥ अबे तबेकि बात कछुक मुख आवडी ॥ ह० चल्या चतावन लोक हाथले पावडी ॥६४॥ एक बने मांहि सिध मो अन्न न खावहि ॥ दुजे साधक होयके महिमा गावहि ॥ भले होय दशविशके चाले रमणकुं ॥ह० जुक्ति करके माल पियारे जमणकुं ॥६५॥ एक कठागि अवल लोहका चिपटा ॥ बांधि खुब बणायके माथेपर जटा॥बाला बाला कहत रु चाला चित्तमें ॥ ह० जाने नहि अडबंग मोक्ष कि रितमें ॥ ६६ ॥ मुंजडुका आडबंध जबर एक कमरमें ॥ काष्ठ मो पारा कंठके बोले गमरमें ॥ भांग धतुरा खायके गालां भंखियां ॥ ह० चाले छाति काढके राति अंखियां ॥ ६७ ॥ अबे कहां ग्या छोरा इधर आउबे ॥ गांजेकि एक चलम मो तुरत बनाउबे ॥ जलदि कर क्या इधर उधर जोतेह ॥ ह० तलब लगीहि बात भजन नहि होतेह ॥ ६८ ॥ बालाजिकुं आज भयाहे आफरा ॥ खुब मरि माहि नाखके किजे फाफरा ॥ भाजि तलियां अवल मशाला डारके ॥ ह०गरम लगायो भोग तुरत उतारके ॥ ६९ ॥ चलो बडे उस महेर नदिये जायके ॥ रहना अवलहिरितके खाख लगायके ॥ खाना रोटि खुब कथा घि शकरमे ॥ ह०दुनियांनकुं धुति खाई जे

*मकरसें ॥ ७० ॥ पनिहारिनके घाटवाटमे आइ पडे ॥ धुनि देत धखाय नओढे लुगडे ॥ आसन राखे बास्य त्रतितो गाममें ॥ ह० भजन अन्नका होत आठुहि जाममें ॥ ७१ ॥ बाबु पुछे आयतबे पलखोल हे ॥ धिरा रहिके एक माहिमे बोल्हे ॥ हम आकाशि वरत धारके रहतहे ॥ ह० अनासुरत कोहु देत तो भोजन ल्हहतहे ॥ ७२ ॥ ए बावाजी सिद्ध अन्न नहि खातहे माकर पेंडा दुध मिले तो पातहे ॥ कहते नहि हम जाय कोहुकुं गांममें ॥ ह० आठ पोहोर लेलिन रहतहे नाममें ॥ ७३ ॥ आबुके रहनार बडे ए सिद्ध हे ॥ भयेहे वरष हजार वचनमें रिधहे ॥ एक फलाने सहर ग्रहस्थ था वांझिया ॥ ह० उसके घरमें जाय तुरत बेटा दिया ॥ ७४ ॥ धरतहे दृढ कर ध्यांन उठतहे फजरमे ॥ जडि बुटिकि बात सबेहे नजरमें ॥ मंत्र जंत्रकि ओर कुशल सब काममें ॥ ह० सत्र मानतहे लोक बडे बडे धाममें ॥ ७५ ॥ दोय संतनके पात्र नहि पंजारियां ॥ चंदरस थोरा चहिये रंगण कटारियां ॥ गांजा भांग रु बजर कोहुसे नहि मग्या ॥ ह० दोदिन हो गये भोग ठाकुरकुं नहि लग्या ॥ ७६ ॥ कहा चहिये कोउ कहे तो इतना चाहिये ॥ अधमण गांजा भांग बजर मण लाइये ॥ शेर शेर

* मगरनी पेटे

घी सकर पंक्तिमें फिरतहे ॥ ह० दुध पाकका भोग बालेकुं धरतहे ॥ ७७ ॥ कहत ओरकुं संत महातम बातियां ॥ आवत *आप समाहि सो लत्ता लत्तियां ॥ ऐसे ऐसे धुत जगतकु खातहे ॥ ह० बुढापणमे मेरि राखि चातहे ७८ ॥ ज्ञान विना तन मस्त बढया बल कामका ॥ घाट रात दिन घडत दाम अरू वामका ॥ बेशे आश्रम बांधके निंदे फरणकुं ॥ ह० ततपर भयो तयार लुगाई करणकुं ॥ ७९ ॥ नारि तारण तरण याहिमे तन धरे ॥ नारिके प्रताप संतके उधरे ॥ साधु सेवा होत बडा उपकार हे ॥ ह० जाके एकहि नार सो तो ब्रह्म चारहे ॥ ८० ॥ बाबु एक उमगांम रहतहे रामकी ॥ अंतर साधु अवल हमारे कामकी ॥ हम तुमरे आधिन तुमहिकुं सरमहे ॥ ह० होय आवे उपकार तो मोटा धर्म हे ॥ ८१ ॥ रुपियां चहिये पंच घघरियां साडली ॥ पेर देवेगि दुवा संतकी लाडली ॥ दोनु मिलके भजन करेगे रातमां ॥ ह० सुखि होयगी बोत संतकि आतमा ॥ ८२ ॥ आये गये कि टेल करेगी प्रितसें ॥ धुनि पांनि अवल रखेगी रितसें ॥ झाड झुडके जग्या खुब बनायगी ॥ ह० गोविंदके गुन संग हमारे गायजी ॥ ८३ ॥ बनि आवे तो अच्छा संतकि

*माहो मांही लाते लाते मारामारी आवे.

देखेहे ॥ काज हमारा होय तुमारे मलेहे ॥ लडका लडकि भजन करेंगे रामका ॥ ह० यामें मेरे कहा पुन्य सब गामका ॥ ८४ ॥ मांग भिख दश पांच रूपैया करलिया ॥ बावे बानि पास उतारा जा किया पांचवार परणेलि कहे मेनानियां ॥ ह० चोवट नाके संग लगाइ छानियां ॥ ८५ ॥ अन्न वस्त्र बिन दुखि कायकुं होतेहे ॥ चलो हमारे संग अब कहा जोतेहे ॥ छाणा देउगो थाप रु जल लाउगी भार ॥ ह० शालिग्रामके साथ करुंगी चाकरि ॥ ८६ ॥ दोंगो-वां एक भेंस रु बोहोत अनाजकि ॥ सब विधि लाज मृजाद मेहेर माहाराजकि ॥ घरके आगे पिपर अंछि झुकरहि ॥ ह० में सेवक होय रहुं कमि कछुवे नहि ॥ ८७ ॥ सेसे दे उपदेश उडाइ लेगयो ॥ लोकनकुं कहे जनम सफल मेरो भयो ॥ मेरे तनकि पिर सबेहि हरतेहे ॥ ह० आठो पोर उपदेश गुरु ज्यु करतेहे ॥ ८८ ॥ बाबे साचे भावके मांडि पुजवा ॥ आठो पो-होर एकांत होत नहि जुजवा ॥ मुखपर मारे लात रहे नित्य शांति ॥ ह० बाबो जाने भइ परमपद प्रापति ॥ ८९ ॥ उपजाये दो चार के छोरा छोरियां ॥ ही-चकावे ले हाथ झुलेकि दोरियां ॥ त्रियकुं देवे नित्य प्रति खाट बिछायके ॥ ह० मगन रहे मनमायके दर-शन पायके ॥ ९० ॥ बाबा उपस्थ हुकम सलावे बा-

वली ॥ पिछ्या पाटण जाय लाव एक डावली ॥ एक घाघरा अवल कापडा हिरका ॥ ह० मेर उदण लाव पटोल्या चीरका ॥ ०१ ॥ वांवि घरमें माहत रु वावा चेलका ॥ वावाके शिर हुकम भरण जल हलका ॥ मुत्र चंपावे पाय मंजावे थालियां ॥ ह० यूं करतांहि वारि बोले गालियां ॥ ०२ ॥ क्युंव मडुव काम न वरका करतेहे ॥ छाण पडा घरमांहि रु खेलत फिरत हे ॥ मेरि आग्या लोपके इत उत जातेहे ॥ ह० धिरा रहे अव तेरि रात्रिमें वात हे ॥ ०३ ॥ उठ छोरिकुं धाय जगाकुं माफ कर ॥ छोरि छानि राख हुकम वजर भर ॥ कहत हुं चोखि वात समज ले मरममें ॥ ह० फेल किया तो डांम देउंगि *करममें ॥ ०४ ॥ आयातो ववकुव लुचा क्या जानके ॥ मेर रोय ख्वारकरि मोय आनके ॥ अव तो तेरा काटकलेजा खाउंगी ॥ ह० घर तेरा जल जाय मेतो उठ जाउंगि ॥ ०५ ॥ नाहि माईकि जात तुमारा दासहुं ॥ हाजर खडा हजुर तुमारे पासहुं ॥ तेरे पग पेजार करु मोय चामकि ॥ ह० मो पापिकी देह कहा कुण कामकि ॥ ०६ ॥ तुम बेठो में कपडा ल्याउ धोयके ॥ सबे तुमारि टेल करु खुसि होयके ॥ ऐसे त्रीय आधीन जनम सबहारिया ॥ हरहां श्रीरंग

* कपालम.

देख भेखकि रितके मंत पोकारिया ॥ ९७ ॥

॥ अथ फकिरको अंग ॥

शिरपें जटा बणायके तापर मेलियां ॥ होका लिनां हाथ बजरकी थेलियां ॥ ॥ जोरु साथ जरूर मचावे गंदगि ॥ हरहां श्रीरंग कहे हम फकिर करत हे बंदगि ॥ १ ॥ काला कपडा अंगके माला मखियां ॥ तमबि हाथ तैयारके सुरमा अंखीयां ॥ देत वांग ततबीर फकीर कलातहे ॥ ह० मरघि अंड पचाय हमेमां खातहे ॥ २ ॥ होका धोका हाथ सींग एक कानमें ॥ दिशंता विकराल भरकुंडे राखमें ॥ बोले कंठ बगाड गले बिच घरकता ॥ ह० डोलि पैमाकाज बजारें वरकता ॥ ३ ॥ मुखमें कहे फकीर फकिरी करतहे ॥ दमडि चमडिकाज वे हालां फरतहे ॥ मुंडा लागत भेप लेश नेमेरका ॥ ह० पढिया मुरसद पासके कलमा केरका ॥ ४ ॥ मेहरि धन घरमांयकें बेटा बेटियां ॥ घोडि भेंसां गाय के बकरि घेटियां ॥ चेहेवेल दोय चार कहे सब पीरका ॥ ह० करे हरामि कामके नाम फकीरका ॥ ५ ॥ पढे जुं पंचनवाज मसीतें जायके ॥ ततपर रोजा त्रीश रहे चित लायेके ॥ मुरघी बकारि मारकरे दिन ऐदका ॥ ह० कहेवे हमे मुरिद हकीम फलाने मैदका ॥ ६ ॥ नाम धरावे साह कर्म सब चोरके ॥ काटत गला करूर

मृगि अरु मोरके ॥ भुंडेंकृत भरपूर लजावन भेषके ॥ ह० हम फरजंन तेहेकीक फलाने शखके ॥ ७ ॥ कहो कब कह्यो खोदायके रखियो रंडियां ॥ खाइयो खूब पचाय मृगिके थंडियां ॥ करतं जिव हलाल न दिल मही डरतहो ॥ ह० धर भाहेबका भेष गुना क्युं करतहो ॥ ८ ॥ नेकीमें महजूद बंदिसें दूरहे ॥ मुरमद मुकन मकानके हुकम हजूरहे ॥ चउद तबकके मोखहुमें दिलगीरहे ॥ ह० फक-रका फाका करत मो फूल फकीरहे ॥ ९ ॥ पैसा थूक समानके मेहरि मातेह ॥ मेहर सदा दिलमूम खोदा रिझातेह ॥ फना ममज बे फकरके जकर हमेशहे ॥ ह०दूल चाहे दिदार मोइ दरवेशहे ॥ १० ॥

॥ अथ गुरुदेवको अंग ॥

॥ गुरु देवनके देव अभेव अखंडहे ॥ ईनहिंके आधार पींड ब्रह्मांडहे ॥ तारण जंत अनेक जनुंकी टेकहे ॥ हरहां श्रीरंग एसे परम दयाल जक्तमें एक हे ॥ १ ॥ श्रीरंग कहे ॥ श्रीरंग कहेवे गुरू पूरण अद्रित द्रित नहि देषियें ॥ विश्वाधार अपार उदार विशेषियें ॥ अनभे वचन सुनाय बतावत आपकूं ॥ ह०अविचल सो गुरु करत हरत त्रय तापकूं ॥२॥ सद्गुरु शब्दातित परम परकासहे ॥ जाके शरणे जाय अविद्या नासहे ॥ देह गेह मन दाम अपिकुं दीजियें

॥ ह०सब मत सब जग जोय सोय गुरु कीजिये ॥३॥ गुरु गोविंद दो नाम वस्तुतो एकहे ॥ जाने संत महंत विशाल विवेकहे ॥ भयटालत मन मोक मीटावत कर्म कुं ॥ ह०सो गुरु सय स्वरूप मिलावत १पर्मकुं ॥ ४ ॥ अनहद अकल अपार गुरु गुन ग्रामहे ॥ भ्रम थापन जग ध्येय सदा सुख धामहे ॥ आपत ज्ञान अखंडमु-कापत आपदा ॥ ह०सो गुरुदेव अभेव अविचलहे सदा ॥५॥ करुणा सिंधु क्रिपाल सोइ गुरु देवहे ॥ सुरनर मुनिवर शरण चर्ण नित सेवहे ॥ नर तनु धर नित नेम जगतमें विचरें ॥ ह० अपना तन कुरबान एसें गुरु उपरें ॥ ६ ॥ गुरु गुन अनंत अपार पार न-हि पावहिं ॥ सारद नारद शेष सबे जस गावहिं ॥ काम क्रोध मद मोह महा दुख द्वंदमें ॥ ह० समरथ सो गुरु देव छुटावे फंदमें ॥ ७ ॥ सद्गुरुके परताप परम पद पाइयें ॥ जन्म मरण जंजाल सबे विसराइयें ॥ अविगत अचल अरूप अनंत अकाम हे ॥ ह० संतनका गुरु शीव सकल जग सामहे ॥ ८ ॥ सद्गुरु शद्ध सुनाय बतावे रामकुं ॥ मोहमद लोभ मिटाय हठावत कामकुं ॥ जड दुख मिथ्या जान असार अनात्मा ॥ ह० दिलमें सो गुरु दरश परस परमात्मा ॥ ९ ॥ सद्गुरु शद्धा-तित अद्रित अभेद हे ॥ त्रिभुवन तारन तरन हरन

१ परमेश्वरने.

उर खेद है ॥ अनभे ग्यान अखंड विग्यान विशेकता ॥ ह० वा गुरु कि बलहार करे ब्रह्म एकता ॥ १० ॥ सद्गुरु मिले सुजान तो साधन सब भया ॥ ज्युं पारसमणि पाय कनकका श्रम गया ॥ अन *तृप्ती ज्युं एक विवेक विचारियें ॥ ह० सद्गुरु चरण सरोज सदा उर धारियें ॥ ११ ॥ जगत गुरु जगदिश मिले जब जंतकुं ॥ तन सब ताप नशाय आय भव अंतकुं ॥ जाके वचन प्रताप तिमिर अघ त्रास हिं ॥ ह० अंतर आत्म अकल अखंड प्रकासहिं ॥ १२ ॥ गुरु सम दाता नाहि जगतमें ओर जुं ॥ दिया परम पद दांन अखंडित ठोर जुं ॥ जन्म मरण जंजाल मिटे सब जीवका ॥ ह० सद्गुरु सरजण हार सो कारण शीवका ॥ १३ ॥ जाहि मिले गुरु देव किए जगदीशमें ॥ ओर सबे मत पंथ अलुझे रीशमें ॥ रयान घरमें बेस गया नहिं धामकुं ॥ ह० सद्गुरु बिन जगमांहि न पावे रामकुं ॥ १४ ॥ भई गुरूसें भेट सो पूरण पून्यसें ॥अंतर भया उजास

---

*एकज प्रकारनी अणतृप्ति एटले असंतोष अथवा क्षुधा विवेकथी विचारीने राखीये ने एवी रीते के सदगुरुना चरण-कमल सदा मनमां धारिए मनलबके भगवाननुं ध्यान करवानी हमेशां आतुरता राखीए एकामथी धराइ जइए नहीं.

तिमिर गये तनसें ॥ ओर सब उपाद्ध मीटाई अंगसें ॥ ह० पाये पद निरवाण सो सद्गुरु संगमें ॥ १५ ॥ बावन बाहर बूझ गृझकुं गहि सके ॥ अनहद अकल अभेद वेदवि तहां थके ॥ मनवाणिके पार धार तनु फिरतहे ॥ ह० हरि गुरु रुपें होय कर्मकुं हरत हे ॥ १६ ॥ धन्य धन्य जाके भाग जनुव गुरु मिले ॥ अनंत जन्म अघ ओघ तरत छिनमें टले ॥ भरम करम जंजाल सबे दिल भागीया ॥ ह० सद्गुरु शद्धे चीतलक्षमें लागिया ॥ १७ ॥ सद्गुरु जगमें एक ताहि पेहचानासि ॥ महा मुक्त पद मोज सोई जन मानसि ॥ ओर वातन के पकवान किये कहा होतहे ॥ ह० डांभ फूंक देनार गुरु जगमें बोल हे ॥ १८ ॥ सारद नारद सेष महेश्वर देवता ॥ सद्गुरु चरण सरोज रहे सब सेवता ॥ महिमा अनंत अपार पार नहिं पावहीं ॥ ह० सद्गुरु मिले सुगमते अगम घर जावहीं ॥ १९ ॥ सर सर हंस न होय न तरु तरु चंदना ॥ पारस सब पाषाण होत नहि कुंदना ॥ घरघर गुरु न होय समझकें लीजीयें ॥ हरहां श्रीरंग सहजानंद सुजान चरणरस पीजीयें ॥ २० ॥

॥ अथ सूरमाको अंग ॥

॥ मन घोडा मस्तांन किया जिन कबजमें ॥ निमष काज नितनेमष डारहे अबजमें ॥ हिंमत किमत

हाथ भाराथ हजूरमा ॥ हरहां श्रीरंग समर्थ सो जगमांहिं के साचा सूरमा ॥ १ ॥ बगतर अंग बनाये शिल संतोषका ॥ बेहद टोप विवेक मिलावन मोक्ष-का ॥ धिरज इंदिढाल खडग गुरु ग्यान हे ॥ ह० समर्थ एसे सूर सो शाम बखानेहे ॥ २ ॥ पेट कटारि पेर गया रनखेतहे ॥ निरभे होय निसंक लडाइ लेत हे ॥ मरण चल्या मेदान सो पिछा नावले ॥ ह० टुकटुक हो जाय धणिके आगले ॥ ३ ॥ शुर अकेला होय रिपुदल काटेहे ॥ पिछा धरे न पाव मनमुख चोट हे ॥ लिया रहे उछाह अहोनिस लरनका ॥ ह० मनमें एहि सिद्धांत सो मारन मरनका ॥ ४ ॥ शुरा रण तरवार रखे नहिं म्यानमें ॥ ममता तनकि मेल खडा चोगांनमें ॥ लिया अपना शिर हाथ ओरनका क्युं रखे ॥ ह० एसा शुर अडोल कोइक प्रथ्वी विषे ॥ ५ ॥ अंतर बाहर अडग डगमगे नहिं कदा ॥ मरण ते तरणा मात्र जनुके हे सदा ॥ हींमत हुकम हजूर धनिके लूंनमे ॥ ह० शिर बिन सो नर धीर डरे मन कोंनसें ॥ ६ ॥ घन थट मिल घमसांन जुडे जुध जाहरां ॥ शुरा मन आनंद कंपे मन का-

यरां ॥ *१जिवत आसा छोड संसार ममेतकुं ॥ ह० तनपर जाहोय जाय न छाडे खेतकुं ॥ ७ ॥ समता शील संतोष सत्व सब अंग धरे ॥ तन मन धन कुरबान किया गुरु वाक्य परे ॥ काम क्रोध मद मोह ईनुंसें मामला ॥ ह० शुरलेत तन घेर अविद्याका कील्ला ॥ ८ ॥ क्या दुनियाका भार विचारि क्या करे ॥ ले अपना शिर हाथ जगतमें जो फरे ॥ *२जगत मत्तसें जुक्त निवासि धामका ॥ ह० न्यारा जगमें शुरसो प्यारा रामका ॥ ९ ॥ शीश बडे जगदिश लिये सो शुरहे ॥ ओर शुर जगमांहि सो लाज मजूर हे ॥ खावन दिल खुसियाल करन मन खेत हे ॥ ह० अनभे एसे शुर जगतमें संतहे ॥१०॥

॥ अथ साधुको अंग ॥

॥ तन विषया सुप तजन भजन भरपूर हे ॥ सुबंधा सांइयां साथ के दुबधा दुरहे ॥ कनंक काम नियाग लाग मनवस्तहे ॥ हरहां श्रीरंग सचा सो अवधूत सदा अलमस्तहे ॥ १ ॥ दांमबांम दिलनांहिं जनुंका

---

*१ संसार सहीतनी तथा जीववानी आशा छोडीने शरीर चुरेचुरा थइ जाय तोपण रणक्षेत्रने छोडे नही *२ दुनीयादारीना मनमां एटले रीतभातमां जोडाएलो होय तोपण ते शूरवीर सौथी जुदो छे. अने परमेश्वरने वालो छे.

पारखा ॥ कुनराजा कुन रंक सबे एकसारखा ॥
अनभे ज्ञान अखंड सुमता अकामका ॥ ह० अंतर
एहि रित सनेहि रामका ॥ २ ॥ नहिं काहुंसें प्रीत
वेरनें काहुंसें ॥ हरष सोक नव होत सो सहज स्व-
भावसें ॥ अविचल दांत एकांत इंद्रिनके साथसें ॥
ह० सोजन कहियें मग्न लग्न निज नाथसें
॥ ३ ॥ संपत विपत समान जनुंकेहे सदा ॥
मंगलरूप अनूप अणंकल हे मुदा ॥ ग्यानदता
गंभीर विरक्ता वांमसें ॥ ह० सोउ नमंता संत रता
एक राममें ॥ ४ ॥ समता शिल संतोष जनुं
घटहे सहिं ॥ काम क्रोध मदलोभ कपट त्रष्णा
नहिं ॥ धन तन सब सूख आद्य जनुंके धूरहे ॥
ह० एसे संत सुजान सो साम हजुरहे ॥ ५ ॥ नि-
स्पृहि निस्कांम निस्वादि लोभनां ॥ सो निर्मानि
संत जगतमें सोभनां ॥ विषे साग निरविघन म-
गन परवीनहे ॥ ह० धनहे एसे तज्ञ लग्न लयलीनहे
॥ ६ ॥ विरक्त बुधि विशाल जगतमें वीचरे ॥
वेर सब विषे विकार कबुनां चित धरे ॥ ज्युं कमल
जलमद्ध अपरासि नीरको ॥ ह० अहोनिश सो-
मत जान सु फूल फकीरको ॥ ७ ॥ इंद्रिजित
अतित जनुंका एमता ॥ सेहेरिं सबहिंमात धात्रु
सब धूरता ॥ अहो निस गुरु आधिन प्रविन

अकांमेंहे ॥ ह० सोईजन सुजान सदा सुधाम हे ॥ ८ ॥ मगन गगन मस्तांन लगन, एक लालसें ॥ वीर धीर मुख मीर फकिरी हालसें ॥ तन मन धन एहि आद्य सकलका त्याग हे ॥ ह० सो मांहंत सुजान बडेवड भाग हे ॥ ९ ॥ एक हरिसें आसक्त विरक्त विकारथी ॥ दिल सुध रुदे दयाल परम परमारथी ॥ देह इंद्रि मन प्रांन मिथ्या न उपाधहे ॥ ह० समजु सो जगमांहि सयांने साधहे ॥ ॥ १० ॥ अंतर हरि आधिन वचनहि वांण जूं ॥ देह इंद्रि मन प्राण किये कुरवाण जूं ॥ एक आस विश्वास भरोसा एकहे ॥ हरहां श्रीरंग प्रगट प्रभुसें प्रीत जनुंकि टेकहे ॥ ११ ॥ ॥ इतिश्री ब्रह्मानंद स्वामि कृत छंद चंद्रायणा संपूर्ण ॥ २०४ ॥

॥ अथ उपदेश अंग ॥ झूलणा छंद ॥

॥ पायि जिंदगि वंदगि नांहि करी नित ख्याल किया ठगवाजियांका ॥ मद मोहमें तें मगरुर फिर्या तन ताकता नारियां ताजियांका ॥ सदगुरु साहेबका रंग चढया नहि संग किया नर पाजियांका ॥ ब्रह्मानंद कहे केसें वात माने तं तो ग्रागहे जूतियां झाझियांका ॥ १ ॥ तोकुं देख कंपे परिवार सारा ॥ डारा देत ले हाथमें धोकलिकुं ॥ कछु शीखकी वात न कान धरे ॥ डाह्या होय हलावत डोकलिकुं ॥ खरे मोक्षके पंथमें खूट बेठा

॥ हिया फूट छोडे नहि होकलिकुं ॥ ब्रह्मानंद कहे चलचल *गिदि, मखूड देखात क्या मोकलिकुं ॥२॥ रामनामकि कोर तो सोइ रह्या कामक्रोध रु लोभमें जागताहे ॥ भरपूर रहे बात भुंडियामें लुचा लुंडियामें मन लागताहे ॥ रहे दास भया भगतानियांका ॥ हरि-जनके संगसे भागताहे ॥ ब्रह्मानंद कहे नख शिख सुधां तेरा मूख तो जुतियां मागताहे ॥ ३ ॥ तेरा घाइयांमें सब घट भर्या नटखट बोले ठग *ठुंसडिकुं ॥ खेतवाडि-यांमें नित्य ख्वार मिले ॥ हिये धार वडीवडी हुंस-डिकुं ॥ खुसि होय जेसे मन खेलताहे नहि मेलताहे लाज पुंछडिकुं ॥ ब्रह्मानंद कहे दास रांडहुका ॥ मखुड क्या तानत मूछडिकुं ॥ ४ ॥ जगमांहि फजेत बेहाल फिरे कामकिंकर छूटल काछडेका ॥ खोइ उ-मर सोगटे जूगटेमें मन लक्ष रह्या रांड रासडेका ॥ लिये होकलि हाथमें डोलताहे खोटा बोलत यार खवासडेका ॥ ब्रह्मानंद कहे भजे राम केमें अधिकार तोकुं नर खासडेका ॥ ५ ॥ केइ घात महा उतपात करे तामें जोग्य अजोग्य न जोवताहे ॥ नित्य केड दोडे उठ दासियांके खरि बापकि लाजकुं खोवताहे ॥ मांडमांडहि रांड रिझावनेकुं गांड छोकरेकि नित्य धोवताहे ॥ ब्रह्मानंद कहे नाहि लाज तेरे हसे कोन सुखें क्युं न रोवे

*गंदा. *मशकरीनुं.

ताहे ॥८॥ पनघट बेठे पन खोवताहे मुख जोवताहे पनिया रियांका ॥ दिनरेन माया बिच भूलगया खुशि ख्याल किया नित्य ख्वारियांका ॥ चित फाट गया बदफेल चले वार ठेलता हे घरवारियांका ॥ ब्रह्मानंद कहे तोकुं दुःख लगे पण मूख तो ग्राग पेजारियांका ॥ ७ ॥ किरतार बिसार भस्यो कुमती रहे यार भया नित्य ठानियांकां ॥ हिया फूट हेरे फाटि अंखियांसें ॥ जाय घाट घेरे बेठ पानियांका ॥ देख पारकि नारिके केड दोडे अरु माल चोरे जाय बानियाका ब्रह्मानंद कहे तोकु ग्यान केसो तेरा ध्यान लग्या भगतानियांका ॥ नर देह अमुलक पाय के जी खोइ उमर लुंड लवाडियांमें ॥ हरिजनके संगसें रंग चढया नहि बेठता हे चोर चाडियांमें ॥ धन मेलकें धूलके विच धस्या तेरा घट भस्या सब *घाडियांमें ॥ ब्रह्मानंद कहे तें फजेत भया तेरा चीत फरे खेतवाडियांमें ॥ ९ ॥ वारवार देवे फिटकार होको तापे रीसुका लेश न लावता हे ॥ कोउ संत कहे वात शीखहुकी तासें उलटा बाद अडावताहे ॥ रामनाम हुसें होका बोत प्यारा सारा दिन चुसे गुन गावता हे ॥ ब्रह्मानंद कहे नहि लाज तेरे कहा लोकमें मूख देखावता हे ॥ १० ॥ धिकताहि सतीनके साज

*घातमां

हुमें वन्हि देखि डोलि पडे जायकें जी ॥ धिक शूर हट्या संगरामहुमें कहा जीवता हे घर आयकें जी ॥ मंत भेख धर्या चहे लोक हु के मुख देहमें चित्त लगायकें जी ॥ ब्रह्मानंद कहे तिनुं ख्वार भये जग मांहि बडो जस पायकें जी ॥ ११ ॥ कुन गाम गइ नर बुद्धि तेरी विख पीत अमीरस ढोलता हे ॥ केइ पेटके काज अकाज करे दिल होय डाह्या अरु डोलता हे ॥ कहा कोन सगा कहां जाउगिमें ॥ एसी वात रुदे नहि तोलता हे ॥ ब्रह्मानंद कहे धिक जीवनेमें बकवक क्या मूख ले बोलता हे ॥ १२ ॥ बहु होय प्रविन ज्युं बोलता हे चित्त लोलताहे दाम चामकि वे ॥ अति बाहिर भेख बनावत सुंदर भीतर चाल हरामकि वे ॥ मदमोह टर्या नहि मनहुसें कहा चातुरता कोन कामकि वे ॥ ब्रह्मानंद कहे सब बात जुठी जोलु सुद्ध नहीं सियारामकि वे ॥१३॥ दिनके गये खेलने दोडनेमें बहु बाल लिला अरु बीवनेमें ॥ जुवा होय रच्यो रंग जुवतिसें दिन के गये खावने पीवनेमें ॥ वृद्ध होय वधी अंग ओर व्याधी दिनके गये सांधने सीवनमें ॥ ब्रह्मानंद कहे किरतार भज्या विन धूर तेरे नर जीवनेमें ॥ १४ ॥ राज बाजहुके काम काजमें तें नवरा न रह्या दिन रातमेंजी ॥ जगमांहि बडो जश होय मेरो जाने होउं बडो नात

जातमें जी ॥ राग रंग विलास अवासहुमें अरु लो-
भमें उरकि घातमें जी ॥ ब्रह्मानंद कहे जम आय
लग्या खोड उमर वातकि वातमें जी ॥ १५ ॥ नख
शीख वन्या पिंड पापहुका फिर पापके *पेड पसार-
ताहे ॥ नित केर करे कछु म्हेर नहि मगरूर हो
जिवकुं मारताहे ॥ विनशंक भया बद फेल चले
मनशंक न कोउकि धारताहे ॥ ब्रह्मानंद कहे नरदे-
हकुं पायकें कर्मका व्याज वधारताहे ॥ १६ ॥ धन
माल रहे घरमांहि धर्‍या परिवार मेडी गज पायगावे
॥ केइजोध खडा २खग ढाललिये रन जीतकिये
रहेवाय गावे ॥ सब माहेवि रंग पतंग जेसी थिर
कोउसेंना ठहराय गावे ॥ ब्रह्मानंद कहे चडी चोट
चपेट झपेटकें काल ले जायगावे ॥ १७ ॥ कडा वेढ
विंटी मोति पेर काने महा जोरसें मुछ मरोडताहे ॥
चले देखता आपनि छांयडिकुं टेडि पाग वांधी तान
तोडताहे ॥ तन अंतर तेल फुलेल लगावत नेह त्रिया
संग जोडताहे ॥ ब्रह्मानंद कहे खबदार बंदे दख
काल किसें नहि छोडताहे ॥ १८ ॥ तेरा कोन गजा
के ते जीवनेपें एते जोर जुलम जनावताहे ॥ कबु
धर्मकि वातमें पाव धरे नाहि पाप सदा मन भावता
हे ॥ पिंड पालनेकुं रांक पीडताहे ॥ ताकि

* झाड. २ खडग.

त्रास नही उर लावताहे ॥ ब्रह्मानंद कहे दिन
दोइ पिछे देख काल अचानक आवताहे ॥ १९ ॥
अंध धंध रहे मद आपनेमें मन बात न कोइकि
मानताहे ॥ धन धाम धरा सुत दार मिले एहि जी-
वनेका फल जानताहे ॥ मद्य मांस भखे नहि शंक
रखे किये पापकुं आप बखानताहे ॥ ब्रह्मानंद कहे
कछु बार नहि जमकाल उंध शिर तानताहे ॥ २० ॥
चहु देशमें आण चलावता हे धरे दाण आवे
वाट घाटका हे ॥ अरु बाग किला महलात बना-
वत खेल त्रिया संग खाटका हे ॥ भात भातके
भोजन थालहुमें तामें बीश पचीशक बाटकाहे ॥ ब्र-
ह्मानंदके देख विचार प्यारे सबे कालकि एक थपा-
टकाहे ॥२१॥ नहि धाम धरा तहां कोटकिला रंग
मोल कचेरीं न रावनांहे ॥ सुख सेज नहीं तहां
सोवनेकी रंग राग न गायक गावनाहे ॥ सब आपके
कर्मके पापहुसें तहां मार बहु विधि खावनांहे ॥ ब्रह्मा-
नंदके देख विचार प्यारे जमद्वारतो तो एकिले जाव-
नाहे ॥२२॥ पितु मात ठग्यो प्रतिपालनासें हेत खान
पान लियो हाथमेंजी ॥ सगे आय ठग्यो कहे बात
सारी अरु नारी ठग्यो लियो बाथमेंजी ॥ सुत भ्रात
कुटुंबि मिले सबही कहे होयगे १भीर २भाराथमेंजी

१ सहायकर. २ लडाइमें.

॥ ब्रह्मानंद कहे चेत चेत प्यारे तें तो आइ पर्‍यो ठग साथमेंजी ॥२३॥ कबु धर्मकि बात नकान धरे सदा पापकि बात मोहावतिहे ॥ तेरे उरमें भौढ वधी तृषना धनकाज दिशोदिश धावतिहे ॥ जम शीश खडे दिन निश अरी तोय नींद केसे सुख आवतिहे ॥ ब्रह्मानंद खटापट खेलहुमें तेरी आयु झटापट जावतिहे ॥ २४ ॥ दुरलभ्य एहि देह देवनाकुं तेहि पाइ विचार न जोवताहे ॥ अमरीतके पेड उखेरत ताहिमें विखका बीज ले बोवताहे ॥ सब दीनमें रांडकि वेठ करी भरी पेट सभी सांज सोवताहे ॥ ब्रह्मानंदके लाभकी वात गइ खरी गांठ मुडी सोविखोवताहे ॥२५॥ हरिनामकि कोर तो हार बेठा कुडकर्मकि कोर न थाकताहे ॥ धनमालहुकि मन धांखनाहे नित पारकि नारकुं ताकताहे ॥ निज पापकि गांठडिकंध धरे अंध धंधमें रातदि हांकताहे ॥ ब्रह्मानंदके सांज सवाराहिमें आय काल अचानक फाकताहे ॥२६॥ परनारिकुं देखकें पाप धरे पाजि आंखियांमें नहि पालताहे ॥ ठग बाजियांमें सब आयु गइ चित चाल हरामकि चालताहे मद्य मांस चोरी अरु जूगटमें मनरीझ पडे त्युंहि मालताहे ॥ ब्रह्मानंद कहे आज कालहुमें झट काल अचानक झालताहे ॥२७॥ सत्य बातमें तो बडा १पोसातिहे अरु जूठमें शूर हो झूझ-

१ कायर.

ताहे काम क्रोध रु लोभकि सांग लगी तातें अंतर घाव न रुझताहे ॥ पेट काज अकाज हमेश करे कलियानकि बात न बूझताहे ॥ ब्रह्मानंद विवेककि आंख विना तोकुं संत असंत न सूजताहे ॥ २८ ॥ महानिधि तोकुं नरदेह मिलि एहि मोज नहि वारवार किजि ॥ तेरे हाथ कछु नहि आवताहे परधन अरु त्रिय पारकिजी ॥ जगमांहि विहाल फजेत फिरे ज्युं निदान याहिमेंमें नारकिजी ॥ तातें आपका आप तपास किजो ब्रह्मानंद के बात विचारकि जी ॥ २९ ॥ हुशियार रहो दिल हाथ करो एसि देह अमूलक पायकें जी ॥ शुद्ध भावसें संत महांत हुकी उठ कीजिये चाकरि धायकें जी ॥ सोइ संत कहे सत्य वारताकुं नित्य धारिये चित लगायकें जी ॥ ब्रह्मा-नंद कहे बुरा मत किजो सत्य केतहुं हाथ वजायकें जी ॥ ३० ॥

॥ अथ असाधुको अंग ॥

॥ कंठि धार टिका किया भेख निका बने ठीकठिका चले रावनेमें ॥ सबे पाय लागे धरे भेट आगे बहु चा-तुरि लोक बोलावनेमें ॥ साखि बोत शिखी करे बात तिखी घनी रीत ठाने गुन गावनेमें ॥ ब्रह्मानंद कहे बोत ग्यान जाने तेरा तान तो रांड रिझावनमें । ३१ । करे रोज सेवा ठगि द्रव्य लेवा हिये नीच हेवा छले टोकरिमें ॥ कहो कोन काजे धरया भेख भुंडूं रह्या

दाबडुब्या लजा लोकरिमें ॥ कबु मंतकी टेल तो नांहि करे रहे हाजर रांडकि नोकरीमं॥ब्रह्मानंद कहे रिझे राम केमें तेरा चित्ततो छोकरा छोकरिमें ॥ ३२ ॥ पेढि मांड बेठा काज पेटहुके मांहिमाल भरचा ठग फांशियांका ॥ विषे आप सेवे ठगि द्रव्य लेवे एसा बोध देवे रोटि खाभियांका ॥ हरिजनकुं देखकें द्रेष धरे भरे दोड होका गाम ग्रामियांका ॥ ब्रह्मानंद के रामका दास नही तेंतो दासहे दुनियां दासियांका ॥ ३३ ॥ गले धार माला विषेमें बिहाला करे चित्त चाला पट्ठु पामाडिमें ॥ घरमें भांग घोटा खरा भाव खोटा दिये रोज आंटा सबे गामडिमें ॥ चहे वोत चेला मंडे द्वार मेला करे धन भेला धरे तामडिमें ॥ ब्रह्मानंद के रामसें प्रीत नही तेरा चित्त तो दामडि चामडिमें ॥ ३४ ॥ संत भेख धर्या अरु द्रेष धरे लवलेश विचार न जोवताहे ॥ घट भितर तो अति मेल भरचा अरु बाहेर तनकुं धोवताहे॥तेरे अंतर झाल झपी नहि कामकि रामकिके लिये रोवताहे ॥ ब्रह्मानंदके मांहिमें मन मुंडे विन मुंड मुंडे कहा होवताहे ॥ ३५ ॥ ठगिं माल खाया करि पुष्ट काया माया-मांहि माथा लगि खूतताहे ॥ चहे वोत पेसा फिरे बेल जेसा सदा लोभकि गाडिमें जूतताहे ॥ तेरे बा-हिर भेख गरिबका दीसत दीलके भीतर दूतताहे ॥ ब्रह्मानंदके शीखिया घाड्यांकु धरि भेखकें माइयां

धूतताहे ॥ ३६ ॥ लडू खांडहुका चैये लालजीकुं गुड बोत गरम जनावताहे ॥ धोइ मीसरिका बाल भोग चहे दुध भेंसहुका घना भावताहे ॥ चैये भांग गांजा मेरे लालजिकुं भाजि ताजियां भोग लगावताहे ॥ ब्रह्मानंद कहे ठगि लेत पेसा एसा लोककुं ज्ञान बतावताहे ॥ ३७ ॥ कहे बाइयांकुं धन तनहुसें सदा चाकरि संतकि कीजियोजी ॥ कोइ आइ कहे राम आज मिले एसि बातकुं नांहि पतीजियोजी ॥ अछे भोग धरो मेरे लालजिकुं धोइ सालिगरामकुं पीजियोजी ॥ ॥ब्रह्मानंद कहे खबर्दार रेनांदेना होय सो हमकुं दीजियो जी ॥ ३८ ॥ चल्या मुंड मुंडायकें होइ साधू जगे बांधकें मांत किलावताहे ॥ रांक मुंडिया द्वारसें मार काढे खूब रंडियां देख खिलावताहे ॥ नख शीख भर्या तन धाइयांमें तान माइयां साथ मिलावताहे ॥ ब्रह्मानंदके मानमें टंट रह्या ठाला कायकुं घंट हिलावताहे ॥ ३९ ॥ करे एक चेली रखे आप भेली ताकी बंदगि बोत बखानताहे ॥ सद्ग्रंथकि रीत न कान धरे करे बाद खोटा मत तानताहे ॥ करे कूड कपट रु ओरहुका धन आपने मंदिर आनताहे॥ ब्रह्मानंदके रामकि बात नाहि मन माइकि जातमें मानताहे ॥ ४० ॥ माइ देख तेरा यह देह खोटा तातें संतके काम लगावनां जी ॥ साधू द्वार खडे गउ रामजिकि खुब माल

ताजा खबरावनांजी ॥ भिनभाव न राखिये भेखहुसें ताकि मीत प्रसादि वि पावनांजी ॥ ब्रह्मानंद कहे कछु मंत्र कहेगे एकांत आसनपें आवनांजी ॥ ४१ ॥ सबे ढोर ढांढे मेरे रामजिके भेंस रामजिकी दुध पावनेकुं ॥ सबे खेतवाडी मेरे रामजिके भाजि शाक वि भोग धरावनेकुं ॥ दोय छोकरा छोकरि रामजिके एक टेलवि छान उठावनेकुं ॥ ब्रह्मानंदके रामका नाम लेवे सबे आपने काम लगावनेकुं ॥ ४२ ॥

अथ संतको अंग

॥ ॥ एसे संत खरे जगमांहि फिरे नहि चाहत लोभ हरामकुंजी ॥ सदा शील संतोष रहे घट भीतर केद किये क्रोध कामकुंजी ॥ अरु जीभहुसें कबु झुठन भाखत गांठ नराखत दामकुंजी ॥ ब्रह्मानंद कहे सब वारताकुं एसे संत मिलावत रामकुंजी ॥ ४३ ॥ निपकाम सदा मन राम रिझावन दाम रु वामसें दुरेहे जी ॥ लवलेश नहीं जाके लोभहुका नहि काम न क्रोध नकुरहे जी ॥ मन मान इंद्रीनके सामलेसें हटे नांहि पिछा एसा शूरहे जी ॥ ब्रह्मानंद कहे सत वारताकुं एसे संतसें शाम हजुरहेजी ॥ ४४ ॥ तिन तापकि झालपें नाहि तपे आंटि छोडता जीव अनंतकिजी ॥ सदा शील संतोषहि अंगशोभे अछि जानता बात ए-

कांतकिजी ॥ रमवम रहे नित्य रामहुंमे मेव जानता *रेस्य सिद्धांतकिजी ॥ ब्रह्मानंद के वार हजार में तो वलहारि जाउं एसे संतकिजी ॥ ४५ ॥ धन्य भाग्य वडे जगमांहि जाके एसे संतहुंसे ओलखान हेजी ॥ इंद्रियांकुं लगाय स्वरूपहुंमें किये केदहुंमें मन प्रानेहजी ॥ हरि साथ रहे लयलीन सदा करि प्रीत प्रगट प्रमानेहजी ॥ ब्रह्मानंद कहे दास रामहुके एसे जगमें संत सुजानेहजी ॥ ४६ ॥ अवधूत सदा अलमस्त रहे कहे वात सदा किरतारकिजी ॥ काल व्यालके दावमें नांहि डरे छुवे नाहिन झाल संसारकिजी ॥ लयलीन स्वरूपमें लक्ष रहे ताकुं पक्ष नहीं निज पारकिजी ॥ ब्रह्मानंद कहे जीव आय मिले खेले चोट सदा निरधारकिजी ॥ ४७ ॥ एसे संत मिले कभिकाहु रही साचि शीखवे रामकि रीतकुंजी ॥ परापार सोइ परिब्रह्म जामे ठहरातहे जीवके चित्तकुंजी ॥ दृढ आसन साधकें ध्यान धरे करे ग्यान हरिजी के गीतकुंजी ॥ ब्रह्मानंद कहे एसे संत मिले प्रभु साथ वढावत प्रीतकुंजी ॥ ४८ ॥ ज्ञाति चारण आडक आसियुंकी आवु छांय भयो खाण गाममें जी ॥ ताके नाम शंभूदान तातहुको मात लालु

* रहस्य

बाइ धर्यो ठाममेंजी ॥ लाडु मेटकें श्रीरंग नाम धरयो दोउ लिन ब्रह्मानंद नाममेजी ॥ चित्त धार सहजानंद शाम छवी जग जीत गयो निज धाममेंजी ॥ ४९ ॥ आदि त्रीशमें मायिक जीव हुकी लखी रीत देखावन त्रासहेजी ॥ पिछे भेख लजावन भडुवांके लख्ये द्वादश वाक्य विलास हे जी ॥ पिछे आठमें संताकि रीत लखी सोइ सत्य प्रभुजिके दासहेजी ॥ ब्रह्मानंद बिचारकें तोलनां जी यह झुलना नंग पचासहे जी ॥ ५० ॥

॥ अथ वंदेको उपदेशी अंग ॥ ॥ कुंडलिया ॥

॥ वंदे कीजे बंदगी तजिदे चिज हराम ॥ फना समझ वेफकर ॥ जकर रखहु सब जाम ॥ जकर रखहु सब जाम॥ नाम नामी जुत लेना ॥ साहेबकु कर सगा ॥ दगा कोइकु नाहि देना ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ छोड दुनियांके फंदे ॥ तजिदे चिज हराम ॥ बंदगी कीजे वंदे ॥ १ ॥ बंदे वेहक छोडकें ॥ हकपें रहो हजुर ॥ *जुसा फनां समजानके ॥ तजो मान मगरूर ॥ तजो मान मगरुर ॥ शूर होय सांज सबेरा ॥ रह्या नूर भरपूर ॥ ॥ दूर नाहि साहेब नेरा ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ महेर दिल रखो उमंदे ॥ हकपें रहो हजुर ॥ छोडदे बेहक बंदे ॥ २ ॥ बंदेया जग बागके ॥ बनमालि किरतार

* शरीर.

॥ चतुरासी लखजाती तरु ॥ ताके भेद अपार ॥ ताके भेद अपार ॥ रूप रंग न्यारे न्यारे ॥ नेन झरुखे बेठ ॥ सबनकुं आप निहारे ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ हरे कौजात मुकंदे ॥ बनमाली किरतार ॥ बाग जग हुके बंदे ॥ ॥ ३ ॥ बंदे भवजल बूडतें ॥ नरतन मिल्या जहाज ॥ नातम अजब नवीन अति ॥ सुंदर सबहिं साज ॥ सुंदर सबहीं साज ॥ माहिं मुरसद है मालम ॥ मारुत मेहेर मोरार ॥ काहिकुं न तरत जालम ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ समझवे गाफल गंदे ॥ नर तन मिल्या जहाज ॥ बूडतें भवजल बंदे ॥ ४ ॥ बंदे बाजि जगतकी ॥ ज्युं सुपनेको ख्याल ॥ नृपति होयो निंदमें ॥ जागें फेर बेहाल ॥ जागें फेर बेहाल ॥ फिरत घर घर अनकाजा ॥ छिनमें गये विलाय ॥ सेज त्रिये संपति साजा ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ रह्या नहि नाहिं रहंदे ॥ ज्युं सुपनेको खेल ॥ जगतकी बाजी बंदे ॥ ५ ॥ बंदे बालापन गया ॥ गया जुवापन हार ॥ ब्रधापन ब्रथा गयो ॥ तो न भज्या किरतार ॥ तो न भज्या कीरतार ॥ जन्म धरि झुठ कमाया ॥ साहेब समस्या नांहिं ॥ मिलि नाहिं पूरन माया ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ जमनकी मार सहंदे ॥ गया जुवा-पनहार ॥ अरुबालापन बंदे ॥ ६ ॥ बंदे जगमें बेलज्युं ॥ निश दिन खेंच्या भार ॥ कुड कपटका करम करि

॥ पोख्या निज परिवार ॥ पोख्या निज परिवार ॥सार कछु हाथ न आया ॥ साचा साहेब छोड ॥ जूठ सुखमें भर-माया ॥ दासत ब्रह्मानंद ॥ फिरत भवमें भटकंदे ॥ नि-शिदिन खेंच्या भार ॥ वेलज्युं जगमें वंदे ॥७॥ बंदे बहुत न कीजीयें ॥ अंतरमें अभिमान ॥ अपना किया नहोतहे ॥ करता हक सुलतान ॥ करता हक सुलतान ॥ हुकम विन पांन न डोले ॥ मगरुरीमें मूढ ॥ काहेकुं बकबक बोले ॥ दासत ब्रह्मानंद ॥ पलकमें हिं काल ग्रसंदे ॥ अंतरमेंहि अभिमान ॥ बहुत कीजे नहि बंदे ॥ ८ ॥ बंदे आय बनजकुं ॥ ले मूडी संसार ॥ एकुं लाभ कमाइआ ॥ एकुं गये सब हार ॥ एकुं गये सबहार ॥ अकल बिन मूढ अग्यानी ॥ सुखमें र-ख्या शरीर ॥ जीवकी पीर न जांनी ॥ दासत ब्र-ह्मानंद ॥ फेरे चहुखाण फिरंदे ॥ ले मूडी संसार बनजकुं आए बंदे ॥ ९ ॥ बंदे एसा बोलियें ॥ सबकुंइ लागत स्वाद ॥ श्रवन सुनत सुख उपजे ॥ होत धनीकी याद ॥ होत धनीकी याद ॥ व्रथा बकबाद न कीजे ॥ तजि दुनियांकी बात ॥ जकर साहेबकी लीजे ॥ दासत ब्रह्मा-नंद ॥ रहो हरिनाम जपंदे ॥ सबकुंइ लागत स्वाद ॥ बोलीयें एसा बंदे ॥१०॥ बंदे तहां न बेसीयें ॥ अहोनिश जहां अनित ॥ पापी जीव प्रसंग तें ॥ होत पाप मेंहि प्रीत ॥ होत पापमेंहि प्रीत ॥ नीत मरजाद नबूजे ॥

नीच संगके रंग ॥ धर्मका राह न सूझे ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ एहि विधि संत कहंदे ॥ अहोनिश जहां अनित ॥ वेसियें तहां न वंदे ॥ ११ ॥ वंदे वातुं समझले ॥ जाहर जग व्यवहार ॥ होतन तन मनगारतें ॥ फरजन विन भरतार ॥ फरजन विन भरतार ॥ होत नहि निश्चे जानो ॥ दिल अंतर दिदार ॥ सत्य करि ताहि प्रमानो ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ रहम एहि संत रखंदे ॥ जाहर जग व्यवहार ॥ समझले वातुं वंदे ॥ १२ ॥ वंदे रीती वाहरकी ॥ समझ रखत हे संत ॥ अंतरकी गति ओरहे ॥ ज्युं हस्तिके दंत ॥ ज्युं हस्तिके दंत ॥ दीर्घ जगमें दरशावे ॥ मुखमेंहि राखत गुप्त ॥ जेहि करीकें निज खावे ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥देह धरि जग वरतंदे ॥ समझ रखत हे संत ॥ वाहारकी रीती वंदे ॥१३॥ वंदे १द्रिफल व्रक्षहे ॥ २ती न मूल १ रस चार ॥ २ पंच भेद ॥ ३ षट आतमा ॥ ४ सप्त त्वचा ५ अठडार ॥ सप्त त्वचा अठडार ॥ ६ छिद्र नव ७ दश हे पाने ॥ ताकुं जानत कोक ॥ ओलिये संत सयांने ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ ८ पंखि

---

१ सुखदुख. २ त्रणगुण.

१ धर्म अर्थ काम मोक्ष. २ पांच ज्ञानेंद्रिय. ३ छ ऊर्मि. ४ सात धातु. ५ पंच महा भूत मन बुद्धि अहंकार. ६ इंद्रियोना द्वार. ७ दश प्राण. ८ जीव अने ईश्वर.

दोय मित्र रहंदे ॥ तीन मूल रस चार ॥ व्रक्ष द्विफल हे वंदे ॥ १४ ॥ बंदेतन होका बन्या ॥ नहचा निश्चे लाग ॥ चित चलम मन चिपीया ॥ आग त्याग वैराग ॥ आग त्याग वैराग ॥ बजर ममताकुं बारी ॥ पंच नसंग प्रवीन ॥ खेंचीयें समझ बीचारी ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ ध्यानका मेर सोहंदे ॥ नीर ग्यान हक नाद ॥ बन्या तन होका वंदे ॥ १५ ॥ बंदे केफी बन रहो ॥ सो फीरहना नांय ॥ एसा अमल न कीजियें ॥ जो चर्डि उतर जाय ॥ जो चाडि उतर जाय ॥ कहा सो अमल बजारी ॥ आठ पहोर हरि याद ॥ टलत नहि प्रेम खुमारी ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ सदा चकचूर छकंदे ॥ ग्यान ध्यान द्रगलाल ॥ वने रहो केफी वंदे ॥ १६ ॥ वंदे तन कुंडी वनी ॥ घोंटा ध्यान सुधीर ॥ वजीया व्रह वैरागकी ॥ रगडत फूल फकीर ॥ रगडत फूल फकीर ॥ नीर निरमल हरिजाना ॥ मन ममाला डार॥मस अंचले कारि छाना॥दाखत ब्रह्मानंद ॥ रहे नित केफ चडंदे ॥ पीवत प्याला प्रेम ॥ बनी तन कुंडी वंदे ॥ १७ ॥ वंदे वहुत न वोलियें ॥ अंतर धरी अहंकार ॥ तेरा कीया न होतहे ॥ करता सरजनहार ॥ करता सरजनहार ॥ करत पेदा सोई मारे ॥ करत रावकुं रंक ॥ रंक शिर छत्राहि धारे ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ सोइ खावंद

सबहंदे ॥ सोइ सहेगा नांई ॥ बहुत बोल मतबंदे ॥१८॥

॥ अथ मनको उपदेश अंग ॥

॥ मनवा मरना साचेह ॥ जीवन झुठाजान ॥ कौका बुरा न कीजीयें ॥ दोदिनके मजमान ॥ दोदिनके मजमान ॥ पिंड करि पाप न कीजे ॥ अंतर तजी अहंकार ॥ शरण साहेबका लीजे ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ घटत आयुष प्रति दनवा ॥ जीवन जूठा जान ॥ साचेह मरना मनवा ॥ १९ ॥ मनवा बाजत मोतके ॥ रात दिवस रणतूर ॥ देह गेह सब दोलतां ॥ आखर होवत धूर ॥ आखर होवत धूर ॥ कुर नहि सत्य करि जानो ॥ पाव पलकके मांहि ॥ रहे नहि ठोर ठकांनो ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ राख कछु जीव जतनवा ॥ रातदिवस रणतूर ॥ मोतकि बाजत मनवा ॥२०॥ मनवा मोज मोरारकी ॥ या सुंदर नरदेह ॥ कृष्ण चरनमें प्रीतकरी ॥ लाभ अलोकीक लेह ॥ लाभ अलोकिक लेह ॥ एह अवसर नहि आवे ॥ मायाके हित मूढ ॥ काहेकुं ईत उत धावे ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ काल खावत छीन छीनवा ॥ या सुंदर नर देह ॥ मोजहे हरिकी मनवा ॥ २१ ॥ मनवा माया नैमिले ॥ बिन साहेबके लेख ॥ निशदिन ततपर होयके ॥ लख प्राक्रम करिदेख ॥ लख प्राक्रम करि देख ॥ एक कौडी नहि पावे ॥ हकमत करें हजार ॥ पार उददिके जावे ॥

दाखत ब्रह्मानंद ॥ भाग विन लहे न धनवा ॥ करतुं अनंत उपाय ॥ मिले नहिं माया मनवा ॥ २२ ॥ मनवा मूरखतुं सही ॥ वरतत बाराहिं वाट ॥ कृष्ण चरनकुं त्याग कें ॥ घरत विषेके घाट ॥ घरत विषेके घाट ॥ हाथ कछुवे नहि आवे ॥ मायाके हित मूढ ॥ व्रथा युंहि जन्म गमावे ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ होत नहि फूल गगनवा ॥ वरतत बारहि वाट ॥ मूढ तुं निश्चे मनवा ॥ २३ ॥ मनवा मान न कीजीयें ॥ सहे न सरजनहार ॥ जो जो मानी जगतमें ॥ सो नर होवत ख्वार ॥ सोनर होवत ख्वार ॥ आप सब करता जाने ॥ गाडी तानत बेल ॥ श्वान निज समरथ माने ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ सदा त्रय ताप जरनवा ॥ सहे न सरजनहार ॥ मान नहि किजे मनवा ॥ २४ ॥ मनवा तेरे मोतको ॥ निश्चे एहि निरधार ॥ ज्युं पानीके बुदबुदे ॥ मिटत लगत नहिवार ॥ मिटत लगत नहिवार ॥ जीवना जगत जरासा ॥ तापें बाग लगाय ॥ रखत फल खावन आसा ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ समर श्रीकृष्ण चरनवा ॥ निश्चे एहि निरधार ॥ मोत तेरेको मनवा ॥ २५ ॥ मनवा टेक न मेलियें ॥ जो साची शुभ होय ॥ श्रीसद्गुरुके सुकन पर ॥ तन धन दीजे खोय ॥ तन धन दीजे खोय ॥ तौ मनमें नाहि डरना ॥ अंतर धरि उछाव ॥ पाव पीछा

नहि भरना ॥ दाखत ब्रह्मानंद सोइ साचा हरि जनवा ॥ जो साची शुभ होय ॥ मेलियें टेक न मनवा ॥ २६ मनवा मंदिर मालियां ॥ दोलत देश विलात ज्युं बादरकी छांईडी ॥ छिनमें आवत जात ॥ छिनमें आवत जात ॥ वार कछुवे नहि लागे ॥ उठगये भूप अनेक ॥ देख तेरे दृग आगे ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ नहिं थिर रहनवा ॥ दोलत देश विलात॥मालीयां मंदिर मनवा॥२७॥ मनवा ममता मेलदे ॥ अंतर देख विचार ॥ कोंके भेला नाचला ॥ देह गेह परिवार ॥ देह गेह परिवार ॥ कबहु भेला नहिं आवे ॥ इनके काज अबूज ॥ काहेकुं पाप कमावे ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ अजहु पुनि चेत अज्ञवा ॥ अंतर देख विचारि ॥ मेलदे ममता मनवा ॥ २८ ॥ मनवा चीठी मोतकी ॥ आवत लगे नाहिं बेर ॥ सिध साधक अरु ओलिये ॥ कोसें परे न फेर ॥ कोंसें परे न फेर आय कागद उठ जावे ॥ हुकम बिना दम एक ॥ को पुनि लेन न पावे ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ गने नहि बाल तरुनवा ॥ आवत लगे न बेर ॥ मोतकि चीठि मनवा ॥२९॥ मनवा मलकत मेलकें ॥ चलना सांज सवेर ॥ मात पिता सुत जूवती ॥ सबहिं रहवे हेर ॥ सबहिं रहवे हेर ॥ केश गहिकें लेजावे ॥ धन रहे घरनी मांय ॥ पछें कर घसी पीछतावे ॥ दाखत ब्रह्मानंद उतारा ॥ होत अरनवा

॥ चलना सांज सवेर ॥ मेलकें मलकत मनवा ॥३०॥ मनवा या संसारमें ॥ क्या लेजाना साथ ॥ जो घरमें होय संपति ॥ तो दीजे निज हाथ ॥ तो दिजे निज हाथ ॥ सोइ नर अरथ कमानो ॥ संसारी हित कीयो ॥ प्रगट जगमें लूटानो ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ पाय धन कीजे पुनवा क्या लेजाना साथ ॥ एहि जगमेंसें मनवा ॥ ३१ ॥ मनवा मूरख तुं सही ॥ निज सुखकुं नहि चात ॥ अम्रत ओषद परहरि ॥ झहर हलाहल खात झहर हलाहल खात ॥ ताहितें तुं अति बौरा ॥ आत न हरीकी ओट ॥ जात विषयनके ओरा ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ फेर चहु खान फरनवा ॥ निज सुखकुं नहिं चात ॥ सहि तुं मूरख मनवा ॥ ३२ ॥ मनवा फिर फिर नै मिले ॥ सुंदर नर तन साज ॥ संत सीखामन श्रवन धरि ॥ करले अपना काज ॥ करले अपना काज ॥ आज चेतनकी वेरी ॥ पीछें घसही हाथ ॥ होत तन धुरकि ढेरी ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ जनमकि मार सहनवा ॥ सुंदर नर तन साज ॥ मिले नै फिर फिर मनवा ॥३३॥ मनवा माया जोरतें ॥ सब उंमर गै वीत ॥ माया हरि दौ नां मिले ॥ निरफल भया फजीत ॥ निरफल भया फजीत ॥ गै हथ दोनुं बाजी ॥ सु धरयो नै संसार ॥ किया न साहेब राजी ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ भमे भांडन के दुनवा ॥ सब उंमर गै बीत ॥ जोरतें माया

मनवा ॥ ३४ ॥ मनवाया संसारमें ॥ सुर सिपाई संत ॥ लडते ओटन लेवहीं ॥ चोट नहीं चूकंत ॥ चोट नहि चूकंत ॥ रहत खावनके आगे ॥ पीछा धरे न पाव ॥ तन ममताकुं त्यागे ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ मार अरि रहत मगनवा ॥ सुर सिपाई संत ॥ एहि जगके महि मनवा ॥ ३५ ॥ मनवा पेटी प्रेमकी ॥ हक वरछी ले हाथ ॥ ग्रहि खडग गुर ग्यानका ॥ चल्या रीझावन नाथ ॥ चल्या रीझावन नाथ ॥ ढाल धीरज ले आगे ॥ त्रीगुन रहित शिर टोप ॥ लडत शिर अंवर लागे ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ देत नहिं पीठ डगनवा ॥ ॥ हक वरछी ले हाथ ॥ प्रेमकी पेटी मनवा ॥ ॥ ३६ ॥ मनवा साचे सुरके ॥ अरि बखानत घाव ॥ हिंमत चलन हरोलकी ॥ पीछा धरे न पाव ॥ पीछा धरे न पाव ॥ आप मरि साम रिझावे ॥ लाखुं दलके बीच ॥ अकेला धंध मचावे ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ वीर अति धीर धरनवा ॥ अरि बखानत घाव ॥ सुर साचे के मनवा ॥ ३७ ॥ मनवा या संसारमें ॥ रहना हे दिन चार ॥ तन धिर भल पन लीजीयें ॥ बुरा न कीजे यार ॥ बुरा न कीजे यार ॥ सब तजकें मरिजाना ॥ साहेबका होय चोर ॥ गारि लोकनकी खाना ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥

रहे नहि धरकें तनवा ॥ रहना है दिन चार ॥ ए-
हि जगभाई मनवा ॥ ३८ ॥ मनवा या संसारमें
॥ सब स्वारथियां लेख ॥ यामें तेरा को नहि
॥ दिल दीदुं करि देख ॥ दिल दीदुं करि देख ॥
कहत सबकुंइ तुंमेरे ॥ जब घेरे जमराण ॥ तब को
नावत नेरे ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ अकेला होत ग-
मनवा ॥ सब स्वारथिया लेख ॥ मिले नहि तेरा
मनवा ॥ ३९ ॥ जगमें केता जीवना ॥ क्या लेजा
ना साथ ॥ पाप पुन्य दो संग चले ॥ जो कीने
निज हाथ ॥ जो कीने निज हाथ ॥ एहि भातो न
र तेरो ॥ ओर सबे खिल छोर ॥ लेत कटिको
कंदोरो ॥ दाखत ब्रह्मानंद ॥ लीया तोकुं लग ब-
गमें ॥ क्या लेजाना साथ ॥ जीवना केता जगमें
॥ ४० जगमें अपने जीवका ॥ चले भला ततखेव
तो कर हरिकी बंदगी ॥ अरु साधुकी सेव ॥
अरु साधुकी सेव ॥ कपट तजकें नित कीजे ॥ साचा
जुठा संत परखकें अंतर लीजे ॥ दाखत ब्रह्मानंद
॥ टाल बेठक खल ठगमें ॥चहे भला ततखेव ॥ जीव
अपनेका जगमें ॥ ४१ ॥ इति कुंडलिया संपूर्ण ॥

॥ ॥ अथ *मुकुंद बावनी ॥ ॥ ॥ छपय ॥

एहि मंगला चरन हरन मद मोह अपारा ॥ १श्रीगो-
विंदको ध्यान धरत उर करत उजारा ॥ तोहि
प्रकाश महि दास भक्ति महिमा दरसायो ॥ धर्म

*मुक्तानंद स्वामिकृत.श्री १

भक्ति भगवंत सबे मम उर महि आयो ॥ अब ऐसे अद्भुत रूपकुं वारवार वंदन करूं ॥ कहे मुकुंद मन वच कर्म करि यह नित मंगल आचरूं ॥ १ ॥ २उँलमो उँकार आदि सचराचर स्वामि ॥ अधम जनन उधार काज प्रगटे बहु नामि ॥ सर वरीयां गुन श्रेष्ठ विप्रज्ञाति वपु धार्यो ॥ अति अद्भुत किए चरित जगत जनको अघ टार्यो ॥ जेहि पाद शौच शिव शिर धरे तेहि पद रज वंदन करूं ॥ जन मुकुंद मो प्रभु प्रगट पुनि नित चरननमें चित धरूं ॥ २ ॥ *३नरनारायण नांई प्रगट जग महाव्रत किनो ॥ कलिके मध्य कृपाल अभेपद अधमनि दिनो ॥ चरित किए सम सुधा गहत जन गुन पर जावे ॥ जेहि परसे पद धुरि बहुरि भवमें नहि आवे ॥ श्रीधर्म पुत्र पूणंदु जिमि करि करुणा चरचा श्रवे ॥ को मुकुंद हे अस जीव जड जेहि सुणते नहि चित द्रवे ॥ ३ ॥ ४मन मतंग वसिकरन हरन मद मोह उजागर ॥ शरणागत सुख खानि विर्द सदगुन के सागर त्याग तेज बल प्रबल कहां लगि कहुं बखानि ॥ तुमहो तुमसे नाथ ओर उपमा जड जानि ॥ प्रभु महंत मान माया दमन समन मुकुंद सब तापकुं ॥ श्रीसहजानंद वंदु सदा अनभे अखंड अमापकुं ॥ ४ ॥ ५सिश सबनके सोई इस उर अंतरजामि ॥ एहि मम

२उं ३न ४मः ५सि

*नरनारायणनी पेठे जगतमां प्रगट रीते महाव्रत करयुं.

उर कारि अयन वयन बोलत बहुनांमि ॥ करता शोकवि नाम शाम इच्छा अस आई ॥ ज्ञान भक्ति वैराग कहुं सतसंग सहाइ ॥ शुक नारदादि प्रहलाद पुनि सतसंगतीं हरिजन भये ॥ जन मुकुंद मन वच कर्म कारि जो सतसंगतिमें रये ॥ ५ ॥ ६धन्य धन्य सो जन सोधि सतसंगति आयो ॥ तिरथ व्रत जप जोग सबनको फल सो पायो ॥ *कियो वचनमें वास भयो तेहि वेहदवासा ॥ हरि हरिजन रस रुप रहत तहां प्रगट प्रकासा ॥ जेहि मन वचन पर वेद कहे तेहि सुखमें संतत रहे ॥ जन मुकुंदसो सतसंगको महि-माको मुखमें कहे ॥ ६ ॥ ७अनायास भवतरे शरण सद्गुरुके आवे ॥ सद्गुरु बिन सुख नाहि अविद्या अति भरमावे ॥ आवरण अरु विक्षेप साक्तिहे सो मायकि ॥ ताके पंच प्रवाह प्रबल धारा पुनि वाकि ॥ तहांवहे निरंतर मोह वश देव दनुज नर सब गए ॥ जनमुकुंद सो नहि वहत जीन गुरु गोविंद महातम लए ॥ ७ ॥

६ छं.

* जेणे भगवानना वचनमां वास कर्यो तेनो हद वगरनुं जे भगवाननुं धाम छे तेमां निवास थयो अने त्यां भगवान तथा भगवानना जनो आनंदना रस रुप थईने मतलबके आनंदमय थईने त्यां प्रगट प्रकाशमान थईने रहेछे.

८ आग्य लगि चहु ओर अविद्याकि आति भारि ॥ अधोउर्द्ध अरु मध्य दशोदिश भुजा पसारि ॥ विषई भोग विलास कर्मिको कर्म हढायो ॥ कवि गुनि पंडित जाणता हिले तहां डुबायो ॥ तेहि वाक जाल डारि विकट नरनारि आव्रत किए ॥ जन मुकुंदमद मछर लाग्यो युं माया वस कर लिये ॥ ८ ॥ ९ इन मायाकुं तरन करत नरकोटि उपाई ॥ सित घाम सहि करे तपस्या वन फल खाई ॥ कोइक साधे योग अष्ट अंगानि कारि जोगि ॥ कोइक फिरे उदास विषे परपंच वियोगि ॥ सद्गुरुहि विना साधन सकल किए न पावे पारकुं ॥ जन मुकुंद सुख पावे सहि सो पुनि पुनि संसारकुं ॥ ९ ॥ १० ईश इंद्र अज धाम गए नर अति सुख पावे ॥ काल पाय पुनि पडे अचल नहि उहां रहावे ॥ जनम मरण जन धरे प्रभुपद ज्ञान न जहांलुं ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल लोक त्रय भ्रमे तहांलुं ॥ प्रभु सेवा विन सोई अजा तरन महा दुस्तर भइ ॥ जन मुकुंद प्रभुपद सेवसो उलटी दासि होरई ॥ ॥ १० ॥ ११ उरमे वेठि अजा करत उद्वेग अनेका ॥ काम क्रोध मद लोभ आदिं अतिसे अविवेका ॥ नाम रूप नहि *प्राय ताय ले सत्य विचारे ॥ अह निस वासि उरमांहि देह तुं शब्द उचारे ॥ साधक

* बहुधा.

सिध मुनिजन मिलि रिधि पुनि सिधिकुं साधत रहे ॥ जनमुकुंद हरिरत संत विन को माया मिथ्या कहे ॥ ११ ॥ १२ ऊन मायाकुं तरन प्रगट यह पोत उदारा ॥ श्री हरि अरु सतसंग मिलत भये भवजल पारा ॥ ज्ञान भक्ति वैराग संतसंगतिमें पावे ॥ बडभागि सो जन सोधि सतसंगति आवे ॥ नित प्रगट रहे परिब्रह्म जहां दरस परस पातक हरे ॥ जन मुकुंद सो सतसंगकि साधनको समता करे ॥ १२ ॥ १३ ऋग जजुर अरु शाम अथर वण वात प्रमानि ॥ नरतन कारण वेद पात्र यह गुरु जानि ॥ कर्म उपासन ज्ञान कांड त्रय वेद बखाने ॥ सो सब नरतन साध्य ओर कोहु नहि जाने ॥ श्रुति सकल शास्त्र इतिहासको तान लगत नर तन विषे ॥ जन मुकुंद मोहवश्य अंध सब गुरु दृष्टि विन नांदिखे ॥ १३ ॥ १४ ऋुन स्वप्न संसार ताहिकारि सत्य विचारे ॥ भर्म कर्म वसि सुर वृथा नरदेह बिगारे ॥ या तन करि हरि लहे तास करि कर्म उपावे ॥ ऐसे मतिके मंद सुख सुपने नहि पावे ॥ अति मोह जाल आवृति मति नहि पावत हरिज्ञानकुं ॥ जन मुकुंद तब हरि मर्म लहे ग्रहे वचन तजि मानकुं ॥ १४ ॥ १५ एहि तनकरि अज लोक लहे सुख बहु विधि पावे ॥ एहिं तन

इंद्र मुनिंद्र एहि तन अमर कहावे ॥ एहि तन माधे जोग सिधि अणिमादिक पावे ॥ एहि तन होइ हरिदास बहुरि भवमें नहि आवे ॥ यह ऐसो अद्भुत मनुष्य तन अति दुर्लभ पायो अबे ॥ जन मुकुंद मन वच कर्म करि हरि भजतज व्याधि सबे ॥ १५ ॥ १६ * ऐ पति अज सारदा करत न-रतन गुनगाना ॥ करण धार करुणा निधान सद्गुरु सुखदाता ॥ करुणा निधी कृपाल वीमल यह जानहुवाता ॥ अब नहि जो भवसागर तरे सो आ-तमघाति सहि ॥ जन मुकुंद महिमा मनुष्य तन कर बजायके कैदहि ॥ १६ ॥ १७ कर विचार नर कौन कहे तुं कहांसें आयो ॥ अब जानो कइ काहां इहा कोय थिर नरहायो ॥ जो तोकुं गम नाहि खोज सद्गुरु सतसंगा ॥ वारवार नहि मिले अनोपम ऐसो अंगा ॥ सब विन विचार विते दिना चेत चेत नर सांनमें ॥ जन मुकुंद मोहवश अकड हो क्युं सुतो अग्यानमें ॥ १७ ॥ १८ खलता बढि अपा-र भेस धरि जग भरमावे ॥ काम क्रोध रत लोभ भक्ति उरमें नहि भावे ॥ आपे भर्म्यो भूर ओरकुं अति भर्मावे ॥ द्रव्य हरनेके हेत गुरु होय ज्ञान बतावे ॥ यह नरक पंथ निनु विकट गितामें गोविंद

* आहि.

कहे ॥ जन मुकुंद सो मग गुरु चले शिष्य कहां शांति लहे ॥ १८ ॥ १९गगा गुरु सो जान सानमें ष्याम बतावे ॥ कर्म हरे दे ज्ञान अविद्या उरसे जावे ॥ देह इंद्रि मन प्रान सत्य सुपने नहि भासे ॥ किये वचनमें वास एक उर हरि प्रकासे ॥ मन सकल शोक संसे समें रमे निरंतर राममें ॥ जन मुकुंद सो सद्गुरु बिना को पहोचावे धाममें ॥ १९ ॥ २०घर घर सो गुरु नांहि एक है गुरु अविनासि ॥ निगमागम प्रतिपाद्य ज्ञान घन महा सुख रासि ॥ स्वार्थ नहि लवलेश परम परमार्थ रुपा ॥ करत सुखद उपदेश श्रुति कहे अगम अनुपा ॥ नर ऐसे गुरु विज्ञानकुं कोहु न पावे मनमुखि ॥ जन मुकुंद सद्गुरु सेव सो सद्य होत सो जन सुखि ॥ २० ॥ २१डम नाहीं नर नास्य भर्म वश सकल भुलाने ॥ मिले जो ठगमग मांहि मित्र करि ताकुं माने ॥ कहे हम तुमरे शरन वेहि धन हरन विचारे ॥ दगा बाज बेदर्द गरे १मत फासि डारे ॥ सब अंध अंध पिछे चले कुप परे के पचि मरे ॥ जन मुकुंद मोह निशिमे सकल सद्गुरु बिन भटकत फिरे ॥ २१ ॥ २२ चलन शके डग एक कहे में फिर ब्रह्मांडा ॥ अपनि उडेन माख कहत तोरुं नवखंडा ॥ त्युं गु-

२१ग. १पोताना मनरुपी.

रुकुं नहि ठोर फिरे मायाका फेरा ॥ सरवस हम-
कुं देह मिटाउं भवजल फेरा ॥ बिन रहम मुख
कथनि कथे जरत रहे त्रय तापमें ॥ जन मुकुंद
सद्गुरु बिन हरि कोन जपावे जाबेम ॥२२॥ २३छल
बल हृदे अपार बाह्य बग ध्यान लगावे ॥ द्रव्य
हरनके हेत साह सो ठग बनि आवे ॥ मणिधर
ज्युंले धरे शब्द मणि करे उजारा ॥ तेहि प्रकाश
के जोग मिले अह निश आहारा ॥ तब तिन लगे
दृष्टांत तेहि ज्ञान विना जो गुरु भये जन ॥ मुकुंद
सद्गुरु संत बिन जन्म विगोवत ते गए ॥ २३ ॥ २४ज-
रोजो जिवन तास राम रत नहिं धरि प्रेमा ॥ दा-
म चाम पर हेत हृदे हरिजन सुद्रेषा ॥ उरमें त्रश्ना
अधिक सदा धन धाम सवारे ॥ यह कलियुगको रुप
प्रगट कहि वेद पुकारे ॥ जो ज्ञान ध्यांन रत चहत
सो काम क्रोध आश्रित भए ॥ जन मुकुंद कलि
कौतुक निरषि सद्गुरुके सरने गए ॥ २४ ॥ २५झरत
रहे दिन रेन असंभव शद्ध अखंडा ॥ तेहि नाद
झणकार पुरि रह्यो पिंड ब्रह्मंडा ॥ षट चक्रनके
मध्य छमे अरु सहस्र एकीसा ॥ शद्ध ब्रह्म सो सुने
मिले जेहि गुरु जगदिसा ॥ हे जिवरुप गुरु जग
घने बेहद गति वाकि नहि ॥ जन मुकुंद मनवस
जीव सब यह सुख बिन मायामहि ॥ २५ ॥ २६झिन

मुखको अधिकार कहुं अब लक्षन ताके ॥ इक दश साधन सहित अचल इंद्रिय मन जाके ॥ साचे सद्गुरु सोधि मिले तब तन मन देवे ॥ करे वचनमें वास आस तजिं सब विधि सेवे ॥ करि श्रवन मनन अभ्यास दृढ हरि सेवा हारद लहे ॥ जन मुकुंद हरि साक्षातहे सबहि व्याधि उरसें दहे ॥ २६ ॥ २७ टरत नाहि यह लक्ष दक्ष दिल भयो अभंगा ॥ करे कोन अब आड जिहां नहि कुमति प्रसंगा ॥ दिव्य रु मानुष एक रुप करिके दृढ चिना ॥ अलख लख्या साक्षात भई यह वात नविना ॥ अति ध्येय सु ध्याता लागि रह्यो सहज अंग आयो जबे ॥ जन मुकुंद गुरुकि मोजसें सुख अखंड पायो अबे ॥ २७ ॥ २८ ठर न सके यह लक्ष भक्ति बिन ब्रह्मा आदि ॥ भक्ति वश्य भगवान अचलय हरित अनादि ॥ करे ज्युं साधन कोटि तास करि राम न पावे ॥ भक्ति करत भव सिंधु वछपद वत हो जावे ॥ अब ऐसि अविरल भक्तिसो संत समागम पाइये ॥ जन मुकुंद सो माहंतके गुन लक्षन अब गाइये ॥ ॥ २८ ॥ २९. डर सब दिनो डारि सार ग्राहि सुख रुपा ॥ वरतन पंच निवास दास गति अगम अनुपा ॥ सुख दुख सम भाव मित्र शत्रु नाहि माने ॥ निंद्या स्तवन समान लाभ हानि सम जाने ॥ अष्टहु सिधि

नवनिधिकी आस नहि उर जाहिके ॥ जन मुकुंद सो महंत जन वचन ग्रहिजे ताहिके ॥ २९ ॥ ३० हरिये ताकेहार नारि धन निपट उदासि ॥ तन सुख त्रश्ना साग मिटाइ ममता फांसि ॥ अनिकेत आनंद ग्यान-मय अनुभव अंगा ॥ सब तिरथको सदन चरन जेहि चाहत गंगा ॥ जो ब्रह्मवेता सो ब्रह्महे वेद वचन गिता कहे ॥ जन मुकुंद इन माहंतके संग सद्य भक्ति लहे ॥ ३० ॥ ३१ ण नारायण वचन ग्रहे सो ब्रह्म स्वरूपा ॥ वचन विना अति तुछ भए त्रीभुवनको भुपा ॥ अल्प अकिंचन जंत वचनमें वडगति पावे ॥ श्रीहरिवचन प्रताप सेष सारद गुन गावे ॥ शुक नारदादि सुत आदि जो वालमिक वडतालहि ॥ जन मुकुंद महिमा वचनके सतकोटि किरत कहि ॥३१॥ ३२ तपतिर्थ व्रत वचन वचन वर्णाश्रम धर्म ॥ वचन जोग जप साग वचन बिन सकल अधर्म ॥ वचन भक्ति वैराग्य ज्ञान गुन वचननिं पावे ॥ ज्युं कुंजरके खोज ओर सब खोज समावे ॥ जन अकथ इश महिमा लखे वचन निवासि होयके ॥ जन मुकुंद मोह वश वचन तजी जावे जन्म विगोयके ॥३२॥ ३३थर थर ध्रुजत रहे वचनमें इंद्र मुनिंद्रा ॥ थरथर ध्रुजत रहे वचनमें अवनि अहिंद्रा ॥ थरथर ध्रुजत रहे वचनमें ससियर सुरा ॥ थरथर ध्रुजत रहे रेन दिन

काल हजुरा ॥ हरि हरहि अज आदि सबे रहत भक्ति रत जाहिकी जनमुकुंद मोहवश मुढ नर करे न अग्या ताहिकि ॥ ३३ ॥ ३४दरद दाह भय शोक रेन दिन रहे अपारा ॥ जरत रहे त्रय ताप कोहु नहि टारनहारा ॥ काल कर्मकि फासि गहन गति गलबिच डारि ॥ मर्कट जु मतिमंद फंद आए नर नारि उर इश वचन नहि अनुसरे ऐसे दुख सहेव सहि ॥ जन मुकुंद लायकलात सो वात नहि माने कहि ॥ ३४ ॥ ३५धरमें करे विचार बात युं मनमें धारे ॥ हरि भक्ति हे कठिन कर्म कहां सुलभ हमारे ॥ भक्तिवश भगवान कर्मसे अधगति जावे ॥ एसो करे विचार भक्ति उरमें तब भावे ॥ उर उभे भांतिसें इशको न्याय विचारे नर जबे ॥ जन मुकुंद ममता त्यागिके हरिदास होवे तबे ॥ ३५ ॥ ३६नर जो छुटन चेह आस विषय नकि त्यागे ॥ निसप्रहि निष्काम लोभकी लहर न लागे ॥ निःस्वादि निर्मानि पंच वरतन दृढ पाले ॥ विषवेलि अहि वधु काल सम नारि निहाले ॥ अब ऐसिरिणि जो रहे साधु जन भाखे तबे ॥ जन मुकुंद पाचों वर्त्तकुं विगती सों वरनुं अबे ॥३६॥ ३७परम धर्म यह प्रथम प्रिति सबसें परित्यागे ॥ मधमाखी ज्युं होय जींहां कछु लालच लागे ॥ ऋषभ देवके पुत्र भरत जे प्रगट पुराना ॥ तिन

जन्म तेही धरे मृगिमें मन लोभाना ॥ तेहि दया करत दुबध्या भइ काम स्नेहि क्युं तरे ॥ जन मुकुंद गुरु यह मर्म लखि नर निग्रहि दृढ करे ॥३७॥ ३८फरत रहे भव फेर जास उर काम कुबुधि ॥ करे ज्यों साधन कोटि व्यर्थ सब लहेन सुधि ॥ रवि मंडल नहि रेन रेन तिहां रवि न प्रकासे ॥ राम तहां नहि काम काम तहां राम न भासे ॥ हे नरक पंथ पर्धान यह ताते नारि ना भजो ॥ जन मुकुंद मन वच कर्म करि अष्ट अंग मैथुन तजो ॥ ३८ ॥ ३९बन वन ढुंढत फिरे जोग धरि रिद्ध रसायन ॥ घर घरमें यह बात नारि नर लोभ परायन ॥ जोवन गत गत काम लोभ जब हु नहिजावे ॥ मुए सो मागे श्राद्ध साजिवन क्युं सुख पावे ॥ तेहि ब्रह्मरुप गुरु जब मिले तनधन त्रण सम परहरे ॥ जन मुकुंद यह मग नरकको लोभ लागी जनमे मरे ॥ ३९ ॥ ४०भमर कुरंग मतंग मिन ज्युं मरे पतंगा ॥ एक एकेक स्वाद तज्यो तिन प्रानसंगा ॥ नरतन पांचु प्रबल सकलको रसना कारन ॥ वृक्ष मुलहे डार पात फुलनि विस्तारन ॥ यह अन्य इंद्रि त्युं बस किए नाहि जितेंद्रिय जानिये ॥ जन मुकुंद जब रसना जिते सकल व्यस्य परमानिये ॥ ४० ॥ ४१ममत अहं के लार अहं तहां काम उपावे ॥ अहं क्रोधको रुप व्याधि सब याते आवे ॥ सब साधन फल व्यर्थ अहंता जब

उर आइ ॥ अहंकारके ओट रहतहे शाम छिपाई ॥ सद्गुरु शिष्यको याहित मान रिपु मारे सहि ॥ जन मुकुंद भक्ति मर्म सुभ संक्षेप सवहि कहि ॥ ४१ ॥ ४२यह सतसंगति मार एहि हरि भक्ति कहावे ॥ पाले वरतन पंच नाम नारायण गावे ॥ गुरु वचन विश्वास आस मिथ्या सव त्यागे ॥ भजे ब्रह्म निष्काम मोक्ष आदि नहि मागे ॥ अध लव निमेष हरि भजन तजि तनके गुन नहि उर धरे ॥ जन मुकुंद जिवन मुक्त सो नाव रूप तारे तरे ॥ ४२ ॥ ४३ रहे रेन दिन रटन हृदेमें हर्ष अपारा ॥ श्रीहरि चरणे चित नित प्रति अधिक उजारा ॥ कच्छप सेवे दृष्टि कुंभ सुरता सु सेवे ॥ गुरु शिष्य संजोग याहि विधि देवत देवे ॥ रहे हित चकोरको चंदसु आग्य असन मुखनां जरे ॥ जन मुकुंद पोषक पियुषको चित व्रत्ति ताये धरे ॥ ४३ ॥ ४४ लगन राह हे कठिन चले सो सूर कहावे ॥ तनके सुख को चहे शिश विन रुंढ रहावे ॥ चौद लोकके भोग काक विष्टा समजाने ॥ लोकलाज मर्याद चरनदासि सम माने ॥ जब तन मन धन अरपन कियो ॥ कहो कहापि छे रह्यो ॥ जन मुकुंद जग मिथ्या गिने सत्य समरपन तिन लह्यो ॥ ४४ ॥ ४५ विग्र चित नाहि होय भजन सुनु संत सुजाना ॥ दुबधा खोवे दोय जगत ज्युं समझो सांना

॥ मगन भये मस्तान सिह ज्युं संत सुधिरा ॥ सुणे शब्दको नाद चले तहां सनमुख विरा ॥ अति प्रेम मगन परिब्रह्ममे अचल व्रत्ति होवे सहि ॥ जन मुकुंद आतम जानिकें हरि भक्ति दृढ कर लहि ॥ ४५ ॥ ४६ शम दृष्टि सुख दुख ग्यान जब गुरुसें पायो ॥ मोह नींद सो मिटि जगत भय भर्म नसायो ॥ सुपने भुप भिखारि जगि जब मिथ्या जाने ॥ ज्ञान नेन जब खुले आप आतम पहिचाने ॥ सो देह इंद्रि मन प्रानकुं आप न माने अब कबे ॥ जन मुकुंद मगन स्वरूपमे जगत नाहि भाषे तबे ॥ ४६ ॥ ४७ षट विषयन सुख त्याग राग हरि चरन निरंतर ॥ काम क्रोध मद लोभ कबहु नहि व्यापत अंतर ॥ रमे सदा राममें धाम अरु वाम विसारे ॥ श्रीनारायण नाम सदा मुखसें उच्चारे ॥ अरु धर्म ज्ञान वैराग जुत श्रीहरि कि भक्ति लहि ॥ जन मुकुंद गुरुकि मोजसे अकथ कथा समझे सहि ॥ ४७ ॥ ४८सप्त लोक सुख सत्य कबु सुपने नहि भासे ॥ श्रीहरि भजन प्रताप हृदय अग्यान विनासे ॥ *सद सद द्रिक्ति बिवेक अति दृढ उरमें आवे ॥ सतसंगति सदग्रंथ सदा तेही अतिशय भावे ॥ सद संप्रदाय सदग्रंथ जबसुने सुनावे गावहि जन मुकुंद मुक्त होवे तब फिर भवमें न

*सत्य असत्य.

हि आवाहि ॥ ४८ ॥ ४९.हरिहर अज शारदा अजा अहि-राज प्रजंता ॥ सब सेवत जेहि चरन सकृतिपर सो भगवंता ॥ एहि अनुभव एहि ज्ञान एहि सतसंग स्वरूपं ॥ एहि सद्गुरु साक्षात प्रगट परब्रह्म अनुपं ॥ जेहि वेद वचन मनपर कहे नर नाटक धरि सो रमे ॥ जन मुकुंद यह गुरु मर्म हे समझे तब व्याधि समे ॥ ४९. ॥ ५०क्षेम जोगकुं करन हरन अज्ञान पतंगा ॥ जुग जुगमें जगदिस अजोनि जन्म प्रसंगा ॥ धरे रूप नित निमत चित भांति उपजावन ॥ चरित सकल सुख करन पापके पुंज न सावन ॥ करुणारस सो करिके प्रगट समता तजि ममता करे ॥ जन मुकुंद सो संवाद सुनु शरनागत सोइ उद्धरे ॥ ५० ॥ ५१.त्रपित हरे जलत्रिपा गिरे तेहि प्रान गमावे ॥ सित त्रास तमहरे परे तेहि ज्यारि समावे ॥ शत्रु मित्र सम भाव करे सो निज फल पावे ॥ जल पावक ज्युं ब्रह्म निति नहि दुषण आवे ॥ हे यदपि स्वतंत्र तदपि हरि भक्त वश्य भारत काहि ॥ जन मुकुंद निजपण मेटिकें भिषम पण राख्यो साहि ॥ ५१. ॥ ५२.ज्ञाप्ति मात्र गुन पारसारसो श्रीहरि रुपा॥ अगम अथाह अपार सुगम सो प्रगट स्वरूपा ॥ जेस अग्नि स्वरूण सरूपी अरूपी कहावे ॥ रुपी अरूपी एक मर्म कोइ विरला पावे ॥ सरूपी अरूपी दो नाम सो एकरूप करिके कह्यो ॥ जन मुकुंद अनुभव एकता भर्म भुत

उरसें गयो ॥ ५२ ॥ रचि बावनि रसिक जनन चित चाह बढावन ॥ विषयकिं विषरूप मोह संताप कढावन ॥ यह जिज्ञासु सुने ताहि हरी हरदे आवे ॥ साधारण जन सुने विषे वैराग उपावे ॥ धर्म ज्ञान भक्ति वैराग जुत नर तन धरि सुमरे हरि ॥ जन मुकुंद महा आनंद निधि तिन हित यह भाषा करि ॥ ५३ ॥ संवत अठार सुद्ध त्रेसठे श्रावण मासे ॥ शुक्लपक्ष शुभ द्रितिय ग्रंथ गुरु कियो प्रकासे ॥ सुने सुनावे ग्रहे अर्थ उर सो सुख पावे ॥ भव सागर नाहि भमे कर्मवस सो न वंधावे ॥ अति अकथ कथा हे याहिमें सद्गुरु विन समझे नहि ॥ जन मुकुंद सद्गुरु संत जिहां आदर करि राखे तहि ॥५४॥

॥ इति मुकुंद बावनी संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री कृष्ण महिमाष्टक ॥ ॥ इंद्रव छंद ॥

॥ कर्णसे दानि धनाढ्य कुबेरसे ॥ सूझत चोज विधि समझिना ॥ वेद पुरान रू निति नरेशकि ॥ ताहिमें देव गुरुसे प्रविना ॥ तेज प्रताप दिवाकरसे ॥ जगमे दृढ दिगविजे कर लिना ॥ एसे भये तो कहा मुक्तानंद ॥ श्रीव्रजचंदसों नेह नकीना ॥ १ ॥ चंदसें शितल रूप अनंगसे ॥ देव गजाननसे जगमाने ॥ सिद्ध सिरोमनि गोरखशे ॥ कविराजहु काव्यमें खुब सयाने ॥ सूर जरासंघ रावनसें ॥ रिपु जितिके देश सबे घर आने ॥ एसे भये तो कहा मु-

क्तानंद ॥ कारनरूप श्री कृष्ण नजाने ॥ २ ॥ अमृतसे सबकुं सुखदायक ॥ शांत धरामें सदा उपकारि ॥ ताल नदि तरूसें परमारथि ॥ कर्त्त रहे निज काज विसारि ॥ पंडित भोगि पुरंदरसें ॥ भृगुसें महासिद्धनसें नरनारि ॥ एसे भये तो कहा मुक्तानंद जो न भजे हरिकुंजविहारि ॥ ३ ॥ थिरजवान धराधरसें ॥ सब कारजमें अतिशे सुविचारि ॥ टेक सबे नृप सिंघसके सम ॥ काहुतें लेश टरे नहि टारि ॥ कश्यपसें कीरति अरु वंस बढावनहारेह संमृथ भारि ॥ एसे भये तो कहा मुक्तानंद ॥ जोन भजे नंद लाल विहारि ॥ ४ ॥ कंचन मोल शचिशम कामनि ॥ वांछित भोग सदा रहे खाते ॥ नाते तुरंग बडे गिरिसें ॥ गज द्वारपें छाय रहे मदमाते ॥ प्राढ प्रतापी प्रजापतिसे ॥ रहे गंध्रव द्वार सदा गुन गाते ॥ एसे भये तो कहा मुक्तानंद ॥ श्री व्रजचंद के रंगन राते ॥ ५ ॥ शांत रहे मुनि जाजलिसे ॥ उरमें अवलोकि तजि सब खोरि ॥ कामरू क्रोध लोभादिकेक ॥ महा त्यागके जोर दिये मुख मोरि ॥ आतम निष्ट हु शंकरसें ॥ तनकि अहंता ममता सब तोरि ॥ एसे भये तो कहा मुक्तानंद श्री व्रजचंद्रसो प्रितन जोरि ॥ ६ ॥ ज्ञानि बडे मुनि गौतमसे पद वंदत

आयकें देव धराके ॥ जाहिको तेज प्रताप बिलोकत ॥ बादि बिवादि सबे अति थाके ॥ जाहु बडे जगदिस नेम ॥ जग भुपतिहु सब सेवक ताके ॥ ऐसे भये तो कहा मुक्तानंद ॥ श्रीनंदलालसो नेह न जाके ॥ ७ ॥ सिबि दधिचि हरिचंदसे ॥ सतवादि बडे सबहि जगजाने ॥ मानि बडे दुर्योधनसे ॥ तिसि दानि बलिनृप तुल्य प्रमाने ॥ शास्त्र बिवेक बिसार दसे ॥ मनहु किल्लवे इमि बोल सयाने ॥ एसे भये तो कहा मुक्तानंद ॥ श्रीव्रजचंद पिया न पिछाने ॥ ८ ॥ ॥ छप्पय ॥ यह अष्टक जो पढत ॥ त्रास भ्रमना सब भागे ॥ रसिक छेल घनशाम संग ॥ अतिसे अनुरागे ॥ टरत बिकट भव हेतु शत्रु कामादिक भारि ॥ अनायास उर बसत रसिक व्रज चंद बिहारि ॥ निज धर्म जुक्त श्रीकृश्नकि ॥ प्रेम भक्ति दृढ पावहि ॥ मुनि मुक्त कहे सो भक्त जन ॥ बहोरि न भवमें आवहि ॥ ९ ॥

कपटी भेष विषे ॥ ॥ कुंडलिया ॥ ॥

भेष बनावे संतका अंतर कपट अपार बगज्युं ध्यान लगायके धुते सब संसार धुते सब संसार ॥ संत अरु महंत कहावे ॥ करकर कपट अपार पराया धन घर ल्यावे ॥ दाखत मुक्तानंद रेन दिन धनकुं धावे ॥ अंतर कपट अपार संतका भेख बनावे

॥ १ ॥ भेष बनाया संतका फुंकि धरतहे पाव ॥ वानर उपर सिहने किया कपटका दाव ॥ किया कपटका दाव देखि वानर मन भाया ॥ यह कोउ साचा संत तिव्रतन भक्ति छाया ॥ दाखत मुक्तानंद चहत वानरकुं खाया ॥ फुंकि धरतहे पाव संतका भेष बनाया ॥ २ ॥ शरने आया सिहके साचा साधु जान ॥ लपट झपट मुखमें लिया निपट कपटकि खान ॥ निपट कपटकि खान जान वानर हशि दिना ॥ सिंध पर्‍यो मन सोच भई यह बात नविना ॥ पुछत विकस्या वदन वानरा वन पर धाया ॥ साचा साधु जान सिहके सरने आया ॥ ३ ॥ वनपर रोवे वानरा बुरि करि तें विर ॥ यावन विस्वासि घने ताकि मोकुं पिर ॥ ताकि मोकुं पिर संतका भेख बिगोया ॥ पेट काज करि कपट भक्तिका मातम खोया ॥ दाखत मुक्तानंद दुष्ट सबकि पत खोवे ॥ बुरि करि तें विर वानरा वनपर रोवे ॥॥४॥

॥ अथ हनुमानको स्तोत्र ॥ ॥ इदव छंद ॥

॥ निति प्रविन सबें निगमागम ॥ शास्त्रमें बुद्धि रु बंके अपारा ॥ श्रीरघुनाथके मंत्रि अनुपहो ॥ ताहिते रामकुं प्रानमें प्यारा ॥ प्रौढ शरिर सिंदुरसें सोहत ॥ नैष्टिकके मध्य इंद्र उदारा ॥ श्रीरघुविरके दूत महाबल ॥ कष्ट हरो हनुमान हमारा ॥ १ ॥ जानकि

कारन श्रीरघुनाथके ॥ अंतरमें भयो कष्ट अनंता ॥
टारन ताहि सहायक एक ॥ हने मनुजाद महा बल-
वंता ॥ जारि निशाचर नाथकि लंक ॥ महा मुनि
सिद्ध प्रसंसत संता ॥ श्रीरघुविरके दूत महाबल ॥
संकट मोर हरो हनुमंता ॥ २ ॥ रावनके सुत शक्ति
चलाई सो ॥ आय लगि अतिशे दुखकारि ॥ कंठमें
प्रान रामानुजके हित ॥ ल्याये संजिवनि ओषधि
भारि ॥ ल्याये उठाय द्रोणाचल वेगसें ॥ रामके
पक्षकि पिरसो टारि ॥ श्रीरघुविरके दूत महाबल ॥
पिरहरो हनुमान हमारि ॥ ३ ॥ श्रीरघुनाथके आगम
किसो ॥ वधाइ ले भर्तकुं वेग सुनाई ॥ राम वियोग
महा दुख सागर ॥ डूबत भर्तसे मोजहु पाइ ॥ जानकि
नाथके अंघ्रि सरोजमें ॥ भ्रंग ज्युं जासमति लपटाइ
॥ श्री रघुनाथके दूत महाबल ॥ संकटमें रहो मोर
सहाइ ॥ ४ ॥ वायु स्वरुप जो केसरी वानर मानिनि
ताससो अंजनि नामा ॥ तास महा तप रुप भयो
सुत ॥ वायुकुमार अति अभिरामा ॥ वेग खगेश
समान वपु दृढ ॥ वज्रको अंग अति बल धामा ॥
श्रीरघुविरके दूत हरो सब ॥ संकट मोय करो
निषकामा ॥ ५ ॥ बात प्रकारकि डाकनि साकनि ॥
भैरव भूत अति विकराला ॥ कृत्या रु विर पिशाच नि-
शाचर ॥ जाहिकुं देखि डरे ततकाला ॥ जाहिको

मंत्र जपे सुत विचद ॥ टारत ताप रु रोग विशाला ॥ श्री रघुविरके दूत सदा मम ॥ कष्ट हरो हनुमंत कृपाला ॥ ६ ॥ जाहिको नाम सुनेसे ततक्षन ॥ भागतहे ब्रह्म राक्षस घोरा ॥ जाके प्रतापमें प्रेत पिशाच रु ॥ भागत भूत कवंध कठोरा ॥ जाके प्रताप डरे सब डाकिनि ॥ जोगिनि जादु भगे चहु ओरा ॥ श्री रघुविरके दूत महाबल ॥ हे हनुमंत हरो दुख मोरा ॥ ७ ॥ आपके भक्त अनन्यहे ताहिके ॥ वांछित कामके पुरनहारा ॥ दुर्बल दिन रिपु भय व्याकुल ॥ ताहिके हो तुम इष्ट उदारा ॥ वांछित मोर सो देहु दयानिधि ॥ ॥ वंदत हुं तोय वारहिवारा ॥ श्रीरघुविरके दूत महाबल ॥ कष्ट हरो हनुमंत हमारा ॥ ८ ॥ हाक तुमारि सुने जबहि तब ॥ राक्षसकि त्रिय गर्भकुं त्यागे ॥ जंत्र रु मंत्रके जान जादुगर ॥ नाम तुमार सुने डरी भागे ॥ ताहिते संकट नाश करो ॥ कहे मुक्त सदा प्रभुसों अनुरागे ॥ श्रीरघुविरके दूत महाबल ॥ हे हनुमंत एहि वर मागे ॥ ९ ॥ ॥ छपय ॥ यह अष्टक जो पढे ॥ तास सब संकट नासे ॥ रामदूत हनुमान ॥ सदा द्रग आगे भासे ॥ विघन होत सब नास ॥ मगन हो हरि गुन गावे ॥ पाप पुंज सब टरत ॥ बहोरि भवमें नहि आवे ॥ धन धान्य पुत्र संपति बढे ॥ कृश्न चरन रति पावहि ॥ मुनि मुक्त कहेसो भक्तके ॥ संकट

निकट न आवहि ॥ १ ॥ इतिश्री हनुमंतस्तोत्र संपूर्णम्

॥ अथ नारायण कवच ॥

विश्व रुप इंद्र प्रत्ये केहेछे हे इंद्र जेवारें भय आवे ते वारे नारायण रुप बगतर पेहेरवो ॥ ते पगथकि ते मस्तक पर्यंत नारायणनि मूर्त्ति अवतारादिक समेतना नाम ते सर्वांगने विषे धारण करवां ते केहेछे जे हरिछे ते मारि सर्व स्थानक थकि रक्षाने करो ॥ ते हरि केवाछे तो गरुडना वांसा उपर पग राख्याछे आठ हाथमां आठ आयुध धर्यां छे तेमां एकतो संख १ बिजो अरी ते चक्र २ त्रिजि ढाल ३ चोथी तरवार ४ पांचमी गदा ५ छठो तीर ६ सातमुं ते धनुष ७ आठमो पास ८ ए आयुधने अष्ट सिधि ए सहित छे ॥ पछे एम केवुं जे जलने विषे मत्स मूर्त्ति एवा जे भगवान ते जलजंतुना भयथकि ने वरुणना पास थकि मारि रक्षा करो ॥ अने पृथ्वीने विषे वटुक वामनजी ते रक्षा करो ॥ आकाशने विषे विश्वरुप एवा त्रण्य पगलांवाला एवा भगवान ते रक्षा करो ॥ वलि विषम स्थानकने विषे वलि वनमां ने रण संग्रामना मुखने विषे असुर जुथना वेरि एवा नृसिंह प्रभु जेते रक्षा करो ने नृसिंह मोटा अतिशे हासने करता छे तेणे दिशुमांथि शद्ब उठे छे ॥ वलि स्त्रीयुंना गर्भ पण पडि जाय छे ॥ वलि मार्गने विषे यज्ञ

मूर्त्ति एवा पोतानि डाढे करिने उपाडि छे पृथ्वी जेणे एवा वाराहजी जेते रक्षा करो ॥ वलि लक्ष्मणे सहित एवा भरतना मोटेरा भाई ते जेते रामजिरुप एवा भगवान जेते पर्वतना शिखरने विषे अथवा परदेशने विषे मारि रक्षा करो ते परसुराम रक्षा करो ॥ वलिनारायण एवा भगवान ते मारि अति भूंडा धर्म थकी विमुख थकि पण नारायण रक्षा करो ॥ नर एवा भगवान जे ते मारि हास जे कोयनि ठेकाडि करवि तेज मोटि खोड ते थकि रक्षा करो वलि योगना स्वामि एवा दत्तात्रे नामे भगवान जे ते अयोग थकि केतां योगना भ्रष्टपणा थकि मारि रक्षा करो ॥ वलि सर्व गुणना स्वामि एवा कपील नामे भगवान जे ते मारि सर्व गुण थकि रक्षा करो ॥ शनकादिक नामे भगवान मारि कामदेव थकी रक्षा करो ॥ हयग्रीव नामे भगवान जे ते मारगने विषे कोइक देवतानि ठेकाडि थकि मारि रक्षा करो ॥ देव ऋषीमां मोटा एवा नारदजी जे ते मारि भगवाननी पुजामां काइ भुल्य पडे ते थकि रक्षा करो ॥ वली काचवा रुप भगवान जे ते हरि ते हरि मारि स्वर्ग नर्क थकि रक्षा करो ॥ वलि धनवंतरि एवा भगवान जे ते मुने अपथ्य जेकांए नखावानि वस्तु खवाय ते थकि रक्षा करो ॥ वलि श्रीत्यो छे मन जेणे एवा

ऋषभ नामे भगवान जे ते द्वंद्वरूप जे भय राग द्वेषादिक ते थकि मारि रक्षा करो ॥ वलि यज्ञरूप एवा भगवान जे ते मारि लोकना अपवाद अपजस थकि मारि रक्षा करो ॥ वलि बलभद्र रुप एवा भगवान जे ते काल थकि मारि रक्षा करो ॥ वलि ऋषभरूप एवा भगवान जे ते क्रोध रुप एवो जे सर्पनो समूह ते थकि मारि रक्षा करो ॥ वलि व्यासरूप एवा भगवान जे ते मारि अज्ञान थकि रक्षा करो ॥ वलि बुद्ध नामे भगवान जे ते पाखंडना समूह थकि वलि प्रमाद थकि मदोन्तत्तपणा थकि मारि रक्षा करो ॥ वलि कलकि रुप एवा भगवान जे ते कलि ते कलिनो मल तेथकि मारि रक्षा करो ते भगवान केवा छे धर्म नि रक्षा करवा माटे घणा किधा छे अवतार जेणे वलि केशव एवा भगवान जे ते गदाये करिने प्रातःकाले मारि रक्षा करो ॥ वलि ग्रहण किधि छे वेणु वांसलि जेणे एवा गोविंद नामे भगवान जे ते गायुं आव्या टांणे मारि रक्षा करो ॥ नारायण नामे भगवान जे ते प्रातःकाल ते काचा बपोर ते टाणे मारि रक्षा करो ॥ ते भगवान केवा छे ग्रहण किधि छे पोतानि शक्ति जेणे वलि चक्र छे हाथमां जेने एवा भगवान विष्णु नामे जे ते मारि मध्याननने विषे रक्षा करो ॥ वलि अति

मोटुं छे धनुष जेने एवा मधुदानवना मारतल एवा भगवान जे ते देव प्रभु मारि पाछल्या पोरने विषे रक्षा करो वलि त्रण्य ब्रह्मादिकनि मूर्त्ति एवा लक्ष्मीना स्वामि जे ते मारि सायंकाले रक्षा करो वलि ऋपि केश एवा तमे भगवान जे ते मारि रात्रिना मुखने विषे रक्षा करो ॥ वलि अर्ध रात्रिना मुखने विषे पण ऋपिकेश नामे भगवान मारि रक्षा करो ॥ वलि पद्मनाभ नामे भगवान जे ते एकज मारि महामध्यरात्रिने विषे रक्षा करो ॥ वलि श्री वत्स धामा एवे नामे भगवान जे ते समर्थ मारि पाछलि रातने विषे रक्षा करो ॥ तरवास्यना धरतल एवा दुष्ट जनना पिडतल एवा समरथ भगवान जे ते प्रातःकालने विषे मोटा प्रभातने विषे रक्षा करो ॥ दामोदर नामे भगवान जेने संध्या टाणे मारि रक्षा करो ॥ वलि बिश्वना स्वामि भगवान एवा काल मूर्त्ति जे ते प्रभातने विषे रक्षा करो ॥ वलि प्रलयकालना अग्नी जेवि तिख्वी छे धारा जेनि एवुं ने भगवाने मुक्युं एवुं ने चारे कोरे भमतु एवुं चक्र जे ते ततकाल मारा वेरिना सैन्यने बालो बालो जेम वायु छे मित्र जेनो एवो अग्नि जे ते खडने बाले छे ॥ वलि भगवाननि गदाने केवुं हे गदा तुं

वज्रना परस जेवा छे अग्निना कण जेमां एवि छउं ने भगवानने वालि छुं माटे कुष्मांड नामे जे असुर ते वैनायक नामे राक्षस यक्ष ने भूतने पिशाचने अतिशे पीडय पीडय ॥ वलि मारा वेरिने चुर्ण करय ॥ भुको करी नाख एम भगवाननी गदाने केहवुं वलि भगवानना शंखने केहवु मोटा शंख श्रीकृष्ण तेणे वजाडयो ने भयंकर छे शब्द जेनो एवो तुं ते मारा वेरिना हृदयने कंपावतो थको तुं जे ते यातु धान नामे जे असुर योनि प्रथम नामे भुत जोनि प्रेत जोनि मातृयोनि पिशाचयेनि वलि दुखानि देवा वाली कांइक भयंकर छे दृष्टि जेनि एवा जे जीव तेने भगवो भगावो एम शंखने केवुं वलि भगवाननि तरवारने केहवुं हे तीखीछे धारा जेनि ने तरवारयमां मोटि तरवारय तुंने भगवांने मुकि थकि मारा वेरिनु जे सैन्य तेने छेद छेद हे सो चंद्रवालि ढाल पाप रुप छे नेत्र जेनां एवा पापि जे मारा वैरि तेना नेत्र ने तुं ढांक ढांक ॥ वलि तेना नेत्रने फोड फोड ॥ वलि जे अमने विग्रहथकि भय होय ने वलि जे भय केतुने राहु थकि होय वलि जे हिणा मांणस थकि होय अथवा जे भय कोए समर्थ थकि होय वलि जे भय कोय डाढना जीव जे सिंघादिक थकि होय ते थकि मारि रक्षा करो बिजो नारायण कवच तेनो विवेक जे पंचवर्त्त-

मांनमां फेर पाडे एवो जे मन तथा इंद्रि देवता तेने जित्या सारु नारायणना नाम रुप बगतर पहेरवो ने एम न समझाय तो मोह विवेकमां प्रगट छे ते विचारजो ए खरडानो नीयम राखजो वांचिने पछे अन्न लेवो एम देह पर्यंत राखजो कर्म योगि तथा सांख्य जोगि सर्वेने ए वात छे जेटलो जेथी थाय तेटलो विचारजो भण्या नहोय तो सांभलवो सांभलि ने ते वात विचारिने जे आ कागलमां स्वामिये ल-ख्योछे ते वात बीजा आगल करवि बिजो कोय न होय तो मनमां जाणवो स्वामिनारायण स्वामिनारायण कामकाज करतां करवुं जे पाप सर्वे भस्म होइ जावे ते सारु स्वामिनारायण स्वामिनारायण करवो ॥ इति श्री नारायण कवच संपूर्ण ॥

॥ अथ शतमूर्ख लख्याछे ॥

॥ समर्थ थको जे उद्यम नकरे ते मुरख ॥ १ ॥ डाह्यो थईने पंडितमां पोताना वखाण करे ते मुरख ॥ २ ॥ वेश्याना वचनमां बिश्वासनो करनारो ते मुरख ॥३॥ दंभे करिने आडंबर वालानो विश्वास करे ते मुरख ॥४॥ जुगटे करि द्रव्यने इछतो ते मुरख ॥ ५ ॥ खेडय आदिक जे आव्यक तेने विषे संशेनो करनारो ते मुरख ॥६॥ बुद्धि रहित थको मोटा कार्यने करवा इछनारो ते मुरख ॥ ७ ॥ वाणियो थैने एकांतमां बेसनारो

ते मुरख ॥ ८ ॥ जे कारजने करवे करिने जमीन वेचवी पडे ते कारजनो करनारो ते मुरख ॥ ९ ॥ वृद्ध थको परणे ते मुरख ॥ १० ॥ जे ग्रंथ न सांभल्यो होय तेनो केनारो ते मुरख ॥ ११ ॥ प्रत्यक्ष अर्थने ढांकनारो ते मुरख ॥ १२ ॥ पोसे दोष जुक्त होय ने बिजानि ईर्ष्या करे ते मुरख ॥ १३ ॥ पोताने माथे शत्रु समर्थ होयने तेनी संका न राखे ते मुरख ॥ १४ ॥ जाय एत्राने धन आपीने पछे तेनो पश्चाताप करे ते मुरख ॥ १५ ॥ काव्य करवाने अर्थे हठे करीने विद्यानो भणनारो ते मुरख ॥ १६ बोल्यानो प्रसंग न होय ने डाह्यो थैने बोलनारो ते मुरख ॥ १७ ॥ अन्नमरने विष न बोलनारो ते मुरख ॥ १८ ॥ लाभ पाम्याना समयमां कलेशनो करनारो ते मुरख ॥ १९ ॥ जमवाना समयमां क्रोधनो करनारो ते मुरख ॥ २० ॥ थोडाक लाभमां बहु खरचनो करनारो ते मुरख ॥ २१ ॥ लोकमां वखणावा सारु कठण काव्यनो करनारो ते मुरख ॥ २२ ॥ पुत्रने धन आपीने पछे दिन थैने ते पुत्रनी पासे मागनारो ते मुरख ॥ २३ ॥ सासराना पक्षमां जैने धननो मागनारो ते मुरख ॥ २४ ॥ स्त्री संघाथे विवाद करीने बीजी स्त्रीने परणनारो ते मुरख ॥ २५ ॥ पुत्र उपरथ्य रिस करिने तेने मारी

नाखनारो ते मुरख ॥ २६ ॥ कोइनि अदेखाइये करीने जाचकने दाननो करनारो ते मुरख ॥ २७ ॥ कोइकने कठण वचन कहीने पछे गर्वनो करनारो ते मुरख ॥ २८ ॥ बुद्धिना गर्वे करीने हितकारि वचन न सांभळे ते मुरख ॥ २९ ॥ कुलने गर्वे करीने कोइनी सेवा न करे ते मुरख ॥ ३० ॥ वाली वस्तु कोईने आपी दईने पाछुं इछनारो ते मूरख ॥ ॥ ३१ ॥ मुल न उपजे तेवा पदार्थना मुलनो आपनारो ते मुरख ॥ ३२ ॥ लोभी राजा थकी लाभनो ईछनारो ते मुरख ॥ ३३ ॥ दुष्ट राजा पांसे न्यायनो करावनारो ते मुरख ॥ ३४ ॥ स्वार्थी पुरुषने विषे स्नेह करीने आसानो बांधनारो ते मुरख ॥ ॥ ३५ ॥ दुष्ट कामदारने विषे नीरभेपणे वरतनारो ते मुरख ॥ ३६ ॥ कृतघ्नी पुरुषना उपकारनो करनारो ते मुरख ॥ ३७ ॥ गुणना महात्मने न जाणे तेने गुणनो शिखवनारो ते मुरख ॥ ३८ ॥ देह निरोगी होयने औषध खानारो ते मुरख ॥ ३९ ॥ रोगी थईने पोताने न सदे तेवा रसने वस थैने खानारो ते मूरख ॥ ४० ॥ लोभे करीने स्वजननो त्याग करीने एकलो रेनारो ते मुरख ॥ ४१ ॥ अवलि वाणीये करीने पोताना मीत्रने उदासि करनारो ते मुरख ॥ ४२ ॥ लाभने समे आलसनो करनारो ते मुरख

॥ ४३ ॥ मोटी समृद्धिवालो थैने कलह करनारो ते मुरख ॥ ४४ ॥ जोतशिने कहेथी राजनो ईछनारो ते मुरख ॥ ४५ ॥ मुर्ख मनसुबो कर्यो होय तेने ठीक माननारो ते मुरख ॥ ४६ ॥ दुर्बलने पीडवाने विषे सुरवीर थानारो ते मुरख ॥ ४७ ॥ पोतानि स्त्रीने विषे दोस होय तोपण तेमां प्रिति करनारो ते मुरख ॥ ४८ ॥ वीद्यादीक कल्याणकारि गुण सीखवा होय ने तेमां अभ्यास न करे ते मुरख ॥ ४९ ॥ पोताने बापे भेलुं करेलुं जे धन तेने फुले करिने कुमारगमां खरचनारो ते मुरख ॥ ५० ॥ कोईने आपे नहि ने उपरथी दयानो जणावनारो ते मुरख ॥ ५१ ॥ मनुष्यनि आगल्य राजादीकनी निदानो करनारो ते मुरख ॥ ५२ ॥ देहादीकना दुखने विषे दीनपणे करिने पीडानो जणावनारो ते मुरख ॥ ५३ ॥ सुखने विषे दुखनो वीसारनारो ते मुरख ॥ ५४ ॥ अल्प पदार्थनी रक्षाने अर्थे घणुं खर्च करनारो ते मुरख ॥ ५५ ॥ झेरने खाईने तेनी परीक्षानो करनारो ते मुरख ॥ ५६ ॥ रोग टालवाने अर्थे रसायणनो खानारो ते मुरख ॥ ५७ ॥ पोतानि मोटयप जणाववा सारु कोईनी आगल नमे नहि ते मुरख ॥ ५८ ॥ क्रोधे करीने आत्मघातनो करनारो ते मुरख ॥ ५९ ॥ प्रयोजन विनानो कोईने

घेर आदिक ज्यां त्यां नीरंतर जानारो ते मुरख ॥ ६० ॥ कोईनि वढवाडमां जोवा जैने वच्यमां पोते मार खानारो ते मुरख ॥ ६१ ॥ दुर्बल थको मुई रहे ने कांई उद्यम न करे ते मुरख ॥ ६२ ॥ धन थोडुं होय ने आडंबर बहु जणावनारो ते मुरख ॥ ६३ ॥ मुर्ख होय ने पंडित थावाने अर्थे बहु बोलनारो ते मुरख ॥ ६४ ॥ सुरवीरपणाने गर्वे करीने कोइनो भय न राखे ते मुर्ख ॥ ६५ ॥ अति स्तुतीय करीने लोभि जनने उद्वेगनो करनारो ते मुरख ॥ ६६ ॥ कठण वचन बोलिने कोइकना मर्मनो भेदनारो ते मुर्ख ॥ ६७ ॥ दरिद्रीनो विश्वास करिने तेने द्रव्यनो सांपनारो ते मुरख ॥ ६८ ॥ किमीयागरने धननो आपनारो ते मुरख ॥ ६९ ॥ संशेवाला कार्यमां खरचनो करनारो जे थासे के नहि थाय ते मुरख॥७०॥ पोताानि वाणिये करिने खत आदिक लखनाराने उद्वेगनो करनारो ते मुरख ॥ ७१ ॥ प्रारब्धने माथे नाखिने उद्यम न करे ते मुरख ॥ ७२ ॥ पोते दरिद्रि थैने व्यर्थ वातुनो करनारो ते मुरख ॥ ७३ ॥ रमसे करिने भोजननो विसारनारो ते मुरख ॥ ७४ ॥ गुणे करिने हिन एवो जे कुलवान तेनो वखाणनारो ते मुरख ॥ ७५ ॥ सभाना मध्यमाथि प्रयोजन विनानो उठनारो ते मुरख ॥ ७६ ॥ दुत थको संदेशानो विसारनारो एवो गाफल

ते मुरख ॥ ७७ ॥ पोताने उधरस थई होय ने चोरि करवा जाय ते मुरख ॥ ७८ ॥ पोतानि किर्त्तिने अर्थे भोजनमां वहु खरच करनारो ते मुरख ॥ ७९ ॥ पोताना वखाणने अर्थे थोडुं जमनारो ते मुरख ॥ ८० ॥ विना भयथकि शास्त्र विरुध क्रियानो करनारो ते मुरख ॥ ८१ ॥ लोभे करिने पोतानि अपकीर्तिनो करावनारो ते मुरख ॥ ८२ ॥ उघाडा दोषे जुक्त होय ने तेना वखाणनो करनारो ते मुरख ॥ ८३ ॥ घोघरो साद होय ने गानकला सिखीने विजाने रिझववा ईछनारो ते मुरख ॥ ८४ ॥ अल्प पदार्थमां पण भोगववाने आति रसीयो थाय ते मुरख ॥ ८५ ॥ कपटे करिने कोइ वखाणे तेमां राजी थानारो ते मुरख ॥ ८६ ॥ वेशा संघाथे कलहनो करनारो ते मुरख ॥ ८७ ॥ वेजण मलिने मनसुवो करता होय ने सां बोलाव्या विना जानारो ते मुरख ॥८८॥ राजा प्रसन्न थाय तेमां स्थिर बुद्धिवालो ते मुरख ॥८९॥ अन्याये करिने पोतानि वृद्धिने ईछनारो ते मुरख ॥९०॥ घरमां द्रव्य न होय ने द्रव्ये करीने काम थाय तेवा कामनो करनारो ते मुरख ॥ ९१ ॥ कोइनी छानी वात होय तेने मनुष्यमां छतराई करनारो ते मुरख ॥ ९२ ॥ किर्त्तिने अर्थे अजाण्या मनुष्यनो जमान थनारो ते मुरख ॥ ९३ ॥ हित वचननो केनारो होय तेनी उपरथ्य रीस करीने अदेखाई करनारो ते

मुरख ॥ ९४ ॥ सर्व जनने विषे विश्वासनो करनारो ते मुरख ॥ ९५ ॥ लोकना व्यहवारनो न जाणनारो ते मुरख ॥९६ ॥ भिक्षुक थको उना भोजननो जमनारो ते मुरख ॥ ९७ ॥ पोते गुरु थैने धर्म नीयममां शिथल वरतनारो ते मुरख ॥ ९८ ॥ उत्तराति क्रियाने विषे लाज नराखनारो ते मुरख ॥ ९९ ॥ हसतां हसतां वात नो करनारो ते मुरख ॥*१००॥

॥ अथ चालिस प्रकारना डाह्या ॥

॥ पेहेलो डायो जे शत्रुना सपाटामां न आयो तेपण डायो ॥१॥ बीजो डायो जे कल्याणना कामथि नकायो ते पण डायो ॥२॥ त्रिजो डायो जेणे एकला स्वादु न खायो ते पण डायो ॥३॥ चोथो डायो जेणे जिवंत पर्यंत हरिजस गायो ते पण डायो ॥४॥ पांचमो डायो जेते आगल्य आपनो दुःख न गायो तेपण डायो ॥५॥ छठो डायो जे ठग थकि न जाय ठगायो ते पण डायो ॥६॥ सातमो डायो राखे *भोंणि ने नाखे पायो ते पण डायो ॥७॥ आठमो डायो जेणे हरि गीत बनायो ते पण डायो ॥८॥ नवमो डायो जे परनारि संग न चायो ते पण डायो ॥९॥ दशमो डायो जेणे बधुं जवा दइने जीव बचायो ते पण डायो॥१०॥ अग्यारमो डायो

* ए सो प्रकारना मुरख जाणवा.

* रस्तानी जमीन राखीने

जेणे समर्थ साथे कजीयो न मचायो ते पण डायो ॥११॥ बारमो डायो जेणे हरि संग हेत रचायो ते पण डायो ॥१२॥ तेरमो डायो जे रस्ते उतरे जोइने छांयो ते पण डायो ॥१३॥ चौदमो डायो जे एकलो अरण्य मां नजायो ते पण डायो ॥१४॥ पनरमो डायो जेणे धणिको काम बराबरय भजायो ते पण डायो ॥१५॥ सोलमो डायो जेणे बीजानो दुःख बुझायो ते पण डायो ॥१६॥ सतरमो डायो जे इंद्रियो वश करतां न मुंझायो ते पण डायो ॥१७॥ अढारमो डायो जे धुताथि न जाय पटायो ते पण डायो ॥१८॥ ओगणिशमो डायो जे न्यायनि वातमां कोइथि न जाय हठायो ते पण डायो ॥ १९ ॥ विशमो डायो जे संसारिक सुखमां न जडायो ते पण डायो ॥ २० ॥ एकवीशमो डायो जे तृष्णाने पुरे न तणायो ते ॥ ॥ २१ ॥ बाविशमो डायो जेणे बिजाने मोक्षनो मार्ग बतायो ते पण डायो ॥ २२ ॥ त्रेविशमो डायो जे थाय वढवेड्य ने न जाय धायो ते पण डायो ॥ २३ ॥ चोविशमो डायो जे स्त्री धनमां न बंधायो ते पण डायो ॥ २४ ॥ पचिशमो डायो जे धर्म पालतां नछपायो ते पण डायो ॥ २५ ॥ छविशमो डायो जे सभामां वात केतां न दबायो ते पण डायो ॥ २६ ॥ सताविशमो डायो जेणे हरि

भक्ति विना वखत न गमायो ते पण डायो ॥ २७ ॥ अठ्यात्रिशमो डायो जे मान लोभना तापथि न गलायो ते पण डायो ॥ २८ ॥ ओगणत्रिशमो डायो जेणे बोधथि त्रिजाने सुधर्ममां चलायो ते पण डायो ॥ २९ ॥ त्रिशमो डायो जे जमना हाथथि न जलायो ते पण डायो ॥ ३० ॥ एकत्रिशमो डायो जेणे अजाण्यो फल न खायो ते पण डायो ॥ ३१ ॥ बत्रिशमो डायो जे स्त्रीना मोहबाणथि न बंधायो ते पण डायो ॥ ३२ ॥ तेत्रिशमो डायो जेणे अभक्ष्य वस्तु न खायो ते पण डायो ॥ ३३ ॥ चोत्रिशमो डायो जेणे पोताना घरमांथि अधर्म न सायो ते पण डायो ॥ ३४ ॥ पात्रिशमो डायो जेने देह आत्मा जुदो जणायो ते पण डायो ॥ ३५ ॥ छत्रिशमो डायो जे क्षत्रि थइने रणमां पाछो पग न हठायो ते पण डायो ॥ ३६ ॥ साडत्रिशमो डायो शिखकि वातमें दुःख न लगायो ते पण डायो ॥ ३७ ॥ आडत्रिशमो डायो जेणे कुपात्रने दान न दिलायो ते पण डायो ॥ ३८ ॥ ओगणचालिशमो डायो जुठा पक्षमां न लेवायो ते पण डायो ॥ ३९ ॥ चालीशमो डायो जेणे हरी ध्यान लगायो ते पण डायो ॥४०॥दोहा॥ चालिश प्रकारना डाया कया ॥ सुंदरजिये धरि आनंद ॥ ए सुणि प्रश्न रहो ॥ स्वामि सहजानंद ॥ १ ॥

समुद्र लक्ष्मी कृष्ण
पद राग कनडो ॥ ॥ सिंधु सुता पति क्युं न
क्याम हिम पारवति शिव काम
संभारे ॥ जग ढंकन रिपु तनया पति रिपु ॥ ता-
मे तुं निशदिन चित धारे ॥ सिंधु० ॥ १. ॥ जगको
मेघ मोर कार्तिकस्वामि शिव काम मन
मित्र मित्र पति पितु अरि ॥ ताको पिता तेरो
पृथ्वि मंगल रुडुं
खेल बिगारे ॥ अवनि सुत तेरे जियेको चहे ता
इंद्र अर्जुन कृष्ण
॥ सुरपति सुत मित्र काहे बिसारे ॥ सिंधु० ॥ २ ॥
घडो अगस्त समुद्र लक्ष्मी तुलसी
मृतका सुत सुत पानकि तनया ॥ ताहि सपतिन
चर्ण जल कमल ब्रह्मा मरिची कश्यप
सदन बिचारे ॥ वारि सुत सुत सुत ताको सुत
सूर्य धर्म जम
॥ तेहि सुत सुत कींकर जब मारे ॥ सिंधु० ॥ ३ ॥
कमल ब्रह्मा अधर्म पाप
जलको सुत सुत ताहि भ्रष्ट सुत तेहि ॥ फल हरि
अर्जुन सुभद्रा कृष्ण
बिन कोन निवारे ॥ निंद्रा जित त्रियाको बंधव ॥

ब्रह्मानंद सुखकंद हमारे ॥ सिंधु सुता पति क्युं
आकाश पंखी गरुड
न संभारे ॥ ४ ॥ पद ॥ १ ॥ ॥ नभ गति पाति
कृष्ण आसरो आकाश वायु तेज जल
पति मरनो लेरि ॥ नभ सुत सुत तेहि सुतके
अन्न भगवान
सुतकुं धर्म मूल अंतर धरिदेरि ॥ नभ०
समुद्र लक्ष्मी नारायण कमल ब्रह्मा शिव
॥ १ ॥ सिंधु सुता पति सुत सुत सुत तेहि
काम प्रीति लक्ष्मी पदार्थ राजि
सत्रुसें हे रति तेरि ॥ हरि प्रिया कारज मद मातो
सूर्य धर्म जम
॥ तम रिपु सुत चाकर सिर वैरि ॥ नभ०
अर्जुन श्रीकृष्ण *प्रद्युम्न दैत्य
॥ २ ॥ निद्रा इश सखा सुत मोयो दिति सुत
संत पोकारी स्वामीकार्तिक मोर सर्प
द्वेषि कहत तोय टेरि ॥ षटमुख वाहन भ्रख
गरुड श्रीकृष्ण चंद्रमा स्त्रि
रिपु पति तजि मन पति मुखि रखत नित नेरि

* कामदेवनो अवतार. १ कागडो बोलेछे 'का'. २ बेटो बोलेछे 'म'

१कागडो २बेटो काम
॥ नभ० ॥ ३ ॥ वायस मेष सद्रकी घटना ॥
तागि
तामे लब्धप्रीत चीत केरी ॥ गिता शब्द उलटा
करि वरतन तव ॥ ब्रह्मानंद साम रिझेरि ॥
नभ गति पति पति भरनो लेरि ॥ ४ ॥ पद ॥
पर्वत नदि समुद्र श्रीकृष्ण
॥ २ ॥ ॥ शैल सुता पति तातकुं गाये ॥ शंकर
संकर्षण श्रीकृष्ण प्रद्युमन काम
इष्ट अनुजके सुतकुं सब विधि करि ताकुं
जमुना सूर्य धर्म
विसराये ॥ शैल० ॥ १ ॥ हरिकि त्रिया तात सुत
जम गाय
अनुचर ताके हाथ कबु नही जाये ॥ सुरभि
नंदिश्वर शिव स्वामीकार्तिक मोर सर्प गरुड श्रीकृष्ण
सुत पति सुत वाहन भ्रख अरि पतिमें नित
समुद्र लक्ष्मी
लगनि लगाये ॥ शैल० ॥ २ ॥ नदि पति सुता
कमल ब्रह्मा अधर्म पाप
ताहिको आसन ॥ तेहि सुत सुत क्रत चित नहि
काम मन प्रद्युमन
चाये ॥ रति पति तातहुको क्रत तज्यके ॥ रति पति

कृष्ण वृषभानु
तात फल पाये ॥ शैल० ॥ ३ ॥ वेल रवि दो शब्द
राधा कृष्ण
एक करिके तेहि ॥ तनया पति छवि उर लाये ॥
ब्रह्मानंद सोइ एक सत्य हे ॥ ओर सब जंजाल ब-
सूर्य
हाये ॥ शैल० ॥ ४ ॥ पद ॥ ३ ॥ ॥ तम रिपु
यमुना कृष्ण
तनया पति क्युं न गावे ॥ क्युं तेरो उलटो भयो
कमल मन काम
हे रमामन ॥ इंद्रि पति सुतमें लपटावे ॥ तम० ॥
काम मन चंद्र शिव नाग
॥ १ ॥ रति पति पिता पति पति भूषण ॥ ताके
गरुड कृष्ण इंद्र अर्जुन कृष्ण यमुना
अरि पति तुं विसरावे ॥ ओतु सुत सखा त्रिया
सूर्य
जनक सो ॥ मुरख तेरि आयुष हरावे ॥ तम०॥ २ ॥
समुद्र मोति हंस ब्रह्मा अधर्म लोभ
सिंधु सुत भक्षक पति तेहि सुत ताको सुरसो तोय
वायु अग्नि सोनुं पर्वत ब्रह्मा
भ्रमावे ॥ मारुत सखा सल मेरु मीलेतो ॥ विधि

धर्म संतोष कमल
सुत सुत तेरे मन नहि आवे ॥ तम० ॥ ३ ॥ जलज
लक्ष्मी श्रीकृष्ण गरुड सर्प शिव झेर
सुता पति वाहन भ्रख पति ताको पान जगत अति
सूर्य यमुना श्रीकृष्ण सुभद्रा अर्जुन इंद्र
भावे ॥ रवी नंदनी पति भगनि पति पितु ब्रह्मानंद
अमृत
तेहि पान वहावे ॥ तम० ॥ ४ ॥ पद ॥ ४ ॥ पंच भाषानुं पद ॥ राग ललित ताल आदि ॥ मोहन बेन बजाइ ग्रह तजी बन आई बन आई ॥ गीरधर बंसी सुनि कानि तनकी सुधबुध सब बिसरानी ॥ बरजत मात पिता नहि मानि उठचालि बेगानि बेगानि ॥ मोहन० ॥१॥ बोल मारे मावाप सुने वारि के छे तुं क्यां जायछे कुंवारि ॥ बन ताडि व्रछोडयां मोरारी शिवले अमारि अमारि ॥ मोहन० ॥२॥ तब्ब बोली एक सरमाली माराज वात सांभलोने माली ॥ आज हुं तो आदिसां बनमालि हट्ट लिनि करतालि करतालि ॥ मोहन० ॥३॥ सखर काय मांगु मी आतां कुठे गेला पाहतां पाहतां ॥ न जाणे कोणी जातां माझ संगे गातां संगे गातां ॥ मोहन० ॥४॥ प्रभुजी मैं तो थाकि दासी ठाकोर हांसीमां जीवजासि ॥ प्रेम सखि कंठ लगाभि आय मिलो बनवासि बनवासि ॥ मोहन बेन

वजाइ ग्रह तजी वन आई वन आई ॥५॥

॥ अथ श्लोको ॥

॥ श्री सहजानंद महाराज हरि ॥ जाशोमां पल एक विसरि ॥ व्रणवुं चरित्र चरणे नमि ॥ आपजो बुद्धि ते अनुपमि ॥ १ ॥ गाम गढडुं सो भानु धाम ॥ राजा उत्तम तेहना शाम ॥ सर्व प्रकारे भगत जाणि ॥ ते सुं हरिने प्रित वंधाणि ॥ २ ॥ रियां तियां नित तेने वश थई ॥ संत मंडल साथज लई ॥ करे नित लिला रंगे सु रमे ॥ जेमते ते हरिजनने गमे ॥ ३ ॥ ओरडा रुडा ओसरियुं सारि ॥ तेनि छे सोभा अनंत प्रकारि ॥ तेपर सुंदर ढोलियो ढालि ॥ तलाइ तकिया सहित रुपालि ॥ ४ ॥ तेपर आविने वेसे महाराज ॥ माणिगर महाराजाधिराज ॥ आवे दर्शने संत हरिजन ॥ जोईने थाय वहु प्रसंन ॥ ५ ॥ मूर्त्ति मनोहर नटवर वेश ॥ वांधि शिर पाग बणावि पेच ॥ छोगा कलंगि तोरा लटकावे ॥ तेनी सोभा ते कयामां नावे ॥ ६ ॥ ओपे उपरणि सोनेरी छेडे ॥ वाजु जडेल सुंघे मोतिडे ॥ गुछ गजरा फुलना हार ॥ काने कुंडल तेज अंवार ॥ ७ ॥ फुल सुगंधि फोरयूं निसरे ॥ आवि भमरा गुंजार करे ॥ कोटे उतरी मोतिनी माला ॥ हेमनां कडां हाथे रुपालां ॥ ८ ॥ जरकासि जामो साव सोनेरी ॥ सोभा वउ सारी सुरवाल केरि ॥ नाडि जरिनि

लटके वेवाडि ॥ मोति गुंथेल हाथमां छडि ॥ ९ ॥ ओढे दुसालो रूपालो रेटो ॥ केडये सोनेरि कमुंबि फेटो ॥ पगमां झांझर हेमना त्रोडा ॥ मोति जडेल तेना मकोडा ॥ १० ॥ तरत फुल्यां कमल तेवां ॥ पद पंकज वेउते एवां ॥ उर्द्धरेखामां चिन सोभित ॥ नखमणि लाल मोहे मन चित ॥ ११ ॥ जमणे अंगुठे नखमां चिन ॥ सर्व सुख कारण एन ॥ घुंटी गोलने पिंडि पातलि-युं ॥ भालि तेहनुं भव दुख टलियुं ॥ १२ ॥ जानु साथल कोमलता अति ॥ कटि मनोहर सारी शोभति ॥ जमणि डावी साथलुं वारय ॥ चिन एककुं शोभे छे सार ॥ १३ ॥ पेटे त्रिवलि स्वालप्य घणि ॥ केतां ते थाके सहस्त्र फणि ॥ उंडि नाभिछे गोल रूपालि ॥ नजर नथाके तेहने भालि ॥ १४ ॥ उर विशाळ उपडती छाति ॥ लक्ष्मी रहे छे सदा रंगराति ॥ वे छाप विच्ये चिन्हमां तिल एक ॥ तेने ओले छे सुख अनेक ॥ १५ ॥ स्तन वेउ सुंदरता अति विचे ते झिणि केश पंगति ॥ हाथ हरिना रूपाला लागे ॥ जाणे जोइ रइये उभलां आगे ॥ १६ ॥ रूडा रसिक नखमणि लाल ॥ हथेलियुं राति रेखुं रसाल ॥ कलाई बाजु स्वालप्य सारी ॥ छापना चिन्ह दिसे सुखकारी ॥ १७ ॥ रोम सहित एक तिल छे वांसे ॥ सुंदर डावा खभानि पासे ॥ कंठ रूपालो मरमालुं मुख ॥

॥ जोतां ते थाय अलौकीक सुख ॥ १८ ॥ होठ रुपाला राता रंग भिज ॥ दांत सुंदर दाडमनां बीज ॥ गोर कपोल मारा सुंवाला ॥ वाणि मधुरि वेण रूपाला ॥ १९ ॥ नाक नमणुं अणियालि आंख्युं ॥ जोयुं तेणे जग सुख न राख्युं ॥ श्रवण सुंदर भाल विशाल ॥ भ्रकुटि नलवट रेखासु ताल ॥ २० ॥ जमणे कपोले चिन्ह छे साम ॥ डावे श्रवणे बिंदु सुखधाम ॥ चिन्ह जमणीकोरे केश समीपे ॥ सारी सुंदर चोटलि दीपे ॥२१॥ सामुद्रिकमां कयां छे जेवां ॥ सर्व हरिने चिन्ह छे एवां॥कोटिक कामनी सोभा केवाये॥एक एक अंगने तुल्य न थाये ॥२२॥ एवा अलबेलो महा सुखकारी ॥ जुवे जन सामुं स्नेह वधारी ॥ वातु करतां अमृत झरे ॥ हाथनां लटकां बहुज करे ॥ २३ ॥ छिके हसे कांई रमुज थिये ॥ तारे मुख आडो रुमाल दिये ॥ हाथे रमाडे माला फुल फल ॥ न तो थे छेडे रुमालने वल ॥२४॥ डाढिये हाथ दे डोक मरोडे ॥ आंगलियुं मोडि टचाका फोडे ॥ आंगलि हलावि जनने बोलावे ॥ वलि दांते मु जिभ दबावे ॥ २५ ॥ हरेहेर करे वगासु खाता ॥ चपटि वजाडे संतसंगे गाता ॥ कथा किर्त्तन वात शुभ करी ॥ सुख आपे छे वां रित्ये हरि ॥ २६ ॥ वलि खेस एक सुंदर पेरि ॥ वेसे उघाडा लटकालो लेरि ॥ छुटां छोगलियां पेचालि पागे ॥ पुठ मु-

र्त्ति रुडि बौ लागे ॥ २७ ॥ मर्म करिने मंदमंद हसे ॥ अधुरभिंजे अमृत वरसे ॥ हसता हसता जाये उतारे ॥ जन मन मोतां नेणन जारे ॥ २८ ॥ जईने नाय निरमळ निरे ॥ अतर चोळि सुभ शरिरे ॥ नाईने पेरे छे खेस वेताळे ॥ चाखडिये चडि चटकंता चाले ॥ २९ ॥ ओढे पछेडि सुंदरसारि ॥ कान उघाडा राखे विहारि ॥ आविने जीवन जमवा वेसे ॥ पळाठि डावा पगनी करे छे ॥३०॥ ते पर राखि डावो हाथ ॥ जमणीं कुणीं दई टीचणे नाथ ॥ जमे अलोकीक जुगीत आणि ॥ जमतां जमतां पिये छे पाणी ॥ ३१ ॥ चळुं करिने खाये ओडकार ॥ पेटे लेहाथ फेरे तेवार ॥ एळचिदाणानो करे मुखवास ॥ पछे ते पुजा करे छे दास ॥ ३२ ॥ चरचे अतर चंदन सार ॥ गजरा बाजुबंध पेरावे हार ॥ खोसे गुळतोरा पेचाळि पागे ॥ चरण छातीमां लेने पाय लागे ॥ ३३ ॥ संत जमाडवा आदरे आवे ॥ एक हाथ केडये एक लेडावे ॥ तेई हाथमां लई रुमाल ॥ चाले छोगाळो गजगीत चाल ॥ ३४ ॥ खेस आड सोडे कम्मर कसता ॥ आवे संतोमां मंदमंद हसता ॥ पिरसवा संत पंगतिमां फेरे ॥ ल्यो माहाराज लाडु गेरस्वरे करे ॥ ३५ ॥ फरता उभा त्यां कीर्त्तन गावे ॥ माथ ले हाथ मुठ लगावे ॥ आखो लाडु

कोये न लिये जारे ॥ अरधो लाडुल्यो एम कहे तारे ॥ ३६ ॥ मुठिमां दावि कहे रसियो ॥ महाराजो महा प्रसाद लीयो ॥ बहु धरविनें बोले ते नाथ ॥ लाडु एक ल्यो तो मुकुं शिर हाथ ॥ ३७ ॥ दुध दईने हाथ्ये सुं घोले ॥ देतां देतां लै कोयने शरि ढोले ॥ संत जमाडि राजि वौ थाय ॥ मंदमंद हसता पोढवा जाय ॥ ३८ ॥ पोढिने जारे जीवन आवे ॥ सर्वे संतजनने बोलावे ॥ भेला नदिमां नावाने जाय ॥ जईने बेसे खल ख-लियामांय ॥ ३९ ॥ शोभे खभा मुख पाणिने छोले ॥ छाति झलके हाथ हिलोले ॥ करे जलक्रिडा किर्त्तन संत गाय ॥ हसावे कैक आगल्य तणाय ॥ ४० ॥ वलि लक्ष्मी वाडिये छेलो ॥ घोडां खेलवता जाय अलबेलो ॥ ओटा उपरथ्य जे बेसे महाराज ॥ आवे सर्वे जन दर्शनकाज ॥ ४१ ॥ रस रित्ये सुं रमुज करि ॥ आपे जनने सुख वौ हरि ॥ नदि वाडियें आवतां जातां ॥ जोवा मार्गे लोक नथि मातां ॥४२॥ मांझे नारायण नाम धुन्य करे ॥ वासे संत जन वचन ओचरे ॥ बहु उतावला पाडेछे तालि ॥ मुर्ति माणिगर लागे रुपालि ॥ ४३ ॥ ओछव आवे तारे सुखकारि ॥ झुले हिंडोले मुगट शिर धारि ॥ गुलाल गरकाव रंगनो भरियो ॥ सोभे माणिगर छेल डोल-रियो ॥ ४४ ॥ गुलाल गोटा हाथमां लई ॥ मारे

संतने प्रसन्न थई ॥ केशर केसु रंग बोकरि ॥ नाखे मनोहर पिचकारि भरि ॥ ॥ ४५ ॥ संतुने मुखे भुंसे गुलाल ॥ नाके अतर सुंघाडे लाल ॥ भारि वस्त्र घरेणां जन लावे ॥ पेरि मनोहर मन ललचावे ॥ ४६ ॥ एवि लिला ते अनंत अपार ॥ शारद शेष कोये पामे नहि पार ॥ कयुं कांईकमें बुद्धि अनुसारी ॥ भाल्युं जे नजरे ते मन धारि ॥ ४७ ॥ गाय शिखे जे कानमां धरे ॥ थाय सुखिया ते भवजल तरे ॥ चरित्र हरिना महा सुखकारि ॥ राघवदासे गायां उर धारि ॥ ४८ ॥ इतिश्री श्लोको संपूर्ण ॥

॥ अथ कलिजुगनो धर्म ॥ पद राग गर्वि ॥

॥ भायो सांभलो स्याणां जन कलिजुग आव्यो जीरे ॥ जेह पांडवने श्रीकृश्ने कहि संभलाव्यो जीरे ॥ टेक ॥ ब्राह्मण क्षत्री वैश्यने शुद्र चारे वर्ण कहावे जीरे ॥ ते सर्वे निज निज धर्म लोपि आडे मारग जावेर ॥ कलिजुग आव्यो जीरे ॥ १ ॥ प्रथम कलिजुगना ब्राह्मणनां लक्षण कहि संभलावुं जीरे ॥ ते केडे बिजा सर्वेना लक्षण गाई बतावुंरे ॥ कलि० ॥ २ ॥ उत्तम जाति माणस थइने करसे मदिरा पान जीरे ॥ भैरव आदि देवने भजसे नहि भजे भगवानरे ॥ कलि० ॥ ३ ॥ वेद विद्या अभ्यास तजिने करसे निचनि सेवा जीरे ॥ नव्य कस्यानां

कामज करसे लाज तजी धन लेवारे ॥ कलि० ॥ ४ ॥ गायत्री संध्या परहरसे ॥ कराषि कर्म ते करसे जीरे ॥ ब्राह्मणी खेतर भात लेई जासे ते खाइने पेट भरसेरे ॥ कलि० ॥ ५ ॥ माजम मफर लसण पलांडु खासे खांते खांतेजीरे ॥ भांग्य अफिण घुंटिने पिसे करसे फेल बहु भांतेरे ॥ कलि० ॥ ६ ॥ कन्याउना पैसा लेशे देश प्रदेशे देशेजीरे ॥ शास्त्र पुराणने भणवां मेलि वेदां करि धन लेसेरे ॥ कलि० ॥ ७ ॥ सुरा आमिष मद्य मेलावि ओसड सउने देसेजीरे ॥ जिभ्याना रसमां लोभाइ अंत्यजना अन्न लेसेरे ॥ कलि० ॥ ८ ॥ ब्राह्मण जाति पोते थइने निच गुरु अनुसरसेजीरे ॥ असत्तगुरुनो उपदेश लेइने नियम धर्म परहरसेरे ॥ कलि० ॥ ९ ॥ ब्रह्मज्ञान कथि तप तिरथ व्रत ध्यान भजन तजि देशेजीरे ॥ वेद पुराण हरि अवतार हरिनि मुर्त्ति मीथ्या केसेरे ॥ कलि० ॥१०॥ चोरे चकले वेसि द्विजवर नारि कथाओ गासेजीरे ॥ कोमचोखनां पाणि पिसे विजाने पण पासेरे ॥ कलि० ॥ ११ ॥ वटल्यानि आशंका मेलि चलमो पिसे तांणिजीरे ॥ परमेश्वरनो डर नहि राखे बोलसे मिथ्या वाणिरे ॥ कलि० ॥ १२ ॥ शम दम तप शांति शौचादिक ए ब्राह्मणना धर्मजीरे ॥ तेनो साग करिने द्विजवर करसे कुडां कर्मरे ॥ कलि० ॥ १३ ॥ एवां

अनंत अजोग्य कर्म छे केटलांक काहि संभलावुंजीरे ॥ कलिना द्विजनां लक्षण केतां अंतरमांइ लजावुंरे ॥ कलि० ॥ १४ ॥ पुरातण धिरज्य डापणने जुध-थकि नव्य भागेजीरे ॥ गौब्राह्मण साधु सेवामा क्षत्रि नित्य अनुरागेरे ॥ कलि० ॥ १५ ॥ ते सर्वे त्यागिने क्षत्रि करसे पाप अनेकजीरे ॥ तेमज दान पुन्य हरि भक्ति त्यागि देशे छेकरे ॥ कलि० ॥ १६ ॥ जीव दया करवी क्षत्रिने ते करसे जीव हिंसाजीरे ॥ चोरि चाडि खातर पाडि भेला करसे पैसारे ॥ कलि० ॥ १७ ॥ जोडा उपर छांटा पडतां ढोर नर्कमां जासेजीरे ॥ ते दारुने क्षत्री पीसे बिजाने पण पासेरे ॥ कलि० ॥ १८ ॥ राजा ने राजाना चाकर लांच लोकनि खासेजीरे ॥ जुठि जुठि साख्यो पुरि अवला न्याय तोलासेरे ॥ कलि० ॥ १९ ॥ चाडिया ते तो चतुर केवासे रुडाजन दंडासेजीरे ॥ हरामिथि सउ हारसे साधुजन पिडासेरे ॥ कलि० ॥ २० ॥ पाप कर्ममां बुड्या रेसे धर्म लेश नहि पाळजीरे ॥ सत पुरुष नि वात नहि मांने चडसे अवळे चालेरे ॥ कलि० ॥ ॥ २१ ॥ वाणिया आदिक वैश्य कहावे ॥ ते पण निज धर्म लोपि जीरे ॥ परनारि रत पापि गुरुने रेसे तन मन सोंपिर ॥ कलि० ॥ २२ ॥ साचा धर्मने खोटा केसे खोटाने सत्य गासे जीरे ॥ उत्तम

जाति नातरुं करसे नहि खपे तेनुं खासेरे ॥ कलि० ॥ २३ ॥ केटलांक माणस दिकरीयुंने बालपणामां हणसे जीरे ॥ परणाव्यानुं दाम खरच्यानि दाझ्ये पाप नहि गणसेरे ॥ कलि० ॥ २४ ॥ वाणिया तेतो चोरि करावसे नहि पाले धर्म लेश जीरे ॥ उपरथी तो रुडा राखसे वैष्णव केरा वेशरे ॥ कलि० ॥ २५ ॥ कुडां सांखसे काटलां घरमां लोकने ठगवा सारु जीरे ॥ ओछुं देशे अदकुं लेशे करे कर्म नठारुंरे ॥ ॥ कलि० ॥ २६ ॥ कन्या केरुं दाम न लेवुं तेनुं फलछे मोटुं जीरे ॥ ते कन्याना पैसा लेसे करशे कर्म बहु खोटुंरे ॥ कलि० ॥ २७ ॥ कृष्ण नामनुं माहात्म गाइने छेनालां बहु करसे जीरे ॥ प्रगट प्रभुनि निंदा करसे असतगुरु अनुसरसेरे ॥ कलि० ॥ २८ ॥ केटलाक वणिक कर्मने सत्य काहि नास्तिक मत अनुसरसे जीरे ॥ भवतारण भगवान तजिने पाप कर्म बहु करसेरे ॥ कलि० ॥ २९ ॥ तेमज सुद्र पण कलिजुगमां करसे निंदित कर्मजिरे ॥ दगा घात छलबल बहु करसे नहि पाले शुभ धर्मरे ॥ कलि० ॥ ३० ॥ चोरिने हिंसा बहु करसे करसे मदिरा पान जीरे ॥ भूत भरवाडा भुवा धुणावसे नहि भजे भगवानरे ॥ कलि० ॥ ३१ ॥ शौदर जाति माणस कावे ते गुरु थइ जग फरसे जीरे ॥

एक ब्रह्मनि वातुं करसे परनारि संग करसेरे ॥ कलि० ॥ ३२ ॥ असत पुरुष गुरु थइ जग फरसे कान फुंकी धन लेसे जीर ॥ वेद पुराण शास्त्र हरि मूर्त्ति सौने खोटा केसेरे ॥ कलि० ॥ ३३ ॥ असद्गुरुने तेना चेला सर्वे असत मारग अनुसरसे जीर ॥ भगनि सुता पुत्रनि नारि तेनो संग नित्य करसेरे ॥ कलि० ॥ ३४ ॥ एवा अनंत पापे जुक्त प्राणि कलिजुगमां वहु थासे जीर ॥ नारायणनुं भजन तजीने अन्य देवना गुण गासेरे ॥ क० ॥ ३५ ॥ सासुनि सिखामण वहुओ अंतरमां नहि धारे जीरे ॥ मा तानें वहु नित्य दवावसे तोये पुत्र नहि वारेरे ॥ कलि०॥ ३६ ॥ दिकरा पण वहुनि पक्ष लइने मात पिताने लडसे जीरे ॥ मात पिता ओसियाळां थइने खुंणे बेठां रडसेरे ॥ कलि०॥ ३७ ॥ वांकांवांकां वेणां केसे सासुने वहु आविजीरे ॥ दिकरा तो जोइ राजि थासे मा उपर रिस लाविर ॥ कलि०॥ ३८ ॥ माताने उदर दुख देतो उंधे शिर रयो झुलीजीरे ॥ पालि पोषि मोटो करसे ते गुण जासे भुलीरे ॥ कालि० ॥ ३९ ॥ सासु केरां वेणां उपर वहु वेणां वहु लावे जीरे ॥ दिकरा सांभलि राजि थासे सासु नणादि रिसावेरे ॥ कलि० ॥ ४० ॥ मर्म वचन सासु ते वहुने केसे तुं सुं लावि जीरे ॥ तारा बापनि छत हुं जाणुं सर्वे देउं बताविरे

॥ कलि ० ॥ ४१ ॥ लोकोनुं लुंडापणुं करतो पेट पराणे भरतो जीरे ॥ अन्न वस्त्रने अर्थे तारो बापतो वलखां करतोरे ॥ कलि ०॥ ४२ ॥ एवां वांकां वेणां वहुने मासु केमे वलतां जीरे ॥ तारे वहु सासुने सुणाववा पतिने केंमे वलतांरे ॥ कलि ०॥ ४३ ॥ तारे पाले हुं क्यां आवि नित्य नित्य मेणां खावा-जीरे ॥ तारो बाप नठारो तुंने भिद आव्थो परणा वारे ॥ कलि०॥ ४४ ॥ धणिने वहु ओधोके मारसे परनर देखि राजिजीरे ॥ पति नारिने सिखामण देसे तेने केसे पाजिरे ॥ कलि ० ॥ ४५ ॥ परण्या धणिनो साग करिने परनर संग लपटासेजीरे ॥ पतिव्रतानो धर्म नहि पाले एवि नारियो थासेरे ॥ कलि०॥ ४६ ॥ वहुने मारुं लगाडवाकाजे जेम केमे तेम करसे जीरे ॥ नारि वस थइ काम सउ करसे नफट थइने फरसेरे ॥ कलि० ॥ ४७ ॥ धणियांणिनां धोसे वस्त्र हाथे रांधसे हालिजीरे ॥ बोन बनेवि बारणुं न देखे पसलि लेसे मालिरे ॥ कलि० ॥ ४८ ॥ ससरा सालाने त्रेवडसे भाइयुं साथे वेरजीरे ॥ बोन भां-णेजां घेर आवसे तो लागसे कडवां झेररे ॥ कलि०॥ ४९ ॥ बालकनुं उपरालुं लेइने माइभाइ संग लडसे जीरे ॥ तुछपदारथ मारुं बंधव एक बिजाने नडसेरे ॥ कलि० ॥ ५० ॥ जाति जोगी ब्रह्मचर्य सागि पंच

विषे विख पिसे जीरे ॥ धन नारिनो संग्रह करसे हरि संग हेत न दिसेरे ॥ कलि० ॥ ५१ ॥ जंत्र मंत्रने दोरा धागा घेर घेर करता फरसेजीरे ॥ त्याग वैराग्यने ध्यान भजन सौ त्याग करि धन हरसेरे ॥ कलि० ॥ ५२ ॥ सत पुरुषनो द्रोहज करसे असत संघाथे हेतजीरे ॥ गांजो भांग्य अफिण ने होका पिता थासे फजेतरे ॥ कलि० ॥ ५३ ॥ अंध गुरु तेना चेलाने पण धर्ममां हेत न दीसजीरे ॥ नीच गुरुनुं एठुं खासे चरण धोइने तेनां पिसरे ॥ कलि० ॥ ५४ ॥ एवा अनंत दोषे जुत कलिमां गुरुने शिष्यवहु थास्येजीरे ॥ विधि निषेधनो त्याग करिने एक ब्रह्ममुख गासेरे ॥ कलि० ॥ ५५ ॥ गितामां अर्जुनने किधुरे कृश्न प्रभु श्रीमुखजीरे ॥ अधर्म कलिना विस्था मांणस मुजथि थासे विमुखरे ॥ कलि० ॥ ५६ ॥ तारेहुं प्रथविमां प्रगटिस धर्मना स्थापन सारु जीरे ॥ अधर्म कलीनो नाश करीने तारिश जीव हजारुरे ॥ कलि० ॥ ५७ ॥ करुणा करिते कृश्न कलिमां प्रगट थासे सुखदान जीरे ॥ हरि हरि कृश्न नाम केवासे पुरुषोत्तम भगवानरे ॥ कलि० ॥ ५८ ॥ काम क्रोध मद लोभना त्यागि साधु करसे अपार जीरे ॥ धर्म ज्ञान वैराग्ये सोती भक्ति करसे विस्ताररे ॥ कलि० ॥ ५९ ॥ पांडवने कृश्ने कहि दाख्या ए रित्ये कलि

धर्म जीरे ॥ पांडव सुंणि हेमाले गलिया जांणि सगलो मर्मरे ॥ कलि० ॥ ६० ॥ संवत अढार साड-त्रिसे गायो कलिजुगनो महिमायजीर ॥ तेन गाय शिखेने सांभले तेनां अघ बलि जायरे ॥ कलि० ॥ ॥ ६१ ॥ पांडवने कृश्ने किधुं ते सर्वे थयुं तेमजीरे ॥ करजोडि गोविंदराम केछे पालजो रुडां नेमरे ॥ कलिजुग आव्योजीरे ॥ ६२ ॥ इति कलियुगना धर्म संपूर्ण ॥

॥ उपदेश विषे ॥ चंद्रावला ॥

॥ परनारि सुं प्रित करिछे ॥ तेने रुठ्या राम ॥ माताने तो भारे मारी मुज्युं भुंडुं काम ॥ मुज्युं भुंडुं काम ते केवुं ॥ एना पित्रि स्वर्ग कंपे एवुं ॥ कहे गोविंदराम एनि मत फरिछे ॥ परनारि सुं प्रित करिछे ॥ तेने रुठ्या राम ॥ १ ॥ परनारि तो वेदमां वारी ॥ तजवो तेनो संग ॥ सर्प थकी विख एमां अदकुं ॥ अंधो थाय भोयंग ॥ अंधो थाय भोयंग ते नारि ॥ ज्ञानिये तजि ते जोइ विचारि ॥ कहे गोविंदराम न रिझे गिरधारि ॥ परनारि तो वेदमां वारि ॥ तजवो तेनो संग ॥ २ ॥ सर्प खायतो सु-खेथि खाजो ॥ तेथि रुडि लाय ॥ परनारिपर पैसा सन्मुख चाले महा दुख थाय ॥ चाले महा दु-ख थाय ते केवुं ॥ भव भटकणमां नाखे एवुं ॥

कहे गोविंदराम एथि अलगा थाजो ॥ सर्प खायतो मुखेथी खाजो ॥ तेथी रुडीलाय ॥ ३ ॥ पुरुष चाली जाय पारके घेर ॥ ते न होय साडा सोल ॥ ॥ उधली कन्या घर न पुछे ॥ माथे न घाले मोड ॥ माथे न घाले मोड ते कन्या ॥ ने एक वे वातमां थाये अन्या ॥ कहे गोविंदराम एनुं जीवत थैगयुं झेर ॥ जे पुरुष चाली जाय पारके घेर ते न होय साडा सोल ॥ ४ ॥ सीलवीना सोभे नै केदी आभुक्षण कउ एक ॥ सोले तणीतो सीलज सोभा जे टाणे राखे टेक ॥ टाणे राखे टेक ते केवी ॥ तो परत्रीयाते माता जेवी ॥ कहे गोविंदराम आ जीवततो वेदि ॥ सीलविना सोभे नहि केदी आभुक्षण कउ एक ॥ ५ ॥ पांच पाप सर्व पापथी भारी ते महा पाप कहेवाय ॥ ब्रह्महत्या ने चोर सोना नो त्रीजो जारी केवाय ॥ त्रीजो जारी ने अन्याये जे चाले मद्य केफी ने सोबत झाले ॥ गोविंदराम कहे सांभलो नरनारी ॥ पांच पाप सर्व पापथी भारी ॥ ते महा पाप कहेवाय ॥ ६ ॥ गाफलबंदा गर्व न करीये गयुं रावणनुं राज ॥ सिता हरिने सर्व खोयुं ॥ एवुं नै केने आज ॥ एवुं नै केने आज ते भाई ॥ लंकाना पतिने समुद्रनि खाई ॥ कहे गोविंदराम पगलुं जोइने भरिये ॥ गाफल बंदा गर्व

न करिये ॥ गयुं रावणनुं राज ॥ ७ ॥ जीव जगतनो एवो डायो कथा सांभलवा जाय ॥ भांड भवाइ ने भुंगळां वागे ॥ त्यां पण तैयार थाय ॥ त्यां पण तैयार थाय ते जोवा ॥ बुढापणनी लाज खोवा ॥ कहे गोविंदराम गधेडो गंगामां नायो ॥ जीव जगतनो एवो डायो कथा सांभलवा जाय ॥ ८ ॥ गाडा उपर वोरो बेठो वाट्ये चाल्युं जाय ॥ मारगमां रोदा आव्या उंचा नीचुं थाय ॥ उंचा नीचुं थाय ते गाडुं ॥ वोराजी तमे झालजो नाडुं ॥ कहे गोविंदराम जइ पड्यो हेठो ॥ गाडा उपर वोरो बेठो वाट्ये चाल्युं जाय ॥ ९ ॥ सवलुं केतां समझ्यो आडुं ॥ तेनी समझणमां बौ फेर ॥ गाडा उपरथी पडतुं मेल्युं ॥ माथुं थइ गयुं झेर ॥ माथुं थइ गयुं झेर ते फुटी ॥ तोय मुरख मेले नई मुंठी ॥ कहे गोविंदराम ए वोरानुं नाडुं ॥ सवलुं केतां समझ्यो आडुं ॥ तेनी समझणमां बौ फेर ॥ १० ॥ प्रथम कयुं करे नहि मननुं तेज हरिना दास ॥ मन घडीमां मेड चडे ने घडीमां वाढे घास ॥ घघडीमां वाढे घास ते मन ॥ तेने जाणे विवेकी जन ॥ कहे गोविंदराम ए लक्षण हरिजननुं ॥ प्रथम कयुं करे नहीं मननुं तेज हरिना दास ॥ ११ ॥ जेदी तेदी सतसंग करसो तेयें पामसो पार ॥ सर्व

तीर्थनुं फल एछे वेदवचन निरधार ॥ वेद वचन नीरधार ते मानो ॥ महा प्रताप नथी कांइ छांनो ॥ कहे गोविंदराम भवसागर तरसो ॥ जदी तेदि सतसंग करसो ॥ तैयें पामसो पार ॥ १२ ॥ काम क्रोध मोह मदना छक्या ॥ जीव तणाणा जाय ॥ अनितिमां जइ आसन वाले नितिमां न दीये पाय ॥ नितिमां न दीये पाय ते लाजे ॥ माथे नगारां मोतना गाजे ॥ कहे गोविंदराम जीव बोलछे वक्या ॥ काम क्रोध मद मोहना छक्या ॥ जीव तणाणा जाय ॥ १३ ॥ साकर मुकी राखज खाय ॥ जेम नानुं बाल ॥ मावतर जाणे मांदुं पडसे मुकावे ततकाल ॥ मुकावे ततकाल ते मावाप ॥ तेम तेम बालक करे संताप ॥ कहे गोविंदराम रोतुं जाय ॥ साकर मुकी राखज खाय जेम नानुं बाल ॥ ॥ १४ ॥ जीव जातिमां बालक जेवा विख खावाने जाय ॥ हरिजन मात तात सम हेतु अहोनीश अमृत पाय ॥ अहोनिश अमृत पाय ते केवुं ॥ भव भटकणने टाले एवुं ॥ कहे गोविंदराम एने भुंडा हेवा ॥ जीव जगतना बालक जेवा ॥ १५ ॥ त्राय त्राय करि तोभां भरसे तेनो हारे झालसे हाथ ॥ करी ते करी पण फरि न करवी ॥ जीयाथी सुणी संतनी वात ॥ सुणि संतनी वात जे जी-

यांथी ॥ करो फेलनो सागज सांथी ॥ कहे गोविंदराम त्रास सहिबनो धरसे ॥ त्राहि त्राहि करी तोभां भरसे तेनो हरि झालसे हाथ ॥ १६ ॥ गुना सामुं गोविंद न जुवे जोजन दीनज थाय ॥ अजामेल गज गुणका जेवा ते पारांगत जाय ॥ ते पारांगत जाय ते जाय ॥ चार वेद गिता एम गाय ॥ कहे गोविंदराम सांभलजो सौवे ॥ गुना सामु गोविंद न जुवे ॥ जो जन दीनज थाय ॥ १७ ॥ तमे हो डाया तो डापण मुको ॥ इयां नथी डापणनुं काम ॥काला घेलाना छे प्रभु ॥ समृथ सिताराम ॥ समृथ सिताराम ते केवा ॥ अधम ओधारण नामज एवा ॥ कहे गोविंदराम समरण कां चुको ॥ तमे हो डाया तो डापण मुको ॥ इहां नथी डापणनुं काम ॥ १८ ॥ प्रथम भक्ति प्रल्हादनि कैये जेणे रटवा मांडया राम ॥ हिरणकंश कहे दे परचो कां मुकीदे नाम ॥ कां मुकीदे नाम ते टांणे ॥ आव्युं मोत निश्चे तुं जांणे ॥ कहे गोविंदराम नाम समझीने लैये ॥ प्रथम भक्ति प्रल्हादनि कैये ॥ जेणे रटवा मांडया राम ॥ १९ ॥ त्रांबियानि एक तोलडी लैये ते वगाडी वारमवार ॥ गुरु करिये तो केशे काला घेला एमवयो जाये संसार ॥ एम वयो जाये संसार ते जासे ॥ पात्र एवुं कारज थाशे ॥ कहे गोविंदराम समझु तेने कैये ॥ त्रांबियानी

एक तोलडी लइए ते वगाडी वारमवार ॥ २० ॥ कामि क्रोधि लोभि लंपट पापि जीव पिलाय ॥ जमना किंकर जोडा मारी जमपुरिमां लइजाय ॥ जमपुरिमां लइ जाय ते ज्यारे ॥ खरी खबर तो पडसे त्यारे ॥ कहे गोविंदराम चिचोडा संपट ॥ कामि क्रोधि लोभि लंपट पापि जीव पीलाय ॥२१ ॥ साकर कैये मोढुं मीठुं कहुं के दिये न थाय ॥ नाम तणुं नाडु झालीने कैक तणाणा जाय ॥ कैक तणाणा जाय ते जासे ॥ पण खाधे मोढुं मीठुं थासे ॥ कहे गोविंदराम नामि विनानुं नाम ते डीठुं ॥ साकर कैये मोढुं मीठुं कहुं के दिये न थाय ॥ २२ ॥ चेतवुं होयतो चेतज्यो टांणे माथे गाजे छे मोत ॥ आज कालमां उठी जावुं कुटुंब कबिला सोत ॥कुटुंब कबिला सोत ते जावुं ॥ हरि भज्या विना हाड हाडय थावुं ॥कहे गोविंदराम नइ उगरो नाणे ॥चेतवुं होयतो चेतज्यो,टांणे माथे गाजेछे मोत ॥२३॥ सुली कीधीछे चोरने काजे तेनो महाजनने डर नोये ॥ जो महाजन करे चोरनी सोबत चडे सुलीय सोये ॥ चडे सुलीय सोये ते चडशे ॥ खोटे संगे पेजारु पडशे ॥ कहे गोविंदराम न्याय बांध्यो छे महाराजे ॥ सुली कीधिछे चोरने काजे ॥ तेनो महाजनने डर नोये ॥ २४ ॥ गुरु करिय तो ज्ञानी करिये सत असतने जोई ॥ बलध लैये तो खडी लैये डोबुं लैये दोई ॥ डोबुं लैये दोइ ते लइये ॥ स-

मझु नाम तेनुं कैये ॥ कहे गोविंदराम भवसागर तो तरिये ॥ गुरु करिय तो ज्ञानी करिय सत्य असत्यने जोइ ॥ २५ ॥ हरिजनिनि नव्य करिये *बाजी ॥ बाजीमां बगडी जाय ॥ जुवो विचारी जादवनी जेने कृष्ण थया नहीं साय ॥ जेने कृष्ण थया नहि साय सर्वे कुळमां ॥ सर्वे नाश थया घडी पळमां ॥ कहे गोविंदराम एमां राम नथी राजी ॥ हरिजननी नव्य करिय बाजी ॥ बाजीमां बगडी जाय ॥ २६ ॥ एमां न राखीने आकडो वावे प्रबल पाणि पाय ॥ बार महिना सिच्या करे सारे फल फूल तो थाय ॥ फल फूल तो थाय ते केवां ॥ दीठामां तो केरी जेवां ॥ कहे गोविंदराम स्वाद कांइ केरिनो ना आवे॥ एमान राखीन आकडो वावे ॥ २७ ॥ ज्ञान कथे जेम बळेला चुला चुलेथी उतार्यो पाक ॥ पाक परोणा खाइ गया ॥ ने वांसे रईछे राख ॥ वांसें रइछे राख ते केवी ॥ उलटी आंख्युं फोडे एवी ॥ कहे गोविंदराम जीव भक्ति तो भुल्या ॥ ज्ञान कथे जेम बळेला चुला ॥२८॥ एक नाम अनेकनुं कारण जो ओळखिने लेवाय ॥ वो नाम लइ बकता हाले मरगला स्वादे गाय ॥ मरगला स्वादे गाय गुण काथि ॥ एक नामनि खबर नथी ॥ कहे गोविंदराम हरि नरक नीवारण ॥ एक

* मशकरी.

नाम अनेकनुं कारण ॥ २९ ॥ बकबक बोले तेने बो-
लवा दइए राति न करिये रिस ॥ ज्ञानमांय तो खोट
न आवे वधे वशा कहुं वीश ॥ वधे वशा कहुं वीश
ते न बोले ॥ अने जे बोले ते एकज तोले ॥ कहे गो-
विंदराम तेने बालक कहीये ॥ बकबक बोले तेने बो-
लवा दीये राति न करिये रिस ॥ ३० ॥ कुबुद्धिनुं नव्य
करिये कयुं ॥ कुबुद्धि करे कुसंग ते जेन ॥ एने संग
न चालीये वइने ॥ कहे गोविंदराम हाथ राखीये हैयुं
॥ कुबुद्धिनुं नव्र करिये कैयुं ॥ ३१ ॥ भीसें भोयंग का-
ढीने तल झारे ॥ तेने पुजी लागे पाय ॥ ते भोयंगने
प्रगट देखे मूरख मारवा जाय ॥ मूरख मारवा जाय
ते पापी ॥ भींसे तो पुजेछे थापी ॥ कहे गोविंदराम
प्रगटने मारे ॥ भींसें भोयंग काढिने तलझारे
॥ तेने पूजी लागे पाय ॥ ३२ ॥ छाण तणो लई
सेखो करे तेने पुजी लागे पाय ॥ सेखा भाभा
रक्षा करज्यो कुलेर वेंची खाये ॥ कुलेर वेंची खाये
ते खाये ॥ प्रगटने चर्ण न जाये ॥ कहे गोविंदराम
कलीना कौतुक देखो ॥ छाण तणो लई करे सेखो
॥ तेने पुजी लागे पाये ॥ ३३ ॥ हकेथी लइये ने
हकेथी दइये ॥ हकनुं हजम थाय ॥ अण हकनो
आंनो आवेतो ॥ उलटि बरकत जाय ॥ उलटी
बरकत जाय ते कमांणि ॥ दुधनुं दुधने पाणीनुं

षाणी ॥ कहे गोविंदराम बीता हरीथी रइये ॥ हके-
थि लइये नेहकेथी दइये ॥ हकनुं हजम थाय ॥ ३४॥
मतवी नाखती दुधमां पाणी तेनि घडावी नथ ॥
पाणी भरतां पडी गइ ॥ ते गइ खबड खत ॥ गइ
खबड खत ते गइ पछेतो विचारी रइ ॥ कहे गोविंदराम
पाछलर्थी पसताणी ॥ मतवी नाखती दुधमां पाणी
तेनि घडावी नथ ॥ ॥ ३५ ॥ वार वरतोलुं रया करे
एकादशी करे अभंग ॥ जु माकड ने चांचड मारे
नही बोलीनो ढंग ॥ नही बोलीनो ढंग ते वाणी ॥
गले नही दुध ने पाणी ॥ कहे गोविंदराम एतो
पोलापोलुं ॥ रया करे वार वरतोलुं ॥ ३६ ॥ गाजरे
सुं गुनो कर्‍यो बावले सुं मार्‍यो बाप ॥ दोष छे ते
देखता नथी जेनुं लागे पाप ॥ जेनुं लागे पाप ते
अती ॥ तेमां तो द्रढ बांधी मति ॥ कहे गोविंदराम
ए बालकनो मनो ॥ गाजरे सुं कर्‍यो गुनो ॥ बा-
वले सुं मार्‍यो बाप ॥ ३७ ॥ दातणमां तो दोषज
भाले परडा उपर प्रेम ॥ एक झाडमांथी बेय थयां
छे तेनुं करवुं केम ॥ तेनुं करवुं केम ते विचार ॥
ए वाते नइ उतरे पार ॥ कहे गोविंदराम एनुं मन
चडयुं छे चाले ॥ दांतणमां तो दोषज भाले ॥ परडा
उपर प्रेम ॥ ३८ ॥ विपर करता विशेषें वरकत
ते पाले आचार ॥ रसोइ करतां डाबो कर ते राखे

चोकानी बारय ॥ राखे चोकाथी बार ते सीद्ध ॥ गुदा तो रइ चोकाने मध्य ॥ कहे गोविंदराम जुओ एनि हरकत ॥ वीपर करतां विशेष वरकत ते पाले आचार ॥ ३९ ॥ वाडामांथी वाछडुं छुटुं ते धोडीने धाववा जाये ॥ माता जाणिने मोढुं घाले पाटु पुरण खाय ॥ पाट्ट पूरण खाय ते खाय ॥ पछे बछपाल एने बतावे माय ॥ कहे गोविंदराम ए फरे वखुटुं ॥ वाडामांथी वाछडुं छुटुं ॥ ते धोडीने धाववा जाय ॥ ४० ॥ केनोक बाप हतो एक कांणो तेनी फुटल आंख्य ॥ तेनो पुत्र थयो देखतो तेने कहे फोडी नाख्य ॥ तेने कहे फोडी नाख्य ते आंख्य ॥ ने तारा बापनो चीलो राख्य ॥ कहे गोविंदराम हरीनुं नाम वखाणो ॥ केनोक बाप हतो एक काणो ॥ तेनी फुटल आंख्य ॥ ४१ ॥ मात पिता मोसालनु बोलुं नर होय अथवा नार ॥ कृष्ण पतिनी क्रीपा न राखी ॥ चार वर्णने बार ॥ चार वर्णने बार ते रहे छे ॥ ने वनना पशु एने वेदज कहेछे ॥ ॥ कहे गोविंदराम क्रिपानुं मुल न खोल्युं ॥ तेने मात पीता मोसालनुं बोल्युं ॥ नर होय अथवा नार ॥ ४२ ॥ कबुद्धी सबुद्धी रयां छे आंही ॥ कबुद्धी करे कुसंग ॥ सबुद्धीने सतसंग ते सुझे बेयना नोखा रंग ॥ बेयना नोखा रंग ते ताणे ॥ ज्ञानी होय ते

बेयने जाणे ॥ कहे गोविंदराम जोवा जाओ छो क्यांही ॥ कबुद्धि सबुद्धि रियां छे आंही ॥ कबुद्धि करे कुसंग ॥ ४३ ॥ पशुं टलीने पात्रज थाये नीगम चारनो सार ॥ माहा वायकनो मर्मज मोटो ते पंडिते नव्य प्रीछाय ॥ पंडिते नव्य प्रीछाय वेद वाणी ॥ ए सीक्षा एवी कइ वखाणी ॥ कहे गोविंदराम जे सतसंगे जाय ॥ ते पशु टलीने पात्रज थाय ॥ एनीगम चारनो सार ॥ ४४ ॥ आज कालमां उठी जावुं रेवुं नथी रउ ॥ राजा प्रजा केडा सोर चाल्युं जासे सौ ॥ चाल्युं जासे सौ ते जासे ॥ ने ते खाव्या जे हरिगुण गासे ॥ कहे गोविंदराम रचना रची छे जुठी ॥ आज काल्यमां जाऊं उठी रेवुं नथी रउ ॥४५॥ आ तन तो पाणीनो परपोटो ते क्षणुमां थाशे खेह ॥ अंते नाम नारायणनुं रहेसे ॥ नीश्चे टलसे देह ॥ नीश्चे टलसे देह ते टलसे ॥ जेम ढेफूं धरतीमां गलसे ॥ कहे गोविंदराम एनो पायो छे खोटो ॥ आ तन पाणीनो परपोटो ते क्षणुमां थासे खेह ॥ ४६ ॥ जेम पारेखनी पेढीए जाय देखाडवाने दाम ॥ खरा खोटाना करे भागला ते पारेखनुं नाम ॥ ते पारेखनुं नाम ते कइये ॥ सां देखाडी पैसा लइये॥ कहे गोविंदराम तो खोट न खाइए॥ जेम पारेखनी पेढीए जाइए ॥ देखाडवाने दाम॥४७॥ ॥ असंतनुं अंग॥ ॥ संत तणे वेशे वौ धृता जगमां फरे अनंत ॥

तीलक माला टोपी घाली नाम धरावे संत ॥ नाम धरावे संतज थया ॥ काम क्रोध ने फेली जरिया ॥ कहे गोविंदराम देखता दुता ॥ संततणे वेश बौ धुता ॥ जगमां फरे अनंत ॥ १ ॥ कालनिमि रावणने राहु ए त्रण्ये लीधो भेख ॥ कमलावरसुं कपटे रमीया तेमां नरियो एक ॥ ॥ तेमां नरियो एक ते पापी ॥ हरिये मस्तक नाख्या कापी ॥ कहे गोविंदराम दिसता हाऊ ॥ कालनिमि रावणने राहु ॥ ए त्रण्ये लीधो भेख ॥ २ ॥ असंतने आदर नव करिये पुरण लागे पाप ॥ तुलशीदासे राम कथामां कयुं छे आपोआप ॥ कयुं छे आपोआप ते कथी ॥ एना दरशने फलज नथी ॥ कहे गोविंदराम विख खाइने मरिये ॥ असंतने आदर नव करिये ॥ पूर्ण लागे पाप ॥ ३ ॥ कुवाडो चंदनने कापे ए दुष्टनि रित्य ॥ हरिहरिजननि निंदा मांडे अबुज आंधला भित्य ॥ अबुज आंधला भित्य ते आमें ॥ कर्‍या करमनां फल ते पामे ॥ कहे गोविंदराम सुगंधी उलटी आपे ॥ कुवाडो चंदनने कापे ए दुष्टनि रित्य ॥ ४ ॥ भगवुं करिने स्वान भसावे ॥ काढे संतनो वेश ॥ दमडा कारण घेरघेर डोले रेणि नमले लेश ॥ रेणि नमले लेश ते कैये ॥ एवा

संतथी अलगा रैये ॥ कहे गोविंदराम हरि तेना सुपनामां न आवे ॥ भगवुं करिन स्वान भसावे ॥ काढे संतनो वेष ॥ ५ ॥ भेखमांइतो भेल पडी छे ते कालिगानुं काम ॥ बाजिमां राजी थइ बेठा त्यांथी उठया राम ॥ त्यांथी उठया राम ते कोपी ॥ वांसे लाज धर्मनि लोपि ॥ कहे गोविंदराम संत थइने मति बगडी छे ॥ भेखमांइतो भेल्य पडी छे ॥ ते कालिगानुं काम ॥ ६ ॥ द्वापर सतयुग ठामे त्रेता ए त्रण जुगनां दैत्य ॥ ते कलियुगमां संत थया छे कुटंब कबिला सहीत ॥ कुटंब कबिला सहीत थया छे ॥ धर्म खंडन करी डंभमां रिया छे ॥ कहे गोविंदराम मोटा गया छे केता ॥ द्वापर सतयुग ठामे त्रेता ए त्रएय जुगना दैत्य ॥ ७ ॥ ज्यां काम क्रोधने लोभ रहे छे ए प्रगट नर्कनो पंथ ॥ ए मार्गे तो अंधा चाले पण केदि न चाले संत ॥ केदि न चाले संत ते केवा ध्रु प्रल्हाद सनकादिक जेवा ॥ कहे गोविंदराम एम गीता कहे छे ॥ ज्यां काम क्रोधने लोभज रहेछे ए प्रगट नर्कनो पंथ ॥ ८ ॥ हंस बग दीठामां सरखा ते आर करतां ओलखाये ॥ हंस करे मोतिनो चारो ने बग मछने खाये ॥ बग मछने खाये ते खाये ॥ संत असंतनो एवो

न्याये ॥ कहे गोविंदराम एनि करीये परिखा ॥ हंसबग दीठामां सरिखा ते आर करतां ओरखाये ॥ ९ ॥ हंस पण श्वेतने श्वेतछे बग ए बेमां नथी कोइ शाम ॥ दुध पाणिनो वेरो करी आपे हंस ते तेनुंज नाम ॥ हंस ते तेनुज नाम ते कैये ॥ बाकी तो बगलां ओलखी लइये ॥ कहे गोविंदराम जुगमां ज्ञानी छे ठग हंस पण श्वेतने श्वेतछ बग ॥ ए बेमां नथी कोइ श्याम ॥ १० ॥ खोटि वातमां खासडां खाये ने गलिनी बेसे गाल्य ॥ बे वातनुं बानु आव्युं तेनुं जीवतव्य बाल्य ॥ तेनुं जीवतव्य बाल्य ते केवुं ॥ जे खरे चढीने चाले एवुं ॥ कहे गोविंदराम सरपात्र न थाये ॥ खोटी वातमां खासडा खाये ने गलीनी बेसे गाल्य ॥ ११ ॥ १ वायलने वधुथी वेगला रेये एनि लेश अडे जो लाल॥ छ मैने जातां हडकवा हाले ने निश्चे आवे काल ॥ निश्चे आवे काल ते मरे ॥ डायो होय ते दुरथी तरे ॥ कहे गोविंराम तेने नजीक न जैये ॥ वायलने वधु थी वेगला रैये ॥ १२ तिलक माला टिलुं ताणी भगवदि धरियुं नाम ॥ एवा भगवदितो एक दिवसमां थाये बधुं गाम ॥ थाये बधुं गाम ते

१ जेने हडकवा हाल्यो होय तेथी अने स्त्रीथी ए बेथी वेगला रहीए.

सुलभ ॥ नव वश्य करवी ते दुर्लभ ॥ कहे गोविंदराम वेशनि देशितो आणी ॥ तिलक माला टिलुं ताणी भगवादि धरियुं नाम ॥ १३ ॥ काम क्रोधने लोभनि लेरि ॥ ए त्रण्यथी तोबां त्राय ॥ काम थकी तो कलंक लागे लोभे लक्षण जाये ॥ लोभे लक्षण जाये ते जासे ॥ क्रोध थकी तो केरज थासे ॥ कहे गोविंदराम ए त्रण्य जीवना वेरी ॥ काम क्रोधने लोभनि लेरी ॥ ए त्रण्यथी तोबां त्राय ॥ १४ ॥ बगड्यां बे बावो ने बावी नवरां लेछे नाम ॥ कलंक भर्‍यां कानज फुंकी कइक बगाड्यां गाम ॥ कइक बगाड्यां गाम ते केवां ॥ अंध गुरु तेनां चेला पण एवा ॥ कहे गोविंदराम गुरुनि गमतो नावी ॥ बगडां बे बावोने बावी नवरां ले छे नाम ॥ १५ ॥ भेखमांइ भडवा पणुं पेठुं खोइ धरमनी लाज ॥ आगल तो कांइ एवुं नोतुं पण एवुं मंडाणुं आज ॥ एवुं मंडाणुं आज से माटे ॥ काम क्रोध ने लोभ ते माटे ॥ कहे गोविंदराम बदलामुं बेठुं ॥ भेखमांइ भडवापणुं पेठुं ॥ खोइ धरमनी लाज ॥ १६ ॥ भेखे अमारो मारग भांगी वाली लीधुं गाम ॥ जोर न चाले ने जीवाई भांगी को केम करिये राम ॥ को केम करीये राम ते अमे ॥ एने शीखामण आपो तमे ॥ कहे गोविंदराम

वेस्या रोवा लागी ॥ भखे अमारो मारग भांगी वाली लीधुं गाम ॥ १७ ॥ कथे ज्ञान पण कागडा जेवा ए आचारे ओलखाय ॥ खीर चाखीने खुवार थावा करका उपरथ जाय ॥ करका उपरथ जाय चाली ठीक नही एनी भगती ठाली ॥ गोविंदराम कहे एने ओलखी लेवा ॥ कथे ज्ञान पण कागडा जेवा ए आचारे ओलखाय ॥ १८ ॥ एवा संतथी अलगा रेये जे सतसंगे जाय ॥ एनुं नाम ते ज्ञानी कये तेथी कारज थाय ॥ तेथी कारज थाय ते थासे नीगम तेणे कह्युं वरते न्याये ॥ कहे गोविंदराम माहा वायक लईने ॥ असत पंथथी अलगा रेये जे सतसंगे जाये ॥ १९ ॥ बग आहार ते बगडी जासे ते बगला मलीने खाये ॥ मोती तणो जो आहार हाथज आवे तो हंसनीं भुखज जाये ॥ हंसनी भुखज जाय ते भागी ॥ हरिजने टेल हंसनी मागी ॥ कहे गोविंदराम एनी शी गति थाशे ॥ ने बग आहार ते बगडी जासे ते बगला मलीने खाय ॥ २० ॥ ज्ञान विना नर पशुवत जेवा तेमां नथी कांई फेर ॥ सास्त्रे कयुं जे सतसंग करवो ते लागे कडवुं झेर ॥ लागे कडवुं झेर ते लागे अने मुरख पंडितथी भागे ॥ कहे गोविंदराम गीता के एवा ॥ ज्ञान विना नर पशुवत जेवा तेमां नथी कांइ फेर ॥ २१ ॥

परथम केमे पेमा मेलो पछे वतावे ज्ञान ॥ एवा गुरुना शीश्यज थाये तेने मोटुं ज्यान ॥ तेने मोटुं ज्यानज थाये ॥ पामर तेने मरणे जाये ॥ कहे गोविंदराम पछे करे चेलो ॥ प्रथम केमे पेमा मेलो पछे वतावे ज्ञान ॥ २२ ॥ मोरयगुरुने वांसे चेला ते नवरा नरके जाये ॥ गुरु मरीने स्वानज सरजे सीस गींगोडा थाय ॥ तेना शीश गींगोडा थाय ते मा माटे ॥ ठगी द्रव्य लीधु ते माटे ॥ कहे गोविंदराम जमपुरीमां पहेला ॥ मोरय गुरुने वांसे चेला ते नवरा नरके जाय ॥ २३ ॥ द्रव्य हरा ज गुरु होय धुता ते नव पामे पार ॥ अंध गुरु ने बधीर चेला वलगा एक बीजाने लार ॥ एक बीजाने लारे वलगा ॥ ते वेद वचन सुणी नव थाय अलगा ॥ कहे गोविंदराम ए सरजे कुत्ता ॥ धन हरा ज गुरु होय धुता ते नव पामे पार ॥ २४ ॥ व्रज भाषामे ॥ विना ज्ञान नर स्वान जात जंबुककी कावे ॥ वसे गींगोडा कान सुख सुपने नही पावे ॥ दयावंत कोइ संत नाहीकुं तोरन जावे तो सब स्वानकी जात उलटी काटन धावे ॥ विना ज्ञान नर स्वानहे तामे फेर न जानीये ॥ कहे गोविंदराम गीता कहे तो सत्य वचन करी मानीये ॥ वीना ज्ञान नर स्वान जात जंबुकनी कावे ॥ २५ ॥ बीना ज्ञान नर घूर दीनकुं कबु न देखे ॥ कोय कहेगो सुर ताही मिथ्या

करी लेखे ॥ कुअंग कोतर मध्य जाइ पर्यो चारो करे नमूरको ॥ कहे गोविंदराम आ जगतमें वीना ज्ञान नर घुरको ॥ वीना ज्ञान नर घूर दीनकुं कबु न देखे ॥ ॥ २६ ॥ घरघर घुघु बोतहे ॥ नीमष न उघडत नूर ॥ एक अंचभा एसा भया ॥ सनमुख देख्या सूर ॥ सनमुख देख्या सूर कुटुंबकुं केवे कथी ॥ मूरख मनमें चेत ॥ मुंदलमे सुरज नथी ॥ तब घरडा घुघु बोलिया ॥ में फीरीहुं देस अपार ॥ आज कालकी बात नहीं ॥ भाय वेगे वरप हजार ॥ वेगे वरप हजार ॥ तनपर पडते तडका ॥ तारे चंदकी रात लगत मोटही भडका ॥ कहे विप्र गोविंद ॥ युं बोले मतीहीन ॥ ओही नर घुघु घरडा ॥ २७ ॥ इति व्रज भापा ॥ ॥ तुंबडुं पाणीमां बोळिए ऊंडुं ते बारे नीसरे बाप ॥ खुणे काम करे जे खोटां ते प्रगट थाये पाप ॥ प्रगट थाये पाप ते केवुं ॥ खरे चडीने चाल्या जेवुं ॥ कहे गोविंदराम एवुं कामछे भुंडुं ॥ जेम तुंबडुं पाणीमां बोलीए ऊंडुं ते बारे नीसरे बाप ॥ २८ ॥ खोटी वातने खामडा दिये तेनो राम न आणे रोप ॥ जो होय साची ने जुठी कहीये तेनो लागे दोष ॥ तेनो लागे दोष ते लागे ॥ ने जमीन असमानथी जायगा भागे ॥ कहे गोविंदराम साची एटली सांभळी लेय ॥ खोटी वातने खासडां देये

॥ तेनो राम न आणे रोष ॥ २९ ॥ संतोक दा-
मने त्रृष्णा झाझी टाढुं नहीं एनुं तन ॥ दुवारा
बारणे डोकां काढे मेलुं एनुं मंन ॥ मेलुं एनुं मंन
मा माटे ॥ तो दुवारा बार जुवे ते माटे ॥ कहे
गोविंदराम एमां राम नथी राजी ॥ जे संतोक दा-
मने त्रृष्णा झाझीं ॥ मेलुं एनुं मंन ॥ ३० ॥ सी-
तलदास पण बलती सगडी वडवड काढे बोल ॥
॥ ज्ञानगुष्टी ते जाणे नही जाणीये भुंक्यो खोल ॥
जाणीये भुंक्यो खोलते खोलो ॥ ने रेणी करणीनी
कोरनो पोलो ॥ कहे गोविंदराम बाुं पेठुं तेनुं घर
गयुं वगडी ॥ सीतलदास पण बलती सगडी वड
बड काढे बोल ॥ ३१ ॥

॥ प्रगट प्रभुना महिमा विषे ॥

प्रगट दिपनुं कारण मोटुं ते टाले अंधकार ॥ वी-
जा मंदिरमां दश दिवानी प्रगट्या वोंणी हार ॥
प्रगट्या वोंणी हार ते मेली ॥ ते अंधारुं न काढे
टेलो ॥ कहे गोविंदराम दीवो नाम कांई खोटुं
॥ प्रगट दीपनुं कारण मोटुं ते टाले अंधकार ॥ १ ॥
प्रगट होय तेदि कोय न जाणे रमापतिनी रीत
॥ हरि कृपार्थी हरिजन जाणे जगत आंधलुं भित
॥ जगत आंधलुं भित ते केवुं ॥ निंदा करवा
मांडे एवुं ॥ कहे गोविंदराम पछे तो सौ वखाणे

॥ प्रगट होय तेदी कोय न जाणे ॥ रमापतिनी रीत ॥ २ ॥ विधि हरनां तमे वचन विचारो महामात्म सतसंग ॥ शुक नारद सनकादिक मागे हर्ष दियो श्रीरंग ॥ हर्ष दियो श्रीरंग एम मागे ॥ लव सतसंगथी भव दुख भागे ॥ कहे गोविंदराम अवसरछे सारो ॥ विधि हरनां तमे वचन विचारो महामात्म सतसंग ॥ ३ ॥ लवसत संगनी समता नावे तप तीर्थ व्रत जोग ॥ सतसंग विना साधन करवां ते सुप्रांतरना भोग ॥ सुप्रांतरना भोग ते आसे ॥ सर्व साधन करि सतसंग पासे ॥ कहे गोविंदराम शमे त्यां जड आवे ॥ लव सतसंगनी समता नावे ॥४॥ समझ्या त्यांथी सतसंग करीये धरिये विमल विचार ॥वारवार उमापति मागे वेदचारनो सार ॥वेद चारनो सारज कावे ॥ अन्य संगे भवपार न आवे ॥ कहे गोविंदराम भुल्या नव फरिये ॥ समझ्या त्यांहांथी सतसंग करिये ॥ धरिये विमल विचार ॥ ५ ॥ सतसंग सर्वनुं आभुषण आद्य अंत ने मध्य ॥ कुसंगे करिके गया बगडी ॥ जोगी जतिने सीद्ध ॥ जोगी जतिने सीद्ध ते केवा ॥ रावण राहुने नीमी जेवा ॥ कहे गोविंदराम कुसंगमां दुषण ॥ सतसंग सर्वनुं आभुषण ॥ आद्य अंत ने मध्य ॥ ६ ॥ नारायणनुं नामज मोटुं कठण कलीमां आज ॥ मान मुकी सतसंग करसे

तेनी रेसे लाज ॥ तेनी रेस लाज ते पलमां ॥ रखे रहेता कोइ वलमां ॥ कहे गोविंदराम अणुं तेमां नहीं खोटुं ॥ नारायणनुं नामज मोटुं ॥ कठण कलिमां आज ॥ ॥ ७ ॥ लव सतसंगनो महिमा मोटो ते जीवें कल्यो न जाय ॥ सनकादिक शिव सरखा भागे ते जस गीता गाय ॥ ते जस गीता गाय ते गाय ॥ ने साचा संत मले ओलखाय ॥ कहे गोविंदराम मननो मत छे खोटो ॥ लव सतसंगनो महिमा मोटो ॥ ते जीवे कल्यो न जाय ॥ ८ ॥ कमलावर क्रिपाना सिंधु ईस धरे अवतार ॥ अधम ओधारण मनोहर मूर्ति प्रगट रहे नीरधार ॥प्रगट रहे निरधार तेहरी॥ जुग चारेमां क्रिपा करी ॥ कहे गोविंदराम हरि दीनना बंधु॥कमलावर क्रीपाना सिंधु ॥ ईस धरे अतवार ॥ ९ ॥ जेदि वांसली वाताने गीतज गाता ॥ हरि गोधन चारवा जाय ॥ तेदि गांडो गोवालीयो केता ॥ हवे कथा करिने गाय ॥ कथा करीने गाये त लोक ॥ कृश्न कृपा थकी ओलखे कोक ॥ कहे गोविंदराम सर्व सुखना दाता ॥ जेदी वांसली वाता ने गीतज गाता ॥ १० ॥ ब्रह्मा सरखे वछने हरियां इंद्रे कीधो कोप ॥ कहे गोकुलमां गोवालीए कर्या धर्मनो लोप ॥ करयो धर्मनो लोप ते कये ॥ गोप गोवालने बोली देय ॥ कहे गोविंदराम कडकनां कारज करीयां

॥ ब्रह्मा मरखे वछने हरीयां ॥ ११ ॥ अनंत रूपे थया अविनाशी गोब्राह्मण प्रतिपाल ॥ ब्रह्मावछ हरि गिया ज्यारे सारे प्रगट कर्यां ततकाल ॥ प्रगट कर्यां ततकाल ते केवां ॥ जे जेवां हतां तेवां ने तेवां ॥ कहे गोविंदराम वातु वेदमां ख्यामि ॥ अनंत रूपे थया अविनाशी ॥ १२ ॥ घरझालीने वेसी रिया ब्रह्माने आव्यो भार ॥ गोवाल नहीं आतो गोकुलनो पति वेदवचन निरधार ॥ वेद वचन निरधार ते वदे ॥ ब्रह्माये एम जाण्युं रुदे ॥ कहे गोविंदराम प्रभुनी पूरण दया ॥ घर झालीने वेसी रिया ॥ ब्रह्माने आव्यो भार ॥ १३ ॥ इंद्रकहे एने लासुं लिधुं मारो ओछव टाल्यो आज ॥ सुरपति हुं छुं साचो ते लीधी मारी लाज ॥ लीधी मारी लाज ते केवी ॥ जे ओछव टाली नाख्यो एवी ॥ कहे गोविंदराम मइ माखण खाधुं ॥ इंद्र कहे एने लासुं लीधुं मारो ओछव टाल्यो आज ॥ १४ ॥ इंद्रे अति अभिमानज आणी लिधुं मेघनुं शेन ॥ गोकुलने गोवरधन ठामे करी नाखुं लइ वेन ॥ करि नाखुं लइ वेन एक पलमां ॥ इंद्रज बोल्यो एमज बलमां ॥ कहे गोविंदराम मानुष मनमां जाणी ॥ इंद्रे अति अभिमानज आणि ॥ १५ ॥ इंद्र तणो त्यां आंवलो भांग्यो थाक्या बारे मेह ॥ गोप गोवाल आनंद करेछे मोटुं

आचर्ज एह॥ मोटुं आचर्ज एह जाणी ॥ इंद्रे अंतरमां दीनता आणी॥ कहे गोविंदराम पगे जइ लाग्यो ॥ इंद्रतणो आंवलो भाग्यो ॥ थाव्या बारे मेह ॥ १६ ॥ हरणाकंशे हाथे करीने मागी लीधुं मोत ॥ पामरे आवी परचो माग्यो ने मुवो परचा मोत ॥ मुवो परचा मोत ते पापी ॥ तोय हरिये वैकुंठ पदवि आपी ॥ कहे गोविंदराम एम वरे हरिने ॥ हरणाकंशे हाथ करिने मागी लीधुं मोत ॥१७॥ कुबुद्धिनुं हुंतो करतो कयुं तियांथी हरिये झाल्यो हाथ ॥ तेये मत संगे हुं तो चालीने गयो ॥ तीयांथी सुणी संतनी वात॥ सुणि संतनी वात ते जये ॥ मतसंगी थै बेटो तेये ॥ कहे गोविंदराम जादि फुटयुं तुं हैयुं ॥ कुबुद्धि नुं हुं तो करतो कयुं तियांथी हरिये झाल्यो हाथ ॥ १८ ॥ स्वामिनारायण सुखना सिंधु गोब्राह्मण प्रतिपाल ॥ हरिजनना सदा हितकारी ॥ कुबुद्धी कंशना काल ॥ कुबुद्धी कंशना काल ते हरि ॥ जेणे श्रीनारायणनी मूर्ति धरि ॥ कहे गोविंदराम हरि दीनना बंधु ॥ स्वामि नारायण सुखना सिंधु ॥ १९ ॥ धन्य धन्य स्वामी सतसंग तमारो कठण कलिमां आज ॥ परिब्रह्म तमे प्रगट थइने लिधि कामनि लाज ॥ लिधि कामनि लाज ते केवी ॥ एनि काय न भांने रावज एवी ॥ कहे गोविंदराम कामे कुसंगमां कर्यो उतारो ॥ धन्य धन्य स्वामी सतसंग तमारो कठण कलिमां आज

॥ २० ॥ कृष्ण कथाना जे जन रमिया ते जोगी हरि-जन ॥ खोटामां तेनुं मन नव खुचे तेनि मात पिताने धन्य ॥ मात पिताने धन्य से माटे ॥ हरिना गुण गाय ते माटे ॥ केह गोविंदराम तेना ह्रदियामां हरि वसिया ॥ कृष्ण कथाना जे जन रसिया ॥ २१ ॥ साचा संतन ओलखी लेवा जेम पारखनी पेख्य ॥ संत जुगल जोयामां सरखा फरे छ घरोघर ॥ फरे छे घरोघर ते फरे ॥ पण दाम वामथी दुरज तरे ॥ केह गोविंदराम तेनी करवी सेवा ॥ संत असंतने ओलखी लेवा जेम पारखनी पेर ॥ २२ ॥ संत सरोवर चाली जासे ते जन सुखीया थाय ॥ अलगो रेसे तेने वांसे अहोनीश लागी लाय ॥ अहोनीश लागी लाय ते लागी ॥ मरे चउदलोकमाये भागी ॥ गोविंदराम हरीना गुण गासे ॥ संत सरोवर चाली जासे ॥ ते जन सुखीया थाय ॥ २३ ॥ जेने संत मल्या ते सर्व सुखीया ॥ अने दुखीयो सब संसार ॥ भव भटकण-नो रोगज लाग्यो तेनो न आवे पार ॥ ॥ तेनो न आवे पार ते केदी ॥ आ जीवत ते जाणो वेदि ॥ केहे गोविंदराम दुखी मन सुखीया ॥ जेने संत मल्या ते सर्व सुखीया अने दुखीयो सब संसार ॥ २४ ॥ संत रीया होय त्यां साचु रीयुं छ बिजे रियुं छ जुठ ॥ संत असंतने जे न ओलखे ते

नर हैया फूट ॥ ते नर हैया फूट से माटे ॥ जे विवेकनी आंख्यज नइ ते माटे ॥ कहे गोविंदराम वेद पुराण बे मलीने कयुं छे ॥ संत होय त्यां साच रीयुं छे ॥ बीजे रयुं छे जुठ ॥ २५ ॥ मान सरोवर हंसज रहे छे ने ज्यां खाडो त्यां बग ॥ हंस करे छे मोतीनो चारो त्यां बग न मुके पग ॥ बग न मुके पग वीचारी ॥ एछे मछतणा कहुं आहारी ॥ कहे गोविंदराम एम गीता कहे छे ॥ मान सरोवर हंसज रेछे ॥ न ज्यांहां खाडो त्यांहां बग ॥ २६ ॥ हरिजन ने हरि होय अती वाला ॥ लीये रामनुं नाम ॥ गुण गाये गोपीनी पेस्ये तो रीझे सुंदर श्याम ॥ रीझे सुंदर साम मोरारी ॥ एवा दास तणी बलहारी ॥ गोविंदराम आठो पोर मतवाला ॥ हरिजनने तो हरी होय वाला ॥ लीये रामनुं नाम ॥ २७ ॥

॥ ऋषि पत्नीओना विवेक विषे ॥

॥ ऋषि ब्राह्मण करताता सेवा मुखथी थइने मुन्य ॥ जज्ञशालामां वेदज केरी थाति हति धुन्य ॥ थाति हती धुन्य ते जीयां ॥ गोवालिया जइ उभा तीयां ॥ कहे गोविंदराम गीयाता अन्न लेवा ॥ ऋषि ब्राह्मण करताता सेवा मुखथी थईने मुन्य ॥ १ ॥ हरीए पुछयुं अन्न कांइ लाव्या कर ठाल्या छे केम ॥ पाछा आव्या ते पाडज मानो ॥ हरि अमे कुशल क्षेम ॥

आव्या कुशल क्षेम ने हरी ॥ अन्न लेवा नइ जाइये फरि ॥ कहे गोविंदराम उभा रइने आव्या ॥ हरिये पुछयुं अन्न कांइ लाव्या कर ठाला छे केम ॥ २ ॥ ऋपिपत्नीने हरि छे वाला इयां जइ जाचो अन्न ॥ विलंब करोमां वेला जाओ एम बोल्या जगजीवन ॥ एम बोल्या जगजीवन ते हरी ॥ आज क्षुधा व्यापी छे खरी ॥ कहे गोविंदराम नहीं आवो ठाला ॥ ऋषि पत्नीने हरी छे वाला ॥ ३ ॥ व्रज भापा ॥ कृष्ण-देवके काज गोवाल अन्न जाचन आये ॥ लेन चली रुपीनार रुपी तब मारन धाये ॥ कियो न विश्वदेव हजु नहीं भोग लगायो ॥ सब देवनको देव नंद जसोदाको जायो धन्य धन्य व्रजनारकुं ले भोजन चली रानमें ॥ कहे गोविंदराम गोवालकी ॥ भनक पडी जब कानमें ॥ ४ ॥ सबदेवनको देव नंद जसो-दाको जायो ॥ सब देवनको देव बेद चारे मिलि गायो ॥ सब देवनको देव सीद्धने सुपने नावे ॥ सब देवनको देव बनमें धेन चरावे ॥ सो जदुपति लगमें जावुंगी युं कही चली रानमें ॥ कहे गोविंदराम गोवा-लकी भनक पडी जब कानमें ॥ ५ ॥ पतितमे परविन भामनी हुंछुं भोली ॥ कृश्न देवके काज सरवस नाखुं घोली ॥ तो क्या भोजनको भार ॥ गोवालपें अन्न मंगायो ॥ सब देवनको देव नंद जसोदाको

जायो ॥ मो जदुपति संगमें जाउंगी ॥ युं कही चली रानमें ॥ कहे गोविंदराम गोवालकी भनक पडी जब कानमें ॥ ६ ॥ पति तमे परविन वेद वांची करी जानो ॥ नीत गीताकुं गाओ प्रगटकी वात न मानो ॥ प्रगट रहे परिब्रह्म मनो हर मुरती धारी ॥ क्रीपा विना जन कोय न जाणे नर ओर नारी ॥ सो क्रीपा सतसंग कीजीये ॥ कहे गोविंदराम चतुराईकुं दुर फेंक कर दीजीये ॥ ७ ॥ सब देवनको देव पति कहा कहुं पोकारी ॥ तब रुषि मारन धाये मुखसे बोलि नारी ॥ तन के पति जो तमे तन तमारी पास रखो ॥ पण जीवके पति जदुनाथ मुख बुरी मत भांखो ॥ बोत सही घरमें गही तजो तन एक तानमें ॥ कहे गोविंदराम गोवालकी भनक पडी जब कानमें ॥ ८॥

इति व्रज भाषाकी समाप्ति ॥

॥ शद्ध सुर्णाने थ्रोडी वायो भरी भोजनना थाल ॥ हैडामां हरख घणो जे जमसे नंदकुमार ॥ जमसे नंदकुमार ते हरि ॥ चाली सर्व थालज भरी ॥ कहे गोविंदराम दशो दिशथी ॥ शद्ध सुणीने थ्रोडी वायो ॥ ९ ॥ घरमांथी नीसर्यां गोपी भरी भोजनना थाल ॥ गोप गोवाल मंडली वाली जे जमसे दीन दयाल ॥ जमसे दीनदयाल ते हरि ॥

॥ रुपी पतिन उपर क्रीपा करि ॥ कहे गोविंदराम पतिनी आज्ञा लोपी ॥ घरमांथी नीसर्यां गोपी ॥ १० ॥ अमने अन्न आपीने जाओ घेर हमे कइक काम ॥ खोभरासो तो रुपी कचवासे एम बोल्या सुंदरश्याम ॥ बोल्या सुंदर श्याम ते मोरारी ॥ तमे घेर जाओ रुपियुंनि नारि ॥ कहे गोविंदराम एम बोल्या मुखे मावो ॥ अमने अन्न आपीने जाओ घेर हमे कइक काम ॥ ११ ॥ कोटी काम तमपर वारि नाखुं सुंदर श्याम ॥ पाछां पगलां अमे नहीं भरीये घेर नथि काइ काम घेर नथी काइ काम ते हरी ॥ तमथी नथी अजाण्युं जरी ॥ कहे गोविंदराम बोल्या रुपीनी नारि ॥ कोटि काम तम पर वारी ॥ १२ ॥ धन्य धन्य व्रजनी विनता एम कहे सुंदर श्याम ॥ अम मारु अन्न लइने आव्यां तजीने घरनां काम तजीने घरनां कामज आव्यां ॥ भुधरने मन अतिसें भाव्यां ॥ कहे गोविंदराम हरिने वाली दिनता ॥ धन्यधन्य व्रजनी विनता ॥ एम कहे सुंदर श्याम ॥ १३ ॥ धन्य धन्य व्रजनी नारी जेणे जाण्या जगदीश ॥ पंडितना पिछामें नाव्या तेयें चडावि रिश ॥ तेयें चडावि रिश ते खरी ॥ पाछलथी पष्टांणा फरी ॥ कहे गोविंदराम रिझ्या गिरिधारि ॥ धन्य धन्य व्रजनी नारी जेणे जाण्या जगदीश

॥ १४ ॥ ऋषि पत्निना पगनि रजने ले चडावी शीश ॥ ब्रह्मा इंद्र कहे धन्य धन्य एने जे जाण्या जगदीश ॥ जे जाण्या जगदीश ते केवा ॥ सर्व देवना देव हरी एवा ॥ कहे गोविंदराम एम उपनुं अजने ॥ ऋषि पत्निना पगनी रजने ले चडावी शीश ॥१५॥ तेयें आंख उघडी द्रीजनी घेर पधारो नारय ॥ आटली घडी अपराध अमारो तमे रियां छो वास्य॥तमे रियां छो वास्य ते नारी ॥तम आगल्य अमे मुरख भारी ॥ कहे गोविंदराम महिमा सांभली चरण रजनी ॥ तेयें आंख उघडी द्रिजनी घेर पधारो नारय ॥ १६ ॥ हजि करेछे नारिनी सेवा तमे जुवो विचारि आज ॥ ऋषि कहेछे धन्य धन्य नारी तमे ओलखाव्या महाराज ॥ तमे ओलखाव्या महाराज ते अमने ॥ ब्रह्मरूप अमे जाण्यां तमने ॥ कहे गोविंदराम गंगाजुन जेवा ॥ हजि करेछे नारीनी सेवा ॥ तमे जुओ विचारी आज ॥ १७ ॥

॥ उमा शिव संवाद ॥

॥ शिवा प्रत्ये एम शंकरे भाख्युं उमा वर मागो आज ॥ राम लक्ष्मण बे मितवा मारु वन आव्या महाराज ॥ वन आव्या महाराज ते चाली ॥ तमे ब्रह्मो चरण रुदामां झाली ॥ कहे गोविंदराम एनी शास्त्रमां भाख्युं ॥ शिवा प्रत्ये एम शंकरे भाख्यु उमा वर मागो आज ॥ १ ॥ संसेवत थइ गयां मति जेवां शिवजी

बोल्या ते सत्य ॥ पण क्रिपा विना कल्यामां नावे एवी हरिनी अकलगत ॥ हरिनि अकलगत्य ते खरि ॥ क्यां सिता एम बोल्या वृक्षने हरि ॥ कहे गोविंद-राम वचन सांभल्यां एवां ॥ तेयें संसेवत थइ गयां सति जेवां ॥ शिवजी बोल्या ते सत्य ॥ २ ॥ सति के बोल्यासु भस्मना भोगी ॥ एनो केफ तणुं सर्वे काम ॥ दसरथ तणा ए दिकरा बेछ एक लक्ष्मण एक राम ॥ एक लक्ष्मण एक राम राम ते जाये ॥ तेने अमे सच्चीदानंद केम केवराये ॥ कहे गोविंदराम शिवतो समरथ जोगी ॥ तेने सति कहे बोल्या सु भस्मना भोगी ॥ ए केफतणुं सर्वे काम ॥ ३ ॥ सतिये वेष सितानो लीधो ने वन गींयां तेनी वात ॥ राम कहे दक्षप्रजापतिनी पुत्रि क्यां छे शिवजी तात ॥ क्यां छे शिवजी तात हे माता ॥ कहो अमने थाये सुखज माता ॥ कहे गोविंदराम देहनो पाटलो कीधो ॥ ने सतिये वेष सितानो लिधो ॥ ४ ॥ उमावनमां जइ आश्रमे आव्यां हर नम्या जोडीने हाथ ॥ आसन अलगुं काढीने आप्युं ॥ कहे इयां बेसो तमे मात ॥ इयां कहे बेसो तमे मात ॥ एम कह्युं सारे सतिने अतिसे विस्मे थयुं ॥ कहे गोविंदराम दोष उलटो लाव्यां ॥ उमा वनमां जइ आव्यां ॥ सारे हर नम्या जोडी हाथ ॥ ५ ॥ सतिये विमान सुरना देखी रुदामा

वाध्यो रोष ॥ पिताये अमपर पत्री न लखी एवडो अमारो सो दोष ॥ एवडो अमारो सो दोष अति ॥ कहे गोविंदराम पिताने पुज्या जोग अमारो पति ॥ लाखुं खरचाय ने मुने न लखी सति विमान सुरनां देखी ॥ रुद्रामां वाध्यो रोष ॥ ६ ॥ दक्ष प्रजापती तणी ए पुत्रिने माहा माया केवाय ॥ पिताए जज्ञनो प्रारंभ मांड्यो ने वण तेडयां सां जाय ॥ वण तेडयां जाय ते गियां ॥ आदर न आप्यो वलि भस्मथियां ॥ गोविंदराम कहे मुंकी नोति कंकुतरी ॥ दक्ष प्रजापति तणि पुत्रि माहामाया केवराये ॥ ७ ॥ भृगु नंदीने श्रापे करी मतवे वगडया बाप ॥ दक्षजज्ञनो भंगज किधो तेनुं लाग्युं पाप ॥ तेनुं लाग्युं पाप ते अति ॥ हरि प्रगटे मतवेयनी गति ॥ गोविंदराम कहे ए वात ते खरी ॥ भृगु नंदीने श्रापे करी मतवे वगडया बाप ॥ ८ ॥ सति कहे वरुं तो शंभुने वरुं ॥ ए अखील ब्रह्मांडनो ईश ॥ शिवजीये गिरो सत्य उच्चारी ॥ तेणे मुजने चडी रीस ॥ मुजने चडी रीस ते खोटी ॥ शिवतणी तो समझण मोटी ॥ गोविंदराम कहे बाला बीजी देह धरुं ॥ वरुं तो शंभुने वरुं ॥ ए अखिल ब्रह्मांडना ईश ॥ ९ ॥

॥ अलीखां पठाणना हेत विषे ॥

नंदगाम पासे वसांणुं ते लक्ष्मीजीनुं गाम ॥ तेमां रहेता पठाण अलिखां ॥ ते भजता सुंदर श्याम ॥

भजता सुंदर श्याम ते मोरारी ॥ प्रगट मूर्त्ति उरमां धारी ॥ कहे गोविंदराम हरिना गुण वखाणुं ॥ नंदगाम पासे वर्णाणुं ॥ ते लक्ष्मीजीनुं गाम ॥ १ ॥ अलिखां पठाण राखता सुरति ॥ श्रीविठल करता वात ॥ चोरासी वैश्नव ते पासे ॥ आवी बेसता साक्षात ॥ आवी बेसता साक्षत ते ज्यारे ॥ पोथि छुटे पठाण आवे त्यारे ॥ कहे गोविंदराम वचन न भुले उरथी ॥ अलिखां पठाण राखता सुरती ॥ श्रीविठल करता वात ॥ २ ॥ अलिखां पठाण एवा हुता जेने वाला वलभवाल ॥ श्रीविठलनी पधरामणी हुतिने विचमां आवी खाल ॥ विचमां आवी खाल ॥ आडी ॥ ने गलीमां न चाले गाडी ॥ कहे गोविंदराम त्यां लांबा थइने सुता ॥ अलिखां पठाण एवा हुता जेने वाला वलभवाल ॥ ३ ॥

॥ नरसी महेतानी दृढता विषे ॥

नागरी नातमां नरसीमेतो भजता सुंदर श्याम ॥ नागर तेनी निंदा करता मेलो मेता नाम ॥ मेलो मेता नाम ने माला ॥ सुं लइ बेठा खोटा चाला ॥ कहे गोविंदराम जुनागढमां रेतो ॥ नागरी नातमां नरसी मेतो ॥ भजता सुंदर श्याम ॥ १ ॥ तिलक माला मेलो मेता ए नहि आपणुं काम ॥ शंकर शंकर

रटो सुखेथी ए नागरनुं १ नाम ॥ ए नागरनुं नाम केवाये ॥ २ छबीलाना गुण केम गवाये ॥ कहे गोविंदराम सीखामण नित्य देता ॥ तिलक माला मेलो मेता ए नहि आपणुं काम ॥ २ ॥ करजोडी मेतो नित्य केता सुणो नागरी नात्य ॥ रवि पूर्वेथी पश्चिम उगे ॥ समुद्र मुके मात ॥ समुद्र मुके मात ते मुके ॥ पण मेतो तो माला न मुके ॥ कहे गोविंदराम जुनागढमां रेता ॥ करजोडी मेतो नित्य केता सुणो नागरी नात्य ॥ ३ ॥ मेताने मामेरुं दीधुं हरिये आप्यो हार ॥ हेत करीने हुंडी सीकारी जाणे सौ संसार ॥ जाणे सौ संसार ते हवे ॥ मेतो हता तेदी जेम तेम लवे ॥ कहे गोविंदराम भिरांनुं विख पीधुं ॥ मेताने मामेरुं दिधुं हरिये आप्यो हार ॥ ४ ॥ जेदि मेतो हरिगुण गाता ॥ करमां लइने ताल ॥ हरिना जनने संगे लइने सुखे भजता गोपाल ॥ सुखे भजता गोपाल ते जेदी ॥ नागर निंदा करता तेदी ॥ कहे गोविंदराम कोइ नजीक न जता ॥ जेदि मेतो हरिगुण गाता ॥ करमां लइने ताल ॥ ५ ॥ नागरतणी तो नात्य ठगारी ॥ नावा भेल्युं नीर ॥ करवोले तो श्रीफल फाटे ॥ ते केम खमे शरीर ॥ केम खमे श-

१ नागरने भजवा योग्य शिवनुं नामछे. २श्रीकृष्ण भगवानना गुण गाववा नहीं.

रीर ते वाई ॥ समोवड होय तो आवुं नाई ॥ कहे गोविंदराम उनुं नाख्युं वारी ॥ नागर तणी तो नात ठगारी ॥ नावा मेल्युं नीर ॥ ६ ॥ समोव-ण देशे सारंगपाणी मेता करो मलार ॥ मेताये तो राग चलाव्यो वरस्यो अमोघ धार ॥ वरस्यो अमोघ धार ते टाणे ॥ ए महात्म तो हरिजन जाणे ॥ कहे गोविंदराम वेवाण बोल्यां एम वाणी ॥ समोवण देशे सारंगपाणी ॥ मेता करो मलार ॥ ७ ॥ वेवांण कहे में वछोह किधो ॥ मेतो तो मोटी वात ॥ मंदि-रमारु पावन कीधुं जोडी उभी हाथ ॥ जोडी उभी हाथज ज्यारे ॥ पाडोसण बोली उठी ते सारे ॥ कहे गोविंदराम छबीले परचो दीधो ॥ वेवांण कहे में वछोह कीधो ॥ मेतो तो मोटी वात ॥ ८ ॥ पाडोसणने पतिन न आवी एवी नाय नागरी डांड ॥ तारे मेते मेह वरसाव्यो तेनी लइवा खांड ॥ ते नी लइवां खांड ते चली ॥ एतो माहा महिनानी वुठी वादली ॥ कहे गोविंदराम उलटी वढवा आ-वी ॥ पाडोसणने पतित न आवी एवी नाय ना-गरी डांड ॥ ९ ॥ नागर मेतानी किधीती निंदा ॥ मिरांने आप्युं झेर ॥ प्रल्हादने जुवो पिताये दुख्या एम जक्त भक्तने वेर ॥ जक्त भक्तने वेर ते केवुं ॥ जुवो आद्य अंत्य मध्यछे एवुं ॥ कहे गोविंदराम

एक हरिने वंघ्या ॥ नागरे मेतानी किधिती निंघ्या ॥ १० ॥ माहा महिनानी वादली वुठी सुं मेतो करसे मेह ॥ सामलीये तो समोवण दीधुं पण जग ते न जाण्युं तेह ॥ जगते न जाण्युं तेह ते केवां ॥ ए पांची पडोसण कहुं जेवां ॥ कहे गोविंदराम ए हैया फुटी ॥ जे कहे माहा महिनानी वादली वुठी सुं मेतो करसे मेह ॥ ११ ॥

रावणना कपट विषे ॥

सतीतो सीताजी जेवां भुल्यां देखी भेख॥ राम गिया ज्यारे मृग मारवा॥ तारे वांसे एकाएक॥ वासे एकाएक ते सति ॥ राम वांसे गिया लक्ष्मण जती ॥ कहे गोविंदराम आगलेदी भुली गयां एवां ॥ सती तो सीताजी जेवां ॥ भुल्यां देखी भेख ॥१॥ आश्रम पुछी भलेअतिथी आव्या धन्यधन्य भाग्य कहुं आज॥ धन्यभाग्य कहुं आज के सती आण आपी गयाछे लक्ष्मण जती ॥ गोविंदराम कहे सतीने विचार थयो ॥ ते भोला जोगी छुटी भीक्षाज लीयो ॥ रहे अमारी लाज ॥ २ ॥ छुटी भीक्षा मारे अरथ न आवे सतिने थयो संताप ॥ उंबर ओलांडी पग जो भीक्षा आपुं तो पुरण वेसे पाप ॥ पुरण वेसे पाप के सती ॥ आण आपी गया छे लक्ष्मण जती ॥ गोविंदराम कहे सीता वनफल लावे॥ तो ते छुटी भिक्षा मारे अरथ न आवे ॥ सतीने थियो संताप ॥

३ ॥ रावण गियो ज्यारे सीतवा हरी त्यारे पडयुं रामने काम ॥ रुडी पेरथे जैने राजाने पुछयुं खरचासे अमारा दाम ॥ खरचासे अमारा दाम ने चालो ॥ तैये सर्वे मली आप्यो उतर डालो ॥ कहे गोविंदराम पछे मेन्याज करी ॥ रावण गियो ज्यारे सीतवा हरि ॥ पडयुं रामने काम ॥ ४ ॥ रावणने कहे राम दुवाई ॥ तमे सांभलो मारी वात ॥ राम आपणा पिता थाये ॥ सीता आपणी मात ॥ सीता आपणी मात ते पापी ॥ टांणे आवो पाछा आपी ॥ कहे गोविंदराम बोल्या विभिषण भाई ॥ रावणने कहे राम दुवाइ ॥ तमे सांभलो मारी वात ॥ ५ ॥ सीखामण नव लागी सारा रावणे चडावी रीस ॥ विभिषण कहे विस भुजा कपासे दश कपासे शीस ॥ दश कपासे शीस ते भाइ ॥ खोटुं नहीं कहुं राम दुवाई ॥ कहे गोविंदराम पाटुं लेइ मारी ॥ सीखामण नव लागी मारी ॥ ६ ॥

॥ होका विषे कुंडलीया ॥

कलिजुगमां होका वाणिये धार्‍या ॥ भरी बजार जाय ॥ १ जगतां डुभारणां मोढामां घाले तोय जराय न लजाय ॥ तोय जराय न लजाय ते ज्यारे ॥ धर्म मेली अधर्ममां चाल्या तारे ॥ कहे गोविंदराम २ कलपतरुना नरिया वार्‍या ॥ कलिजुगमां होका वाणीये

१ लागतां. २ भागवत

धारया ॥ १ ॥ होके राख्या हजूरी चाकर ॥ मोटा माणसने भूप सवारमां उठतां सांभरे नीरखे एनुं रूप ॥ नीरखे एनुं रूप ते दाडी ॥ जेम पखाले छोकरानी माडी ॥ कहे गोविंदराम होको सौनो ठाकर ॥ होके राख्या हजुरी चाकर मोटा माणसने भूप ॥ २ ॥ देहमां पाप तो डुंघले घाल्युं ॥ कइक बगाडया भेख ॥ बजर वावीने करम करे जीव मरे अनेक ॥ जीव मरे अनेक ते जाणी ॥ धुंवाडा मारु करवी उंधी कमाणी ॥ कहे गोविंदराम आंधलुं थाणुं एमने एम चाल्युं ॥ देहमां पापतो डुंघले घाल्युं ॥ कइक बगाडया भेख ॥ ३ ॥ नरक तो कर्युं छे व्यसनीने काजे ॥ तेनो डायाने डर नोय ॥ डायो करे जो व्यसनीनी सोबत ॥ तो पडे नरकमां सोय ॥ पडे नरकमां सोय ते पडे ॥ डायो देखी दूरथी डरे ॥ कहे गोविंदराम व्यसन डायाने न छाजे ॥ नरक तो कर्युं छे व्यसनीने काजे ॥ ४ ॥

॥ इति १गोविंदरामकृत कविता संपूर्ण ॥

॥ अथ २अमरचंदकृत कुंडलिया ॥

॥ होके हरि भूलावीया वटलाव्या वरण चार ॥

१ मयाराम भटना नाना भाई गोविंदराम. २अमरचंद झालावाडमां गाम वहनडीना रेहेवाशी ज्ञाते दशा श्रीमाली वाणीया.

ब्राह्मण क्षत्रि वांणीया मुकायो आचार ॥ मुकाव्यो आचार पापमां पूरा पेठा ॥ चुहे लाल लबाड ॥ एक बीजानी एठा ॥ कहे कवी अमरचंद विचार करयोनहि लोके ॥ वटलाव्या वरण चार ॥ भुलाव्या हरी पण होक ॥ १ ॥ घणा भेखने भुलाव्या होक कीधी हाण ॥ आचार तो उठी गयो तनमां पेठी ताण ॥ तनमां पेठी ताण जीवने जोखम झाझुं ॥ प्रभुसुं त्रुटी प्रीत ॥ मुरखनुं मन त्यां जइ वाझ्युं ॥ अमरचंदके धन्य तजे तेना मनुषपणाने ॥ होके कीधी हाण भुलव्या भेष घणाने ॥ २ ॥ होको भांगने छीकणी कलिजुग केरुं रूप ॥ मुरख तेमां मोहीया मेरी मरदने भूप ॥मेरी मरदने भूप अकलतो जे छे उठी॥ भेखमां पडी बहु भूल आंख्य अंतरनी फूटी ॥ कहे कवी अमरचंद धणीने थयो छे धोखो ॥ कलिजुग केरुं रूप छीकणी भांग ने होको ॥ ३ ॥ कलिजुग आव्यो कोपतो ॥ मार्या माझन लोक ॥ होको आप्यो हाथमां व्यसन वीनानो कोक ॥ व्यसनवीनानो कोक तेपण सुंघे चावे ॥ करो धरमनी वात उलटा वाद अडावे ॥ कहे कवि अमरचंद फेल करे मन फाव्यो ॥ मारया माझन लोक कोपतो कलीजुग आव्यो ॥४॥ कुडो कलिजुग आवतां भुल्या छे बहु भेष ॥ भांग तमाकु छीकणी अमल खाय अनेक ॥ अमल खाय अनेक धर्मनो ढंग न राख्यो ॥ लाज मले नइ लेश ॥

छेडो माथे नाख्यो ॥ कहे कवि अमरचंद ॥ धरमतो चूक्या रुडो॥ भुल्याछे बहु भेष आवतां कलीजुग कुडो ॥५॥ भेख सरव भूला पड्या ॥ वांसे भुला लोक ॥ विष व्यसन वलग्यां घणां ॥ फांफां मारे फोक ॥ फांफां मारे फोक ज्ञान लइ उंधुं आप्युं ॥ पांदडे पाणी पाय मुल लइ मेथी काप्युं ॥ कहे अमरचंद नइ कांइ मीन के मेख ॥ वांसे भूल्या लोक पड्या मां भुला भेख ॥६॥ प्रभु वशे आ देहमां उत्तम जोइ त्रण ठाम ॥ हृदय कपाल ने मुख छे ते धणी रेवानां धाम ॥ धणी रेवानां धाम तमाकु तां लइ घाली ॥ हरी खंखेरी हाथ सांथी निकल्या चाली ॥ कहे कवि अमरचंद काम ने क्रोध टस्या छे ॥ उत्तम जोइ त्रण ठाम प्रभु आ देहमां वस्या छे ॥ ७ ॥ व्यसन वलुंधो जीवडो प्रभुसु त्रुटी प्रीत ॥ पड्यो जीव जम जालमां रे ने रुडी रीत ॥ रहि नहि रुडी रीत पापमां पूरो वलग्यो ॥ करमे भल्यो कुभंग हरिथी राख्यो अलगो ॥ कहे कवि अमरचंद विचारी जुवो विबुधो ॥ प्रभुसुं त्रुटी प्रीत ॥ जीवडो व्यसन वलुधो ॥ ८ ॥ छकके ताणे छीकणी मुरख भुल्यो भरम ॥ भ्रकुटीमां भगवान छे सां सौ केछे करम ॥ सां सौ केछे करम ॥ तमाकु सां लइ घाली ॥ भाग्या छे भगवान करम पण नीकलां चाली ॥ कहे कवि अमरचंद जीवडो भामें

भटके ॥ मूरख भूल्यो मरम ॥ छीकणी ताणे छटके ॥ ९ ॥ खाय बजर बीडी पीये ॥ होको लीधो हाथ ॥ छटके ताणे छीकणी चाल्यो नरकनो माथ ॥ चाल्यो नरकनो माथ आदरी करीया उंधी ॥ क्युं न माने केण वली हवे एनी बुधी ॥ कहे कवि अमरचंद नवरां ए नरके जाये ॥ होको लीधो हाथ ॥ बीडीने बजर जे खाये ॥ १० ॥ हरिजन थइ होको पीये ॥ धीक पड्यो अवतार ॥ खाय तमाकु छीकणी मरी जनेता भार ॥ ॥ मरी जनेता भार विचारी कांइ न जोव ॥ गुण न लवलेश काचमां कंचन खोवे ॥ कहे कवि अमरचंद दे छे मेणां दुर्गजन ॥ धीक पड्यो अवतार पीये होको थइ हरीजन ॥ ११ ॥ कोय मुंघे छे छीकणी कोय तमाकु खाय ॥ कोय बेठो बीडी पीये कोय होको मुखमांय ॥ कोय होको मुखमांय कोय अमलने लेव ॥ कोय लीलागर भांग व्यसन मरवेने मेव ॥ कहे कवि अमरचंद एनी ते शी गत होय ॥ कोय तमाकु खाय छीकणी सुंघे कोये ॥१२॥ खावा मांडी खुटले भुंडा बोली भांग ॥ वटल्या ब्राह्मण वाणीया अंतर लागी आग ॥ अंतर लागी आग विचारी जो कोई जोवे मुंघो मनुषा देह खबर विनानो खोवे ॥ कहे कवि अमरचंद नरकमां बेठा ए जावा ॥ भुंडां बोली भांग खुटले मांडी खावा ॥ १३ ॥ मांदुं भुंडुं

महरके खुब लघुनी ग्वाल ॥ मुरख नर माने नही ॥ कहीये तो चडावे काल॥ काहिये तो चडावे काल आदरी करीया उंधी ॥ कयुं न माने केण बलीरे हवे एनी बुधी ॥ कहे कवि अमरचंद मीद दुख ल्योछो डोदुं ॥ खुब लघुनी ग्वाल महरके भुंडुं मोदुं ॥ १४ ॥ एवो अधरम जोइने करी महाराजे मेर ॥ अवनी उपर आवीआ भक्ति धर्मने घेर ॥ भक्ति धर्मने घेर ॥ अक्षरथी आव्या स्वामी ॥ थाप्यो धरम करी ठीक ॥ कांइ नव राखी ग्वामी ॥ कहे कवि अमरचंद अलोकीक लावो लेवो ॥ करी महाराजे मेर जोइने अधरम एवो ॥ १५ ॥ पेलुं पाप मुकावीयुं वरताव्यां वरतमान ॥ दीनबंधु दया करी दीधुं दरशन दान ॥ दीधुं दरशन दान मुरखने मन नहीं भाव्युं ॥ हता हरिना जन फावतुं तेने फाव्युं ॥ कहे कवि अमरचंद मोक्ष तो देवा वेलुं ॥ वरताव्यां वरतमान पाप मुकाव्युं पेलुं ॥ १६ ॥ जेणे हरिने जाणीया तेणे तजीयुं पाप ॥ होको भांगने छीकणी अमल न लेवे आप ॥ अमल न लेवे आप व्यसनथी वेगला रेवे ॥ लसण डुंगली सोत ॥ तरत ते पण तजी देवे ॥ कहे कवि अमरचंद चडे नही बीजे वेने ॥ तेणे तजीयुं पाप जाणीया हरीन जेणे ॥ १७ ॥ साचो सतसंग जो मले थाय प्रभुनी

मेर ॥ अजाण नरने आवडे प्रभु भजवानी पेर ॥ प्रभु भजवानी पेर जीवमां जाणे सारी ॥ करे नहीं कुसंग धर्मव्रत राखे धारी ॥ कहे कवि अमरचंद पले नहीं कबुये काचो ॥ थाय प्रभुनी मेर मलेजो सतसंग साचो ॥१८॥

१नानजीकृत कुंडलियां

होकेतो हिणुं कर्युं ॥ वटलाव्यो संसार ॥ फीट फीट कहे मुख उपरे ॥ एठी चुसे लाल ॥ एठी चुसे लाल धरमतो चाल्यो कोपी ॥ कुण उंच कुण नीच वेद मरजादा लोपी ॥ द्रग देखी नानो कहे ए कलिजुग विस्तार ॥ होकेतो हिणुं कर्युं वटलाव्यो संसार ॥ १ ॥ बीडीथी बगड्या घणा ॥ केतां नावे पार ॥ ब्राह्मण वाणीआ सौपीये ॥ पीये यवन चंडाल ॥ पीये यवन चंडाल ॥ मन माने तेम चाले ॥ ॥ बीडी बनावे नीच ॥ वगर धोइ मुखमां घाले ॥ द्रग देखी नानो कहे ॥ ए कलिजुगनो वेवार ॥ बीडीथी वगडया घणा ॥ केतां नावे पार ॥ २ ॥ तमाकु मुखमां गरी तियांथी उठ्या राम ॥ मुख दीसे लजामणुं ने थुकी बगाडे ठाम ॥ थुकी बगाडे ठाम एज अवलुं केवाय ॥ बगर धोयेली भांग ॥ मोटा पंडित लेइ खाय॥द्रग देखी नानो कहे ए कलिजुगनुं काम॥ तमाकु मुखमां गरी॥तियांथी उठ्या राम ॥३॥ अफीणथी उठी गया ॥ कइक सेठ सौकार ॥ राजा ते

१ कच्छमां गाम तेराना रहेवाशी ज्ञाते सुतार.

डुली गया विकट थयो वहेवार ॥ विकट थयो वहेवार अमल वीना घडी न चाले ॥ तारे सांती थाय ॥ ज्यारे लइ मुखमां घाले ॥ द्रग देखी नानो कहे ए कलिजुगनो परिवार ॥ अफीणथी उठी गया कइक सेठ सहुकार ॥ ४ ॥ लइ नकारी छीकणी ते सुंघे छे नरवास ॥ मुखनी सोभा नाकछे तेज वगाडे ठाम ॥ तेज वगाडे ठाम १ गटरथी भुंडुं लागे ॥ धरम रह्यो नहि लेश ॥ नीच पासथी मागे ॥ द्रग देखी नानो कहे ॥ ए नहि हरिजननुं काम ॥ लइ नकारी छीकणी ॥ सुंघेछे नरवास ॥ ५ ॥ रह्या व्यसनथी वेगला ते जाणो हरिदास ॥ संपत तेना सदनमां रहे करी नित वास ॥ रहे करी नित वास विपत पासे नहि आवे ॥ दया रहे मनमांय धरम अंतरमां भावे ॥ द्रग देखी नानो कहे कलिजुग नावे पास ॥ रह्या व्यसनथी वेगळा ते जाणो हरिदास ॥ ६ ॥ ॥ साखी ॥ ॥ विमुखकेरे वदनसें ॥ कृश्न कथा श्रुतिसार ॥ हरि जन कबहुना सुनो ॥ एहि अनन्य निरधार ॥ १ ॥ विमुखकेरे वदनसें नीकसे बेन वटलाय ॥ ज्युं दारुके पात्रमें ॥ सु गंगाजल असडाय ॥ २ ॥ विमुख सो सदग्रंथके ॥ उलटा बतावत ग्यान ॥ करत पाप सो नां डरे ॥ आप होत भगवान ॥ ३ ॥ विमुख सुंघत

१ सेहेरमां गंदकी नाखवानी जगा तेने गटर कहे छे.

छीकणी ॥ ओर तमाकु खात ॥ वदन लघुकी खाल सम ॥ बोत तेहि गंधात ॥ ४ ॥ विमुख सो जाने नही ॥ हरि गीताकी रीत ॥ बुद्धिहीन सो बावरे ॥ थुकी बिगाडत भीत ॥ ५ ॥ विमुख जब मांदा पडे ॥ तब नित वैद्य घर जात ॥ नीच उंचकुं ना गिने ॥ सो सबकुं दारु पात ॥ ६ ॥ विमुख खात *बघायणी ॥ करत शाकमें स्वाद ॥ धरम मरम समझे नही विरुध शास्त्रसें वाद ॥ ७ ॥ विमुख विधवाकुं अडे ॥ रखत नही उर त्रास ॥ के नानो एह अधर्मकुं ॥ जानत सो हरिदास ॥ ८ ॥ हरिजन विन विमुख सबे ॥ भरे व्यसन भरपूर ॥ धर्महीनके संगमें ॥ रहिये निरंतर दूर ॥ ९ ॥ *होकामें हसा घणी ॥ मांही वशियो विटाल ॥ चोखे मुंढे चाखवी ॥ लाखुं माणसनी लाल ॥ १ ॥

॥ *रूपसी भाई कृत विचार विलास ॥ साखी ॥

॥ श्री स्वामि सहजानंदजी सर्वे अवतारनुं कारण ॥ अवनी उपर ओधारवा ॥ प्रगट्या तारण तरण ॥ ॥१॥ संभारे सुख उपजे ॥ दुखतो नाख्यां वामी ॥ कली मध्य कृपानाथ ॥ धरम थाप्यो स्वामी ॥ २ ॥ स्वामीनारायणना चमतकारनी वात करेछे वाणीयो ॥ मुरख ने तो मनाय नही ॥ भइ सतसंगी सुख माणीयो ॥

* हींग. * क्षेपक. * सोरठमां गाम देरडीना वाणीया.

॥ ३ ॥ श्री पुरुषोतमनी पूरण कृपा ॥ सौने माथे सरखी तेमां सतसंगीने समु पड्युं ॥ ते जेणे जोया निरखी ॥४॥ बीजा लाख खरचे मर रूपीया ॥ शास्त्र भणे मरमो ॥ प्रगट प्रभुनी ओलखाण विना ॥ टले नहीं जमनो भो ॥ ५ ॥ माटे सरवे तीरथना तीरथ स्वामी ॥ सर्वे देवना देव ॥ मोटा भाग्य ए मनुपना ॥ जेणे ओलख्या ततखेव ॥ ६ ॥ ईश्वर इच्छाये वात उपनीछे ॥ मुज वीचार थयो छतो ॥ जोग साधनमां जाणतो नोतो ॥ हुं तो घेर बेठो हतो ॥ ७ ॥ कृपानाथे कृपा कीधी ॥ ने पूरवनी प्रीती फली ॥ नीगमने अगम वस्तु ॥ मुने घेर बेठा मली ॥ ८ ॥ माटे *सयल चार वेदनुं मारे हारद आव्युं हाथ ॥ महाराज करे ज्यारे मेरवानी तारे जोता नथी जात ॥ ९ ॥ जात भात ए जोता नथी ॥ एतो मेर करे छे मनमां ॥ जोगी जती ने जडे नहीं ॥ मरने तप करे जइ वनमां ॥ १० ॥ ने वनमां जइने वनफल खाय ॥ ने जोग लइमर जाणे ॥ वाणीओ के वात अलोकीकछे ॥ ते अमने प्रगट मली छे वाणे ॥ ११ ॥ कालनी बीके कृपानाथ हुं ॥ आसरे तमारे आव्यो छुं ॥ भवसागरमां भटकी भटकी ॥ हवेतो हुं कायोछुं ॥ १२ ॥ काल मायानुं कारण

* हे सज्जन, चार वेदनुं हारद जे भगवान ते मने प्रगट मल्या.

मोटुं ॥ तेनी बीक बहु लागेछे ॥ पण स्वामीनारायणने चरणे जाय ॥ तेनेथी छेटे भागेछे ॥ १३ ॥ ने अमारा जे अवगुण छे ॥ ते तो तमे जाणोछो ॥ आगे तमे अधम ओधारया ते क्यां हिये आणोछो ॥ १४ ॥ संवत अढारेने सत्तोत्तराने ॥ जठ महीनामां मल्या ॥ पण संतना समागमथी ॥ मैं तो मांडकल्या ॥१५॥ आटला दिन तो ओलखाण ने ॥ पण हवे थयुं छे जाण ॥ तारे परमेश्वरनां मतापनां ॥ वांणीओ करे छे वखाण ॥ १६ ॥ के जमपुरीमां जातो हतो ॥ ते लेने चरणे राख्यो ॥ चोरासीनो छुटको कर्यो ॥ ते न्याल करी नाख्यो ॥ १७ ॥ अने भूत पलीतनो भे लागतो ॥ हतो देवदेवीनो डारो ॥ सुं वालीडानां वखाण करुं ॥ जे ओलखाव्यो पांचमो आरो ॥ १८ ॥ बो परकारनी बीक हती ॥ तेतो अमारी टाली ॥ मन भमतुंतुं मोकलुं ते वाले लीधुं वाली ॥ १९ ॥ पांच इंद्रीने छठुं मन ॥ ज्यां गमे त्यां जातुं ॥ पण स्वामीनारायणना साधु मल्या ॥ ते करी वीगत सोती वातुं ॥ २० ॥ एवी वातु सांभलीने ॥ वालाजी भ्रमना भांगी छे ॥ अविनाशी ओलखावी दीधा ॥ तमारे नीरभे नोबत वागी छे ॥ २१ ॥ आ कलिजुगमा आवा प्रभु ॥ भाग्यवालाने भेटे ॥ त्रण जुगमां तप करता ॥ तोय रेता छेटे ॥ २२ ॥ रामा अवतारमां रघु-

नाथजीने ॥ केणे परभु जांण्या ॥ पण जातनां हतां जनावर ॥ ते भेलां सुख माण्यां ॥ २३ ॥ कृष्णा अवतारमां कृष्णजी ते ॥ गोप गोवालने गम्या अगियार वर्षने ॥ बावन दीन ॥ गोकुल मध्ये रम्या ॥ ॥ २४ ॥ तेमां केवां केवां कारज कर्यां ॥ पण जरा संधे नथी जाण्युं ॥ कुमत आवी कंसने ते मुआ लगी ताण्युं ॥ २५ ॥ शिशुपालने सुं सुझ्युं ॥ ते सो दीधी गाल्युं ॥ चक्र मुकी सीस काप्युं ॥ ते भरी सभाये भाल्युं ॥ २६ ॥ एवी रीतनुं अज्ञानछे ॥ ते पोतानुं काढ्युं जाय नही ॥ साचा संतने सेव्या वीना ॥ अंतर चोखुं थाय नही ॥ २७ ॥ प्रगट स्वामी सहजानंदजी ॥ छे तो चौद लोकना पती ॥ वांणीया तो घणी वातुं सांभले ॥ पण मानवा दे नही जती ॥ २८ ॥ अने वाणीयानोतो वांक नथी ॥ ए तो घणाय भजन करे ॥ पण आंटो जाय ज्यारे अपासरे ॥ तारे जती मन करे ॥ २९ ॥ वांणीयाने वात मनइ गइ ने वात उतरी गले ॥ चालो हवे सतसंग करीये ॥ आसां दीने वले ॥ ३० ॥ तोय वांणीयो विचारो विचार करीने ॥ पूजन जइने पूछे ॥ आ कलिजुगमां आम कहे छे ॥ आ स्वामीनारायण ते सुं छे ॥ ३१ ॥ एनी वात काइ कल्यामां ना आवी ॥ परबोध आपे छे बौ ॥

वांणीया ब्राह्मण वश करया ॥ ने काठीमां ने मों ॥ ३२ ॥ अने वली पापी हता एनां पाप मुकाव्यां ॥ मुरखने आपी छे मती ॥ तेनो अमने तपास करीने ॥ उतर आपोने हे जती ॥ ३३ ॥ सांभलो भइ सावको ॥ एम जती बोल्या जाणी ॥ तमे वात जाणो नहीं ॥ सांभलो मारी वांणी ॥ ३४ ॥ धरम तो एनों धज राज छे ॥ रीत भात पण साची ॥ पण एने परभु करीने पुजे छे ॥ ए वात काची ॥ ३५ ॥ अने आ कलजुगमां ॥ कल्याण थाय नही ॥ तमने केम भ्रमना लागी भइ ॥ सावक थइने सुं पुछोछो ॥ आवता जवने आंहीने आंइ ॥ ३६ ॥ वली एनी पासे उपासना एवी मोटी छे ॥ मले तेने मुके नही ने जीव सां वलगी रहे ॥ ३७ ॥ हवे वाणीयानो उत्तर ॥ एवो पुजे पाछो कर्यो ॥ वाणीए वात सांभलीने ॥ पाछो विचार करयो ॥ ३८ ॥ हवे वाणीयानी विनति ॥ सांभलो तमे जति ॥ वात तो मुने वेली मली छे ॥ पण हवे करुंछुं छती ॥ ३९ ॥ आटला दिवस अमे जाणता ॥ जे पुज हसे कांइ डाया ॥ करम आडे कांइ सुझे नहीं ॥ अमे तो हवे काया ॥ ४० ॥ शास्त्रमां तमे समझो नहीं ॥ ने वेदनुं करोछो वारुं ॥ नाया धोयानी ना पाडो तारे ॥ सी रीते थाय सारुं ॥ ४१ ॥ अने रुडी थयानी

रीत हती ॥ तेतो अमारी टाली ॥ सावकने समकीत आप्युं ॥ तेतो सपटीयाली वाली ॥ ४२ ॥ बधाए मारग बंध करया ॥ हवे वात क्यांथी जडसे ॥ वांणीयाने तो विश्वास छे ॥ पण गोरजीने नडसे ॥४३॥ वाणीयो पुजने पगे लाग्यो ॥ अमे तमने रीतनो रोटलो देसुं ॥ पण हवे अमे हाथ जोडीने ॥ स्वामीनारायण केसुं ॥ ४४ ॥ ने तमारे जो त्रेवड होयतो ल्यो अमारां पाप ॥ एवुं बलतो एने छे ॥ जेने प्रगटनो प्रताप ॥ ४५ ॥ माटे राजी थइने रजा आपो ॥ अमे सतसंग करीयें टांणे ॥ आ रस अल्पांणा पछी ॥ नही मले केदी नांणे ॥ ४६ ॥ तमे अमने समाग पडकमणुं सीखव्युं ॥ अमे नोकार गणता वली ॥ गया स्वामीनारायणने चरणे ॥ तारे पाप गयां वली ॥ ॥ ४७ ॥ वाणीयोके माल वाणे पडयो छे ॥ अमे लेखुं गण्युं आज रासे ॥ माल सवारे मीढव्यो ॥ तारे अमारे आव्युं छे धातें ॥ ४८ ॥ अने भाल्या वीनानी भगती करीने ॥ के जगाए जावुं ॥ अटकलना फातीआमां ते सुं चोलीने खावुं ॥ ४९ ॥ तमारा जैन धरममां ॥ झीणा जीवनी ओलखाण छे बहु झाझी ॥ देव तीरथ मानो नही ॥ तारे प्रभु केम थासे राजी ॥ ५० ॥ तमे पोताना मतनी वात करो ॥ ने बीजानो नही भार ॥ करीया

तो के पालोछो ॥ पण कल्याण थयानी वार ॥ ६१ ॥ जतीतो एम जाणेछे आ कलिजुगमां ॥ प्रभु क्यांथी ॥ प्रीतमजीतो प्रगट रहे छे ॥ क्यां जाओ तरस्या गंगामांथी ॥ ६२ ॥ स्वामीनारायणनी सामरथी ते तमे नथी भाळी ॥ लाखों माणसनी एक रीतने ॥ सौने लीधां वाळी ॥ ६३ ॥ स्वामीनारायणने चरणे जइने ॥ मुरख डाया थायछे ॥ आ कलिजुगमां काठी कोळी ॥ तेपण गीता गायछे ॥ ६४ ॥ स्वामीनारायणने चरणे जैने ॥ नीम धरम नकी पाळेछे ॥ आ जगतमां जम फरेछे ॥ तेने नजरे भाळे छे ॥ ६५ ॥ अमदावादमां जगा आपी ॥ तेमां भूतरेतां बहु भारे ॥ स्वामीनारायण जइने वस्या ॥ तारे भूत वस्यां जइ वारे ॥ ६६ ॥ चरोतरमां छतरायो ॥ जोबन पगीछे ॥ धोळे दाडे धाडां चाले ॥ ने छोकरुं छानुं रहे ॥ ६७ ॥ एवाने वाले वस करया ॥ ते आवीने चरणे रयो ॥ मोटो परचो महाराजनो ते ॥ गुजरात मध्ये थयो ॥ ६८ ॥ एम स्वामीनारायणनी वात तो ॥ थइछे चौदलोकमां छती ॥ पछे तो घणा पस्तासे ॥ पण हमणे ने माने जती ॥ ६९ ॥

॥ तुळसीदास कृत सवैया ॥

॥ पढिवेद पुरान कुराननकुं ॥ अपने अपन मत तानतहे ॥ बुद्धिके बलसें छलछिद्र करे ॥ बहु

अर्थ विचारी सु आनतहे ॥ चितकि व्रति डोलत घातनमे ॥ यह बातनमें मनमानतहे ॥ तुलसि मुखकि कोउ लाख कहे ॥ हियकि रघुनंदन जानतहे ॥ १ ॥ नाम वडे धन धाम वडे ॥ जगमांहि बडि किरती प्रगटी हे ॥ बुद्धि बडि चतुराइ बडि अरु लावनता तनमें लपटी हे ॥ द्वार हजारन लोक खडे ॥ रिधि इंद्रहुतें नही एक घटी हे ॥ तुलसी रघुवीरकि भक्ति विना ॥ ज्युंहि सुंदर नारि नाककटीहे ॥ २ ॥ साखी ॥ ॥ पारस पोली हाटक भुवन कल्पवृक्षकी वाड ॥ तुलसी हरिकी भक्ति विना तासें भली उजाड ॥ १ ॥ उत्तम वर्ण कुन कामकी जिने रोम रोम विकार ॥ तुलसी हरिकी भक्ति विना ॥ चारे वर्ण चमार ॥ २ ॥ हरि भजतो कोढीयो भलो ॥ जाकी चूवे चाम ॥ तुलसी हरिकी भक्ति विना ॥ कंचन देह अकाम ॥ ३ ॥ अंग आभूषण अति सज्यां ॥ बाध्यां बोल बनाई ॥ तुलसी हरिकी भक्ति विना ॥ मडां सणगारां जाई ॥ ४ ॥ तुलसी नीचा कुल भयो ॥ जपे रेन दीन राम ॥ उंचा कुल कहा कामको ॥ जियां नहि हरिको नाम ॥ ५ ॥ अरब खरब लुं धनहे ॥ उदे अस्तमें राज ॥ तुलसी हरिकी भक्ति विना सबे नरकको साज ॥ ६ ॥ असन वसन सुत नारि धन ॥ सब पापीकुं होय ॥

॥ संत समागम राम धन ॥ तुलसी दुर्लभ दोय ॥ ॥ ७ ॥ सुत वित दारा धाम सब ॥ एस जुठा रंग ॥ तुलसी आ संसारमें ॥ दुर्लभ साधु संग ॥ ८ ॥ आधी घडी आधकी ॥ ताकी आधी आध ॥ तुलसी सोबत संतकी ॥ काटे कोट अपराध ॥ ९ ॥ तुलसी संगत संतकी ॥ जिनके संगे वैकुण्ठ जाय ॥ ज्युं संगाथे कांकरो ॥ हाटो हाट वेचाय ॥ १० ॥ भोजन साजन जुक्तेह ॥ लालच लोभ हराम ॥ साधु सोये जाणीये ॥ गांठे न बांधे दाम ॥ ११ ॥ दाम गांठे बांधे नही ॥ नहीं नारिसुं नेह ॥ तुलसी एसे संतकी ॥ कहां चरणकी खेह ॥ १२ ॥ संतजन चंदन बावना ॥ सब तरू चंदन होई ॥ तुलसी सदगुरु सेवतो ॥ कल्पवृक्ष सम होई ॥ १३ ॥ संत माबापहे ॥ संत भाईबंद ॥ संत मिलावे रामकुं ॥ तुलसी काटे भवफंद ॥ १४ ॥ कनक काचही सम गणे ॥ नारि काष्ट पाषाण ॥ तुलसी एसे संतजन ॥ पृथ्वि ब्रह्म समान ॥ १५ ॥ तुलसी आ संसारमें ॥ संत मिलनकुं जाय ॥ आगे आगे पग धरे ॥ कोटी जगन फल थाय ॥ १६ ॥ तुलसी आ संसारमें ॥ संत मिलनकुं धाय ॥ कहा जानु कोई भेखभे ॥ नारायण मिलि जाय ॥ १७ ॥ रीझे खीजे ओरसें ॥ सरे न बिगरे काम ॥ तुलसी मेरे

चाहिये ॥ राजी सीताराम ॥ १८ ॥ तुलसी तबमें जाणियो ॥ हरिहे गरिबनवाज ॥ मोती कण मोघा किया ॥ सोघां किया अनाज ॥ १९ ॥ तुलसी पुरवके पापसे ॥ हरिकथा न सोहाय ॥ जैसें ज्वरके जोरसें ॥ भोजनकी रुचि जाय ॥ २० ॥ पारसके परतापसें ॥ कंचन भइ तरवार ॥ तुलसी तीनु ना मिटे ॥ मार धार आकार ॥ २१ ॥ ज्ञान थोडी करग्रहे ॥ सद्गुरु भये सोनार ॥ तुलसी तीनुं मिट जावे ॥ मार धार आकार ॥ २२ ॥ उगे सो तहां बोवे नहि ॥ बोवे सो जल जाय ॥ तुलसि ऐसे पतीतका माल मसकरा खाय ॥ २३ ॥ तुलसि रेखा करमकी ॥ मेट न सके राम ॥ मेटे तो क्या बेरहे ॥ पण समज कियाहे काम ॥२४॥ कामी तरे क्रोधी तरे ॥ लोभिकी गत होय ॥ तुलसी सब तर देखे ॥ सलील तरे नही कोय ॥ २५ ॥ मीणा पर पंखी मरे ॥ जेमे बरसे केर ॥ तुलसीके बाना लिया ॥ पण बाने बाने फेर ॥ २६ ॥ बाना हे बहु भातका ॥ वामें हे इक मरम ॥ सबही छाये बेसीये ॥ न बेसीये मीणा हराम ॥ २७ ॥ सेरका चाकर सेरका ठाकर ॥ सेर खाइ समसेर बजावे ॥ सेर खरा दास तुलसी ॥ सेर खाइ हरिगुण गावे ॥ २८ ॥ पेहेले नीकसे साग कर ॥ फेर पडया फंदमाई ॥ तुलसी एसे पतीतका ॥ दरशनका फल नाई ॥ २९ ॥ त्याग करके संग्रह

कियो ॥ जाण्यो नहि कछु सार ॥ तुलसी एसे पतितकुं ॥ वारवार धीकार ॥ ३० ॥ संत माया छांड चले ॥ पीछे रहे लपटाइ ॥ तुलसी उलटा अन्नकु ॥ स्वान स्वाद करी खाई ॥ ३१ ॥ आये ते हरि भजनकुं ॥ कीना ओर उपाय ॥ तुलसी सीतारामकुं ॥ कहाकेहंगे जाय ॥ ३२ ॥ राम तहां काम नहीं ॥ काम तहां नहि राम ॥ तुलसी दोनुं नरेह ॥ रवि रजनी एक ठाम ॥३३॥ परधन पथर करी जान ॥ परस्त्री मात समान ॥ एता करतां हरि नमीले तो तुलसीदास जमान ॥ ३४ ॥ कृष्ण कृष्ण सब कहतहे ॥ आक ढाक अरु केर ॥ ॥ तुलसी आ व्रज भोममें कहा रामसे वेर ॥ ३५ ॥ कोटी कलप कासी वसे ॥ मथुरां कलप हजार ॥ एक निमिप सरजुवसे ॥ तुले न तुलसी भार ॥ ३६ ॥ कहा कहुं छवी आजकी ॥ भले विराजो नाथ ॥ तुलसी मस्तक तब नमे ॥ धनुस बाण लीयो हाथ ॥ ३७ ॥ कित मोरलीका कित चंदरिका ॥ कित सखियनको साथ ॥ अपने जनके कारणे ॥ कृष्ण भये रघुनाथ ॥ ३८ ॥ मुरली लकुट दुरायके ॥ नाथ भये रघुनाथ ॥ तुलसी रुची लखी दासकी ॥ धनुषबान लीयो हाथ ॥ ३९ ॥ कलपे संपत न उपजे ॥ कलपे वीपत न जाय ॥ तुलसी स्वभाव पडयो जीवकुं ॥ कलप्या विना न रेवाय ॥ ४० ॥ कनक तज्यो कामनी तज्यो ॥ त-

ज्यो धातुको संग ॥ तुलसी लघु भोजन करी ॥ जीवे मानके रंग ॥ ४१ ॥ कंचन तजवो सेल हे ॥ नारीकेरो नेह ॥ मान बडाई ईरषा ॥ तुलसी दुर्लभ तजवो तेह ॥ ४२ ॥ दया धरमको मूलहे ॥ पाप मूल अभीमान ॥ तुलसी दया न छांडीये ॥ जबलग घटमें प्रान ॥ ४३ ॥ अंतर उंडी जरतहे ॥ ईरपा द्रेषकी आग ॥ तुलसी तिनमें जातहे ॥ ज्ञान भक्ति वैराग ॥ ४४ ॥ तुलसी ताकी कुण गति ॥ बोलत विना विचार ॥ हनत पियारो आतमा ॥ जीभ करी तरवार ॥ ४५ ॥ हरि भजवुं हक बोलवुं ॥ दोनु वात अवल ॥ तुलसी ताकुं न उतरे ॥ आठो पोर अमल ॥ ४६ ॥ तुलसी रसना सो भली ॥ जबही सुमरे राम ॥ नीतर काढी निकासिये ॥ भलो न मुखमें चाम ॥ ४७ ॥ तुलसी जाके मुखनसे ॥ भुलेइ निकसे राम ॥ ताके पगकी पेंमिया ॥ मेरे तनकी चाम ॥ ४८ ॥ तुलसी मीठे वचनसें ॥ सुख उपजत सो ओर ॥ वशीकरण ए मंत्रहे ॥ तज वचन कठोर ॥ ४९ ॥ तुलसी बांह कपूतकी ॥ जो ग्रहीये सो वार ॥ भेड पुछ भादों नदी ॥ दोउ न उतरे पार ॥ ५० ॥ तुलसी बांह सपूतकी ॥ जो ग्रहीये एक वार ॥ हलकी कडवी तुंवडी ॥ सो उतारे पार ॥ ५१ ॥ तुलसी राम प्रतापसें ॥ नीर्बल होत बलवंत ॥ वाली सुग्रीवके वैरमां ॥ तव नोते हनमंत ॥ ५२ ॥ बडे ग्रहे

वड होतहे ॥ ज्युं वामन भुजडंड ॥ तुलसीराम प्रतापसें ॥ डंड गये ब्रह्मंड ॥ ५३ ॥ तुलसी तलब न छोडीये ॥ नीश्चे लीजे नाम ॥ मनुस मजुरी देतहे ॥ क्युं रखेगो राम ॥ ५४ ॥ तुलसी सोबत नीचकी ॥ दोदो वाते दुःख ॥ रीझे तो पाडे धर्मथी ॥ खीजे तो दीये दुख ॥ ५५ ॥ मजीवन विद्या पढे ॥ मतीके बडे हीन ॥ तुलसी एक विवेक विना ॥ वनमां मारे तीन ॥ ५६ ॥ मजीवन विद्या पढे ॥ आपका उपजाव्या काल ॥ तुलसी सो नर उगरा ॥ जेणे पकडी तरुवर डाल ॥ ५७ ॥ दुबधामां दोनु गये ॥ माया मिली न राम ॥ तुलसी आ संसारमें ॥ सर्यो न एके काम ॥ ५८ ॥ मायाकुं माया मिले ॥ करकर लंबा हाथ ॥ तुलसी आ गरीबकी ॥ कोइ न पूछत बात ॥ ५९ ॥ तुलसी तीन लोकमें ॥ कोंन जाने पर पीर ॥ कां जाने दिल आपना ॥ कां जाने रघुवीर ॥ ६० ॥ तुलसी रघुवीर छांडके ॥ धरत भरोसा ओर ॥ सुख संपतमें क्या भये ॥ नही नर्कमें ठोर ॥६१॥ तुलसी रघुवीर ना भजे॥ गयो भूतनके भाग्य॥ शीर धुने रसना काटे ॥ मुखमें डारे आग्य ॥ ६२ ॥ हे मन सबसें नरस हे ॥ सरस हरि भजिहोहि ॥ तुलसी निसदिन देतहुं ॥ एहि सिखामण तोहि ॥ ६३ ॥ वात सब जग करतहे ॥ वातवातमें फेर ॥ तुलसीदास अंतर घणो ॥ क्यां मेरु क्यां सेर ॥६४॥

तुलसी आ संसारमें ॥ जांण्या नही जगदीस ॥ काट-नहारी नालकञ्यो ॥ क्युं न काञ्यो सीस ॥ ६५ ॥ तुलसी सो नर चतुर हे ॥ रामचरन लेलीन ॥ परधन परमन हरनकुं ॥ वेश्या बोत प्रवीन ॥ ६६ ॥ संत संतापे जातहे ॥ राज धर्म अरु वंश ॥ तुलसी तिन देखे नही ॥ रावन कौरवके कंस ॥ ६७ ॥ तुलसी गरीब न छेडिये ॥ बडी गरीबकी धाय ॥ मुआ ढोरके चामसें ॥ लोहा भसम हो जाय ॥ ६८ ॥ तुलसी *खबेडा खेतका ॥ वायें टकोरा लेत ॥ आप तो चाखे नही ॥ दुख ओरनकुं देत ॥ ६९ ॥ तुलसी आ संसारमें ॥ करी लेजो दो काम ॥ देवकों टुकडा भला ॥ लेवेकों हरिनाम ॥ ७० ॥ ॥ चोपाइ ॥ ॥ सेवक सुख चहे मान भिखारी ॥ व्यसनी धन शुभ गति व्यभिचारी ॥ लोभी यस चह गुण अभिमानी ॥ नभ दुहि दूध चहत ए प्रानी ॥ १ ॥ धीरज धर्म मित्र अरु नारी ॥ आपदकाल परिखि एह चारी ॥ नमनी नीचकी अति दुखदाइ ॥ जिमि अंकुश धनु उरग बिलाइ ॥ २ ॥ ॥ सोरठा ॥ फुले फले नवेत ॥ जदपी सुधा वरपे जलद ॥ मुरख हृदय न चेत ॥ जो गुरु मिलहि विरंची शत ॥ ७१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तात स्वर्ग अपवर्ग सुख ॥ धरिय तुला एक अंग ॥ तुलै न

* ओडुं जीवडां खेतरमां न आवे ते सारुं करे छे ते.

ताहि सकल मिलि ॥ जो सुख लव सतसंग ॥ ७२ ॥ सचिव वैद्य गुरु तीनि जो ॥ बोलहिं प्रिय प्रभु आश ॥ राज धर्म तनु तीनि कर ॥ होइ वेगही नाश ॥ ७३ ॥ दंड यतिन कर भेद जहां ॥ नर्तक नृत्य समाज ॥ जीतेउ मन जग सुनिय अस ॥ रामचंद्रके राज ॥ ७४ ॥ सो परंतु दुख पावइ ॥ शिर धुनि धुनि पछिताइ ॥ कालहि कर्महि इश्वरहि ॥ मिथ्या दोष लगाइ ॥ ७५ ॥ विनु सतसंग न हरिकथा ॥ तेहि विनु मोहन भाग ॥ मोह गये विनु रामपद ॥ होइ न दृढ अनुराग ॥ ७६ ॥ श्रीमद वक्र नकीन्हकेहि ॥ प्रभुता बधिरनकाहि ॥ मृगनयनीके नयनशर ॥ को अस लागु न जाहि ॥ ७७ ॥ निर्गुण रूप सुलभ अति ॥ सगुण न जानै कोई ॥ सुगम अगम नाना चरित ॥ सुनि मुनि मन भ्रम होइ ॥ ७८ ॥ संत पंथ अपवर्गके ॥ कामी भवकर पंथ ॥ कहहिं संत कवि कोविद ॥ श्रुति पुराण सद्‌ग्रंथ ॥ ७९ ॥ ब्रह्मज्ञान रत नारी नर ॥ करही न दुसरी बात ॥ कोडी उलागी लोभ वश ॥ करही विप्र गुरु घात ॥ ८० ॥ पशु घडतां नर घड्यो ॥ भुल्या सींगने पुछ ॥ तुलसी हरिकी भक्ति विना ॥ धीक डाढी धीक मुछ ॥ ८१ ॥ जीमी पनहारी जेवरी, खेंचत कटे पखांन ॥ तुलसी रसना राम

कहुं ॥ पाप कितिक अनुमान ॥ ८२ ॥ तुलसी अपने रामकों ॥ रीझ भजोके खीज ॥ खेत परेतें जामीह ॥ उलटे सीधे बीज ॥ ८३ ॥ सीकहते सुख उपजे ॥ ता कहेतें तम नाश ॥ तुलसी सीता जो कहत ॥ राम न छांडत पास ॥ ८४ ॥ तुलसी अघ सब दुरगे ॥ राअछरको लेत ॥ फिर नेरे आवत नही ॥ म अछरपद देत ॥ ८५ ॥ काहुके धन धामहे ॥ काहूके परिवार ॥ तुलसी एसे दीनके ॥ सीताराम आधार ॥ ८६ ॥ एक भरोसो एक बल ॥ एक आश विश्वास ॥ स्वाती बुंद रघुनाथ हे ॥ चातक तुलसी दास ॥ ८७ ॥ ज्यों कामीके चीतमें ॥ चढी रहत नीत वाम ॥ एसें—कब लागी हो ॥ तुलसी के मन राम ॥ ८८ ॥ ज्यों गरीबकी देहमें ॥ माघ पुसकों घाम ॥ एसें—कब लागीहो ॥ तुलसीके मन राम ॥ ८९ ॥ तीन टुक कोपीनके, अरु भाजी बिन लौंन ॥ तुलसी रघुवर उरवसें ॥ इंद्र बापुरा कौंन ॥ ९० ॥ गुन सरूप बल द्रव्यको ॥ प्रीति करे सब कोय ॥ तुलसी प्रीति सराहियें ॥ जो इनतें बाहिर होय ॥ ९१ ॥ काम क्रोध मद लोभकी ॥ जबलग मनमें खान ॥ तबलग पंडित मुरखही ॥ तुलसी एक समान ॥ ९२ ॥ जबलगी अंकुश शीशपें, तब लगी निर्मल देह ॥ तुलसी

अंकूश बाहिरे ॥ शिरपर डारत खेह ॥ ९३ ॥ तुलसी काया खेतहे ॥ मनसा भयो किसान ॥ पाप पुन दोय बीजहे ॥ बोवे सो लुने नीदान ॥ ९४ ॥ स्वामीते सेवक बडो ॥ जो निज धरम समान ॥ राम बांध उतसें जलधी ॥ कुदगये हनुमान ॥ ९५ ॥ स्वामीकों सेवक घने ॥सेवकको प्रभु एक॥तुलसी दोमें सो वडो ॥ज्याके मनमें टेक ॥ ९६ ॥ होत भलेके अन भलो ॥ होत दानीके सुंभ ॥ होत कपुत सपुतके ज्यों पावक मही धुम ॥ ९७ ॥ नीच नीचाई नां तजें ॥ साधन हुके संग ॥ तुलसी चंदन विटपवसी ॥ विन विष भयो न भुजंग ॥ ९८ ॥ आशन दृढ आहारसु ॥ मती ग्यान दृढ मान ॥ तुलसी बिना उपासना ॥ बिन दुलहकी जान ॥ ९९ ॥ तन सुकाय पंजर करई ॥ धरे रेन दिन ध्यान ॥ तुलसी मिटे न वासना ॥ विना बिचारे ज्ञान ॥ १०० ॥ ॥ पद राग धोळ ॥ संत पारश चंदन बावना ॥ काम धेनु कल्पतरु सार ॥ समागम संतनो ॥ १ ॥ संत समझ्यामां अंतर घणो ॥ तरु पारश त्रण प्रकार ॥ समागम संतनो ॥२॥ एक पारसथी पारस बने ॥ एक पारसथी हेम होय ॥ समागम संतनो ॥३॥ एक पारश लोहने कुंदनकरे ॥ सो वरसें लोह न होय ॥ समागम संतनो ॥४॥ एक चंदनथी विख उतरे ॥ एक चंदनथी अग्नी ओलाय ॥ समागम संतनो ॥५॥

एक तलभार ताना तेलमां ॥ फरि तेल तातु नवथाय ॥ समागम संतनो ॥६॥ सर्वे सन्यासुरी नव्य जाणीये ॥ सर्वे नारी प्रतिव्रता नहोय ॥ समागम संतनो ॥७॥ सर्वे गजशिर मोती नव्य नीपजे ॥ नागे नागे मणि नव होय ॥ समागम संतनो ॥८॥ मृग मृगे कस्तुरी नव नीपजे ॥ वने वने अगर नव होय ॥ समागम संतनो ॥९॥ जले जले कमल नव नीपजे ॥ तेनी विगति विचारी जोय ॥ समागम संतनो ॥१०॥ ज्ञानहीन गुरु नव कीजीये ॥ वंझ्या गाय सेवे सुं थाय ॥ समागम संतनो ॥११॥ कहे प्रीतम ब्रह्मवेता भेटतां ॥ महा रोग समुलो जाय ॥ समागम संतनो ॥ १२ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ ज्ञान घटे ठग चोरकी संग ॥ ध्यान घटे बिनुं धीरज लाई ॥ सोक घटे साधुके संगत ॥ दरद घटे कछु ओषध खाई ॥ प्रीत घटे मुखसें कछु मांगत ॥ भाव घटे नितही घरजाई ॥ लाल कहे दारिद्र घटे ॥ गोविंद गोविंदके गुन गाई ॥१॥ उडगनकी बात सीचान ग्रही ॥ तल खच कबान रह्यो भिलरे ॥ बपरी होलरी पियुकुं सुमरे ॥ अबतो सुमरो मोरलीधररे ॥ कालकुं काल भोयंग डस्यो ॥ दगाबाजकुं लाग गयो सररे ॥ जिनकुं रक्ष पाल गोपाल धनी ॥ तिनकुं बलभद्र कहा डररे ॥२॥ पेट पिशाच खजुरकी टुटीसो ॥ टांग गही एक टुटी ॥ भारनी भार सबे सुधरे ॥ फूटी सो

हांडी गही एक फूटी ॥ घुन उठाय लाये हनुमंतही ॥ पीछे रहे झिपट नकी बूटी ॥ कोड निसान घुरेरावकेशव एक तांत न वजी तो कहा झांट टूटी ॥ ३ ॥ कवित ॥ राजनकी रीत गइ ॥ मित्रनकी प्रीत गई नारीकी प्रतीत गई जार मन भायोहे ॥ सज्जनको भाव गयो ॥ पंचनको नांव गयो ॥ साचको प्रभाव गयो ॥ जूठही सोहायोहे ॥ मेघनकी वृष्टि गइ ॥ ॥ पृथिवी अनिष्ट भइ ॥ सब जगमांही विपरीत दरसायो हे ॥ कीजीये सहायज्युं कृपाल श्रीगोविंदलाल ॥ कठिन कराल कलिकाल चढी आयोहे ॥१॥ ॥ सवैयो ॥ अटतं सद सांख्य पथि स्त्रीनरो ॥ व्रतशील लटे होय जानजने ॥ झटितं तन त्याग तदा क्रियते ॥ अटनं तजि देश विदेश वने ॥ १०*दिक ८*शैल सवंत ४ युगो ७ दधि वर्षसु ॥ मास मधु सुदि त्रीज दिने ॥ सुभ भोमरामानंद ज्युं लिखितं ॥ शिव बद्रिपति प्रिय हे अपने ॥ १ ॥ अर्थ–साचा सांख्य योगने मारगे चालतां स्त्री के पुरुष शीलव्रतमांथी एटले निष्काम वर्त्तमानमांथी पडी जाय छे. अने ते वातनु माणसोमां जाण थायछे ॥ सारे झट शरीरनो त्याग करेछे मतलबके आत्म हत्या करेछे. ते करवी नही ॥ अने देश तजीने परदेशमां अथवा

* दिक एटले दिशाओ दस. * शैल एटले अष्टकुल पर्वत.

वनमां अटन करवुं ॥ संवत १८४७ ना वर्षमां चैत्र महिनानी शुदि त्रीजने दिवसे ॥ सारा भोमवारे रामानंद स्वामिए आ पत्र लख्यो छे. अने शिव एटले कल्याणकारी नारायण आपणा इष्टदेवछे मतलब के ते आपणु कल्याण करशे ॥ ॥ साखी ॥ ॥ तनकी नाडी करगृही ॥ मनकी नांडी बेन ॥ अंतर गतकी फरमराम ॥ कही देतहे नेन ॥ १ ॥ हेत प्रीतको नेहरो नेननमें झलकाय ॥ शींचे पाणी मुलमें ॥ रयो पातमें आय ॥ २ ॥ सज्जन सब जग सरस हे ॥ ॥ जबलग परयो न काम ॥ हेम हुताशन पारखीयो ॥ पीतर नीकस्यो स्याम ॥ ३ ॥ हलदी जलदी न तजे खटरस तजे न आम ॥ गुनीजन गुनकु न तजे ॥ अवगुन तजे न गुलाम ॥ ४ ॥ काजल तजे न स्यामता ॥ मुक्ता तजे न स्वेत ॥ दुरिजन तजे न कुटिलता ॥ सज्जन तजे न हेत ॥ ५ ॥ जे ज्याकुं प्यारो लगे ॥ ताका करत वखान ॥ जेसे वख भरवखकुं ॥ मानत अमृत समान ॥ ६ ॥ सज्जन परघर जायके ॥ दुःख न दीजे रोय ॥ भर्म गमावे आपको ॥ बाट न लेवे कोय ॥७॥ सज्जन ॥ परघर जायके ॥ दुःखज दीजे रोय ॥संपत होयतो बाटलेवे ॥ राह बतावत कोय ॥८॥ देश परदेशमें फरया ॥ माणसका बोत सगाल ॥ जाके देखे छाती ठरे ॥ वाका पड्या दकाल ॥ ९ ॥ सज्जन दुर्जन

बोतहे ॥ ताली मित्र अनेक ॥ जिन दीठे छाती ठरे ॥ सो लाखनमें एक ॥ १० ॥ कागद लखुं कपुरमें ॥ विधिविधि लखुं सलाम ॥ जिस दिनसे विछरे पडे ॥ तिस दिनसे निंद हराम ॥ ११ ॥ तुम जानो प्रीती वीसरी ॥ मुज मनथी लगार ॥ रात दिवस तुम सांभरो ॥ सपनेमें सोवार ॥ १२ ॥ आरे नाम नारायणरो ॥ जे नर नाम लयंत ॥ त्यां जमरा परहरे ॥ केशव त्यां आवंत ॥ १३ ॥ केणी मीशरी खांडहे ॥ रेणी तत्ता लोय ॥ केणी कहेवे रेणी रहेवे ॥ एसा विरला कोय ॥ १४ ॥ स्वामी सहजानंदरा ॥ जेने लवसतसंग लीया ॥ जमनेडा आवे नहीं ॥ वेडा पार किया ॥ १५ ॥ हरि किया वेलव्या ॥ छठीकेनका अंक ॥ तल घटे न जव वधे न ॥ रहे रहे जीव निशंक ॥१६॥ सुरपुर नरपुर नागपुर ॥ ए तीनुंमें नाहीं ॥ कां सुख हरिके चरनमें ॥ कां सुख संतनके मांही ॥ १७ ॥ तनकी जाणे मनकी जाणे ॥ जाणे चितकी चोरी ॥ इनके आगे क्या छुपाइये ॥ जिनके हाथ दोरि ॥ १८ ॥ समरणकी सुध लेतहो ॥ भीड पडनके काज॥ जाके जगमें कोइ नहीं ॥ ताके हो महाराज ॥ १९ ॥ कनक ने कामनी ॥ जेना वज्रमां गाला ॥ सांगोके सलवाइ रया ॥ कइक चड्या नेपाला ॥ २० ॥ पीपा पाप न कीजे ॥ पुन्य किया सो वार ॥ कोइका लिया

नहीं ॥ तो दिया वार हजार ॥ २१ ॥ जीव भारी झमेर करे ॥ खातां करे वखाण ॥ पीपो के प्रगट पारखुं ॥ भांणामां मशाण ॥ २२ ॥ जेमी नीती हरामकी ॥ एसी हरिसें होय ॥ चला जाय वैकुंठमें ॥ पक्का न पकडे कोय ॥ २३ ॥ ॥ सोरठा ॥ काळप मुके केश ॥ मन काळप मुके नहीं ॥ विपरित थातां वेश ॥ वण जोवन वलखां करे ॥ २४ ॥ ॥ साखी ॥ मनकी वृती एकहे ॥ भावे सांहां लगाय ॥ जाने तो हरिकी भक्ति कर ॥ जाने तो विषयकमाय ॥ २५ ॥ जाके बोले बंध नहीं ॥ मर्म नहीं मनमांय ॥ ताके संग न चालिये ॥ छोड चले वनमांय ॥ २६ ॥ वदन सीतल मुख प्रफुल्लित ॥ अंतर कपट अपार ॥ ब्रह्मानंद कहे ताकुं ॥ नमस्कार सतवार ॥ २७ ॥ चोरचोरके गोठीये ॥ साधसाधके सेन ॥ अंतरगतकी फरमराम ॥ कही देतहे नेन ॥२८॥ खेतर बगाड्यो खडसले॥ सभा बगाडी कूड ॥ हरिभक्त बगड्यो लालचु ॥ केसर भल्यो धूड ॥ २९ ॥ मत दीधे माने नहीं ॥ कुमते मन कोलाय ॥ अवेल अवळे अक्षरे ॥ तेने सवला केम सोहाय ॥ ३० ॥ करत कुसंग चाहत कुसल ॥ एही बडो अपशोस ॥ महिमा घट्यो समुद्रको ॥ रावण वस्यो पडोस ॥ ३१ ॥ नीच संगतने खर सबद ॥ घटत घटत घट जाय ॥ साधु संगतने हरि रस ॥ वधत वधत

वध जाय ॥ ३२ ॥ सांया मेरे तुम्हो ॥ तुम लग मेरी दोर ॥ जेसे कौवा झांझका ॥ ओर न मुझ ठोर ॥ ३३ ॥ अपनी पहुंच बिचारकें.. करतब्र करिये दोर ॥ तेते पाव पसारीये ॥ जेती लंबी सोर ॥ ३४ ॥ श्लोक ॥ ॥ उपदेशो न दातव्यो ॥ यादृशे तादृशे जने ॥ पश्यवानर मूर्खेण सुगृही निगृही कृता ॥ १ ॥ हस्त पाद समायुक्तो ॥ दृश्यसे पुरुषाकृतिः ॥ शीतवात हतो मूढ ॥ कथं न कुरुषे गृहम् ॥ २ ॥ सूची मुखी दुराचारा ॥ रंडा पंडित वादिनी ॥ असमर्थो गृहारंभे ॥ समर्थो गृहभंजने ॥ ३ ॥ लुब्धानां याचकः शत्रुश्चोराणां चन्द्रमारिपु ॥ जारस्त्रीणां पतिः शत्रु मूर्खाणां बोधको रिपुः॥ ४ ॥ स्थान भ्रष्टा न शोभंते ॥ दंताःकेश नखानराः॥ स्थान भ्रष्टाःसुशोभंते ॥ सिंहाःसत्पुरुषागजाः ॥ ५ ॥ पद राग गर्बि ॥ ॥ भाइ तेम समरो सामा॥ जाणो जे आवशे कामा ॥ संसारथी मनडुं वालो ॥ साचे हवे मारगे चालो ॥ १ ॥ मिथ्या मन मोहथी टालो ॥ अहंकार अभिमान गालो ॥ रुदियामां रामने राखो हरिरस प्रेमचाखो ॥ २ ॥ दुर्लभ छे मनुष्यदेह ॥ फरि नही आवे तेह ॥ ओचींतानो टुंपो देशे ॥ सगां सौ जोईने रेशे ॥ ३ ॥ संसारीओ जुवोकथी ॥ भायो कोइ कोईनुं नथी ॥कीधां कर्म पोते शेशे ॥ भलो भुंडो

कोइ नकेशे ॥ ४ ॥ घोडाने वेल छे जुठी ॥ जातुं छे एकलुं ऊठी ॥ जुवानिमां आग लागी ॥ हरिसमरया नहीं जागी ॥ ५ ॥ वरणागीमां वाट उठी ॥ प्रभुसाथे प्रीत टुटी ॥ चतुराइ चुले चडी ॥ हरि समरयाने घडी ॥ ६ ॥ भण्यो पण भुंडो दीसे ॥ हरिसाथे मन नहीसे ॥ डापणे डाट वाल्यो ॥ धरमनो मारग टाल्यो ॥ ७ ॥ माला तो नगमे दीठी ॥ निंदा तो लागे मीठी ॥ साधु साथे वेर पाले ॥ पोतानुं जीवत वाले ॥ ८ ॥ न लीधुं नाम श्रोरारी ॥ माताने भारे मारी ॥ एवानुं नहीं टाम ठेकाणुं ॥ तरणु जेम जाय तणाणुं ॥ ९ ॥ एवानी शी पेर थाशे ॥ रवी सुत मनवी माशे ॥ कबुद्धि कामे राच्यो ॥ मुरख ते मनमां माच्यो ॥ ॥ १० ॥ वोलीने बल देखाडे ॥ भुंडाई मनमां काढे ॥ नारी साथे मनडुं मोयुं ॥ आवीने मुलगुं खोयुं ॥ ११ ॥ सज्यामां सुखे सुतो ॥ आव्यो तेम जाय वगुतो ॥ जीवंतो माया जोडी ॥ साथे नही आवे कोडी ॥ १२ ॥ धनवंती पुरो कहावे ॥ अंते कोइ काम नहीं आवे ॥ जुवोने काची काया ॥ पडी रहेशे सघली माया ॥ १३ ॥ हैयाना फुट्या लोको ॥ हरीनुं नाम कां चुको ॥ अवशर तो नावे फरी ॥ काल तो लेशे घेरी ॥ १४ ॥ ते माटे चेतो टाणे ॥ वावरो जमणे पाणे ॥ रसनाये हरीने भजो ॥ काणीतो

कर्मनी तजो ॥ १५ ॥ मुनेतो आशा तारी ॥ काया माया नथी मारी ॥ रुदियामां चरणज झाली ॥ नरसीयो रियोछे माली ॥ १६ ॥

याज्ञवल्क्य स्मृतिमांथी चार उपाय ॥ श्लोक ॥

॥ उपायःसामदानंच भेदोदंडस्तथवच ॥

सम्यक्प्रयुक्ताःसिध्येयुर्दंडस्त्वगतिकागतिः ॥ १ ॥

अर्थ–साम, दान, भेद, तथा दंड–साम १ एटले प्रिय भाषणे करीने समझाववुं ॥ दान २ एटले द्रव्य आपवुं ॥ भेद ३ एटले फूट पाडवी तथा परस्पर वैरभाव कराववो ॥ दंड ४ एटले धन लूटी लेवुं लडाइ करवी विगेरे नुकसान करवुं. ए शत्रु विगरने वश करी लेवाना चार उपाय छे. तेमां दंडतो शेवट बीजा उपाय चाली शके नहीं त्यांहां वापरवानो छे ॥ १ ॥

टीप-पंचतंत्रमांथी, १संधि एटले मित्राई करवी. २विग्रह एटले युद्ध करवुं. ३यान एटले ठाम मुकी पाछुं हटवुं. ४आसन एटले पोतानो ठाम मजबूत करवो. ५आश्रय एटले बीजा राजानी मदद लेवी ६द्वैधी एटले कपट भावे करीने शत्रुने जीतवो.

*छगुण ॥ श्लोक ॥ संधिंच विग्रहंचैवयान मासन-संश्रयः ॥ द्वैधिभावं गुणानेतान्यथावत्परिकल्पयेत् ॥२॥ अर्थ–संधि, विग्रह, यान, आसन, संश्रय, तथा द्वैधिभाव, एटला गुण यथायोग्य जाणवा ॥ हरेक वातमां पडेली तकरार मटाडवा सारु बेउजणनी समजूती थाय तेवी व्यवस्था करवाना कामने *संधि १. कहेछे ॥ विग्रह २ एटले वगाड करवो अथवा लडाई करवी ॥ यान ३ एटले शत्रु सामे चढाई करीने जवुं ॥ आसन ४ एटले छावणी नांखी पडाव करवो ॥ संश्रय ५ एटले अधिक बलवान राजानी मदद मागवी ॥ द्वैधिभाव ६ एटले पोताना सैन्यना बे विभाग करवा ॥ ए छ गुण यथायोग्य देशकाल शक्ति मित्र इत्यादिने जेम घटे तेवा वापरवा ॥ २ ॥

राजाना सात अंग ॥ श्लोक ॥ स्वाम्यमात्यो जनो दुर्गकोशौ दंडस्तथैवच ॥ मित्राण्येताःप्रकृतयोराज्यंसप्तांग मुच्यते ॥ ३ ॥ अर्थ–१स्वामी एटले राजा ॥

*राजाए छकामनुं सदा चिंतन करता रहेवुं. लडाई, तथा सलाह तथा लडवासारु लश्करे तथा पोते केम कूच करवी, तथा छावणी करीने केम रहेवुं. लश्करने केवी रीते गोठवी राखवुं अने पोतानाथी बळवान राजानो आश्रय शीरीते मेळववो. *वष्टी करवी.

२ अमात्य एटले कामदार ॥ ३ प्रजा एटले लोक ॥ ४ दुर्ग एटले कोट किल्ला वगेरे ॥ ५ कोश एटले धननो खजानो ॥ ६ दंड एटले हाथी घोडा रथ अने प्यादल एवी चार प्रकारनी फोज ॥ ७ मित्र एटले हितकारी ॥ ए राजा विगेरे राज्यनी प्रकृति मूल कारणछे ॥ अने ए सातवडे राज्य सप्तांग कहेवायछे ॥ ३ ॥ कवित ॥ केते देश केते गाम केते ठाम लोक केते वामें फेर केते दुर केतेक हजूर हे ॥ केती मेरी *आमंद खरचको प्रमान केतो केतनो विकार वामें केतो सांच कूरहे ॥ केतो मेरे सेन राजे, मेरो मुख चाहे केते केतो मेरे देन केतो खजानाको पुरहे ॥ राजनीती राजबंशी राजनके जथुराम रोज उठ इतनो विचारवो जरूरहे ॥ १ ॥ राजाने *चार एटले चार माणस जुदे जुदे ठेकाणे पगार आपीने राखवां ते चार थानकनी विगत ॥ पोताना जे शत्रु होय त्यां एक माणस छानुं रहे ने तेनी वातनी खबर कहे ॥ १ ॥ मुख्य कामदार पासे एक माणस छानुं रहे ने तेनी जे वात होय ते राजाने पहोंचाडे ॥ २ ॥ पोताना देशमां एक माणस छानुं फरया करे अने वस्तीने कोई पीडा करतुं होय अगर कोई माणस लांच

*आवदानी *दूत

खातो होय ते वात राजाने पहोचाडवी ॥ ३ ॥ एक माणस छानुं पाणीआरा शेर विगेर रैयतमां फरया करे ते पोतानो जश के अपजश जे लोको बोलता होय तेवी वात राजाने कहे ॥ ४ ॥

ब्रह्मचारी अचिंत्यानंदजी कृत ॥ श्लोक ॥

श्रीमद्भक्तिवृषात्मजेन सहजानंदेन सत्प्रेयसा ॥ यस्मै श्रीहरिणा स्वकीयजनता धर्मावनायक्षितौ ॥ दत्तं भक्तजनैर्नुतं तमरुभिः सद्देशिकत्वं निजं ॥ वंदेहं सुधियं गुरुं विपुलयाऽयोध्याप्रसादंमुदा ॥ १ ॥ अर्थ ॥ सारी वखाणवा योग्य जेनी बुद्धिछे एवा गुरुश्रीआचार्य अयोध्या प्रसादजी महाराजने हुं घणा हर्षवते नमस्कार करुंछुं जेमने श्रीहरि भक्ति धर्मना पुत्र एवाने साधु पुरुषोने अतिशे वहाला एवा श्रीसहजानंदस्वामिये पोतानुं सारुं आचार्य पदवीपणुं आप्युं एटले श्रीस्वामीनारायण महा प्रभुये पोते पोतानी गादी उपर स्थापन करेला एवा जेने मोटा मोटा भक्तजनो स्तुति करेछे पृथ्वी उपर पोताना भक्तजनना समूहनो जे एकांतिक धर्म तेनी रक्षा करवा वास्ते पोताने स्थाने श्रीहरिकृष्ण महाराजे स्थापन करेला एवा अयोध्या प्रसादजी महाराजने नमस्कार करुंछुं एम स्तुति करनार पुरुष कहेछे ॥ १ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ जनाना मासानां स्वामिह शरणं स्थापनतया ॥ हरेरैकांतिक्यं जगति

ननु भक्तौ वृषभुवः ॥ हरिर्यस्मिन् प्रीतः सभृशम भवत्तं शुभ गुणं ॥ नमाम्या चार्येंदुं ममाहि रघुवीरं गुरुमहम् ॥ २ ॥ अर्थ–आ जगतने विषे पोतानुं शरण पामेला भक्तजनोने धर्मदेवना पुत्र एवा श्रीहरि तेनी एकांतिक भक्तिने विषे स्थापन करवाथी जे रघुवीरजी आचार्य महाराजनी उपर श्रीहरि घणुं प्रसन्न थता हवा एवा ने कल्याणकारिछे गुण जेने विषे एवा ने आचार्यने विषे चंद्रमा समान शांत सुखकारी ने मारा गुरु एवा ते रघुवीरजी महाराजने ग्रंथकर्त्ता कहेछे जे हुं नमस्कार करुंछुं ॥ २ ॥

॥ श्लोक ॥ ॥ महाध्याना भ्यासं विदधतमजस्रं भगवतः ॥ पवित्रे संप्राप्तं स्थितिमति वरैकांतिक वृषे ॥ सदानंदं मारंपरम हरि वार्त्ता व्यसनिनं ॥ गुणातीतानंदं मुनिवर महं नौमि सततम् ॥ ३ ॥ अर्थ–प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवाननुं महा मोटुं जे ध्यान करवुं तेना अभ्यास ने निरंतर करता एटले जाग्रत स्वप्न ने सुषुप्ति ए त्रेणे अवस्थामां प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्त्तिने निरंतर देखता एवा ने पवित्र अतिशे श्रेष्ट एवो जे एकांतिक धर्म तेने विषे अचल निष्ठाने पामेला एवा ने निरंतर भगवान संबंधि आनंदने विषे मग्न एवा ने सारी उत्कृष्ट एवी जे भगवान संबंधि वार्त्ता करवी तेनुंज छे व्यसन जेमने एवा सद्गुरु श्रीगुणातीत

तानंद स्वामिने हुं निरंतर नमस्कार करूछुं ॥ ३ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ रघुवीर देशिक सुताय प्रवर गुण नीति शालिने ॥ नौमि परम पटवे गुरवे भगवत्प्रसाद शुभ नाम धारिणे ॥ ४ ॥ अर्थ–श्री रघुवीरजी आचार्य महाराजना पुत्र एवा ने अतिशे श्रेष्ट एवा जे गुण तथा नीति तेणे करीने अतिशे शोभता एवा ने सर्व कार्यने विषे अतिशे डाया एवा ने भगवत्प्रसाद ए प्रकारे शुभ नामने धारण करता एवा गुरुश्री आचार्य भगवत् प्रसादजी महाराजने हुं नमस्कार करूं छुं ॥ ४ ॥

॥ अथ दीनानाथ भट्ट कृत भजनाष्टकम् ॥ श्लोक ॥ भुवि सदंगणे सर्व सद्गणे रचित खेलनं भक्त मेलनम् ॥ तव सुरंजनं दुःख भंजनं भज मनः सदा स्वामिनं मुदा ॥१॥ अर्थ–आ अष्टक करनार पोताना मनने समझावेछे जे हे मन आ पृथ्वी उपर प्रगट पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण देवनुं तुं अतिशे हर्षवते निरंतर भजन करय जोने तारूं रंजन करवा वास्ते एटले पोतानि मूर्तिने विषे भक्त जनना मनने सहज संलग्न करवा वास्ते पोताना एकांतिक भक्तना आंगणाने विषे सर्व साधुनो समुह एकठो मेळवीने तथा सर्व सत्संगि भक्त जननो समूह एकठो मेलवीने नाना प्रकारनी लीलाने करता एटले रंग रमवो

इत्यादि खेल ने करताने सर्व दुःख मात्रनो नाश करता एवा श्री सहजानंद स्वामिने भज एटले हे मन जो सर्व दुःख मात्रनो नाश करवो होय तो बीजुं सर्व भजन छोडिने एक भगवाननीज लीलाने संभारय तेथीज तने सुखशांति उत्पन्न थशे ए भाव छे ॥१॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ शुभनिकेतनं बंध भेदनं निगम मंडनं काल खंडनम् ॥ परमुखाश्रयं भक्त संश्रयं भज मनः सदा स्वामिनं मुदा ॥ २ ॥ अर्थ–सर्व शुभ वस्तुने रहेवानुं स्थान रूप एटले जेने विषे अनंत कल्याणकारी शुभगुण रह्या छे एवाने बंधनने नाश करनारा एटले जीवने अनादि कालनुं महा मोटुं मायानु बंधन रह्युं छे ते जेना दृढ आश्रयथी, नाश पामेछे एवा ने वेदनुं मंडन केतां आभूषण रूप एटले वेद पण जेने नेति नेति कही गायछे कर्मकांड उपासनाकांड ने ज्ञानकांड तेमां उत्तरोत्तर श्रेष्ठ जे ज्ञान कह्युं छे ते प्रत्यक्ष परमात्माना ज्ञान विना जीवनी मुक्ति नथी माटे ते ज्ञान वते जाणवा योग्य एवाने कालनुं पण खंडन करनार एटले कालना पण काल एवा ने परजे ब्रह्मादिक देव तेने पण सुखकारिछे आश्रय जेनो एवाने भक्त जनने एक आश्रयरूप एवा श्री स्वामिनारायण देवने हे मन तुं निरंतर आतिशे हर्षवते भजन करय ॥ २ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अघ विधूननं

शोभिताननं प्रकटिताकृतिं सुंदराहतिम् ॥ परम मंगल मुक्त संकुलं ॥ भज मनःसदा स्वामिनं मुदा ॥ ३ ॥ अर्थ–पापने नाश करनारा ने शोभतुं छे मुख जेनुं एवा ने प्रगट करि छे आकृति जेमणे एटले पोतानी मनुष्य आकृतिने विषे पण दिव्याकृति दिव्यपणुं देखाडता एवा ने सुंदर छे उपदेश जेमनो एवा ने परम मंगल रूप एवा ने मुक्तनां मंडल जेनी सेवामां निरंतर रहेछे एवा श्रीस्वामिनारायण देवनुं हे मन तुं निरंतर अतिशे हर्षवते भजन करय ॥ ३ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ सकल कारणं भक्त तारणं भय विदारणं मुक्ति धारणम् ॥ कुपथ वारणं कोप मारणं भज मनःसदा स्वामिनं मुदा ॥ ४ ॥ अर्थ–सकल ब्रह्मांडना कारण एवाने भक्त जनने संसार समुद्रमांथी तारण करनारा ने भयनो नाश करनारा ने मुक्तिनुं धारण करनारा ने कुमार्ग एटले पाषंड मार्गनुं निवारण करनारा ने क्रोधनो नाश करनारा एवा श्री स्वामिनारायण देवनुं हे मन तुं निरंतर अतिशे हर्षवते भजन करय ॥ ४ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ भुवन मंडले कामनाकुले मरण भीषणे पूर्ण दूषणे ॥ नाहि सुखं भवेयास्ति किं हठाद् भज मनःसदा स्वामिनं मुदा ॥ ५ ॥ अर्थ–अनेक प्रकारनी कामना एटले मनोरथ तेणे करिने आकुल व्याकुल ने जेमां मरवानो महा मोटो भय छे ने जेने विषे

संपूर्ण दूषण रह्यां छे एवुं आ सर्व जगत् छे तेने विषे कोइ प्रकारनुं सुख नथी तेमां तुं बलात्कारे सुख भोगवानी बुद्धिये पडे छे पण शुं तेमां तने सुख मलशे नहिज मले माटे हे मन जगत्नां सर्व सुखनो त्याग करिने श्री स्वामिनारायणनुं निरंतर अतिशे हर्षवते भजन कर्य ॥ ५ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ बहुल संशयं दुःख संश्रयं स्वजन वैभवं तेन तेऽ सुखम् ॥ हरण मापदां धाम संपदां भज मनःसदा स्वामिनं मुदा ॥ ६ ॥ अर्थ–सगांसंबंधि तथा समस्त संसारिक वैभव ते सर्व दुःखदायि छे ने जेमां सुखनो आभास जणाय छे तेमां पण घणा संशय छे एटले वस्तुताये स्त्री धनादिक पदार्थमां सुखज नथी तेणे करीने केवल तने दुःखज उत्पन्न थशे जे संपत्तियोनो समूह छे ते केवल आपत्तियोने रहेवानुं धर छे एम जाणी वैराग्य पामीने हे मन तुं निरंतर श्रीस्वामीनारायण देवनुं अतिशे हर्षवते भजन कर्य ॥ ६ ॥ ॥ श्लोक ॥ विषय सन्निधौ दुःखवारिधौ सुखधिया सुधा मंथिता मुधा ॥ नहि मृतिर्गता सा सुसेविता भजमनः सदा स्वामिनं मुदा ॥ ७ ॥ अर्थ–दुःखना समुद्र जेवुं विषयनुं समीप पणुं छे एटले जेम जेम पंच विषयनी प्राप्ति वधारे वधारे थती जाय छे तेम तेम दुःखना समुद्र वधारे वधारे उभराता जाय छे ते दुःखसमुद्रनु

मंथन करिने तेमांथी. सुखरूप अमृत तेने क्यांथी मळशे केवळ तारि मेहनत्य फोगट जशे. उलटुं तारु कांइक सुख हशे ते पण जशे केम जे प्राणि मात्रने अवश्य थनारु जे जन्ममरण तेनी ज्यांसुधी निवृत्ति नथी थई त्यां सुधी अमृत पान करयुं होय तो तेपण मिथ्या छे तो केवळ विषय रूपि विखनो समुद्र वलहोवीने तेमांथी सुखरूपी अमृत क्यांथी काढीश माटे जन्म मरणना दुखनी निवृत्ति करनार श्री स्वामिनारायण देवनुं हे मन तुं निरंतर अतिशे हर्षवते भजन करय ॥ ७ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ हरिवचो मृतं सर्व संमतं पिव यतो हितं नाशिताहितम् ॥ इति सदंचितं दीनया चितं भज मनःसदा स्वामिनं मुदा ॥ ८ ॥ अर्थ–हे मन भगवानना वचनरूपी अमृत तेनुं पान करय ते अमृत सर्वने संमत छे एटले साचुं अमृत तो भगवानना वचनरूपि छे जेनुं पांन करिने जीव अजरामर पदवीने पामे छे माटे जेथी अहित मात्रनो नाश थाय छे ने हित मात्रनी प्राप्ति थाय छे ए प्रकारे सत्पुरुषने मान्य करवा योग्यने दीनानाथ भट्टे स्तुति करेला एवा श्री स्वामिनारायण देवनुं निरंतर आतिशे हर्षवते भजन करय ॥ ८ ॥ इतिश्री लोत्रपुराधीश श्रीमदभयसिंह नृपाज्ञया

दीनानाथ भट्टात्मज रामचंद्र भट्ट विरचितो मनोरंजनाष्टक भापार्थःसंम्पूर्णः ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ॥

